Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

X
12

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुजान-चरित्र

X/12

नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Provincial Museum
LUCKNOW.

नागरीप्रचारिणी ग्रन्थ-माला-३

सूदन कवि कृत

सुजान-चरित्र

[... के राजा सुजानसिंह के युद्धों का वर्णन]

सम्पादक—

श्री राधाकृष्णदास

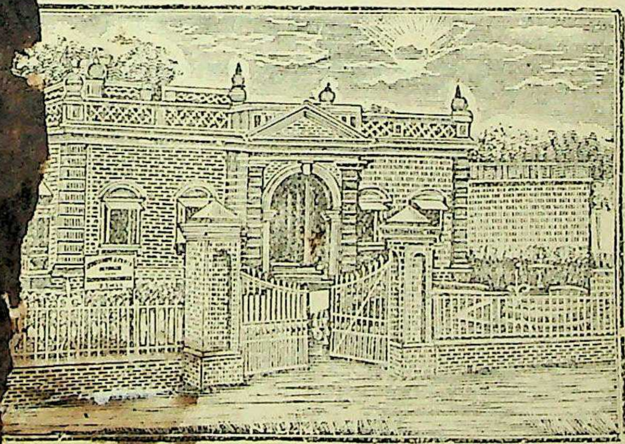

प्रकाशक—

काशी, नागरीप्रचारिणी सभा

सं० १९८०

[...सरा संस्करण] [मूल्य २)]

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रथम संस्करण की भूमिका

हिन्दुस्तान में मुसलमानी राज्य के मित्र रूपी शत्रु प्रबल-प्रतापी औरंगज़ेब के सन् १७०७ ई० में मरने पर चारों ओर अराजकता फैल गई और मुसलमानी राज्य की जड़ में जो दीमक लग गए थे, उन्होंने प्रकट रूप से काट काटकर पछाड़ गिराना आरंभ कर दिया। पंजाब में सिक्ख, दक्षिण में महाराष्ट्र और राजपूताने में मेवाड़ी और मारवाड़ी क्षत्रिय तो ज़ोर पकड़ ही रहे थे, इधर दिल्ली के पड़ोस ही में भरत-पुर से जाट जाति के एक साधारण ठाकुर ने दर्शन दिया और यहाँ तक अपना प्रताप बढ़ाया कि अनहोनी को होनी कर दिखाया। जिस दिल्ली की ओर आँख उठाकर देखने का भी किसी को साहस नहीं होता था, उसे इन लुटेरों ने लूटकर तहस नहस कर डाला और लूट के माल को अपने डीग के भवन में चिरकाल तक स्मारक रूप में स्थापित करके अपनी अचल कीर्ति दृढ़ कर दिया। इस ग्रंथ में उसी जाट वंश के आदि अभ्युदय का वृत्तांत वर्णित है। यह ग्रंथ दो कारणों से विशेष आदरणीय है। एक तो इसके ऐसे वीर रस के उत्तम काव्य हिंदी में विरले ही मिलते हैं। दूसरे यह कि कवि स्वयं इन वृत्तांतों को अपनी आँखों से देखकर लिखता है। उस पर भी विशेषता यह है कि यद्यपि कवि को चिर-प्रचलित प्रथा के अनुसार खुशामद से ग्रंथनायक की बहुत कुछ बड़ाई करनी पड़ी है, परंतु फिर भी उसने शत्रुओं के यथार्थ गुण-वर्णन में कहीं त्रुटि नहीं की है; और कहीं कहीं अपने स्वामी की हेठाई की बात भी बहुत ही चतुरता से बचाकर कह गया है। उत्तम कवि होने के अतिरिक्त वह कई भाषाओं का जानकार और विशेष अनुभवी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रथम संस्करण की भूमिका

हिन्दुस्तान में मुसलमानी राज्य के मित्र रूपी शत्रु प्रबल-प्रतापी औरंगज़ेब के सन् १७०७ ई० में मरने पर चारों ओर अराजकता फैल गई और मुसलमानी राज्य की जड़ में जो दीमक लग गए थे, उन्होंने प्रकट रूप से काट काटकर पछाड़ गिराना आरंभ कर दिया। पंजाब में सिक्ख, दक्षिण में महाराष्ट्र और राजपूताने में मेवाड़ी और मारवाड़ी क्षत्रिय तो ज़ोर पकड़ ही रहे थे, इधर दिल्ली के पड़ोस ही में भरतपुर से जाट जाति के एक साधारण ठाकुर ने दर्शन दिया और यहाँ तक अपना प्रताप बढ़ाया कि अनहोनी को होनी कर दिखाया। जिस दिल्ली की ओर आँख उठाकर देखने का भी किसी को साहस नहीं होता था, उसे इन लुटेरों ने लूटकर तहस नहस कर डाला और लूट के माल को अपने डीग के भवन में चिरकाल तक स्मारक रूप में स्थापित करके अपनी अचल कीर्ति दृढ़ कर दिया। इस ग्रंथ में उसी जाट वंश के आदि अभ्युदय का वृत्तांत वर्णित है। यह ग्रंथ दो कारणों से विशेष आदरणीय है। एक तो इसके ऐसे वीर रस के उत्तम काव्य हिंदी में विरले ही मिलते हैं। दूसरे यह कि कवि स्वयं इन वृत्तांतों को अपनी आँखों से देखकर लिखता है। उस पर भी विशेषता यह है कि यद्यपि कवि को चिर-प्रचलित प्रथा के अनुसार खुशामद से ग्रंथनायक की बहुत कुछ बड़ाई करनी पड़ी है, परंतु फिर भी उसने शत्रुओं के यथार्थ गुण-वर्णन में कहीं त्रुटि नहीं की है; और कहीं कहीं अपने स्वामी की हेठाई की बात भी बहुत ही चतुरता से बचाकर कह गया है। उत्तम कवि होने के अतिरिक्त वह कई भाषाओं का जानकार और विशेष अनुभवी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मनुष्य था, जैसा कि उसके ग्रंथ के देखने से विदित होता है। उसने उस समय के प्रचलित अस्त्र, शस्त्र, कपड़े, गहने, बरतन, पशु, पक्षी, वाहन, मेवे, फल आदि यावत् पदार्थों के इतने नाम गिनाए हैं जिनका कुछ दिनों पीछे लोग नाम तक न जानेंगे। यदि स्वास्थ्य मुझे अवसर देगा तो मैं इस ग्रंथ में आए पदार्थों और शब्दों का एक छोटा सा कोष सा बनाकर पीछे से प्रकाशित करने की इच्छा रखता हूँ।

इस ग्रंथ की खोज मैंने मुसलमानी राज्य के अंतिम समय के प्रसिद्ध इतिहास-वेत्ता मिस्टर इर्विन साहब के लिये की थी। परंतु ग्रंथ मिलने पर मुझे ऐसा हुआ कि मैंने अकेले ही इसका स्वाद चखना उचित न समझा और ग्रंथमाला द्वारा अपने मित्रों को भी भेंट किया। इसकी कई प्रति मँगाई गईं, पर प्रायः सभी ऐसी अशुद्ध मिलीं कि पढ़ना और समझना कठिन था। बड़े परिश्रम से कई प्रति मिलाकर शोध कर मैंने इसे प्रकाशित किया। एक बेर यह ग्रंथ भरतपुर राज्य की ओर से लीथो में छपा भी था, परंतु अब उसका दर्शन भी नहीं मिलता और शुद्धता के विषय में वह प्रणम्य ही है।

मिस्टर ग्राउस साहब ने अपनी मथुरा नाम की पुस्तक में इस वंश का वृत्तांत यों लिखा है कि "इस वंश का स्थापनकर्त्ता चूड़ामणि नाम का एक लुटेरों का सर्दार था, जिसने डीग से कुछ दक्षिण थून और सिनसिनी गाँव में दो छोटे छोटे क़िले बनवाए थे। इन्हीं क़िलों से वह इधर उधर लूट मार मचाया करता था, यहाँ तक कि दक्षिण की चढ़ाई के समय उसने औरंगज़ेब की सेना को भी बढ़ने से रोक दिया था। थोड़े दिन पीछे जयपुर के महाराज जयसिंह चूड़ामणि से लड़ने के लिये भेजे गए, परंतु जैसी चाहिए, सफलता न प्राप्त हो सकी। कुछ दिनों के पीछे चूड़ामणि का भाई बदनसिंह

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

महाराज से आकर मिला। इसकी सहायता से चढ़ाई करके छः महीना लड़कर जयसिंह ने थून के क़िले को ढाह दिया। चूड़ामणि अपने बेटे मुहकम के साथ भाग गया और बदनसिंह डीग में जाटों का सर्दार स्थापित हुआ और इसे ठाकुर का ख़िताब मिला। बदनसिंह को चूड़ामणि ने क़ैद कर लिया था, इसी से उसे क्रोध आया और क़ैद से भाग कर यह सर्वनाश किया।" इन्हीं बदनसिंह के बेटे सूरजमल्ल उपनाम सुजानसिंह थे जिनका चरित्र इस ग्रंथ में वर्णित है। सुजानसिंह पिता से अधिक पराक्रमी होने पर भी ऐसे आज्ञाकारी थे कि बिना उनकी आज्ञा कुछ न करते; और जब तक वह जीते रहे, आप राजगी का ख़िताब न लिया, उनके मरने पर राजा हुए। सुजानसिंह सन् १७६४ में शाहदरा में मुग़लों के हाथ से मारे गए, और उनके बड़े बेटे जवाहिरसिंह राजा हुए। परंतु इस ग्रंथ में पूरा वृत्तांत सूरजमल्ल का नहीं है। ग्रंथकर्त्ता ने केवल मरहट्टों से लड़ाई आरंभ होने के पहले का वृत्तांत दिया है और भगवान् से इनकी जय की प्रार्थना करते हुए ग्रंथ समाप्त कर दिया है। पर समाप्त करने पर भी उसने ग्रंथ की 'इति' नहीं की है, क्योंकि हर एक अंक के अंत में ग्रंथकर्त्ता ने "भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं" यह छंद लगाया है; परंतु अंत में न तो यह छंद ही लगाया है और न "इति श्री" ही लगाई है। इससे स्पष्ट जान पड़ता है कि कवि की इच्छा उस समय तक के वृत्तांत लिखकर फिर आगे के वृत्तांत लिखने की थी, जो किसी कारण से पूरी न हो सकी और ग्रंथ यहीं तक रह गया। जो हो, ग्रंथ इतिहास और काव्य दोनों दृष्टि से उत्तम हुआ है और आदरणीय है।

श्री राधाकृष्णदास।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

द्वितीय संस्करण की भूमिका

हिंदी-साहित्य में आज सौ वर्ष से पहले के जो गद्य ग्रंथ उपलब्ध हैं, वे साधारण कोटि ही के हैं। उनमें इतिहास, विज्ञान आदि के ग्रंथ तो नाम को भी नहीं हैं। उस समय गद्य के लेख की तो प्रथा ही नहीं थी। कवि-समुदाय अपनी कविता-कामिनी के माधुर्य-पाश में ऐसे बद्ध थे कि वे उसका एक पंक्ति गद्य लिखने मात्र के समय का भी विरह असह्य मानते थे। बड़े बड़े महात्मा भी इस कामिनी के फंदे से नहीं बचे थे। कवि-श्रेष्ठ महात्मा नंददास जी कोष लिखने बैठे तो उस समय भी वे इस कामिनी को कुछ समय के लिये न भुला सके। कहाँ तक कहा जाय, वे परब्रह्म परमेश्वर का ध्यान भी इसी को मध्यस्थ बनाकर करते थे।

कहा जा सकता है कि अभी तक इतिहास को हिंदी साहित्य में अच्छा स्थान नहीं मिला है। अन्य देशों के इतिहासों का तो कुछ कहना ही नहीं, स्वयं अपने ही देश के इतिहास पर गिनी-गिनाई कुछ पुस्तकें इधर लिखी गई हैं। ऐसी अवस्था में यदि कोई हिंदी इतिहास ग्रंथ, जो अवश्य ही कविता की सरस धारा के रूप में होगा जिसमें मिलित वर्ण रूपी रोड़े अच्छी हरत लुढुक रहे होंगे, प्राप्त हो तो वह जितना ही प्राचीन होगा, उसको उतना ही अधिक महत्व भी देना पड़ेगा। इस दृष्टि से सुजानचरित्र, जो पौने दो सौ वर्ष प्राचीन है और जिसमें कवि ने आँखों देखी घटनाओं का ठीक ठीक वर्णन किया है, बहुत महत्व का ग्रंथ है। इसी महत्व के कारण काशी नागरीप्रचारिणी सभा ने इसे सं० १९५९ में अपनी नागरीप्रचारिणी ग्रंथमाला के तीसरे पुष्प के रूप में ग्रथित किया था। वह संस्करण लगभग बीस वर्ष में हिंदी-जगत के इतिहास-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

द्वितीय संस्करण की भूमिका

हिंदी-साहित्य में आज सौ वर्ष से पहले के जो गद्य ग्रंथ उपलब्ध हैं, वे साधारण कोटि ही के हैं। उनमें इतिहास, विज्ञान आदि के ग्रंथ तो नाम को भी नहीं हैं। उस समय गद्य के लेख की तो प्रथा ही नहीं थी। कवि-समुदाय अपनी कविता-कामिनी के माधुर्य-पाश में ऐसे बद्ध थे कि वे उसका एक पंक्ति गद्य लिखने मात्र के समय का भी विरह असह्य मानते थे। बड़े बड़े महात्मा भी इस कामिनी के फंदे से नहीं बचे थे। कवि-श्रेष्ठ महात्मा नंददास जी कोष लिखने बैठे तो उस समय भी वे इस कामिनी को कुछ समय के लिये न भुला सके। कहाँ तक कहा जाय, वे परब्रह्म परमेश्वर का ध्यान भी इसी को मध्यस्थ बनाकर करते थे।

कहा जा सकता है कि अभी तक इतिहास को हिंदी साहित्य में अच्छा स्थान नहीं मिला है। अन्य देशों के इतिहासों का तो कुछ कहना ही नहीं, स्वयं अपने ही देश के इतिहास पर गिनी-गिनाई कुछ पुस्तकें इधर लिखी गई हैं। ऐसी अवस्था में यदि कोई हिंदी इतिहास ग्रंथ, जो अवश्य ही कविता की सरस धारा के रूप में होगा जिसमें मिलित वर्ण रूपी रोड़े अच्छी हरत लुढ़क रहे होंगे, प्राप्त हो तो वह जितना ही प्राचीन होगा, उसको उतना ही अधिक महत्व भी देना पड़ेगा। इस दृष्टि से सुजानचरित्र, जो पौने दो सौ वर्ष प्राचीन है और जिसमें कवि ने आँखों देखी घटनाओं का ठीक ठीक वर्णन किया है, बहुत महत्व का ग्रंथ है। इसी महत्व के कारण काशी नागरीप्रचारिणी सभा ने इसे सं० १९५९ में अपनी नागरीप्रचारिणी ग्रंथमाला के तीसरे पुष्प के रूप में ग्रथित किया था। वह संस्करण लगभग बीस वर्ष में हिंदी-जगत के इतिहास-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रेम को जाग्रत करता हुआ समाप्त हुआ जिससे इस दूसरे संस्करण की आवश्यकता हुई।

प्रथम संस्करण पू० भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र जी के फुफेरे भाई बा० राधाकृष्णदास द्वारा संपादित था और इस संबंध से वे मेरे भी पूज्य हुए। इसी लिये मैंने प्रेस में कापी भेजने के समय जहाँ तक हो सका है, देख ली है। इस संस्करण की विशेषता केवल इतनी ही है कि मैंने इसमें कवि-परिचय, सुजानसिंह का जीवनचरित्र और एक परिशिष्ट बढ़ा दिया है। सुजानसिंह के जीवनचरित्र में जहाँ अन्य इतिहासों से सहायता ली गई है, वहाँ उनका यथास्थान टिप्पणी में उल्लेख कर दिया गया है। पहले विचार था कि भरतपुर के वर्तमान समय तक के संक्षिप्त इतिहास का समावेश कर दिया जाय, पर समय की कमी तथा पुस्तक के प्रकाशन की जल्दी के कारण केवल सुजानसिंह के राज्यकाल के साथ ही उसे भी समाप्त करना पड़ा। अन्त में सुजानचरित्र में आए हुए केवल फ़ारसी अरबी के शब्दों में शुद्ध रूप तथा अर्थ दिए गए हैं क्योंकि उनमें से बहुतों का प्रयोग अधिक बिगड़े हुए रूप में हुआ था।

प्रथम संस्करण में 'पूत नातीन कों' के स्थान पर 'पूतना तीनकों' के प्रकार की बहुत अशुद्धियाँ रह गई थीं जो शुद्ध की गई हैं। पर इस संस्करण में भी कुछ पुरानी अशुद्धियाँ तो रह ही गई हैं, कुछ नई भी हो गईं जैसे मीर वक्षा के स्थान पर मीर बक्षा। अब यह ग्रंथ इस नवीन रूप में पाठकों के सामने उपस्थित किया गया है जिसे वे अपनाकर मेरे श्रम को सफल करेंगे।

भवदीय

मार्गशीर्ष कृष्ण ११
काशी

ब्रजरत्नदास

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फारसी के ग़ियासुल्लुग़ात आदि कोषों में इस शब्द के दो अर्थ दिए गए हैं—सेना का झंडा और बादशाहों का आज्ञापत्र। हिंदी शब्दसागर में इस शब्द को केवल फ़ारसी का ही मानकर निम्न-लिखित अर्थ दिए गए हैं—

(१) चिन्ह—सेनाओं के ऊँचे ऊँचे झंडे सैनिकों की पहचान ही के लिये रखे जाने की प्रथा थी और है जिससे मुहावरे में निशान का अर्थ लक्षण, चिह्न आदि लिया गया है। इसी से क्रिया बनाकर अनेक गौण अर्थ लिए जाते हैं, पर प्रधान वही है।

(२) ध्वजा, झंडा—यह अर्थ फारसी कोष का ही है।

(३) नगाड़ा, धौंसा—फ़ारसी के कोषों में यह अर्थ नहीं दिया गया है। शब्दसागर में जायसी की एक चौपाई उदाहरण में दी गई है—बीस सहस घुम्मरहिं निसाना। गुल कंचन फेरह असमाना॥ पर घुमरना शब्द के अर्थ में यह उदाहरण इस प्रकार दिया गया है–बीस सहस घुम्मरहिं निसाना। गुल कंचन फहरैं असमाना॥ एक और उदाहरण गोस्वामी जी का भी दिया गया है—निदरि घनहिं घुम्मरहिं निसाना। निज पराइ कछु सुनिय न काना। जायसी की चौपाई में निशान का अर्थ झंडा और घुम्मरहिं का घुमड़ाना अर्थात् फहराना अधिक उपयुक्त और ठीक है। गोस्वामी जी ने एक स्थल पर लिखा है–बजत निसान जुझाऊ बाजा। गोस्वामी जी की चौपाइओं में डंका और धौंसा ही अर्थ लग सकता है, झंडे का नहीं। यह अर्थ फारसी शब्द 'निशान' का नहीं है। इससे संस्कृत के किसी शब्द के अपभ्रंश रूप से इसकी व्युत्पत्ति खोजनी चाहिए। यह भाषाविज्ञान के विद्वानों के विचार करने के योग्य है। एक विद्वान् का कथन है कि यह

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संस्कृत शब्द 'निषराण' से व्युत्पन्न है जिसका अर्थ बड़ा बाजा है।

सूदन जी के ग्रंथ में वीर रस ही प्रधान है, परंतु करुणा और वीभत्स का भी कहीं कहीं पुट है। हास्य रस का एक उत्तम कवित्त तृतीय जंग का मंगलाचरण है। इन्होंने अपनी कविता में यमक अनुप्रास आदि की छटा नहीं दिखलाई है, पर ओज लाने के लिये मिलित वर्णों का बहुत प्रयोग किया है। इनकी कविता की भाषा में व्रजभाषा, मारवाड़ी, पंजाबी और खड़ी बोली का प्रयोग होना आश्चर्यजनक नहीं है क्योंकि इनका स्थान इन भाषाओं के केंद्र स्थानों की सीमा पर था। इन्होंने कविता में जु और सु की भरमार कर दी है; यहाँ तक कि एक शब्द के दो टुकड़े करके उनके बीच में इन्हें रख दिया है। यह शैथिल्य दोष से भिन्न नहीं कहा जा सकता, इससे अर्थ का अनर्थ हो जाता है। उदाहरण के लिये कुछ शब्द लीजिए—फर्रुक जुसेर (फर्रुखसिअर) किलेजुदार, सुदसोतरा, मीराँ जुसाहि, जुहिमाऊँ।

सुजानचरित्र वीर रस की कविता के लिये विशेष प्रशंसनीय है, पर साथ ही ऐतिहासिक दृष्टि से भी उसका महत्व उससे कम नहीं है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विषय-सूची

कवि-परिचय ... ... १ से ६

सुजानसिंह का जीवन-चरित्र ... ... ७ से २२

प्रथम जंग

(१) अंक—मंगलाचरण, संस्कृत तथा भाषा कवियों के नाम और वंदना, निज वर्णन, भरत-राजवंश वर्णन ... ... १ से ७

(२) अंक—नवाब फ़तेह अली के दूत का आना और सहायता माँगना, सुजानसिंह का फ़तेह अली को बुलाना और परामर्श होना ... ७ से १३

(३) अंक—सुजानसिंह का चंडौल को सेनाएँ भेजना और फिर आप आना, असद ख़ाँ का भी आकर डेरा जमाना, दोनों सेनाओं का सामना होना १३ से २०

(४) अंक—युद्ध का आरंभ होना, असद ख़ाँ का मारा जाना और उसकी सेना का भागना, सुजानसिंह का फ़तेह अली को कोल भेजकर घर लौटना ... ... २० से २७

द्वितीय जंग

(१) अंक—आमेर पर माधोसिंह के साथ दक्षिणियों का चढ़ाई करना, आमेरवालों का सुजानसिंह से सहायता माँगना और उनका जाने के लिये प्रस्तुत होना ... ... २८ से ३२

(२) अंक—सुजानसिंह का कुंमेर से कूच करना, जयपुर पहुँचना, राजा ईश्वरीसिंह से मिलना, लड़ाई का आरंभ होना, दक्षिणी मल्लारराव का हारकर मोती डूँगरी से पीछे हटना ... ३२ से ३६

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(३) अंक—मल्लारराव का पीछा करके बगरू महल में जयपुर-नरेश का डेरा डालना, दक्षिणियों का छापा मारना, मरहट्टों पर एकबारगी चढ़ाई और घोर युद्ध होना, सुजानसिंह का विजय पाना, मरहट्टों का ईश्वरसिंह से माधोसिंह को दो पर्गने दिलाकर लौट जाना ... ३६ से ४०

तृतीय जंग

(१) अंक—बख़शी सलाबत ख़ाँ का भरतपुर पर चढ़ाई करना, सुजानसिंह का आगे बढ़कर नौ-गाँव में डेरा देना ... ... ४१ से ४३

(२) अंक—सुजानसिंह का दूत भेजना, सलाबतख़ाँ का दो करोड़ रुपये माँगना और अपनी अधीनता स्वीकार कराने का प्रस्ताव करना, सुजानसिंह का छः सहस्र छँटी हुई सेना लेकर आगे बढ़ना और दिल्ली की सेना को घेर लेना ... ... ४३ से ४८

(३) अंक—कुछ दिनों तक घिरे रहकर दिल्ली की सेना का घोर युद्ध करना, अलाकुली ख़ाँ, फ़तेह अली और कुबरा का भागना ... ४८ से ५२

(४) अंक—हकीम ख़ाँ और रुस्तम ख़ाँ का मारा जाना ५२ से ५७

(५) अंक—सलाबत ख़ाँ का संधि के लिये दूत भेजना और सुजानसिंह का संधि स्वीकृत करना ५७ से ५८

चतुर्थ जंग

(१) अंक—नवलराय का पठानों के हाथ से मारा जाना, वज़ीर मनसूर ख़ाँ का अहमद शाह की आज्ञा से पठानों पर चढ़ाई करना, कोल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुजानचरित्र में सप्तम जंग की घटना अधूरी दी गई है और सं० १८११ के आरंभ ही में उस युद्ध से सूरजमल एक प्रकार विजयी होकर निकले थे, जैसा उनके चरित्र में दिखलाया गया है। यदि सूदन जी ने यह ग्रंथ सं० १८१० के अनंतर लिखा होता तो वे इस घटना को बीच ही में न छोड़ देते। इस प्रकाह यह जान पड़ता है कि मराठों तथा बादशाही सेना के चढ़ाई करने के अनंतर इनकी युद्ध में या अन्य प्रकार मृत्यु हो गई हो और ये ग्रंथ अपूर्ण छोड़ गए हों या इस ग्रंथ की पूर्ण प्रति कहीं छिपी पड़ी हो।

मिश्र बंधु विनोद में सूरजमल पर यह आक्षेप किया गया है कि 'उस समय वही मनुष्य बादशाह का बहुत जल्दी मित्र और शत्रु हो सकता था' पर यह कुछ भ्रमवश लिखा गया है। उस समय दिल्ली का बादशाह शतरंज का ऐसा बादशाह हो रहा था जिसे शह लग चुकी हो। प्रत्येक वज़ीर, बख़्शी या अमीरुल् उमरा उसे अपने हाथ का खिलौना बनाकर रखता था। उस समय के ऐतिहासिक रंगस्थल पर मराठे, राजपूत, जाट, रुहेले, पठान, अब्दाली आदि अनेक जातियाँ विचर रही थीं। उस समय कूट नीति ही का प्राबल्य था। ऐसे समय बादशाह के पक्ष या विपक्ष में रहने में कुछ सार नहीं था। सूरजमल ऐसे ही समय में अपनी दूरदर्शिता तथा नीतिज्ञता के कारण बराबर उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहे। सूदन जी ने उनका स्वाभाविक चरित्र अत्युत्तम रूप से अंकित किया है। जब फतहअली शरण आया तब उसकी रक्षा की। सलाबत ख़ाँ ने युद्ध छेड़ा तब उसे परास्त किया। ईश्वरसिंह और सफदरजंग ने सहायता माँगी ते इन्होंने वचन देने पर अंत तक निबाहा। जिस ग़ाज़ीउद्दीन ने मराठों को उभाड़कर इन पर चढ़ाई की थी, उसी के अब्दाली से भागकर शरण आने पर रक्षा की। तात्पर्य यह कि ये अहंता के कारण किसी से भिड़ नहीं जाते थे। पर ऐसे निर्भीक थे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कि प्रबल शत्रु से भी युद्ध करने में पीछे नहीं हटते थे। साथही इनकी पितृ-भक्ति का भी अच्छा वर्णन है। ये बदनसिंह से आज्ञा लेकर किसी युद्ध में जाते थे और विजय श्री प्राप्त करके ये पहले पिता के चरणों के दर्शन करना ही धर्म समझते थे।

सूदन जी ने इस ग्रंथ में विविध प्रकार के छंदों का प्रयोग कर अच्छी रोचकता ला दी है। दिल्ली की लूट, युद्ध की तैयारी तथा युद्ध का भी ऐसा अच्छा वर्णन किया है कि वे दृश्य वास्तव में सजीव प्रतिबिंब से ज्ञात होते हैं। इनके घटना-वर्णन की सत्यता के बारे में यह उल्लेखनीय है कि इन्होंने केवल अपने चरित्रनायक का ही यशःकीर्तन नहीं किया है, प्रत्युत् उनके शत्रुओं की वीरता, साहस तथा युद्ध-कौशल का भी उतना ही ओजपूर्ण वर्णन किया है। इन्होंने राजदूतों की बातचीत तथा सेनापतियों के प्रोत्साहन के व्याख्यानों का भी उत्कृष्ट नमूना दिया है। मुसलमानों की बातचीत में सूदन जी ने उस समय की दक्खिनी हिंदी या उर्दू तथा पंजाबी मिश्रित खड़ी बोली का भी प्रयोग किया है; जैसे—

(क) साहजहानाबाद मैं जद सैं यह आया।
तद सैं हुकुम हजूर दा नहिं एक बजाया॥

(ख) और कह्या है साहि ने सो भी सुन आना। इत्यादि।

सुजानचरित्र में फारसी अरबी के शब्द प्रचुरता से आए हैं, पर उनके रूप बहुत बिगाड़कर दिए गए हैं; जैसे खुस्याल (खुशहाल), चकत्ता (चग़त्ताई), तबाई (तबाही), सीन (सीनः) मामल (मुआमिलः)

सूदन जी ने 'निसान' शब्द का दो अर्थों में प्रयोग किया है—झंडा और डंका।

उदाहरण—भ्राजत निसाने फहराने हैं निसाने कैयौं
सूरज ने माने ते न माने राइराने कौ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

में आकर सुजानसिंह को बुलाना, सुजान-
सिंह का कूच ... ... ५६ से ६२

(२) अंक—सुजानसिंह का कोल पहुँचना, मनसूर का
दरबार करके सुजानसिंह से मिलना, एकांत
में लड़ाई की सलाह करना, मनसूर का
सुजानसिंह के डेरे में आना, सुजानसिंह का
और सेना बुलाना ... ... ६२ से ७०

(३) अंक—कोल से कूच करके मनसूर का नौलखा
में व्यूह-रचना करना, अहमद ख़ाँ पठान का
उतरकर डेरा डालना, सुजानसिंह का आगे
बढ़ना, ... ७० से ७४

(४) अंक—लड़ाई का आरंभ, रुस्तम ख़ाँ और
सुजानसिंह से घोर युद्ध ... ... ७४ से ८६

(५) अंक—ईसा ख़ाँ और मनसूर का घोर युद्ध,
मनसूर का भागना ... ... ८६ से ९१

(६) अंक—सुजानसिंह का घोर युद्ध करना, रुस्तम
ख़ाँ का मारा जाना, पठानों का भागना,
जाटों का पीछा करना, ... ९१ से १००

(७) अंक—मनसूर का मल्लारराव को बुलाना, मल्लार
और सुजानसिंह के साथ फिर पठानों पर
चढ़ाई करना, पठानों का हारना और मल्लार-
राव के द्वारा संधि करना ... ... १०० से १०४

पंचम जंग

(१) अंक—सं० १८०६ में घासहरे के बड़गूजर सरदार
राव बहादुरसिंह पर सुजान सिंह का चढ़ाई

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

करना, जवाहिरसिंह का भी आकर पिता से मिलना, बड़गूजर सरदार का घासहरे में लौट आना ... ... १०४ से १११

(२) अंक—लड़ाई का आरंभ होना, राव का घायल होकर गढ़ में लौट जाना, फिर रणभूमि में आना और मोरचों का प्रबंध करना ... १११ से ११९

(३) अंक—दूसरे दिन फिर युद्ध होना, लोगों का संधि के लिये राव को दबाना, संधि के लिये जालिमसिंह का भेजा जाना, सुजानसिंह का दस लाख रुपए और सब तोप रहकले लेकर संधि स्वीकार करना, पर राव का तोप-रहकला देना अस्वीकार करना, बात जाने से दुःखित होकर जालिमसिंह का आत्महत्या करना, सुजानसिंह का अमरसिंह को समझाने को भेजना, राव का छल से संधि के बहाने अपने लड़के के पास दिल्ली माल भेज देना, सुजानसिंह का भेद जानकर क्रोध करना ... ११९ से १३१

(४) अंक—युद्ध आरंभ होना, मीर पनाह बख़्शी का कोट पर दख़ल कर लेना और वहीं मारा जाना, राव का दूसरे कोट से लड़ाई करना, घोर युद्ध होना, राव बहादुरसिंह का मारा जाना ... ... १३२ से १५३

षष्ठ जंग

(१) अंक—(सं० १८१० में मनसूर जङ्ग की सहायता में दिल्ली पर सुजानसिंह की चढ़ाई) दिल्ली का इतिहास, वर्तमान समय अर्थात् अहमद-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शाह तक का वर्णन, अहमद शाह के वज़ीर मनसूर जंग और बख़शी ग़ाज़ीउद्दीन ख़ाँ से द्वेष होना, बख़शी का बादशाह के आगे चुग़ली खाना, अहमद शाह का वज़ीर को दिल्ली से निकाल देना, वज़ीर का क्रोध करके अपने पक्षपातियों को बुलाना, सुजानसिंह का समझाना, मनसूर का हठ करना, सुजानसिंह का सलाह देना कि हम लोग तख़ के बंदे हैं, इसलिये किसी को तख़ पर बैठाकर उसकी आज्ञा से दिल्ली पर चढ़ाई करनी चाहिए, मनसूर का यह सलाह मानना ... १५३ से १६२

(२) अंक—काम बख़्श के पोते को तख़ पर बैठाना, अकबर शाह नाम रखना, दिल्ली पर चढ़ाई करना, शहर के बाहर के बारह पुरों को लूटना, तोपख़ाना छीन लेना, अहमद शाह का ग़ाज़ीउद्दीन ख़ाँ को सामना करने के लिये भेजना, घोर युद्ध होना, सूरजमल का लाल दरवाज़े को तोड़ना, बाज़ार में गड़बड़ी मचना, नाना जाति और देश की स्त्रियों का नाना भाषा में बिलखना, भाँति भाँति के पशु-पक्षियों, अस्त्र-शस्त्रों, बरतनों, बाजों, ख़ेमों, कपड़ों, गहनों, केसर, कस्तूरी आदि किराने और मसालों, दवाइयों, अतर, मिठाई, ग्रंथों आदि का लुटना, बाज़ारों का जलाया जाना ... १६२ से १८०

(३) अंक—लूट बंद करके लड़ाई आरंभ करना, कांटरा में घोर युद्ध होना ... ... १८० से १८६

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(४) अंक—उस पार उतरकर लड़ाई करना, राजद्र गोसाईं का मारा जाना, फिर दिल्ली के पास घोर युद्ध होना, गोकुलराम गौड़ का मारा जाना, सुजानसिंह का तिलपत्ति की ओर लौटना, ग़ाज़ीउद्दीन ख़ाँ का बादशाह से आज्ञा लेकर इन लोगों का पीछा करने को निकलना, मैदान में घोर युद्ध होना और दिल्ली की सेना का हारकर भागना ... १८६ से १६६

(५) अंक—कुछ दिन मैदान में ठहरकर सुजानसिंह का फिर दिल्ली पर चढ़ना, शाही सेना का लड़ने को निकलना, घोर लड़ाई होना, शाही सेना का भागना, कुछ दिन ठहरकर सुजानसिंह का लौटना, फिर ग़ाज़ीउद्दीन ख़ाँ का चढ़ना और हारना ... ... २०० से २१२

(६) अंक—ग़ाज़ीउद्दीन ख़ाँ का माधोसिंह और दक्षिणियों को बुलवाना, शाही फौज का फ़रीदाबाद में डेरा डालना, सुजानसिंह का दक्षिणियों के आने के पहले चढ़ दौड़ना, घोर युद्ध होना, शाही फौज का भागना, माधवसिंह का आकर संधि करा देना। ... २१२ से २२३

सप्तम जंग

(१) अंक—मरहट्टों को शाही फ़ौज के साथ चढ़ाई करने का समाचार मिलना, सुजानसिंह का भेद लेने के लिये रूपराम को भेजना, बल्लू चौधरी के विश्वासघात से मारे जाने का समाचार पाना, जवाहिरसिंह को बरसाना भेजना,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रूपराम का जयपुर से मरहट्टों के आने की ख़बर देना, रूपराम से मल्हारराव का दो करोड़ रुपए माँगना, रूपराम का ब्रज-शोभा और कृष्ण-लीला वर्णन करना... ... २२४ से २३६

(२) अंक—मल्हारराव का अपने बेटे खंडेराव को ब्रज पर आगे से चढ़ाई करने को भेजना, उनका मेव लोगों को लूटना, इधर लड़ाई के लिये जवाहिरसिंह का प्रस्तुत होना, सुजान-सिंह और मल्हारराव का पुत्रों को बिना अपने आप लड़ाई करने से रोकना, दीघ में युद्ध की मंत्रणा करना, गोले बारूद आदि का प्रबंध करना, मल्हारराव का जयपुर से कूच करना, रूपराम को बुलाना और अपना आतंक जताना, रूपराम का मुचकुंद की कथा कहना ... ... २३६ से २५८

परिशिष्ट ... ... २६१ से

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कवि-परिचय

सूदनजी ने ग्रन्थारंभ में मंगलाचरण के अनंतर पहले संस्कृत के प्रसिद्ध कवियों तथा महर्षियों का गुणगान करके तब हिंदी के एक सौ पचहत्तर कवियों का नामोल्लेख किया है। ये नाम समयानुक्रम से नहीं हैं। सूदन जी इन कवियों के परवर्त्ती या समकालीन थे। कवियों के नाम-कीर्तन के उपरांत इन्होंने केवल एक सोरठे में अपना परिचय दिया है, जो इस प्रकार हैः—

मथुरापुर सुभ धाम माथुर कुल उत्तपत्ति बर।
पिता बसंत सुनाम सूदन जानहु सकल कवि ॥

इससे केवल यह पता चलता है कि ये माथुर ब्राह्मण थे और इनके पिता का नाम बसंत था। इन्होंने अपने जन्मस्थान के राजा ब्रजाधिप बदनसिंह के वीर पुत्र सुजानसिंह ही की ख्याति को कविता में ढाला है। ये उनके आश्रित रहे होंगे तथा उनके वर्णन से ज्ञात होता है कि वे इन युद्धों में सम्मिलित भी रहते थे। सूदन जी ने अपना परिचय देने के अनंतर फिर एक छप्पय में चौबीस अवतारों तथा एक कवित्त में कृष्ण जी का गुणगान रूपी मंगलाचरण कर अपने चरित्र-नायक का वंश-वर्णन किया है। इन्हें मंगल-पाठ की धुन सी सवार थी जिससे प्रत्येक परिच्छेद के पहले इन्होंने नया मंगलाचरण दिया है। इस ग्रंथ में इन्होंने एक नवीन प्रथा यह भी की है कि प्रत्येक अंक के अंत में निम्नलिखित हरगीति छंद दिया है जिसके प्रथम तीन पद वही रहते हैं, पर चतुर्थ पद अध्याय की वर्णित कथा के अनुसार बदलता रहता हैः—

भुवपाल-पालक भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं।
जानै दिली दल दक्खिनी कीने महा कलिकान हैं ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ताको चरित्र कछूक सूदन कह्यो छंद बनाइकैं।
कहि देव-ध्यान कवीस नृप-कुल प्रथम अंक सुनाइकैं॥

नृप-वंश-वर्णन में जब सूदन जी ने बदनसिंह के बड़े भाई चूड़ामणि का उल्लेख भी नहीं किया है, तब उनके विरुद्ध बदनसिंह का विभीषणवत् आचरण तथा उनके पुत्र मुहकमसिंह के राज्यापहरण का उल्लेख होना कब संभव था। सुजानचरित्र में सुजानसिंह उपनाम सूरजमल के सं० १८०२ से सं० १८१० तक के युद्धों का वर्णन है जिनकी तालिका इस प्रकार है:—

संवत्	घटना
१८०२	फतेहअली की सहायता कर असद खाँ को परास्त किया।
१८०४	मराठों को परास्त करने में जयपुराधीश ईश्वरीसिंह को सहायता दी।
१८०५	सलाबत खाँ बख्शी को परास्त किया।
१८०६	पठानों को परास्त करने में सफ़दरजंग की सहायता की।
१८०६	राव बहादुरसिंह बड़गूजर को परास्त किया।
१८१०	दिल्ली लूटने में सफ़दर जंग की सहायता की।
”	बादशाही सेना की मराठों की सेना सहित भरतपुर पर चढ़ाई।

मिश्र बंधु-विनोद में लिखा है—'जान पड़ता कि सं० १८१० के कुछ पीछे यह ग्रंथ बना और इसी कारण प्रारंभ से इसमें दिल्ली और दक्षिणी दलों की दुर्गत का वर्णन हर अध्याय में किया गया। इसमें लिखा है कि सूरजमल ने प्रथम मेवाड़ छीन लिया।' पहले मेवाड़ अशुद्ध है, मेवात चाहिए। दूसरे दिल्ली और दक्षिणी दलों की दुर्गति का जो चित्र सूदन जी ने खींचा है, वह बिलकुल ठीक फोटोग्राफ़िक कैमेरा की कृति सा है। इससे यह ग्रंथ सं० १८१० के बाद लिखा गया हो, सो नहीं कहा जा सकता। दूसरा कारण और भी है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुजानसिंह का जीवनचरित्र

भारतवर्ष की प्रसिद्ध जातियों में जाटों की भी गणना है जो पंजाब, सिंध, राजपूताने तथा संयुक्त प्रांत के कुछ भागों में बसे हुए हैं। भिन्न भिन्न प्रांतों में इस जाति के भिन्न भिन्न नाम पाए जाते हैं। इनके आचार विचार राजपूतों से बहुत कुछ मिलते हैं और कर्नल टाड आदि इन्हें राजपूतों के ३६ वंशों के अंतर्गत मानते हैं। कहीं कहीं राजपूतों तथा जाटों में विवाह-संबंध भी होता है; पर कुछ स्थानों के जाटों में विधवा-विवाह और सगाई की प्रथा भी प्रचलित है। किसी का कथन है कि शिवजी की जटा से उत्पत्ति होने के कारण ये जाट कहलाए और किसी का मत है कि ये यदु-वंशी थे तथा जदु या जादव से जाट शब्द की व्युत्पत्ति है। सुजान-चरित्र के ग्रन्थकार सूदन जी भी अपने चरित्र-नायक को यदुवंशी लिखते हैं। जो कुछ हो, फ़ारसी के इतिहासों में इस जाति का उल्लेख पहले पहल शाहजहाँ के समय मिलता है जब मथुरा, महाबन तथा कामों का फ़ौजदार मुर्शिदक़ुली तुर्कमान इस जाति की बस्तियों पर आक्रमण करते समय मारा गया था। औरंगज़ेब के समय गोकुल जाट ने बहुत लूट-मार मचाई और मथुरा के पास सैदाबाद को जलाकर नष्ट कर दिया। जब वहाँ का फ़ौजदार अब्दुन्नबी ख़ाँ लड़ते समय मारा गया तब बादशाह ने हसनअली ख़ाँ को भारी सेना सहित भेजा जिससे युद्ध करते समय गोकुल अपने एक मित्र के साथ पकड़ा गया। बादशाही आज्ञानुसार वे दोनों मार डाले गए।*

---

* मआसिरुल्उमरा जि० १ पृ० ५४०।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

औरंगज़ेब के दक्षिण जाने पर मौज़ा सिनसिन* के भज्जा (भावसिंह) जाट ने लूटमार आरंभ की† और धीरे धीरे अधिकार बढ़ाता रहा। इसका अत्याचार इतना बढ़ा कि अंत में बादशाह को दक्षिण से शाहज़ादा बेदारबख़्त तथा ख़ानजहाँ बहादुर ज़फ़रजंग को सेना सहित भेजना पड़ा। सं० १७४५ के युद्ध में राजाराम गोली से मारा गया और जाट दमन किए गए। दूसरे वर्ष सिनसिन पर अधिकार हो गया।‡ भज्जा के तीन पुत्र थे—चूड़ामणि, बदनसिंह और राजाराम।× भज्जा की मृत्यु पर चूड़ामणि ने लूटमार आरंभ की। सं० १७६२ तथा १७६४ में क्रमशः मुख़्तार ख़ाँ तथा रज़ा बहादुर ने सिनसिन पर चढ़ाई की थी। इसी समय औरंगज़ेब की मृत्यु पर जब शाहआलम और आज़म शाह में युद्ध हुआ, तब इन्होंने अपनी सेना दूर रखी तथा पराजित की सेना को अच्छी तरह लूटा। जब बहादुर शाह दक्षिण से लौटे, तब ये उनके मंसबदार बन गए। इसके अनंतर जब फिर बादशाहत में हेरफेर हुआ, तब ये फिर अपने पुराने प्रथानुसार बादशाही राज्य

---

* डीग और कुंभेर के बीच का एक ग्राम।

† इलि० डाउ० जि० ८, पृ० ३६०।

‡ मआसिरुल्उमरा जि० १ पृ० ५४१।

× मआसिरुल्उमरा तथा मिस्टर अर्विन कृत 'दि लेटर मुग़ल्स' में भज्जा के स्थान पर जाटों के सरदार का नाम राजाराम दिया है। दूसरी पुस्तक में यह भी लिखा है कि इसके अनंतर चूड़ामणि के पिता भज्जा का नाम सुना जाता है जिसका स्थान सिनसिनी था।' मजमउल्अख़बार में भज्जा के तीन पुत्रों का नाम चूड़ामणि, बदनसिंह और राजाराम लिखा है और सुजानचरित्र में बदनसिंह के पिता का नाम भावसिंह लिखा है जिसका बिगड़ा रूप भज्जा है। इम्पीरिअल गज़ेटिअर जि० ७ पृ० ७५ में बृज्ज नाम दिया है जो भज्जा ही का बिगड़ा हुआ रूप है। सुजान-चरित्र में "रूपसिंह तेरा चचा और सआदत ख़ान' लिखा है जिससे बदनसिंह के एक भाई का नाम रूपसिंह भी ज्ञात होता है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

में लूटमार करने लगे। अंत में फर्रुख़सिअर ने बादशाह होने पर राजाधिराज सवाई जयसिंह को इन्हें दमन करने भेजा और सैयद ख़ानज़हाँ को सहायतार्थ भेजा जो कुतुबुल्मुल्क का मामा था। राजा ने जब एक वर्ष में इन्हें अच्छी तरह थून दुर्ग में घेरकर तंग किया, तब इन्होंने कुतुबुल्मुल्क की शरण ली। राजा से तथा कुतुबुल्मुल्क से मनोमालिन्य था और अंतिम के ही हाथ में साम्राज्य का सर्वाधिकार था, इससे बादशाह को अंत में राजा जयसिंह को बुला लेना पड़ा तथा चूड़ामणि को भारी मंसब भी प्रदान करना पड़ा। *

इसके अनंतर चूड़ामणि ने बारहा के सैयदों का ही पक्ष ग्रहण किया और मुहम्मद शाह तथा कुतबुल्मुल्क के युद्ध में बादशाही सेना पर अच्छा धावा किया। जमुना जी के तट पर पूरा अधिकार कर इन्होंने शत्रु तथा मित्र दोनों को पक्षपात-रहित होकर तृष्णा नहीं बुझाने दी और एक पक्ष के पराजय के अनंतर भगैलों तथा सेनाओं के सामान आदि अपहरण कर उनके बोझ हलके कर दिए। इसके अनंतर अपने राज्य में जाकर ठहरे थे कि बादशाह ने इन्हें दंड देने के लिये राजा जयसिंह सवाई को अन्य सरदारों के साथ भेजा। चूड़ामणि ने यह देखकर कि पराजय निश्चित है, बारूदघर में आग लगा दी और उसी में जल मरे।†

---

* इलि० डाउ० जि० ८, पृ० ३६०–१। ख़फ़ी ख़ाँ जि० २ पृ० ६६८–६।

† इलि० डाउ० जि० ८ पृ० ३६१। इम्पीरिअल गज़ेटियर में लिखा है कि 'सन् १७२२ में अपने पुत्र से झगड़कर चूड़ामणि ने हीरा खाकर आत्महत्या कर ली। मुहकमसिंह ने राजा होते ही अपने चचेरे भाई बदनसिंह को क़ैद कर लिया, पर जाटों के कहने पर छोड़ देना पड़ा। तब बदनसिंह ने जयसिंह को चढ़ाई करने के लिये उभाड़ा।' बदनसिंह मुहकमसिंह के चाचा थे। मआसिरुल्उमरा में लिखा है कि 'चूड़ामणि की मृत्यु पर मुहकमसिंह आदि पुत्रों ने बड़ा अत्याचार मचाया......बुर्हानुल्मुल्क सआदत ख़ाँ जब कुछ न कर सके तब......राजा जयसिंह भेजे गए।'

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राजा जयसिंह की प्रार्थना पर जाटों का राज्य बदनसिंह को मिल गया।* इन्होंने भरतपुर के दृढ़ दुर्ग को ऐसा बनवाया जो अजेय नहीं तो दुर्जय अवश्य हो गया। इसकी दीवार बहुत चौड़ी है तथा खाई भी खूब गहरी है। बदनसिंह ने दृष्टि कम हो जाने के कारण अपने योग्य पुत्र सूरजमल को राज्यप्रबंध का कुल भार सौंप दिया और स्वयं एकांतवास करते हुए शांतिपूर्वक सं० १८१२ में जीवन समाप्त कर दिया।

सूरजमल ने पहले डीघ और कुंभेर दुर्गों को दृढ़ किया और फिर राज्य-विस्तार के प्रयत्न में लगे।†

सूरजमल ने मेवात तथा मालवा की राजधानी माँडू नगर पर चढ़ाई की और उसे जीत लिया। सं० १८०२ के अगहन महीने में ये यमुना नदी के तट पर आखेट करने गए थे। वहीं साबित ख़ाँ के पुत्र फ़तेहअली ख़ाँ ने असद ख़ाँ के विरुद्ध सहायता माँगने के लिये अपना एलची भेजा; पर सूरजमल के कहने पर स्वयं मिलने आया। अंत में सूरजमल सहायता देना स्वीकार कर कोल होते हुए ससैन्य चंडौस आए। यहीं दोनों ओर की सेनाओं का सामना हुआ। युद्ध में असद खाँ गोली लगने से मारा गया और उसकी सेना परास्त होकर भाग गई।‡

सं० १७०४ के श्रावण महीने में सूरजमल ने जयपुर-नरेश ईश्वर-सिंह की सहायता कर मराठों को परास्त किया था। जयसिंह की मृत्यु पर ईश्वरसिंह राजा हुए, पर माधोसिंह ने राजगद्दी पर अधि-

---

* जयसिंह की इस कृपा का उल्लेख सूदन ने इस प्रकार किया है—ज्यों जैसाहि नरेस करत कृपा तुव देस पैं (पृ० ४० सो० १५)

† इसके अनंतर सुजान-चरित्र का ऐतिहासिक वृत्तांत लिखा जाता है। अन्य इतिहास-ग्रंथों का उल्लेख टिप्पणी में किया जायगा।

‡ यह सुजान-चरित्र की प्रथम जंग का ऐतिहासिक सार है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कार करने को मराठों को उभाड़ा और उन्हें जयपुर पर चढ़ा लाए।* ईश्वरसिंह ने सुजानसिंह से सहायता माँगी। ये चुनी हुई सेना के साथ कुँभेर से रवाना होकर जयपुर पहुँचे जहाँ इनका बड़ा स्वागत हुआ। यहाँ से दोनों सेनाएँ सम्मिलित होकर मराठों की ओर बढ़ीं और मोती डूँगरी में युद्ध हुआ। मराठे परास्त होकर बगरू महाल की ओर चले गए। जाटों तथा कछवाहों ने भी पीछा करके उन्हें वहाँ जा पकड़ा और कुछ दिन आराम करने पर एकाएक मराठों की सेना पर धावा कर दिया। इस युद्ध में भी मराठे परास्त हुए और इस प्रकार कई बार पराजित होने पर मल्हारराव ने संधि का प्रस्ताव किया। माधोसिंह को दो परगने देने की शर्त पर ईश्वरसिंह ने संधि स्वीकृत कर ली जिससे मराठे अपने देश को लौट गए।†

सं० १८०५ के पूस महीने में सूरजमल को समाचार मिला कि सलाबत ख़ाँ बख़्शी ने भारी सेना के साथ उसके देश पर चढ़ाई करने को दिल्ली से प्रस्थान किया है। तब ये भी सेना सहित अगवानी को आगे बढ़े और मेवात के नौगाँव में डेरा डाला। यहाँ से चुनी हुई छः सहस्र सवार सेना साथ लेकर पंद्रह कोस कूचकर ठहरे और वहाँ से अपनी सेना को विभाजित कर तथा सरदारों की अधीनता में देकर बख़्शी की सेना के चारों ओर चौकियाँ स्थापित कर उसे घेर लिया। युद्ध में सलाबतख़ाँ परास्त हुआ और उसके

* ईश्वरीसिंह महाराज जयसिंह के बड़े पुत्र थे, पर माधोसिंह छोटे होने पर भी मेवाड़ की राजकुमारी से उत्पन्न हुए थे। इससे राजगद्दी पर उनका भी संधि के अनुसार स्वत्व था। मेवाड़-नरेश ने भी अपने भांजे का पक्ष लिया। टॉड्स् राजस्थान जि० २ पृ० १२१५।

† द्वितीय जंग का ऐतहासिक इतिवृत्त यहीं समाप्त होता है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दो सरदार रुस्तम ख़ाँ तथा हकीम ख़ाँ मारे गए। तब सलाबत ख़ाँ ने संधि का प्रस्ताव किया जिसे सूरजमल ने मान लिया*।

सं० १८०६ में भादों महीने में सूरजमल ने वज़ीर सफ़दरजंग की सहायता कर पठानों का दर्प चूर्ण किया।† पठानों से लड़कर नवलराय के मारे जाने पर सफ़दरजंग ने क्रुद्ध होकर अहमद शाह की आज्ञा से उन पर चढ़ाई कर दी और दयानाथ नामक राजदूत को सूरजमल के पास सहायतार्थ बुलाने को भेजा। सूरजमल सहायता देना निश्चित कर ससैन्य कोल को गए जहाँ सफ़दरजंग ने डेरा डाला था। स्वागत के लिये वज़ीर ने इस्माइल ख़ाँ को भेजा और फिर अपने दरबार में बुलाया। इसके अनंतर स्वयं दूसरे दिन सूरजमल से मिलने के लिये उनके डेरे पर गया। नवाब के कथना-

---

* सफ़दरजंग ने वज़ीर होते ही सूरजमल तथा उनके संबंधी बलराम को फ़रीदाबाद छोड़ देने के लिये कड़े शब्दों में लिखा। फ़रीदाबाद दिल्ली से बारह कोस पर है जिस पर बलराम ने बादशाही अफ़सरों को मारकर अधिकार कर लिया था। यह स्थान दिल्ली के वज़ीरों की जागीर में पड़ता था। जब लिखा-पढ़ी से कुछ नहीं हुआ, तब सन् ११६० हि० (सं० १८०४-५) में दिल्ली से कूच कर फरीदाबाद पर अधिकार कर लिया। इसके अनंतर सूरजमल से लिखा-पढ़ी तथा युद्ध की तैयारी हो रही थी कि बंगश अफ़ग़ानों तथा रुहेलों में युद्ध हो गया जिसमें रुहेले विजयी हुए। तब सफ़दरजंग ने सूरजमल से संधि कर ली। (इलि० जि० ८ पृ० २१२-३) सुजान-चरित्र के सलाबत ख़ाँ बख़्शी इन्हीं के भेजे हुए थे। यहीं तृतीय जंग समाप्त होता है।

† महम्मद ख़ाँ बंगश का बड़ा पुत्र क़ायम ख़ाँ जब रुहेलों से लड़कर मारा गया, तब बादशाह के आज्ञानुसार सफदरजंग ने अफ़ग़ानों के कुल राज्य पर अधिकार कर लिया और राजा नवलराय को उसका प्रबंध दे दिया। यह अवध तथा इलाहाबाद प्रांत में नवाब के नायब थे। महम्मद ख़ाँ के अहमद ख़ाँ आदि अन्य पुत्रों के लिये थोड़ी जागीर छोड़ दी गई। (इलि० जि० ८ पृ० २१३) अहमद ख़ाँ ने रुस्तम ख़ाँ की सहायता से राजा नवलराय को युद्ध में परास्त किया जो युद्ध में मारे गए। (सवानिहाते-सलातीन-अवध जि० १, पृ० ४७)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नुसार पिता को लिखकर और सेना भी सहायता के लिये मँगवाई। इसके अनंतर सम्मिलित सेना कूचकर कासगंज पहुँची और वहाँ कुछ दिन ठहरकर नौलखा आई।

इधर अहमद ख़ाँ बंगश ने भी पठानों की सेना एकत्र की और दस सहस्र रुहेलों की सहायक सेना साथ लेकर नवाब सफ़दरजंग की सेना के पाँच कोस इधर गंगाजी के कछार में मोरचा बाँधा। सुजानसिंह अपनी सेना के साथ आगे बढ़े और पठानों की सेना के सामने पहुँचकर युद्ध की तैयारी की। अहमद ख़ाँ ने भेदभाव उत्पन्न करने को सुजानसिंह के पास दूत भेजा, पर उनके कोरा उत्तर देने पर वह लौट गया। युद्धारंभ होने पर रुस्तम ख़ाँ पठान तथा सुजानसिंह से कड़ी लड़ाई हुई जिसमें अंततः रुस्तम खाँ मारा गया, परंतु नवाब वज़ीर पहले ही ईसा ख़ाँ पठान से घोर युद्ध करने के अनंतर परास्त हो दिल्ली की ओर भाग गए थे, इससे ये भी अपने राज्य की ओर लौट गए।

नवाब सफ़दरजंग ने दिल्ली पहुँचकर मल्हारराव होलकर को सहायतार्थ बुलवाया जो पचास सहस्र सवार के साथ आ पहुँचे। मल्हारराव तथा सुजानसिंह को साथ लेकर नवाब ने पठानों पर फिर चढ़ाई की। पठानों ने परास्त होने पर मल्हारराव के द्वारा संधि कर ली। *

---

* नवाब सफ़दरजंग ने अफ़ग़ानों पर चढ़ाई की, पर परास्त होकर दिल्ली लौट गए। अफ़ग़ानों का अवध प्रांत में अधिकार हो गया। पर लखनऊ के शेख़ज़ादों तथा अफ़ग़ानों में झगड़ा हो गया जिसमें अफ़ग़ानों का बहुत कुछ दर्प चूर्ण हो गया। शेख़ज़ादों ने जब नवाब को बुलाया, तब वे राजा रामनारायण के द्वारा एक करोड़ रुपए देने का वचन देकर मराठों को चढ़ा लाए और अफ़ग़ानों को परास्त किया। अफ़ग़ानों ने मल्हारराव से मिलकर संधि कर ली जिससे दोआब के १६ महाल अहमद ख़ाँ को मिले। (सवा० सला० अवध जि० १, पृ० ४८)

'जब सफ़दरजंग ने बंगश के युद्ध में विजय पाई तब सूरजमल को आगरा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सं० १८०६ में नवाब सफदरजंग के मंतव्यानुसार बादशाह की आज्ञा मिलने पर सुजानसिंह ने घासहरे के राव बहादुरसिंह बड़गूजर पर चढ़ाई की। इनके पुत्र जवाहरसिंह भी सहायता के लिये और सेना लेकर पिता के पास पहुँचे। राव ससैन्य दुर्ग के बाहर युद्धार्थ निकला, पर परास्त होने पर भीतर चला गया। सबके समझाने पर राव ने अंत में ज़ालिमसिंह को संधि के लिये भेजा, पर उनके यह निश्चित कर आने पर कि राव दस लाख रुपए और सब तोपें सुजानसिंह को दें, उन्होंने उस संधि को नहीं स्वीकार किया। इस प्रकार से अपनी बात जाती हुई देखकर ज़ालिमसिंह ने आत्महत्या कर ली। सुजानसिंह ने यह समाचार सुनकर अमरसिंह को पता लगाने के लिये भेजा। राव ने संधि के बहाने से अवसर मिलते ही बहुत माल पुत्र के पास दिल्ली भेज दिया जिसका पता मिलने पर सुजानसिंह ने क्रुद्ध होकर दुर्ग पर कड़ा धावा किया। राव को संधि करने के लिये लोगों ने बहुत समझाया, पर उसने एक न मानी। स्त्रियों ने अग्नि में प्राण विसर्जन कर दिए और राव ससैन्य दुर्ग से बाहर निकले। घोर युद्ध के अनतंर राव मारे गए और घासहरे का दुर्ग जीत लिया गया। *

सं० १८१० में सुजानसिंह ने नवाब सफ़दरजंग के सहायतार्थ दिल्ली पर चढ़ाई की थी। यहाँ कवि ने दिल्ली की राजावली का वर्णन किया है। राजा शांतनु से लेकर जनमेजय तक का वृतान्त

प्रांत मिला और मेवात तथा दिल्ली तक की भूमि उनके अधिकार में चली गई जिसकी आय दो करोड़ रुप थी।......एक लाख सवार और पैदल सेना में थे। इनकी प्रजा सुप्रबंध का सुख भोग रही थी।' मजमअल अख़बार, इलि० जि० ८, पृ० ३६१) सूदन जी ने भी लिखा है 'कि एक लाख तलवार जो सिनसिनवार की'। इससे सैनिकों की संख्या ठीक ज्ञात होती है।

* यहाँ सुजान-चरित्र की पाँचवीं जंग समाप्त होती है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

देकर फिर चौहानवंशीय पृथ्वीराज तथा मुहम्मद ग़ोरी के युद्धों का वर्णन किया है। इसके अनंतर पठानों के दो सौ वर्ष राज्य करने का उल्लेख करते हुए चग़त्ताई वंश के तैमूरलंग से अहमदशाह तक के बादशाहों का नाम तथा राज्य-काल आदि दिया है। अहमदशाह के वज़ीर सफ़दरजंग और बख़्शी ग़ाज़ीउद्दीन ख़ाँ* में मनोमालिन्य था। ग़ाज़ीउद्दीन ने बादशाह को समझाकर वज़ीर को यह आज्ञा भेजवाई कि तुम अपने प्रांत को चले जाओ और अंत में उसे दिल्ली से निकलवा दिया †। वज़ीर ने बदला लेने की इच्छा से दिल्ली के बाहर डेरा डाला और सुजानसिंह आदि अपने पक्षपातियों को बुलाया। सुजानसिंह की सम्मति से औरंगज़ेब

* यह निज़ाम आसफ़जाह के बड़े पुत्र थे और उनकी मृत्यु पर दक्षिण के पैतृक राज्य पर अधिकार करने के लिये मराठों के साथ हैदराबाद गए; पर उनके छोटे भाई सलाबत जंग ने युद्ध की तैयारी की। दैवात् युद्ध के पहले ही ग़ाज़ीउद्दीन ख़ाँ की मृत्यु हो गई। इनके पुत्र शहाबुद्दीन मुहम्मद ख़ाँ को नवाब सफ़दरजंग की कृपा से मीरबख़्शी का पद तथा अमीरुलउमरा ग़ाज़ीउद्दीन ख़ाँ इमादुलमुल्क की पदवी मिली। पर इन्होंने समय पर वज़ीर की सहायता नहीं की। सं० १८१७ में सूरजमल ने इन्हीं अपने शत्रु को अब्दाली की चढ़ाई के समय शरण दी थी।

† बादशाह अहमदशाह की माता कुदसिया बेगम की सहायता से जावेद ख़ाँ ने नवाब होकर साम्राज्य का कुल प्रबंध अपने हाथ लेना चाहा। यही वज़ीर सफ़दर जंग भी चाहते थे; इससे इन्होंने सूरजमल की मंत्रणा के बहाने दिल्ली बुलाया। २७ शव्वाल ११६५ हि० (सं० १८०९) को सफ़दरजंग ने नवाब बहादुर जावेद ख़ाँ को कपट से घर पर निमंत्रित कर मरवा डाला जिससे बादशाह अहमद शाह उनसे घृणा करने लगे थे। सफ़दरजंग के एक पत्रवाहक को बादशाह की आज्ञा के बिना दुर्ग के अध्यक्ष ने भीतर बुला लिया जिसपर बादशाह ने क्रुद्ध होकर उसे तथा सफ़दरजंग के नियुक्त किए अन्य मनुष्यों को दुर्ग से बाहर निकलवा दिया। नवाब सफ़दरजंग ने बादशाह का कोप देखकर अपनी सूबेदारी अवध को लौट जाने की आज्ञा माँगी, जो तुरत मिल गई। इस पर क्रुद्ध होकर नवाब ने दिल्ली लूटने का तथा बादशाह से बदला लेने का निश्चय किया।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

के पुत्र कामबख़्श के पौत्र को वज़ीर ने बुलाकर अकबरशाह की पदवी सहित बादशाह बनाया * और दिल्ली के ओर बढ़े। दिल्ली के बाहर आसपास की बारह बस्तियों को लूट लिया और लूटमार करते लाल दरवाज़े तक पहुँचे। अहमदशाह ने ग़ाज़ीउद्दीन ख़ाँ को वज़ीर और समसामुद्दौला को मीर बख़्शी की पदवी देकर युद्ध को भेजा †। घोर युद्ध पर लाल दरवाज़ा टूटा और बाज़ार लुटने लगा। यहाँ पर कवि ने अनेक जातियों की स्त्रियों का कलपना उन्हीं लोगों की अनेक भाषाओं में छंदोबद्ध किया है। बाज़ार का लुटना लिखते समय पशु-पक्षी, शस्त्र, बरतन, बाजा, कपड़े क,ी गहन, मिठाई, किराना आदि के नामों का छंदमय कोष ही तैयार कर डाला है।

इसके अनंतर लूट बंद कर दिल्ली और यमुना के बीच कोटरा में युद्ध आरंभ हुआ; पर अंत में यह देखकर कि दुर्ग की दृढ़ प्राचीर के रक्षा में प्रबल तोपख़ाने से केवल मनुष्य-हानि हो रही है, सुजान-सिंह ने वहाँ से सेना हटा ली। नवाब के दो सेनापतियों इसमाइल ख़ाँ और राजेंद्र गिरि ने सुजानसिंह के दो सेनापतियों के साथ दिल्ली पर अन्य स्थान से चढ़ाई की। इस युद्ध में राजेंद्रगिरि गोली से मारे गए ‡। तब नवाब ने उमरावगिरि और अनूप-

---

* सूरजमल तथा सलाबत ख़ाँ ज़ुलफ़िक़ार जंग की सम्मति से हुआ। बयाने वक़ी में लिखा है कि सफ़दरजंग ने एक युवक खोजे को जो खूबसूरत था, और जिसे नवाब शुजाउद्दौला ने इधर ही क्रय किया था अकबरशाह के नाम से बादशाह बनाया।

† वज़ीर कमरुद्दीन के पुत्र इंतज़ामुद्दौला वज़ीर तथा ख़ानदौराँ के पुत्र हिसाम ख़ाँ समसामुद्दौला तोपखाने के मीर आतिश नियुक्त किए गए थे। ग़ाज़ी-उद्दीन ख़ाँ पहले ही से अमीरुलउमरा अर्थात् प्रधान सेनापति थे।

‡ 'कुछ दिन युद्ध कर नवाब सफ़दर जंग ने नदी के तटस्थ मार्ग को शत्रु के दृढ़ मोरचे के कारण छोड़ दिया और ताल कटोरा की ओर से चढ़ाई की। यहाँ मृत्यु का नया नृत्य हुआ......युद्ध इतना घमासान था कि सफदरजंग का वीर सेनापति गोसाईं मारा गया।' बयाने वक़ी इलि० जि० ८, पृ० १३८।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गिरि को ख़िलअत देकर युद्धार्थ भेजा। यहाँ भी दोनों पक्ष के लोगों ने बड़ी वीरता दिखलाई और बहुत वीर मारे गए, पर दुर्ग न टूटा। तब सुजानसिंह ने वज़ीर की सम्मति से दिल्ली से कूच करने की आज्ञा दे दी। जब गाज़ीउद्दीन ख़ाँ ने सुना कि वज़ीर तथा सुजानसिंह तिलपत्ति को चले गए, तब बादशाह से आज्ञा लेकर वह ससैन्य रुहेलों की सहायता से पीछा करने चला। सुजानसिंह ने भी यह समाचार सुनकर गढ़ी के मैदान में युद्ध की तैयारी की और भीषण युद्ध के अनंतर ग़ाज़ीउद्दीन को परास्त कर भगा दिया।

कुछ दिन आराम कर वज़ीर तथा सुजानसिंह फिर दिल्ली पर चढ़ दौड़े। बादशाह ने भी युद्धार्थ सेना बाहर भेजी जिसमें कुछ मराठे भी सम्मिलित थे। बहुत देर तक युद्ध होता रहा, पर अंत में दिल्ली की सेना हारकर दिल्ली में घुस आई। वज़ीर तथा सुजानसिंह ने शत्रु को दुर्ग के बाहर लाने की इच्छा से अपनी सेनाओं को कूच करने की आज्ञा दे दी। यह समाचार सुनकर ग़ाज़ीउद्दीन ख़ाँ फिर बीस सहस्र सवार और तोपखाना लेकर युद्ध के लिये चला; परंतु दिल्ली से आठ कोस पर युद्ध में परास्त हो लौट गया। तब उसने जयपुराधिपति माधोसिंह तथा मराठों को सहायता के लिये आने को लिखा और स्वयं भी युद्ध के लिये भारी आयोजन करने लगा। इसके अनंतर बादशाही सेना ने फ़रीदाबाद में डेरा डाला। सुजानसिंह ने दक्षिण से सहायता पहुँचने के पहले ही इस पर धावा कर दिया और उसे पूर्णतया परास्त कर भगा दिया। इसी समय जयपुर-नरेश भी दस सहस्र सवारों के साथ आ पहुँचे और उन्होंने समझा बुझाकर संधि करा दी*।

* जयपुर-नरेश माधोसिंह द्वारा संधि-स्थापन का समर्थन तारीख़े मुज़फ़्फ़री भी करती है। छः महीने तक यह युद्ध जारी रहा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मराठों की सहायक सेना के पहुँचने पर ग़ाज़ीउद्दीन खाँ ने सुजानसिंह को दिल्ली लूटने तथा वज़ीर सफ़दरजंग का साथ देने के कारण दंड देना निश्चित किया और कुछ बादशाही सेना साथ देकर मल्हारराव को भरथपुर पर चढ़ाई करने भेजा। सुजानसिंह ने यह सुनकर रूपराम नामक एक पुरुष को भेद लेने के लिये मराठों की सेना में भेजा जिसने पहुँचते ही तुरंत पता लगाकर समाचार भेजा कि बल्लमगढ़ के दुर्गाध्यक्ष बल्लू चौधरी को महमूद आकबत* ने धोखा देकर मार डाला। इस पर सुजानसिंह ने अपने पुत्र जवाहिरसिंह को ससैन्य बरसाने भेजा। इधर मल्हारराव और आपाजी साठ सहस्र सेना के साथ जयपुर पहुँचे और राजस्थान के सभी राजाओं ने अपनी अपनी सेना भेजी। रूपराम मल्हारराव से मिले जिसने कहा कि यदि सुजानसिंह दो करोड़ रुपए यहीं न भेज देंगे तो उनके राज्य पर चढ़ाई की जायगी। रूपराम ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए व्रज-शोभा तथा कृष्ण-लीला का वर्णन किया।

मल्हारराव ने अपने पुत्र खंडेराव को कुछ सेना के साथ व्रज पर आगे भेजा जिसने मेवात को लूटते हुए व्रज के पास डेरा डाला। पर मल्हारराव तथा सुजानसिंह दोनों ही ने अपने पुत्रों को युद्ध न करने की आज्ञा भेजी। दीघ दुर्ग में जाटों की काउंसिल ऑव् वार अर्थात् युद्ध-समिति बैठी और युद्ध की तैयारी होने लगी। कुंभेर,

---

* मल्हारराव तथा जयापा के ६०००० सवारों के साथ पहुँचने पर ग़ाज़ीउद्दीन ने सूरजमल को दंड देना निश्चित किया। इंतज़ामुद्दौला वज़ीर ने सूरजमल से पचास लाख रुपए दंड लेकर क्षमा करना चाहा, पर ग़ाज़ीउद्दीन ने मराठों के उभाड़ने से नहीं माना और चढ़ाई कर दी।

† ग़ाज़ीउद्दीन का सेवक था जिसने अहमद शाह को गद्दी से उतारने और आलमगीर द्वितीय को बादशाह बनाने में सहायता दी थी। अंत में इसके बढ़ जाने पर ग़ाज़ीउद्दीन ने इसे मरवा डाला।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दीघ, भरतपुर आदि दुर्ग दृढ़ किए गए और उनमें युद्ध तथा भोजन के सामान भरे गए। मल्हारराव ने भी जयपुर से कूच किया और दो दिन की यात्रा के अनंतर रूपराम को फिर बुलाकर अपनी सेना का आतंक प्रकट करते हुए कहा कि क्या इस सेना से दस गुनी सेना बुलाई जाय। इसपर रूपराम ने कालयवन तथा उसकी असंख्य सेना के नाश की कथा कहकर दिखलाया कि व्रजाधिप (सुजानसिंह) को असंख्य सेना भी नहीं परास्त कर सकती।*

मल्हारराव ने सूरजमल को कुंभेर दुर्ग में घेर लिया और दुर्गों को छोड़ उनके राज्य पर अधिकार कर लिया। तीन महीने के युद्ध में मल्हारराव के पुत्र तथा प्रसिद्ध अहल्याबाई के पति खंडेराव मारे गए और कोई दुर्ग जीता न जा सका। एतमादुल्मुल्क ग़ाज़ीउद्दीन खाँ ने दुर्ग विजय करने के लिये दिल्ली से बड़ा तोपखाना मँगवाया, पर इंतज़ामुदौला वज़ीर ने भेजना अस्वीकार कर दिया। सं० १८११ के आरंभ में इंतज़ामुदौला ने स्वयं मराठों को उत्तरी भारत से निकालने के प्रयत्न में राजस्थान के राजाओं—माधोसिंह, रामसिंह—नवाब सफदरजंग और सूरजमल को मिलाया और निश्चित हुआ कि आगरे में बादशाही डेरा के पहुँचने पर सहायक सेनाएँ आकर सम्मिलित हों। बादशाह ससैन्य आगरे चले पर रास्ते में पता लगा कि मल्हारराव पचास सहस्र सेना सहित एक शाहज़ादे को लाने सलीमगढ़ गए हैं। बादशाह यह सुन, घबराए हुए थे कि इतने मराठों की सेना आ पहुँची और तोप आग उगलने लगी। बादशाह बिना किसी से राय लिए दिल्ली लौट गए और मल्हारराव भी पीछा करते हुए दिल्ली गए। जयापा ने अकेले कुंभेर विजय करना असंभव

---

* सुजान-चरित्र यहीं समाप्त होता है। इसके आगे का वृत्तांत फ़ारसी के इतिहासों से लिया गया है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

समझ घेरा उठा दिया। सूरजमल ने मराठों से संधि कर ली और अपने कुल राज्य पर अधिकार कर लिया।

सं० १८१४ में अहमदशाह अब्दाली ने सूरजमल पर चढ़ाई की और इनके दुर्ग बल्लमगढ़ पर अधिकार कर लिया जो दिल्ली से पंद्रह कोस पर है। इसके अनंतर उसने मथुरा लूटी और फिर अपने सेनापति जहाँ खाँ को जाट दुर्गों को लेने के लिये भेजा। पर इसी समय शाह की सेना में महामारी इतने वेग से फैली कि अंत में उसे यह प्रयत्न छोड़ना पड़ा।

सं० १८१७ में जब पेशवा ने विश्वासराव तथा सदाशिवराव भाऊ की अधीनता में प्रबल सेना अब्दाली को परास्त करने के लिये भेजी और ये आगरे पहुँचे, तब मल्हारराव होल्कर तथा जंकोजी सूरजमल को लाने के लिये गए। जब सूरजमल आगरे पहुँचे, तब भाऊ ने एक कोस आगे बढ़कर स्वागत किया। युद्ध-समिति में इन्होंने सम्मति दी कि भारी तोपखाना, स्त्रियाँ, और सामान आदि झाँसी दुर्ग में रखे जायँ तथा एक ही घमासान युद्ध न करके मराठी चाल का युद्ध किया जाय। अन्य सभी सरदारों ने इसका समर्थन किया, पर अनुभव-हीन विश्वासराव ने यौवनोन्मत्त होने के कारण इसको नहीं माना। विश्वासराव ने यहाँ से कूच कर दिल्ली को घेर लिया और उस पर अधिकार कर वर्षा ऋतु वहीं व्यतीत की। सूरजमल ने मराठों का पराजित होना निश्चय समझकर अपने स्थान सराय बदरपुर से जो दिल्ली से छ कोस पर है, भाऊ से बिना कहे अपने दुर्ग बल्लमगढ़ में चले आए। इसी वर्ष इन्होंने आगरा दुर्ग पर अधिकार कर लिया था।

पानीपत के तृतीय युद्ध के अंत में सदाशिवराव भाऊ की स्त्री तथा शमशेर बहादुर भागकर डीग के दुर्ग में पहुँचे। यहाँ शमशेर बहादुर घावों के कारण मर गया और सूरजमल ने भाऊ की स्त्री

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

को प्रतिष्ठा के साथ दो तीन दिन आतिथ्य कर तथा योग्य रक्षक देकर दक्षिण पहुँचवा दिया।

सं० १८२१ में जब शाहआलम द्वितीय बादशाह, शाहजादा जवाँ बख्त युवराज और नजीबुद्दौला रुहेला वजीर थे, तब सूरजमल ने दिल्ली विजय करने की इच्छा से उस पर चढ़ाई की। नजीबुद्दौला ने युद्ध का साहस न कर सकने पर संधि करने के लिये बहुत प्रार्थना की, पर इन्होंने नहीं माना। युद्धस्थल में विजय तथा पराजय होने के अनेक कारण होते हैं जिनमें एक प्रधान कारण वह है जो बलाबल या योग्यतर सेनापति की दूरदर्शिता पर भी निर्भर नहीं रहता। वह किसी अदृश्य कर्ता की कृति होती है जिसमें मनुष्य किसी प्रकार हस्तक्षेप नहीं कर सकता। जब दोनों पक्षों की सेनाएँ युद्धार्थ तैयार थीं, तब सूरजमल कुछ सैनिकों के साथ अपने एक तोपखाने का निरीक्षण करने सैन्य से कुछ दूर चले गए; और जिस समय वह गुप्त रूप से तोपखाने तथा शत्रु-सैन्य के बीच खड़े हुए अपनी सेना की कृति देख रहे थे जो नजीबुदौला को घेरने भेजी गई थी, उसी समय रुहेलों की एक टुकड़ी जो जाटों से लुटकर भाग रही थी एकाएक इन्हीं की ओर आ पड़ी। नजीब खाँ का एक जमादार इन्हें पहचानकर सौ रुहेलों के साथ इन पर टूट पड़ा और ये वीरतापूर्वक लड़कर वीरगति को प्राप्त हुए। इस दैवी दुर्घटना से जाटों की सेना भाग निकली और रुहेलों के हाथ बहुत लूट का माल आया।

सूरजमल की मृत्यु पर इनके बड़े पुत्र जवाहिर सिंह राजा हुए और पिता का बदला लेने को दिल्ली पर चढ़ाई की। अंत में मल्हारराव के मध्यस्थ होने पर संधि हो गई। सं० १८२३ में रघूजी ने जवाहिरसिंह से कर माँगा, तब इन्होंने हिम्मत बहादुर और उमरावगिरि को बात चीत करने भेजा पर उन्होंने मराठों से धन लेकर जवाहिर-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सिंह को उनके हाथ में देने का विचार किया जिसका पता पाकर इन्होंने उन्हें पकड़ने को सेना भेजी, पर वे भाग गए। सं० १८२५ में जवाहिरसिंह ने जयपुर-नरेश महाराज माधोसिंह पर पुष्कर स्नान के बहाने चढ़ाई की; परंतु हरसुख राय खत्री के अधीनस्थ चुनी हुई राजपूत सेना के धावों से परास्त हो भागना पड़ा। आगरे में हाथियों का युद्ध देखते समय किसी घातक के हाथ से इनकी मृत्यु हुई। तब इनके भाई रतनसिंह राजा हुए।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुजान-चरित्र

प्रथम जंग

छप्पय

प्रनत गिरा गिरिईस गवरि गौरी गिरिधारन।
गोकर गायत्री सुगोधरन तिय गोहारन॥
गंग गाइ गोमती गलौ ग्रहपति अरु सुरगिर।
गंध्रपेस गीर्वानु गुह्यपति गंधवाह गुर॥
गन गुड़ाकेस गांगेयहू गगनचरहु सुनि लिज्जियै।
कर जोरि प्रनति सूदन करत इक ग्रह गोपति किज्जियै॥ १॥

उसनाईस कबीस बहुरि बालमीक ब्यास मुनि।
पवनपूत बिधिपूत सूत सनकादि बहुरि गुनि॥
संकर अरु जयदेव दंडि जज्जट मम्मट, नर।
कैयट भार्गव बिदित श्रीधररु कालिदास बर॥
बर बोपदेव श्रीहर्ष कहि माघ महोदधि जानि चित।
सुर नर मुनि सुर सब्द कवि प्रनति करतु सूदन सहित॥ २॥

दोहा

ज्यौं ज्यौं कलि उद्धत भयो त्यौं त्यौं घटि गई बुद्ध।
अब के कवि भाषा कहत तऊ न समझत सुद्ध॥ ३॥

कवित्त

केशव किशोर कासी कुलपति कालिदास
केहरि कल्यान कर्न कुंदन कविंद से।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कंचन कमंच कृष्ण केसौराय कनकसेन
केवल करीम कविराइ कोकचंद से ।
कुँवर किदार खानखाना खगपति खेम
गंगापति गंग गिरिधरन गयंद से ।
गोप गद्द गदाधर गोपीनाथ गदाधर
गोरधन गोकुल गुलाब जी गुबिंद से ॥ ४ ॥

घन घनस्याम घासीराम नरहरि नैन
नाइक नवल नंद निपट निहारे हैं ।
नित्यानंद नंदन नरोतम निहाल नेही
नाहर निवाज नंद नाम अजवारे हैं ।
चंद बरदाई चंद चिंतामनि चेतन हैं
चतुर चतुर चिरजीव चतुरारे हैं ।
छीतरु छबीले जदुनाथ जगनाथ जीव
जयकृष्ण जसुवंत जगन बिचारे हैं ॥ ५ ।

टीकाराम टोडर तुरत तारापति तेज
तुलसी तिलोक देव दूलह दयाल से ।
दया देव देवीदास दूनाराइ दामोदर
धीरधर धीर औ धुरंधर बिसाल से ।
पंडित प्रसिद्ध पुषी पीत पहलाद पाती
प्रेम परमानंद परम प्रतपाल से ।
परबत प्रेमी परसोतम बिहारी बान
बीरबर बीर बिजै बालकृष्ण बाल से ॥ ६ ॥

बलभद्र बल्लभरसिक बिंध (बृंद ?) बृंदाबन
बंसीधर ब्रह्म औ बसंत बुद्ध राबरे ।
भूषन से भूधर मुकुंद मनिकंठ माधौ
मतिराम मोहन मलूक मत बाबरे ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मंडन मुबारख मुनीस मकरंद मान
मुरली मदन मित्र मरजाद गाव रे।
अच्छर अनंत अग्र आलम अमर आदि
अहंमद आजमखान अभिमान आव रे॥ ७॥
इच्छाराम ईसुर उमापति उदय ऊधौ
उद्धत उदयनाथ आनँद अमाने हैं।
राधाकृष्ण रघुराइ रमापति रामकृष्ण
राम से रहीम रनछोर राइ राने हैं।
लीलाधर लीलकंठ लोकनाथ लीलापति
लोकमनि लाल लच्छ लछी लोक जाने हैं।
सूरदास सूर से सिरोमनि सदानँद से
सुंदर सभा से सुखदेव संत माने हैं॥ ८॥
सोमनाथ सूरज सनेही सेख स्यामलाल
साहिब सुमेरि सिवदास सिवराम हैं।
सेनापति सूरति सरबसुख सुखलाल
श्रीधर सुबलसिंह श्रीपति सुनाम हैं।
हरिपरसाद हरिदास हरिबंस हरी
हरिहर हीरा से हुसेनि हितराम हैं।
जस के जहाज जगदीस के परम मीत
सूदन कविंदन कौं मेरो परनाम हैं॥ ९॥

सोरठा

मथुरापुर सुभधाम माथुर कुल उतपत्ति बर।
पिता बसंत सुनाम सूदन जानहु सकल कवि॥१०॥

छप्पय

मच्छ कच्छ बाराह सिंहनर कपिल मन्वंतर।
बामन हरि दुजराम राम बलिराम धन्वंतर॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सनकादिक रिषदेव हंस मोहनी ध्रुवच्छुर।
ब्यास जग्य दत्रेय वृद्ध नारद सुमुनीवर॥
नरनाराइन निकलंक प्रभु ए चौबीस सरूप लहि।
अवतार अवधि परब्रह्म की परमावधि ब्रंजचंद कहि॥११॥

कवित्त

अदिति असोक भरी सोक भरी दिति और
दोष भरी पूतना अदोष करी ओपिका।
कंस हियै भौ भरी अभौ भरी अंधवंस
पंडव कैं कीरति अकीरति की लोपिका।
लाज भरी द्रोपदी सुराज भरी व्रजभूमि
*कूवरी इलाज सो अवाज करी कोपिका।
देवकी अनंद भरी ऊगैं व्रजचंद घरी
भाग भरी जसुदा सुहाग भरी गोपिका॥१२॥

छंद अनुगीत

तिहिं वंस में परसंस लाइक नृपनु के अवतंस।
अरि कंस लौं निरवंस कीने तपत नभ ज्यों हंस॥
जग उदित उद्धत जदुकुलनु में भयौ भूरे भूप।
ताकौ भयौ सुत रौरिया सो रौरि ही के रूप॥
वह रौरिया अरि रौरिया रनवंस में उद्दोत।
परताप मेंटन भौ पचै परताप कौ सौ गोत॥
तिहिं पचै कैं सुंदर सचे ताकै मदू महिपाल।
मदुमर्दनौं महि के महीपनु साहि कौ उर साल॥
ताकें भये प्रथिराज सुत प्रथिराज के परवान।
पहिले प्रथीपति नाम दीनो पैज करि भगवान॥

---

* पाठांतर—कुवरी इलाज भरी साज सद सोपिका।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पुनि भयौ मकनि भुवाल भूपह भय बिनासन जोग ।
जिन कियौ ससिकुल प्रगट भू पर निखिल बसुधा भोग ॥
सुत भयौ तिनकैं खानचंद अमंद चंद समान ।
तिनि आपनी किरिवान सौं बसु कियौ सकल जहान ॥
ब्रजराज तिनके और तौ ब्रजराज के परताप ।
जिनि साहि के दल गाहिकैं निज साहिबी करि थाप ॥
पुनि भयौ भूपति भावसिंह भुजान बल भरपूर ।
रविबंस में ज्यौं करनु त्यौं ससिबंस कौ वह सूर ॥
ता भावसिंह भुवाल कें बदनेस नाम नरेस ।
नहिं ता समान धनेसहू नखतेस और दिनेस ॥
हैं बदनसिंह महेंद्र महि पर धर्मधुरँधर धोर ।
ताकौ कुवाँर सुजानसिंह सुकरै पर उर-पीर ॥
जिन जीति बसुधा नीति सौं कहुँ भीति राखी नाहिं ।
इक प्रीति श्रीहरदेव को कै पिता के पद माहिं ॥
सुत प्रगटियौ तिनकै जवाहर जगत जाहर बीर ।
जिनि साहि के दरबार माहिं सुकिये हुकमीं मीर ॥
सुलतान अहमदसाहि आपु सराहि नौबत दीन ।
और राजा राइ तें पदवी सवाई कीन ॥१३॥

दोहा

सूरंजमल्ल कुवाँर कैं भयौ सहोदर बीर ।
सिंहप्रताप प्रतापनिधि जाकौ जस गंभीर ॥१४॥
संग निजामुलमुलुक कौ गढ़ भूपाल मँझार ।
जीत्यौ बाजीराव सौं सिंहप्रताप कुवाँर ॥१५॥
सो प्रताप सुर-लोक कौ बेधि गयौ परलोक ।
रह्यौ बहादुर सिंह सुत राजनीति कौ ओक ॥१६॥
जोधसिंह जग-जोध पुनि देवीसिंह अमान ।
दोइ सहोदर ए भए साहस-सीलनिधान ॥१७॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दोइ सहोदर द्वै सु प मेदसिंह मरदान।
अनुज भवानीसिंह लघु नलकूबर परवान ॥१८॥
अषैसिंह अमनैंत इक खलखण्डन बलवंड।
महाधीर गंभीर अति जाकी तेग प्रचंड ॥१९॥
सुलताननु जाहर भयौ सो सुलतान कुवाँर।
सुतौ गयौ सुरलोक कौं सुत भौ छत्र त्रिदार ॥२०॥
सभाराम साहस भर्‌यौ सरस सील कौ धाम।
सोहति जाकौं साहिबी सुंदर सुहृद सुनाम ॥२१॥
सकल कला पूरन प्रबल राम सुबल इह नाम।
तेग धरैं त्रिपुरारि सौं क्रुद्ध जुद्ध के काम ॥२२॥
मानसिंह रन रंग में मानव-सिंह समान।
त्यौं गुमान गुरुवौ बहुरि पीवन पर के प्रान ॥२३॥
दिल दलेल दल दल-मदन सिंह दलेल कुवाँर।
जाके दिल की ना लहै समता सक्र उदार ॥२४॥
बीरनराइन बीर अति पीर-हरन रनधीर।
गुनगाहकु दाहकु अरिनु बाहक सुजस गंभीर ॥२५॥
रामकृष्ण करोर नहिं बलिधारी बलराम।
सिंह खुस्याल खुस्याल मुख समर सुभट अभिराम॥२६॥
लालसिंह लाइक गुननु लाजवंत जसवंत।
उदैसिंह लघु तनय के गुन जानत गुनवंत ॥२७॥
सबै बीर सब धीर अति सबै सुधारन काज।
हैं ब्रजेस के पूत बहु पै सुजान सिरताज ॥२८॥
त्यौंही सिंह सुजान कैं प्रथम जवाहर जान।
नाहर रतन उभै सु प नवलहरी बहुमान ॥२९॥

कवित्त

पाँच कुरपस के महेस के उभय भये
तैसही दिनेस के सुपक है निसेस के।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तुम जाइ कहहु नवाब सों जो साँचु राखत जीय में।
तौ एक बार मिलै हमैं नहिं बात कहनी बीय में॥ १०॥

दोहा

ऐसे बचन सुजान के सुनि वकील सुखकान।
फिर बोल्यौ हित स्वामि कौं करत बहुत सनमान॥ ११॥

छंद भुजंगी

महाराज बदनेस भौ भाग पूरौ।
भयौ तासु के पूत पनपाल रूरौ॥
रहै भूप सोई तिहारौ कहावै।
सबै सुक्ख पावै सरन ताकि आवै॥
बसै बाँह की छाँह मैं छत्रधारी।
हिये साहि के साहि के संग पारी॥
सबै राइरानैंनु अवलंबु लीनौ।
कियौ खान सुलतान कौ मान हीनो॥
जबै इंद्र के नग्र कौ सेतु फूट्यौ।
तहाँ बीर तैंही जसै एक लूट्यौ॥
हुते सत्रु जेते भये ते भिखारी।
मवासे मवासीनु की जौम भारी॥
किते काम क्रोधी बिरोधी बिहंडे।
छिपे छुद्र छैला छली छिद्र खंडे॥
चलाई सबै राह दिन राति माहीं।
बिना दोष के लोक कौं टेक नाहीं॥
प्रजापाल जनपाल पनपाल होसौ।
भयो भूप बदनेस सुत पाइ तो सौ॥
करी कीर्ति ईरान तूरान ताँई।
फिरंगा तिलंगान हबसान गाई॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जिसै पाल लीने महीपाल औरौ ।
तिसै आपनौ नाम की ओर दौरौ ॥
करो आपनो ही फते हू अली कौ ।
नहीं ढील कीजै बनै जौं भली कौ ॥
महाराज की जो अवै सीख पाऊँ ।
दिना दोइ कै तीन मैं लै मिलाऊँ ॥
घरी चार को खेल आखेट साजैं ।
महाराज हू आइ ईखू बिराजैं ॥
फतेहू अली आइहै आप पासै ।
करै बंदगी कौं यहै वाहि आसै ॥१२॥

दोहा

रुखसत पाइ सुजान तें सो वकील सिर नाइ ।
आयौ जहाँ फतेअली कही सुकही बनाइ ॥१३॥
जो कछु कही वकील ने फतेअली मन मानि ।
सूरज सों मिलनौ भलौ तौ जीवन जिय जान ॥१४॥
साइत सोधि सवार ह्वै करि सलाह सजि सैन ।
सूरज हू आखेट मिस ईखू लयौ ससैन ॥१५॥
फतेअली आयो उतै संग पाँच सै ज्वान ।
जहाँ हुतौ सूरज बली बदन-पूत भुवमान ॥१६॥

सोरठा

फतेअली हय छोड़ सूरज पै आयो पगनि ।
जैसे रवि की गोड़ ससि आवतु तप ताप तैं ॥१७॥
फतेअली सिर नाइ त्यौं ही सूरज हू कियौ ॥
मिले परस्पर धाइ दुहूँ अंक भरि अंक सौं ॥१८॥
जिते संग सरदार तिन सौं मिल्यो फतेअली ।
कुसल बूझि तिहिं बार बैठ गये दोऊ निकट ॥१९॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छंद पवंग।

फिरि बदनेस कुवाँर बियौसु फतेअली।
बैठे इकले जाइ करन मसलति भली॥
घरी दोइ बतराइ दुहूँ के मन रले।
कौल बचन करि एक दोऊ डेरा चले॥२०॥

दोहा

साबितखाँ सुत कोल में जबहीं पहुँच्यौ जाय।
सूरज हू आखेट करि आयौ सहज सुभाय॥२१॥

छंद हरगीत

भूपाल-पालक-भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं।
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महा कलकान हैं॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकै।
सु फतेअली-सूरज-मिलन यौं अंक दुतिय सुगाइकै॥२२॥

इति द्वितीय अङ्क॥२॥

छंद दुपई

असद खान खानजादौ हू ऐसे सुनिकै आयौ।
फतेअली रु कुँवर साहिब को ब्यौरौ बेगि पठायौ॥ १॥
सुनत तुरत महराज-कुँवर ने बकसी आपु बुलायौ।
तुम चंडौस जाहु नकदी लै मोको जानो आयौ॥ २॥
हुकुम पाइकै श्रीसुजान कौ दलपति निज सिर नायौ।
बोलि नकीब कही सरदारन तुरतै कूँच करायौ॥ ३॥
भले भले सरदार सूर मिलि तनक न देर लगायौ।
चाख्यौ बरन नरन में उद्धत निज्जु निज्जु पटह बजायौ॥ ४॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कवित्त

कूरम रठौर गौड़ हाड़ा चहुँवान मौर,
तोमर चँदेल जादौं जंग जितवार हैं ।
पौरच पुँडीर परिहार औ पँवार बैस,
सेंगर सिसौदिया सुलंकी दितवार हैं ।
सुरको बघेले खीची खीचर बुँदेले बाँके,
बारहे बनाफर सदा ही इतबार हैं ।
बीर बड़गूजर जसाउत सिकर वार,
होत असवार जे करत निरवार हैं ॥ ५ ॥

जाइस जघारे जूझा भाभरे भरत भीर,
धाकरे धधल धाये मानत अमाने कौ ।
मुगल पठान सेख सैयद भुजान भारे,
मेव मतवारे खानजादे बाँधि बाने कौ ।
गूजर अहीर मेना वरगी बलाहक से,
वाहक भुसुंडी ललचाने जंग ठाने कौ ।
बाजत निसाने फहराने हैं निसाने कैयौं,
सूरज ने माने ते न माने राइराने कौ ॥ ६ ॥

दोहा

आयो मदति सुजान दलु फतेअली सुनि कान ।
कोस आठ चलि कोल तें आयौ देतु निसान ॥ ७ ॥
सूरज बली फतेअली दोऊ एकं निहारि ।
जिमींदार की रारि यह आयो राउ बिचारि ॥ ८ ॥
फतेअली ने फिर लिख्यौ सुनि महराज-कुँवार ।
बिना आपुके आवने मोसौं थँमै न रार ॥ ९ ॥
सुनत सँदेस नवाब कौ श्री सुजान बलवान ।
चारि तबेले संग लै ईशू लयौ पयान ॥ १० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

असदखानहूँ कूँच करि आयौ कोस छु सात।
काहू की मानी नहीं समुझि बैर की बात ॥ ११ ॥
चारिहु ओर चंडोस के चारि तीनि द्वै कोस।
चार्यौ सरदारन दये डेरा निजु निजु रोस ॥ १२ ॥

छंद बत्तीसा कवित्त

उद्धत असदखान कुद्ध कौ निधान जान,
लेन उनमान फतेअली ने पठायौ दूत।
कहियौ नवाब सौं सलाम मैं भी हाजर हौं,
जानत न कौल दरपुस्त यह मेरा कूत।
ईधर न आओ तौ मेहर फुरमाओ मुझै,
बंदे हम साहि के हमेसा हमें तुम्हें सूत।
खातिर न आवै तो सुबाही बंदा बंदगी मैं,
मौला जिसै देहिगा रहैगा खेत मजबूत ॥ १३ ॥

सुनी दूत बानी महामानी खानजादे जब,
हियै अहटानी हैं रिसानी देह ता समैं।
दूत कौं बुलाइ कही जाह तेरे आगा पास,
कोई रोज चाहै जान जाना तौ अवास में।
मुझै आया जाने जाया मानें तौ ठिकाने रहि,
फजर की गजर बजाऊँ तेरे पास में।
लाऊँ उसै रास मैं सभा समैं सबै सुनाइ,
तेग ही के त्रास में हुतास जैसें घास में ॥ १४ ॥

छंद द्रुमला

ऊतरु यह दैके दूत पठैकै असदखान यह रोस भर्यो।
बोल्यौ सब बीरन कुल के धीरन जिन न चरन रन उलटि धर्यो ॥
तुम करौ तयारी सब इस बारी मैं दिल यह इतकाद कर्यौ।
मुझ को तो लरना देर न करना आइ साहि को काज पर्यो ॥१५॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छंद लच्छीधर

खानजादे सबै बीर बादे तहीं। आपु कीया सही होइगा सो वही ॥
पै इती बंदगी भी हमारी सुनो। रोज दो तीन मैं लै हरीफै धुनौ ॥
साहि के काज पै आपु आये चले। देर सौं काज कीयैं दिखाओ भले ॥
फौज केती इतै और बैरी किते। सोधि लीए बिना जंग कोऊ जिते ॥
एक तौ जानते हौ फतेही अली। जट्ट दूजा हुआ सङ्ग ताके बली ॥
आपनी फौज तौ आवती है चली। होइ दूनी जबै जंग कीजै भली ॥
और कीजै इकट्ठे जिमीदार भी। जे तुमें चाहते पार भी वार भी ॥
तोपखाना दिया साहि का आयहै। ताहि आगै धरे जंग को पायहै ॥
हाल तो हस्त हज्जार घोड़े सही। तोपखाना कछू त्यार हूवा नहीं ॥
बीस हज्जार असवार दिन दोइ मैं। साथ हूएँ लरैं ताब है कोय मैं ॥
आप डेरा करौ एक कै दो दिना। जंग कोऊ करै जंग कीये बिना ॥
यौं हमैं बंदगी कौं बजाए बजा। और कीजै वही आपकी जो रजा ।१६।

छंद दुपई

ऐसे अरज करी उमरावनु असदखान फुरमायौ।
तुम जो कही सही मैं कीनो दिल कौ दरद न पायौ ॥१७॥
जौ न लरौ हौं काल्हि उन्हौं सौं तौ दिल अंदर आनौ।
फतेअली सूरज के लोगौं घेरा कीया जानौ ॥१८॥
अरु तुम कहत फौज का आवन सो आवन नहिं पावै।
दाना घास घीव आटा जब रुपये सेर बिकावै ॥१९॥
अरु तुम सुनौं खानजादा हौं घेरा क्या जु करावै।
इस जीने से मरना भरना लरना ही बनि आवै ॥२०॥
जाना होइ जाउ सो डेरैं मैं भी इसमैं राजी।
मेरा भी फरजंद चलैगा मेरा मानि कहा जी ॥२१॥

चौबोला छंद

निसा साम जाइ सो जावै एक जाम जब साम रहै।
डंका दै असवार होहुगा बड़ी फजर समसेरैं बहै ॥२२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जो कोइ चला बिदा करि तिसकौं असदखान फुरमाइ उठ्यौ।
पहर राति सौं होहि नगारा ख्वाबगाह कौ गयौ रुठ्यौ ॥२३॥

दोहा

तीन पहर इतकाद सौं अपनो इष्ट मनाइ।
पहर राति रहते बखत डंका दियौ बजाइ ॥२४॥
आपु गुसल करि सिलह करि हुवैं नगारे दोइ।
देत नगारे तीसरे ह्वै सवार सब कोइ ॥२५॥

कड़खा छंद

होत असवार तिहँ बार हय नैन तें,
नीर छूट्यौ चढ़त तंग टूट्यौ।
कंक बाइस उलू गिद्ध सुर असुभ कहि,
बदन कौ रंग उहिं बार छूट्यौ।
पवन रूखो बह्यौ सबनु नाहीं कह्यौ,
कंठ मानौ किहूँ आन घूँट्यौ।
होत उतपात रन जात आनैं न उर,
काल-बस जंग तें नाहिं हूट्यौ ॥२६॥
किते पखरैत बखतरनि साजैं चढ़े,
किते साधे कढ़े धनुषधारी।
किते निज बाज पर बाज पट्टे लिये,
किते कट्टेनु बरछी सम्हारी।
किते बंदूक बेचूक फरसा किते,
तेग तेगा सुधारी दुधारी।
मीरजादे सजे भानुजादे सही,
खानजादेन की सो सवारी ॥२७॥
देत डंके चढ़े ह्वै निसंके बढ़े,
सबै आयुध मढ़े तेह तत्ते।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मुच्छ पर हत्थ तन सुच्छ अंबर धरे,
तुच्छ नहिं बीर रसरंग रत्ते।
डुब्बही डुब्ब भट पुब्ब चाहत चल्यौ,
दुब्बि रहना नहीं यौं उमत्ते।
साजि छ हजार असवार आये बली,
स्वामि के काम हित कहत फत्ते ॥२८॥
जाल जज्जाल हयनाल गयनाल हू,
बान नीसान फहरान लागे।
सूर-मुख-नूर सुर तूर जब पूरिया,
भेरि-भभकार सुनि कूर भागे।
नदत दुंदुभि ढका बदत मारू हका,
चलत लागत धका कहत आगे।
समर की चाह उच्छाह वह बाहिनी,
सुनत ही सोर चहुँ ओर जागे ॥ २९ ॥

दोहा

असदखान असवार ह्वै जबहीं कियौ पयान ॥
फतेअली के चर तबै खबर करी यह आनि ॥ ३० ॥
तबही सिंह सुजान के हलकारा ने दौर ॥
फतेअली सौं रारि है जो कछु करनी गौर ॥ ३१ ॥

छन्द पद्धरी

तबहीं सवार ह्वै कै सुजान। कलि भारथ कौं मनु भीम आन ॥
चहुँ ओर घोर बज्जे निसान। गज्जे जलद मानो भयान ॥
फहरान धुजा मनु अंस भानु। कै तड़ित चहूँ दिस तरतरान ॥
सज्जे हयंद जे भरे सान। गज्जे सुभट्ट लै लै दवान ॥
चहुँवान चंड चंदेल गौर। कूरम बघेल राठौर मौर ॥
तोमर पँवार खीची खँगार। परिहार सुजादव कसि हथ्यार ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सँगर सिसौदिया करि सिलाह। पौरच बड़गूजर सजे बाह॥
जे भए बाहु तिहुँ लोक ईस। सज्जे सुजान सँग ते महीस॥
जदुबंस जट्ट सज्जे सुभट्ट। सिनिसिनियवार गव्वर गरट्ट॥
खूँटैल सुसोगरवार वीर। चाहर जग जाहर समरधीर॥
सजि देस वार भौंगरे वाज। रुतवार और खिनवार साज॥
नुहवारसु गोधेहगा चट्टि। भिनवार गूदरे कढ़िय बट्टि॥
डागुर पछाँदरे धरि मरोर। बहु जट्ट ठट्ठ बट्टे सजोर॥
सब आनि मान बदनेस-पूत। सजि सैन चलिय सरिता अभूत॥
एक सहस बाजि साजै जुझौर। हैं आगैं गोकुल राम गौर॥
सत सात तुरी कूरम प्रतापु। दाहिने रह्यौ पर दल उथापु॥
ब्रजसिंह पाँच सत हय अमान। करि बाम बाहु रच्छक सुजान॥
अरु रामचंद तोमर कुँवार। ठाकुर सुदास सँगर उदार॥
पुनि फतेसिंह बलवान बैस। वह समरसिंह चंदेल हैस॥
है मेदसिंह चहुँवान वीर। सत पाँच तुरंगम ए गँभीर॥
अपने अगार हरबल्लपिट्ठि। ए श्रीसुजान सँग रहे दिट्ठि॥
गजसिंह महामति समर धीर। सो तौ सुजान के रह्यौ तीर॥
स्यौसिंह द्विजनु वरु उदैभान। राखे ब्रजेससुत सन्निधान॥
हरिनाराइन लघु बैस चंड। सोहू सुजान आगैं प्रचंड॥
अरु किते बीर चंदौल राखि। जिनके सुजीति परतीति साखि॥
गति धीर धीर बह चली सैन। रजरंजित अंबर अक्क ऐन॥
डंका निनद्द छाये अहद्द। रनसिंह तूर बेहद्द सद्द॥
यह फतेअलीहू खबर पाइ। आयौ सहस्र द्वै हय बनाइ॥
नौबत निसान बहुमान अग्ग। गज ऊपर बैठ्यौ धरि उमग्ग॥
तिहि संग ठान ठानैं पठान। बहु मुगल सेख सैयद अमान॥
चंडौस खेत पग देत लेत। साजे सनाह आये सहेत॥
इक ओर सहस हय राउ संग। ठाढ़ो बड़गूजर दुहुँ प्रसंग॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चाख्यौ निसान चाख्यौ दिसान। फहरावति आवति धरि धवान ॥
चढ़ि चार घटी असमान भान। सुत साबितखाँ अरु असदखान ॥
दुहुँ दलन परस्पर भई दीठि। हथियार चमकि चहुँघा बसीठि ॥
छुट्टी जँजाल दुहुँघा कराल। बंदूकवान हयनाल नाल ॥
अरु लौहजंत्र जग्गे बिसाल। मनु गजतु घोर दुहुँ ओर काल॥३२॥

हरगीत छंद

भूपाल-पालक-भूमिहति बदनेसनंद सुजान हैं।
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं ॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकै।
दुहुँ सेन दरसन युद्ध परसन त्रितिय अंक सुनाइकै ॥३३॥

इति तृतीय अंक ॥ ३ ॥

छप्पय

मिली परस्पर डीठि बीर पग्गिय रिस अग्गिय।
जग्गिय जुद्ध विरुद्ध उद्ध पलचर खग खग्गिय ॥
भग्गिय सद्द शृगाल काल दै ताल उमग्गिय।
लग्गिय प्रेत पिसाच पत्र जुग्गिनि लै नग्गिय ॥
रग्गिय सुरग्ग रंभादि गण रुद्र रहस आवज धमिय।
उच्छाह करकि उच्छाह भट दुहुँ सिपाह जब झमझमिय॥१॥

हरगीत छंद

झमझमत सिप्पर सेल साँगरु जिरह जेगा दीसियं।
मनु सहित उडुगन नवग्रहनु मिलि जुद्ध रच्चि बरीसियं ॥
धमधमत धरनि धवानि धावत चंड हत्थ भुसंडियं।
रजमंडियं भुवखंडियं हय छुंडियं पर दंडियं ॥
सँ नँ मँ नँ नँ नँ नँ छुट्टियं सर जुट्टियं नहिं हुट्टियं।
फँ मँ नँ नँ नँ नँ नँ तन फुट्टियं उर टुट्टियं भुव लुट्टियं ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

खँ नँ नँ नँ नँ नँ नँ घुट्टियं लगि बान सौं असि मुट्टियं ।
धँ नँ नँ नँ नँ नँ नँ चुट्टियं भट मुट्टियं गर घुट्टियं ॥
दुहुँ पिलत आयुध एकरे फिरि एकरेसु अनेकरे ।
बद जे करे तै टे करे जे ने करे सु जुदे करे ॥
करके करे गहि टेकरे सुजुटेकरे इक एकरे ।
ले ले करे दे दे करे सुर एकरे सुअनेकरे ॥२॥

कवित्त

अनी दोऊ बनी घनी लोह कोह सनी धनी
धर्मनु की मनी बान बीतत निषंग में ।
हाथी हटि जात साथी संगन थिरात औन
भारती में न्हात गंग कीरति-तरंग में ।
भानु की सुता सी कवि सूदन निकारी तेग
बाहत सराहत कराहत न अंग में ।
बीर रस रंग में यौं आनँद उमंग में सो
पगु पगु प्राग होत जोधन कौं जंग में ॥३॥

छंद लछमीधर

खानजादे इते मीरजादे दुऔ । खेत माहीं भिरे जुद्ध भारी हुवौ ॥
तेग तेगौ किते साँग साँगौ मिले । सेल सेलौ पटे हूल कीयें पिले ॥
बाँकडोरी फरस्सानि लै दाव कौं । खंगरौं पंजरौं मैं करैं घाव कौं ॥
बाढ़ दीनी कढ़े हाथ जमडाढ़ सौं । गाढ़ पारी भटौ बैर की चाढ़ सौं ॥
फूँकि दीनो किधूँ हूँकि बंदूक कौं । कूक कीनी किहूँ मारिकै मूँक कौं ॥
लूकि केते रहे धूकि केते गए । चूकि केते ढए सूकि केते चढ़े ॥
सीस कट्टे किहूँ रीस दै तेग कौं । साँग फैंकी बियै धारिकै बेग कौं ॥
बाहु छुट्टी किहूँ बाहि समसेर सौं । ढालही के ढका ढावहीं ढेर सौं ॥
एक हथ्थौं बिना पाय मथ्थौं करै । लथ्थपथ्थौं किते बथ्थ बथ्थौं भरै ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बीर के सौ खुटे भीव भैसौं जुटे। कर्न नासा घुटे श्रौन धारौं जुटे ॥
इक्क मथ्थो बिना धाइ हत्थौं करै। बाज धक्काधुकें धम्म भूमी परै ॥
इक्क कंठौं गहे रत्त रत्तौं बहे। तेह तत्ते तनो लेह कत्ते कहे ॥
चंड चंडे करौं खंड खंडे हुवे। रुंड मुंडौं बिना बीर सेजौं सुवे ॥
तीर तीखे तने फोरि दीखैं परें। ब्यालछौना मनौ भीति तैं निक्करें॥
सेल सन्नाह कौं फोरि दोऊ वखा। चारि बाहौं लरैं रूप ऐसा लखा ॥
हक्क हक्का रटैं हथ्थ खग्गौं खुटे। भक्क भक्का करें घाव बाहौं टुटे ॥
धूरि नैंना रुके तक्किसक्क नहीं। भूरि को हो भरे चोट चौंटौं वही॥
खानजादे उतै साबिता कौं तने। मारु ऐसी करो वे नहीं सौंवने॥४॥

छप्पय

सैयद मुगल पठान सेखजादे खाँजादे।
सूरज केहर बल्ल जट्ट तुपकन दे बादे॥
असदखान करि हल्ल जंग दुहुँ ओर मचाइय।
सनमुख ही अरि डट्टि सुभट बहु कट्टि हटाइय॥
लखि चली फौज फत्तेअली तजि गयंद हय पर चढ़िय।
चल बिचल सान नीसान मुख गहि क्रवान कर में कढ़िय ॥५॥
त्यों लखि सिंह सुजान निकट गज सिंहहिं भाखी।
असदखान करि जंग कछू यामैं नहिं राखी॥
और आपनी फौज रही इत उतही चाहति।
जौं न गौर अब करौं तौब यह जाहि बृथा हति॥
यों कहि हयंद हक्किय हरषि दंत चक्खि सेलहिं लहिय।
पनपाल पिल्यौ जनपाल कौ ज्यौं गुपाल पथ्थहिं गहिय॥६॥

छंद भुजंगी

गही एकही बार सब्बै बरच्छी। कही एकही एक है चोट अच्छी॥
कही सो हयंदान सो दौर कच्छी। सही पौन के पूत हैं देत सच्छी॥
मिलै फौज दोऊ उभै मेघ मानो। तहाँ खानजादौ करै बोर घानौ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

परे एकहो बार दै दै दरेरे। हथीं सैं हथी तोमरौ लै करेरे ॥
किते बीर रारे हलादै हँकारे। भका फौज फारे भुसुंडीन मारे ॥
किते सेल दैकैं तहीं तेग कढ्ढी। मनौं साँपिनी हथ्थ बेली सुचढ्ढी ॥
किहूँ दूरिही तें दए हूरि नेजा। बियै संग सौं फोरि डारै करेजा ॥
किहूँ दै कटारीन सौं थौंदि फारी। तहीं दूसरे आनिकैं सीस भारी ॥
किहूँ बानकों कान लौं खैंचि मुट्ठी। किहूँ आनि दीनी करी मुट्ठि भुट्ठी ॥
उभै लै तुरी सौं तुरी जोर दीने। तिन्हैं खंजरौं के घने हथ्थ कीने ॥
हुवे खानजादे उतारे हकारे। तिन्हैं राजपूता जुटे जट्ट मारे ॥
खनंकै लगे तेग तनत्रान टुट्टैं। ठनंकै परै टोप पै बान हुट्टैं ॥
फनंकै जवै सेल सौं सेल जुट्टं। भनंकैं कटैं कौंच सौं भूमि छुट्टं ॥
भटक्कैं पटक्कैं कटक्कैं सुमथ्थं। सटक्कैं चलावैं अटक्कैं न तथ्थं ॥
लटक्कैं तहीं यौं हटक्कैं जु सथ्थं। चटक्कैं सुअस्तं परैं लथ्थपथ्थं ॥
बिना सीस के यौं भरे रोस उठ्ठं। फिरैं धावते यों मनो राहु रुठ्ठं ॥
बिना पग्ग के खग्गही लै फिरावैं। बिना हथ्थ के दंत ओठौ चबावैं ॥
महाधूरि की भूरि सौं होइ अंधे। किहूँ दौर के यौं कबंधे जु संधे ॥
परे सेल टूटे कहूँ खग्ग खूँटे। कहूँ बाजि स्यौ साज के जात बूटे* ॥
कहूँ खप्परैं सूर सन्नाह कट्टे। कहूँ रुंड कहुँ मुंड भुजदंड पट्टे ॥
जहाँ मारु ही मारु यौं बीर बादे। तहाँ खानजादे लरैं होइ प्यादे ॥
महाधीर ब्रजबीर हू हुब्ब आछैं। रहे जंग जोरे मुरे नाहिं पाछैं ॥७॥

छप्पय

गौर सुगोकुल रामसिंह परताप कमठ कुल।
रामचंद्र कुल पांडु मेद चहुँवान खग्ग खुल ॥
सूरतराम प्रसिद्ध कुसल तन अरु पाखरिया।
पैमसिंह प्रथिसिंह अमर बाला सौगरिया ॥

---

* पाठांतर—कहूँ रुंड औ मुंड औ दंड पट्टे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हरिनारायन सुकिसोर वै स्यामसिंह सब रोस मन।
औरौ उदग्ग कर खग्ग धरि अग्ग पग्ग धर धरिय रन॥८॥

छंद पद्धरी

धरि धरनि पाय धमकैत धीर। जहँ असदखान रन करिय बीर॥
सर सेल साँग समसेर चर्म। दुहुँ ओर सुभट किय घोर कर्म॥
इक देत सीस परि खग्ग घाइ। बिय लेत ढाल पर तिहिं बचाइ॥
इक साँग साँग संग्राम जुट्टि। बहु सेल सेल गए सीस फुट्टि॥
अरु किते बीर भालेनु भाल। जमडाढ़ काढ़ रन में कराल॥
इक चंड हत्थ कोदंड संधि। तकि तीर देत तूनीर बंधि॥
इक खंजर पट्टे अरु दुधार। बज्जंत परसपर करि उधार॥
तन फसत अमिन तउ धसत जात। छुतजात जात तउ करत घात॥
चहुँ ओर भुसुंडिनु की अपार। अति अरध धुंधुवर संतसार॥
ज्यौं असदखान आवतु रिसान। त्यौं लगी आनि गोली भयान॥
वह लगत मान तजि प्रान सान। तजि या सरीर बैठ्यौ बिमान॥
लखि तासु बीर* अति भये कुद्ध। फरतैं अहुट्टिकर करिय जुद्ध॥
उड़ि मुंड परत कहुँ हय सु तुंड। कहुँ हत्थ चरन कहुँ परिय डुंड॥
बिललात परे इक कटे गात। इक फटे सीस भू में घुमात॥
करि रुधिर गाढ़ बरषा सु कीच। खुदि मेद गूद फर भूमि बीच॥
कटि केस बेस मनु उई दूब। कर मुंड परे ज्यौं बेलि तूब॥
धर चरन सहत धर यौं लसंत। मनु भषत बाय अजगर असंत॥
कहुँ श्रौन छिच्छ अति लाल लाल। जनु इंदु-बधू करि रहिय जाल॥
बहु भूषन कंचन के दिपंत। जुगनू जमात चमकत छिपंत॥
कहुँ सेल परे उर फोरि पार। मनु नाग करत भू महिं बिहार॥
बद्दल उमद्द जैसें जलद्द। गोली बर बूँदें परि बिहद्द॥
कहुँ घाइ करत अति घोर सद्द। मनु दादुर बोलत हैं उमद्द॥

---

* पाठांतर—लखि ता सरीर।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कहुँ धीर धीर दुंदुभि धुकार। गज्जनि अपार बरसंतु सार॥
तड़ितान तूल तरिवार सोभ। सुरधनुष धनुष धुज*लहिय गोभ॥
पल-भषनहार पच्छी अपार। गिलिगिलि बिहार करि डार डार॥
मारू मलार बहु होतु रागु। जुग्गिन रसभुग्गिनि गनिय भागु॥
वह भूमि भई भारी भयान। पावस निसि आँधी ज्यौं पयान॥
वे असदखान जूझे पछार। तिहँ सुभट करी इक† घरी मार॥९॥

छप्पय

छत जु अंबु छिरकाइ कवच कटि फरस कराइय।
नर धर बर मसनंद सीस उस्नीस धराइय॥
तहँ बैठिय नृप काल ताल दै जुग्गिन नच्चिय।
तेग झलक पंसूर घाइ मिरदंग सुरच्चिय॥
किलकार गीत सुनि मुदित ह्वै बीरसीस बकसीस किय।
करि अंगराग चरबी बसा अंतहार आभार दिय॥१०॥

अरिल्ल

असदखान प्रानन्नु करि बित्तिय। निरखि सेन स्वामी नहिं रित्तिय॥
पट्टिय भूमि कट्टि नर बीरन। हट्टिय निट्ठि पिट्ठि धर धीरन॥
सस्त्रन डारि डारि कोउ बस्त्रन। काऊ देखि देत मुख में त्रन॥
सूरज के सूरन गहि लुट्टिय। तुपक तेग जज्जालन छुट्टिय॥
हय गय तोप रहकला लिन्निय। भूषन बसन असन गहि छिन्निय॥
चमू कोस चारिक लौं मारिय। असदखान कौ जीति निहारिय॥
फेरि फौज सूरज की आइय। श्रीहरिदेव जित्ति यह घाइय॥
सिंह सुजान फते यह पाइय। जित्त सेन सूरज ढिग आइय॥
तिनहिं देख सूरज उर भेटिय। जुद्ध क्रुद्ध श्रम सब कौ मेटिय॥११॥

---

* पाठांतर—लखि ता सरीर। † पाठांतर—द्वै।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कवित्त

कोह कै असदखान लोह कै मचायौ रन
छोह सों छुहायौ समुहायौ आयौ ता समैं।
कीनौ घमसान समसान फर मंडल मैं
घाइनु अघाइ अघवाए बीर वा समैं।
काटे तनत्रान निज प्रानन-पयान हेतु
सूरज ने भेज्यौ बैठ्यौं सूरज के पास मैं।
जस के उजास मैं अकास मैं प्रकासी तेग
गीरवान गनिका बिराजी आस पास मैं ॥१२॥

दोहा

असदखान कौं खाइ रन फतेअलीहि बचाइ।
हरनाकुस प्रहलाद की लीला करी बनाइ ॥१३॥
फतेअली कौं कोल में तबही दियो पठाय।
आप आइ निज गढ़न में देखे पितु के पाय ॥१४॥
सदन सदन आनँद भये बदन बदन कें फूल।
सुत सुजान के बिरद गुन सुनत श्रवन सुखमूल ॥१५॥

कवित्त

कोप्यो मानौ काल सौ बदन महिपाल पूत
दीठि बाँकी करि कै निहारै ओर तू जा की।
तूही अवतार भुवभार के उतारन कौं
सार के सँभार नहिं तांब नर दूजा की।
सूदन समथ्थ अरि रूदन कौं पथ्थ सम
कीरति अकथ्थ रत्नाकर लौं भूजा की।
दिल्ली दलदट्टन सुकट्टन मलेच्छ बंस
देस देस जाहर प्रचंड तेग सूजा की ॥१६॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छंद हरगीत

भुवपाल-पालक, भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं।
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं॥
जाको चरित्र कछूक सूदन कह्यो छंद बनाइ कै।
रन असदखाँ कौ जीति सूरज अंक चौथौ आइ कै॥१७॥

इति चतुर्थ अंक॥ ४॥

सिद्धि श्रीमन्महाराजाधिराज व्रजेंद्र कुँवार सुजानसिंह हेतवे कवि सूदन विरचिते सुजानचरित्रे असदखान-हतनो नाम प्रथम जंग समाप्तं॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

द्वितीय जंग

छप्पय

रुकम अचल बर भूमि सुभग सुरसरि जल बिलसत।
त्रिविध पवन जहँ गवन भवन दुति ससिकर मिलिसत॥
सेनानी सुर देत ताल बेताल लगावत।
गंग धरनि भषि भंग रंग सौं डँबरु बजावत॥
गिरिसुता सहित आनंद सौं दै चुटकी थेइ थेइ कहत।
गननाथ नचत तांडव रचत सुंड हलत बिघननु दहत॥१॥

दोहा

ठारै सै अरु चार मैं पावन सावन मास।
मद्दति करिय सुरेस की किय दखिनी दल नास॥२॥
सुरपुर कौं जैसिंह गए बीते बहुत दिनान॥
हुतौ भूप आमेर कौ ईसुरसिंह अजान॥३॥
तासौं दक्खिन के दलनु रोपी आनि सुजंग॥
माधौसिंहहि संग लै दियो देस मैं दंग॥४॥

सोरठा

देखि देस कौ चाल ईसुरसिंह भुवाल ने॥
पत्र लिख्यौ तिहि काल बदनसिंह ब्रजपाल कौं॥५॥

दोहा

करी-काज जैसी करी गरुड़ध्वज महराज॥
पत्र पुष्प के लेत ही त्यों आयौ ब्रजराज॥६॥
आयौ पत्र उताल सौं ताहि बाँचि ब्रजपस॥
सुत सूरज सौं तब कह्यौ थाँभि ढुँढाहर देस॥७॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छंद मरहठा

यह सुनिकै सूजा पितु-पग पूजा हरषानी सब देह ।
नृप दीनति भाखी हम पर राखी जग साखी जस लेह ॥
चित धरि पितु-बानी सूरज मानी कर जोरे करि लापु ।
आइसु तुव पाऊँ नृपति छुड़ाऊँ घर आऊँ हरि तापु ॥८॥

दोहा

तबही सिंह सुजान कौं बिदा कियौ बदनेस ॥
सुभ नछत्र रवि ससि भले सोधि मुहूरत वेस ॥९॥

छप्पय

दस हजार असवार सहस द्वै लै पदाति गन ।
रथ गयंद हरदन्द जिते चहियत अपने मन ॥
सहस दोइ बरछैत जे न कबहूँ मुख मोरत ।
जुद्ध जुरैं जम रूप दंति के दंतनु तोरत ॥
फहरैं निसान भुवभान दुति कटि कृपान आपुन कसिय ।
मंगल बिधान द्विज दान दै मंगल गज ऊपर लसिय ॥१०॥
वज्जे पटह प्रचंड तूर भरपूर गरज्जिय ।
भूरि भेरि भंकार दुवन भय भार लरज्जिय ॥
सुनि दुंदुभि धुंकार धराधर धर धर बुज्झिय ।
डिढन रहे डड़्ढार बाघ बनचर बन डुज्झिय ॥
हिंसत हयंद गज्जत करी रज उमंडि अंबर मढ़िय ।
मानहुँ उदोत गिरि सिखर तें सूरज सौ सूरज चढ़िय ॥११॥
किते बिप्र कसि धनुष जंग रंगनु के जेता ।
किते रथनु असवार सुजस कीरति के देता ॥
किते पुरान प्रवीन किते जोतिस के ज्ञाता ।
किते वेदबिधि निपुन किते सुमृतन के ज्ञाता ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अप अपने कर्मन में निपुन जयति जयति बानी रढ़े ।
मघवान भान उपमान जब सेन साजि सूरज चढ़े ॥१२॥

छंद संजुता

सँग चढ़े सिनसिनवार हैं । बहु जंग के जितवार हैं ॥
खल खंडने खूँटैल हैं । कबहूँ न ते मन भै लहैं ॥
चढ़ि चाइ चाहर टेर दै । दल दे लवार दरेर दै ॥
असवार होत अँबारिया । जिन किते वैरि बिदारिया ॥
डर डारि डागुर धाइयौ । बहु भैनवार सु आइयौ ॥
गुनवंत गूदर चढ्ढियौ । सर सेल साँगन मढ्ढियौ ॥
सजियौ प्रचंड सु भौंगरे । जितवार जंगनु के करे ॥
षिनवार गोधे बंक हैं । जिनि किये राजा रंक हैं ॥
सिरदार सौंगरवार हैं । रन भूमि माँझ पहार हैं ॥
सरदार सोरह ते सजे । रन-काज ते रन लै गजे ॥
सजि नौहवार निसंक हैं । रुतवार रावत बंक हैं ॥
मुहि नाम याद इतेक हैं । बहु जाति जाट किते कहैं ॥
सबही सजे भट आगरे । सबही प्रतापु उजागरे ॥१३॥

छंद पद्धरी

सज्जे प्रचंड कूरम कठोर । चहुँवान चढ़े उर धरि मरोर ॥
हाड़ा हुँकार हटके निधान । साजे भुजान कम्मान बान ॥
राठौर मौर चंदेल गौर । सजि सजि तुरंग चढ़ि करी दौर ॥
खीची पँवार खरहरे खूब । चढ़ि चढ़ि चलाक हय दै हबूब ॥
जादौं जुझार जाहर जहान । सीसौदिया सु सज्जे अमान ॥
धंधेर धीर धाए धवान । धाकरे खीचरे कसि कृपान ॥
पौरच पुंडीर पखरैत चढ्ढि । निकसे मजेज हिय हरषि बढ्ढि ॥
बुंदेल बघेले बल अपार । उच्छलत तुरंगम ह्वै सवार ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुरकी रु सुलंकी समर चाह। साजें हथ्यार बहु बेस नाह ॥
तोमर तुरीन चढ़िकै प्रचंड। तन तेज दिपत कर तेग चंड ॥
ऊमट अनेक अवनी निधान। अरबीन चढ़े आये अमान ॥
परिहार सार सम्हार हथ्थ। जे जंग रंग जानत समथ्थ ॥
जसवंत जु साँवत साजबाज। चड्ढे कि क्यान करि करि गराज ॥
बलवंत बैस सैंधव सपट्टि। आये चहुँ ओरन तें झपट्टि ॥
धाकरे भाभरे भरत भीर। बड़गूजर धाए बल गँभीर ॥
अरु सिकरवार करि करि सिलाह। ससि-भान-बंस सब धरनिनाह ॥
गूजर गरूर गाढ़े गरज्जि। तीखे तुरंग चढ़ि चले सज्जि ॥
बेपीर बीर चल्ले अहीर। मैं नाम लूक मदमंत धीर ॥१४॥

छंद त्रिभंगी

केते मुग़लाने सेख पठाने सैयद बाने बाँधि चढ़े।
काइथ खतरैटे लोह लपेटे देत चपेटे चाइ बढ़े ॥
पाइक जे लाइक परदल घाइक लै धनु साइक लोह मढ़े।
कोलाहल बढ्डिय रवि रज-मढ्डिय खल मन डढ्डिय देखि कढ़े ॥१५॥

छंद छप्पय

पूरब परिय पुकार भूमि दिगपालन छंडिय।
पच्छिम तच्छिन गच्छि जमन ग्रह खलभल मंडिय ॥
उत्तर सकल उदास त्रास तें ग्रास न भावै।
दच्छिन पर्यौ भगान कहत सूरज कहुँ आवै ॥
आतंक मानि दब्बे दुवन देव दिगीसनु सुख बढ़्यौ।
व्रज चक्रवर्त्ति बदनेस-सुत श्रीसुजान जब्बहिं चढ़्यौ ॥१६॥

हरगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं।
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महा कलिकान हैं ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ताकौ चरित्र कछूक सूदन कहो छंद बनाइ कै।
वह पत्र-आवन दल-सजावन प्रथम अंक सुनाइ कै ॥१७॥

इति प्रथम अंक ॥ १ ॥

—:०:—

दोहा

प्रथम कूँच कुंभेर तें करिके सिंह सुजान ॥
खान पान सेनहिं दियौ वहुरयौ कियौ पयान ॥ १ ॥

दुपई

तीन कूँच अरु द्वै मुकाम में जाइ सु जैपुर लीनौ ॥
जाने खबर करी ता नर कौं नरपति बहु धन दीनौ ॥ २ ॥

दोहा

प्रथम ईसुरीसिंह ने मंत्री दियौ पठाइ ॥
फेरि आपुही आइयौ सूरज पै चित चाइ ॥ ३ ॥
जथा जोग सनमान करि कीनो मंत्र बिचार ॥
ईसुर कही कि कुँवर जी हूजै आप अगार ॥ ४ ॥
ऐसे कहि कूरम नृपति गए आपने गेह ॥
आगे कौं सूरज तवै कियौ पयान सतेह ॥ ५ ॥
जलज अचल डेरा दए सिंह सुजान उमंडि ॥
निर्भै ह्वै कूरम नृपति पाछैं चल्यौ घुमंडि ॥ ६ ॥

छंद भुजंगी

घुमंडे घने दंति घंटानवारे। उमंडे मनो सद्द ते मेघ कारे ॥
हयंदा परिंदानु के वेग लीने। खगाधीस मानौ घने रूप कीने ॥
सुतरनाल घुड़नाल हथनालवारे। मनो काल के बालकेई पधारे ॥
उदंडी भुसंडी लियें हथ्थ केते। चलें चाल उत्ताल आतंक देते ॥
घुरें घोर नीसान ढक्का ढमक्कैं। दुरैं दौरि दीने सुनै सत्रु सक्कैं ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पताका किती है न ताका प्रमानैं। लताकित्ति की के पताके समानैं॥
किते बान कम्मान अम्मान बाँधे। किते तेग तेगा धरैं ढाल काँधे॥
किते बीर तनत्रान कौ अंग साजै। किते ओपची ह्वै धरैं ओप गाजै॥
किते बान पट्टे फरस्सा फिरावैं। किते दाब डोरी सुदावैं बतावैं॥
बढ़्यौ सद्द नर नद्द बेहद्द भारी। सजी चारिहू अंग की सेन रारी॥
चढ़्यौ कोप आँमावती भूप ऐसे। कढ़्यौ दैत्य के नास जंभारि जैसे॥७॥

दोहा

आगे सिंह सुजान दलु पाछे कूरम भूप।
जुद्ध काज उद्धत भए धरे बीररस रूप॥ ८॥
उते बिकल दल दक्खिनी सनमुख पहुँचे आय।
जिनके त्रास न सोवहीं दिल्लीपति उमराय॥ ९॥
कहि पठयो सूरज तबै कूरम सौं ता बार।
हम इनको देखैं नृपति आप रहो पुठवार॥ १०॥
फेरि कह्यौ निज सेनपति और सूर जे संग।
सावधान सनमुख लरौ ज्यौं नहिं बिगरै जंग॥ ११॥
संभू अरु सुखराम को आगे कियौ सुजान।
जंग भार सब सौंपि कै जुद्ध हेत बलवान॥ १२॥

छप्पय

कुद्ध जुद्ध के काज दुहूँ भट भए सनम्मुख।
सूरन के मुख नूर कायरनु सूखि गए मुख॥
धरि धरि मुच्छनु हत्थ सेलु साँगन पटतारत।
लोह जंत्र जमडाढ़ बान किरवान सँभारत॥
धरि अग्ग पग्ग फर मग्ग में खग्ग कढ़त जुग्गिन जगिय।
दुहुँ स्वामि-काम संग्राम में बीर बीररस में पगिय॥ १३॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छंद नाराच

दिसानि भूरि पूरि कै निसान घोर गज्जियौ।
कृसान के समान छोड़ि थान थान भाज्जियौ॥
किलक्कि कूदि कालिका उताल चाल आइयौ।
कराल चंडमुंड के पिशाच पूत धाइयौ॥
शिवा शृगाल गीध जाल कंक काक कूकहीं।
करैं कलोल कोचरी उलूक उद्ध हूकहीं॥
चलै कवान बान आसमान भू गरज्जियौ।
धवान दै दवान की कृपान हीय सज्जियौ॥
कितेक सेल साँग लै हयंद हक्कि अग्गईं।
कितेक लंब ग्रीव चड्ढि लै जजाल दग्गईं॥
* * * * * *
किते पदाति खग्ग घात लेत खेत पग्गईं॥
कितेक लागि धक्कईं नहीं सम्हार सक्कईं।
कितेक छाँड़ि सक्कईं सुसामुहैं सरक्कईं॥
कितेक धारि धारिकै अरीन ओर तक्कईं।
कितेक ओट पाइकै उठाइ मुंड झक्कईं॥
कितेक धीर बीर तीर-भीर-माँझ कड्ढिकै।
लगाय चोट आपनी उछाह हीय बड्ढकै॥
घरीक माँझ घोर सोर धूरि पूरि छाइयौ।
ग्रहीस दीठि ना परै दुहूँ सरीस धाइयौ॥१४॥

दोहा

सहज़राम सुखराम अरु संभू गोकुलराम।
औरौ बीरन संग लै कियो घोर संग्राम॥१५॥

छंद त्रिभंगी

उत्थौं मरहट्टे भाले पट्टे लै लै कट्टे सरपट्टे।
इत्थौं व्रजवासी जे बलरासी हुवे हुलासी झरपट्टे॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हय सौं हय जुट्टे नेकु न छुट्टे तेगौं कुट्टें सिर फुट्टे।
छोहौं भरि छुट्टे कैसौं खुट्टे झुट्टक झुट्टे भुव लुट्टे ॥१६॥
भुव लुट्टे उट्ठे जम ज्यौं रुट्ठे बाँधे मुट्ठे रोस भरें।
कंठौं रज घुट्टे लोचन खुट्टे मानौं झुट्टे भेष धरें॥
तीरों के चुट्टे अगनित गुट्टे लै लै सुट्टे रन विफरें।
तारे जिमि टुट्टे साथ विछुट्टे केई छुट्टे फिरि न फिरें ॥१७॥
फिर फेरि झटक्कैं पकरि पटक्कैं साँग सटक्कैं मारु कहैं।
इक इक्क हटक्कैं देत दड़क्कैं सेल तटक्कैं श्रौन बहैं॥
विन हथ्थ भटक्कैं भरत वटक्कैं मास गटक्कैं देखि रहैं।
इक जात पटक्कैं खग्ग खटक्कैं सीस कटक्कैं दौर गहैं ॥१८॥
गहि दौरि दबावैं टेरि वुलावैं जौ गहि पावैं समुहावैं।
जमडाढ़े काढ़े रन में ठाढ़े गहि गहि गाढ़े करि घावैं॥
विनु पाइ सरक्कैं उठन भरक्कैं देत करक्कैं सरतावैं।
सिर विनु उठि धावैं पग्ग भिरावैं सनमुष आवैं भुव पावैं॥१६॥
पावैं नहिं जावैं भुजनि भुजावैं मुंड भिरावैं सम्हरावैं।
खंजरनु चलावैं दंत चखावैं भौंह चढ़ावैं धर धावैं॥
ढालनु ढलकावैं ढक्कनु ढकावैं डावत आवैं भटभारे।
इक श्रौन सपेटे धूरि धुरैटे काल चपेटे भूपारे ॥२०॥

छप्पय

धरि इक उद्धत जुद्ध चाल दखिनी दल खाइय।
संभू अरु सुखराम जंग वहु रंग मचाइय॥
रहे खेत सत एक चेन विनु मरहठ भज्जिय।
निजु द्रगि लखि मल्लार हार अपने हिय लज्जिय॥
बज्जत निसान बुल्लत फते श्री सुजान धन बरषियौ।
यह खबर पाइ सूरज बली सहित देस कुल हरषियौ ॥२१॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हरगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं।
जानै दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकै।
यह समर मोती डूँगरी कौ दुतिय अंक गनाइ कै ॥२२॥

इति द्वितीय अंक ॥ २ ॥

—:*:—

दोहा

उसरि राउ मल्लार ने डेरा किए पछार ॥
पाछेंही कूरम चल्यौ सूरज मल्ल अगार ॥ १ ॥
बगरू महलनि पहुँच कै नरपति डेरा दीन॥
चहूँ ओर अपनी चमू सावधान करि लीन ॥ २ ॥
सनमुख जंग न जोरहीं बरगी दिन दिन साँझ ॥
चहूँ ओर चमकत फिरैं ज्यौं बिजुरी नभ माँझ ॥ ३ ॥
एक दिना कूरम नृपति सूरज मल्ल कुँवार ॥
मंत्र कियौ दोऊन मिलि लीजै धाइ मलार ॥ ४ ॥
यहै मंत्र करि कटक कौं सावधान कहि दीन ॥
जैसेहीं डेरा परत तैसे चलौ प्रवीन ॥ ५ ॥

छंद तोमर

जिहि भाँति मंत्र डिढ़ाइ। तिहिं भाँति सैन चढ़ाइ ॥
इसुरेस ह्वै असवार। करि दुंदुभी धुधकार ॥
जिमि है सुजान सपूत। करि निजु बलै मजबूत ॥
धरिकैं भयौ असवार। जितमें हुतौ मल्लार ॥
बजियौ अनेक निसान। गजियौ सुभू असमान ॥
फहरैं धुजा अति पीत। हरदेव की परतीत ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गजगज्जही गिरि रूप। हय हैं जलद सरूप॥
चलकैं सुऊँट कतार। तिनपै अनेक सवार॥
ललकैं सुपाइक सत्थ। पलकैं न राखत मत्थ॥
ढलकैं अनंत सुढाल। सलकैं सुसैल बिसाल॥
झलकैं जिरह औ टोप। दलकैं सुबाढ़त ओप॥
गलकैं सुसेली स्याम। बलकैं सुबचन उदाम॥
छुलकैं गयंदनु मद्द। मलकैं सरीर अहद्द॥
हलकैं धरत धर पाइ। थलकैं श्रवतु जलु आइ॥
नलकैं घुरत घन घंट। जलकैं करत उज्झंट॥
धरिकैं सरीरनु जोस। भरिकैं सुनैननु रोस॥
उमड़े सुभट्टनु ठट्ट। जितमैं हुते मरहट्ट॥
मिलियौ परस्पर दीठि। हथियार चमकि बसीठि॥६॥

छंद छप्पय

बढ़ि बढ़ि निकसे बीर तीर तुपकनि कौं संधैं।
असि द्वै द्वै तूनीर तुंग तोमरि धरि कंधैं॥
अनगन गोमुख तबल सबल बज्जत गल गज्जत।
तज्जत भीति अभीति तुरंगनु बेगहि सज्जत॥
प्रभु हेत हेत जय देत पग नेत नेत बानी कहत।
अब लेत लेत अब लेत अब खेत खूँदि सम्मुख चहत॥७॥

छंद मुक्तादाम

कढ़े मरहट्ट सुभट्ट सजोर। चढ़े हय चंचल देत मरोर॥
बढ़े हय बाज दराजहि हत्थ। रढ़ैं मुख मारहि मार समत्थ॥
उढ़ै मनु रूप लसैं इह रूप। गढ़े जिन कैयक है महिभूप॥
मढ़े बहु कंचन भूषन अंग। जढ़े मनु पाहन पावक संग॥
पढ़े रन रंग अभंग सुधीर। ठढ़े रन भूमि जहाँ जदुबीर॥
भए मुखमेल दुहूँ दल सद्द। तए अति तेह करैं बहु नद्द॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धए धरि तेग सुधौट उदंड। छुए रसबीर चलाइय चंड ॥
दए इक इक्कनु कैं उर बान। गए छिन में तिनके कढ़ि प्रान ॥
लए जब कोसनु तें कर खग्ग। हए हयै हंकि बियें फर मग्ग ॥
खए लगि बाँह उसारि उसारि। भये इत उत्त जबै रिस धारि ॥
ठए न ठए पठए जमलोक। ढए हय पिट्ठनु तैं करि ओक ॥
नए न नए सनए मुखरत्त। बए मनु मुंड परे झलकत्त ॥
रए रल ए सुभ ए धल मेल। झनंकत साँग करें धकपेल ॥
खनंकत सेल बखत्तर तोर। छनंकत तेग जँजीरनु मोर ॥
टनंकत टोपनु पैं लगि बान। सनंकत सिप्पर फूल दिसान ॥
रनंकत हैं टुटिकैं गरमाल। हनंकत हैं कटि सीस कराल ॥
फनंकत साइक चारिहु ओर। भनंकत गोलिनु की घनघोर ॥
ढनंकत मूठिनु लगि करबाल। टनंकत ढाय परें छुटि नाल ॥
तन कितहूँ कितहूँ किय मुंड। सनंमुख मारु भए तउ रुंड ॥
कटे कटि तें इक व्है दुव बट्ट। रटैं इक मारुहि मारु सुभट्ट ॥
फटे इक सीस लगें असि घोर। हटे हरदूत लखैं मुख मोर ॥
पटे पुहमी पर व्है बिनु मुंड। छुटे मनु बृच्छ परे फसि झुंड ॥
जटे इक तीरन सौं बिललात। बटे हय टापनु सौं दबि गात ॥
लटे तन जात किते छुत जात। डटे इक घाइ अघाइ घुमात ॥
घटे नहिं कोह भरे उर छोह। नटे मसहार धरे मन मोह ॥
नचे करतालनु दै हरताल। मचे सुत भूतल के जहँ ख्याल ॥
बचे सिर के करि कैं कटताल। रचे जिनि तंडव नाच कराल ॥
सचे सुर लेत सुमारुव राग। पचे करिबीन बजैं कर खाग ॥
भभक्कत घाइ हबक्कत साँग। घुमात खरे मनु खाइय भाँग ॥
धमक्कत धिंग धरा पर आइ। भभक्कत श्रोनित कीचहि पाइ ॥
उमंडि कितेकनु चोट चलाइ। भुसिंडिनु मारि दए अहुटाइ ॥
भज्यौ दखिनी दलु यौं भहरात। गज्यौ सुनि इंद्र मराल सुजात॥८॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छंद छप्पय

श्रोनित सलिल सिवार केस बहु बेस परे जहँ।
मेद् गूद करि पंक सूकि पंकज सम सिर तहँ॥
दादुर बोलत घाइ बेलि मुरझाइ परै कर।
मलिन मीन तरफरत धरत बहु रूप तहाँ धर॥
बहु गीध काग खग बसत जहँ लसत नहीं काहू घरिय।
सूरज-प्रताप के ताप भुव छीन सरोवर सम करिय॥६॥
बिजय पाइ दुंदुभि बजाइ आए सुजान भट।
बहुत भाइ सनमान पाइ बैठे सुजान तट॥
कहत जुद्ध बिरतंत अंत अरि कौ करि आइय।
श्रीहरिदेव प्रतापु आपु जस कीर्ति बढ़ाइय॥
यह खबर पाइ जयसाह सुत भर उछाह धनि धनि कहिय।
बदनेस-नंद ब्रजचंद पर खल-खंडन बरु ते लहिय॥१०॥

सोरठा

ऐसे कैऊ जुद्ध जीते सिंह सुजान ने।
तब मलार ह्वै सुद्ध कूरम सौं एकौ कियौ॥११॥

दोहा

दोइ परगने लै दिए ईसुर सौं मल्लार।
माधव कौं समझाइ कैं पठै दियौ ननसार॥१२॥
पनु जीत्यौ मल्लार कौ मनु जीत्यौ इसुरेस।
रन जीत्यो सूरज बली थाँभि ढुँढाहर देस॥१३॥

छंद पवंगा

तब कूरम चित चाय सुजान बुलाइकै।
हय, गय मुक्ताहार बसन पहराइकै॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कियौ अधिक सनमान बिदा करि देस कौं।
कहियौ यह संदेस नृपति बदनेस कौं ॥१४॥

सोरठा

ज्यौं जैसाहि नरेस करत कृपा तुव देस पैं।
त्यौं ब्रजेस बदनेस करत रहौ हम पर कृपा ॥१५॥
फिरि आए निजु गेह सहित नेह सब देह सौं।
जैसे भावतु मेह बहुत काल सूखा भएँ ॥१६॥

दोहा

पग भेटे बदनेस के सूरज मन बच काइ।
तब उठाइ सिर सूँघिकै लीनो अंक लगाइ ॥१७॥
तब सूरज कर जोरिकै कहे जुद्ध बिरतंत।
महाराज परिताप तें करि आए अरि-अंत ॥१८॥
सुनि सँदेस बदनेस ने कियौ बहुत सनमान।
जथाजोग सब सूर कौं कीनो मान बखान ॥१९॥

हरगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेसनंद सुजान हैं।
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं ॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकै।
यह जीति बगरू महल पाइय त्रितिय अंक सुभाइकै ॥२०॥

इति तृतीय अंक ॥३॥

सिद्धि श्री मन्महाराजाधिराज ब्रजेंद्र बदनेस-कुमार श्री
सुजानसिंह हेतवे कवि सूदन विरचिते सुजान
चरित्र बगरू महल डूँगरी जुद्ध विजय
वर्णन नाम द्वितीय जंग
संपूर्ण ॥

—:o:—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तृतीय जंग

कवित्त

चाप बिष चाखै भैया खट मुख राखै देखि
आसन मैं, राखै बसवास जाकौ अचलै।
भूतनु के छैया आसपास के रखैया
और काली के नथैया हू के ध्यानहू ते न चलै।
बैल बाघ बाहन बसन कौं गयंद-खाल
भाँग कौं धतूरे कौं पसार देतु अचलै।
घर को हवालु यहै संकर की बाल कहै
लाज रहै कैसे पूत मोदक कौं मचलै॥ १॥

दोहा

ठारौ सौ रु पचोतरा पूस मास सित पच्छ।
श्रीसुजान बिक्रम कियौ ताहि सुनौ नर दच्छ॥ २॥

छंद अरिल्ल

बहुत दिना बीते निज देसहिं। तबहीं दूत कह्यौ संदेसहिं॥
दिल्लीपति बकसी इहि देसहिं। आवत तुम सौं करन कलेसहिं॥
सहस तीस असवार संग गनि। पैदल पील फील बहुतै भनि॥
जोरें तुरक सहस दस बीसहिं। आवत तुमसौं करि मन रीसहिं॥
अलीकुली रुस्तमखाँ संगहि। हकीमखाँ कुबरा हित जंगहि॥
फतेअली औरौ बहु मीरन। राजा राउ लयैं संग धीरन॥
इंद्र नगर दच्छिन दिस कढ्ढिय। निपट गरूर पूर हिय चढ्ढिय॥
कछू दिननु आवैं मेवातहिं। करिहै तहाँ अधिक उतपातहिं॥
यातें बेगि करौ कछु घातहिं। जातें वाकौ होइ निपातहिं॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अब जौ नीक होइ सो कीजहि। याहि मारि जग में जस लीजहि॥
यौं कहि दूत नाइ निज सीसहिं। सूरज आइ कह्यौ ब्रज-ईसहिं॥
तुरक सहस जोरें दस बीसहिं। दिल्ली तें निकस्यौ धरि रीसहिं॥
हम सौं जुद्ध करन मन राखतु। महाराज मैं हूँ अभिलाषतु॥
आइसु ईस तुम्हारौ पाइय। तौ याकौं कछु हाथ लगाइय॥
तब ब्रजेस सुनिकैं यह भाषिय। तात मतौ मो मन यह राखिय॥३॥

सोरठा

दिल्ली तें कढ़ि दूरि जब आवै मैदान भुव।
एक झपट करि सूर याकौ दूरि गरूर करि॥ ४॥

दोहा

मतौ मानि बदनेस कौ सूरज उदित प्रतापु।
आइसु लै असवार ह्वै करि हरदेव सुजापु॥ ५॥

छंद पद्धरी

जब चढ्यौ सिंह सूरज अमान। बज्जे निसान घन के समान॥
पीरे निसान सोभित दिसान। अरि गहन दहन मानहुँ कृसान॥
सुंडाल चलत सुंडनि उठाइ। जिनकैं जँजीर झनझनत पाइ॥
घनघनत घंट अरु घुघुर-माल। भनभनत भँवर मद पर रसाल॥
छुनछुनत तुरंगम तरहदार। फनफनत बदन उच्छलत बार॥
सनसनत सिमिटि जब करत दौर। गुन गिनत सु तिनके कबिनु-मौर॥
सोहैं अनेक गज गाह वंत। चमकंत चारु कलगी अनंत॥
झलकंत जिरह बखतर नवीन। तमकंत बीर रस भट प्रवीन॥
टमकंत तबल टामक बिहद्द। ठमकंत टाप बिनु भुव गरद्द॥
ढमकंत ढोल ढफला अगार। धमकंत धरनि धौंसा धुँकार॥
खमकंत बीर करि करि सुचोष। लमकंत तुरंगम पाइ पोष॥
हमकंत चले पाइक अनेक। इक जंग रंग जानत बिबेक॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कोदंड चंड कर कटि निषंग। इक चंड भुसंडी लै तुफंग ॥
इक सेल साँग समसेर चर्म। रनभूमि भेद जानत सुपर्म ॥
सब चढ़े बड़े उच्छाह पूरि। छपि गयौ गगन रवि उड़िय धूरि ॥
चतुरंग चमू सत रंग रूप। सजि चढ़्यौ सूर सूरज अनूप ॥६॥

दोहा

कूँच कियौ डेरा दियौ नौगाएँ मेवात ॥
तरन तनेने तेह सौं जुद्ध हेत ललचात ॥७॥

हरगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं।
जानें दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकै।
सजि सैन सूरज चढ़्ढियौ कहि प्रथम अंक सुनाइकै ॥८॥

इति प्रथम अंक ॥ १ ॥

छंद पवंगा

सूरज चारि उपाय प्रवीन सुचित्तई।
साम दाम अरु भेद दंड धरि नित्तई ॥
खल के मन की लैन बात करि सील की।
बिदा करी समुझाइ प्रवीन वकील की ॥ १ ॥
देस काल बल ज्ञान लोभ करि हीन है।
स्वामि-काम मैं लीन सुसील कुलीन है ॥
बहु बिधि बरने बानि हिये नहिं भै रहै।
पर-उर करै उदेग दूत ता सौं लहै ॥ २ ॥
खान सलाबत पास वकील सु जाइकै।
करी सलाम कवाद अदाब बजाइकै ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नैननु लई सलाम सलाबतखान ने।
कह्यौ कहा कहि बेग सुतोहि सुजान ने ॥ ३ ॥

दोहा

कुँवर बहादुर ने प्रथम तुम कौं कह्यौ सलाम।
फेरि कही कि नवाब इत आए हैं किहि काम ॥ ४ ॥
करत चाकरी साह की हम पायो यह देस।
ताहि उजारत आप क्यौं तुमकों कह्यौ सँदेस ॥ ५ ॥
जो कछु तुम्हें दिलीस नैं कह्यौ ताहि कहि देउ।
ता माफिक हम सौं अबै आप चाकरी लेउ ॥ ६ ॥

छंद निसानी

इसी गल्ल धरि कन्न में बकसी मुसक्याना।
हमनूँ बूझत हौ तुसी क्यों किया पयाना ॥
असी आवने भेद नू अब लौं नहिं जाना।
साह अहम्मद ने मुझे अपना करि माना ॥
तखत आगरा ग्वालियर हिंडौन बयाना।
होडिल पलवल अलवरौ मेवात सध्याना ॥
वार पार मथुर तलक हूवा फरमाना।
बकसी की जागीर दै बकसी मैं ठाना ॥
इनमें ते जे तुझ तरै तहँ करि मो थाना।
दो करोर दै साहि नूँ सँग होहि सयाना ॥
होर कह्या है साहि ने सो भी सुन जाना।
असदखान सरकार दा चाकर क्यों भाना ॥
तैं अपने मन मैं गना बूड़ा तुरकाना।
कै एक गल्ल कबूल करिकै हो मरदाना ॥
जब यों कह्यो नवाब ने सुन दूत अमाना।
मामल तिनहिं न होइसी दिल अंदर जाना ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तिसी घड़ी नव्वाब सें कर जोरि बखाना।
जेहा जिसनूँ लोड़िये तेहा फुरमाना॥
यह बंदा है साहि दा दरपुस्त पुराना।
दोनो तखतौं दै बिचौं तद ही ठहराना॥
जिसका नाउ सुजान है देसी नहिं आना।
जमी न अंगुल छोड़सी यह उस दा बाना॥
मैंनू रुखसद दीजिए नाहक बतराना।
हुए बंदा दुहुँ ओर दा बंदगी सुजाना॥
ये जुवाब नव्वाब सुनि दिल माहिं रिसाना।
तद वकील सैं यौं कह्या करि जाहि पयाना॥
उसी बख्त सिर नाइकें सो हुवा रवाना।
आगे सिंह सुजान कौं भेजा परवाना॥
अवल आपनी बंदगी बकसी सतराना।
जसी कही तेई लिखी नहिं नेकु भुलाना॥
होर लिख्या इस तुरक नूँ तेहा अधिकाना।
जंग अखाड़े में इसे कीजै सनमाना* ॥ ७ ॥

सोरठा

श्री ब्रजेस कौ नंद कागद बाँचि वकील को।
अंग अंग आनंद हरखि हिये हरदेव कहि ॥ ८ ॥
सूरज कियौ बिचार सब डेरा छ्याँई रहें।
चंचल हय असवार पाइक चलो चलाक सें ॥ ९ ॥

छंद तोटक

रथ ऊँट गयंद मुकाम कियं। तिन संग पदातिनि राखि त्रियं॥
छु हजार सवार तयार लियं। तिहिं संग सुजान हरष्षि हियं॥

---

* पाठांतर—फलकाना

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रवि ऊगत बार पयान कियं। हय के असवारन और बियं॥
कर लै किरवान निसान दियं। जिहिं के सम सूर न और बियं॥
तिहँ बार तुरंगम साजि घनं। असवार भयौ बदनेस तनं॥
रन जीतन कौं मन राखि पनं। करि दुंदुभि दीह अवाज घनं॥
जब कूँच कियौ रस बीर सनं। तब पीत पताकन सोभ बनं॥
जनु चंचल दामिनि सोभ घनं। हय टापन सौं कहुँ होत ठनं॥
वह सेनु दरेरनु देति चली। मनु सावन की सरिता उभली॥
अहि सैल मनो मुख काढ़ि रहे। अरु ढालनु कच्छप रूप गहे॥
जल जोरि तुरंगम देखि रहे। जनु मीन जहाँ धुज देह लहे॥
द्रुम ज्यौं द्रुम ढाहति आवत है। इम सैन नदी सु कहावत है॥
दस कोस सुभूमहिं पीठि दियं। तिहिं थान मुकाम सुजान लियं॥
निस एक बसे परभात भयौ। तब आइसु सिंह सुजान दियौ॥१०॥

सोरठा

है नवाब दस कोस कोस पाँच औरौ चलैं।
दिखा दिखी कैं जोस रोस भरे लरिहैं भले॥ ११॥
यौं कहि सिंह सुजान पाँच कोस कौ कूँच करि।
चौकी करी अमान सहस सहस असवार की॥ १२॥

छंद पद्धरी

सरदार सुगोकुलराम गौर। जिहिं संग सहस हय करत दौर॥
तसु अनुज सु सूरतिराम संग। सत चार तुरीवर लेत जंग॥
सत पाँच तुरी कूरम प्रताप। सँग लियैं जुद्ध पर-बल उथाप॥
अरु एक सहस बलिराम बीर। हय हंकि हँकारत समर धीर॥
सत चारि बाजि स्यौसिंह धीर। इक सथ्थ हथ्थ बल करि गँभीर॥
एक सहस बाजि कीने सनाह। वह धीर बीर महमद पनाह॥
सत वेद किश्यानतु सहित जोर। रन भूमिसिंह राना कठोर॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सत एक हयंदनु लै उदग्ग । हरिनारायन जिहिं प्रबल खग्ग ॥
इहि भाँति और बलवान जोध । सब सत्रु हेत हिय धरत क्रोध ॥
इनके सुगोल किय चारि चंड । खलखंडन तिनकौ बल अखंड ॥
इनतैं जु अरध निजु राखि सथ्थ । जे हथ्थिनिहू सौं करत हथ्थ ॥
इहि भाँति पाँच चौकी बनाइ । यह कह्यौ बचन तिन सौं सुनाइ ॥
तुम जाउ चहूँ दिस तें मरद्द । परबलहि घेरिं दीजै दरद्द ॥
जहँ खान पान पावै न जान । अरु जुद्ध बार सब सन्निधान॥१३॥

दोहा

ऐसें बचन सुजान के सबै सुभट उर धारि ।
बकसी की तकसी करन चले सेल पटतारि ॥ १४ ॥

छंद भुजंगप्रयात

चहूँ ओर धाए धरा धूमधारैं । धमंकैं धरैं पाइ दै दै हँकारैं ॥
सबै ओर तें धाइ कै धूम पारी । सुनैं सैद की फौज ने भीति धारी ॥
हुते फौज तें बाहरे ते डराने । कुल-स्त्री लगैं ज्यौं पराए पियाने ॥
किहूँ धाइकै धाइकै पील लीने । किहूँ फील पाठे पटकि* हाथ कीने ॥
किहूँ छैल ने बैल लै गैल चाही । किहूँ लै तुरी कौं घनी सैन गाही ॥
कहूँ फील फैले मनो हैं घटा ए । भुसुंडीन सौं मारि काहू हटाए ॥
भए सैद के लोग सब्बै इकट्ठे । मनौं सिंह की संक सौं रोझपट्ठे ॥
तहीं सोर बाढ्यो कहैं जट्ट आए । करौ सावधानी रहौ ठौर ठाए ॥
सबै सैद की फौज यौं खलभलानी । लगैं आगि के ज्यौं उठै औटि पानी ॥
कहीं दौरि काहू सुनी आप बकसी । लगी एकही बारही में धमक सी ॥
घरी एक में चेत ह्वै बीर बोल्यौ । घणी बार लौं आपनो सीस डोल्यौ ॥
करौ बे करौ बेगही सावधानी । बुलाओ नकीबो नहीं बात मानी ॥ १५ ॥

तब नकीब सौं यौं कियौ हुकुम सलाबतखान ।
तोप बान अरु रहकला चौकस करौ दबान ॥१६॥

---

* पाठांतर—गने ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कटक बीच में राखिकै इनसे यह कहि देउ।
आप आपने मोरचा सब चौकस करि लेउ ॥१७॥
लावदार रक्खो किएँ सवै अराबौ एहु।
ज्यों हरीफ आवै नजरि तवै धड़ाधड़ देहु ॥१८॥
तबही सूरज के सुभट निकट मचायो दुंद।
निकसि सकै नहिं एकहू कस्यौ कटक मसमुंद ॥१९॥

हरगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेसनंद सुजान हैं।
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं॥
ताको चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकै।
बकसीहि वेढ़न सुभटसूरज दुतिय अंकहि धाइकै॥ २० ॥

इति द्वितीय अंक ॥ २ ॥

छप्पय

छुट्टन लगे उदंड चंड कोदंड भुसंडी।
जबर जंग घनघोर मारु गोलनु की मंडी॥
आस पास ब्रज बीर भीर बहु मीरनु पारतु।
निकसि सकै नहिं कोई रैनि दिन जुद्ध बिचारतु॥
इह भाँति कछुक बासर गएँ तब बकसी रोसहिं भर्‌यौ।
सरदार मद्धि दरबार जे तिनहिं आपु आइसु कस्यौ॥१॥

दोहा

तुम सवार इस बार हो निकसौ सबै अगार।
मैं भी साइत देखिकै एक करौंगा मार॥ २ ॥
खान सलाबत को हुकुम वे अमीर सुनि कान।
अपने अपने मन लगे जुद्ध हेत ललचान॥ ३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रुस्तमखाँ सुहकीमखाँ अरु कुबरा अति चंड।
फतेअली सु अलीकुली साजी सैन उदंड ॥ ४ ॥

छप्पय

उन्नत असित मतंग ललित कंचन अम्बारिय।
घन दामिनि के भेस गजनु घंटनु धुनि धारिय ॥
रुकम रजत बर बाजि साज साजे बहु रंगनि।
तंगन लिए पतंग मनौ इम भरत छलंगनि ॥
अंगन अनूप कवचनि कसिय लसिय मनौ फनिधर खरे।
हयनाल हंकि हथनाल हुव सुतर्नाल सनमुख धरे ॥ ५ ॥
दै दै दिघ्व निसान बान नीसान अग्ग धरि।
चढ़े गयंदनु पिट्ठि दिट्ठि अति रोस रंग भरि ॥
चँवर चलत चहुँ ओर चारु सिप्पर चमकावत।
चलत चमू चतुरंग मनहुँ पावस घन धावत ॥
ठुक्कत तबल्ल इकगल्ल रव मल्ल भल्ल फेरत भले।
सूरज-प्रताप-पावक निरषि मनु पतंग आवत चले ॥ ६ ॥

पावकुलक छंद

जबहीं कटक निकट तें कढ्ढे। पाँचौ चपल गयंदनि चढ्ढे ॥
तबहि अग्र उतपात सुबढ्ढे। गिद्ध आइ सनमुख रव रढ्ढे ॥
लरत बिलाउ सामुहें आए। ग्रामसिंह श्रवननि फटकाए ॥
सिवा शृगाल सामुहें रोए। रजकु बस्त्र लायो बिनु धोए ॥
अगिन धुँधात मनुज कर लाए। मुकुलित केस जटिल दरसाए ॥
आनि उलूक धुजा पर बैठे। पलचर परत चमू मैं पैठे ॥
चलत गयंद अचानक धुक्कैं। अक्कसमात चाल कौं चुक्कैं ॥
आँकुस गिर्यौ महावत कर तें। गदगद कंठ भए रन डर तें ॥
नैनन नीर बह्यौ तिहिं बेरें। उठे रोम मानौ जम घेरें ॥

४

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भए इते उतपात महा ए। बस परि काल नहीं मन लाए ॥
मानौ जमपुर जात पलाए। पाँचौ चढ़े गयंदनि आए ॥
सहस दोइ दोई हय साजैं। पैदल पील वहुत गल गाजैं ॥
भए आनि रनभूमि इकट्ठे। निकट सिंह के ज्यौं मृगपट्ठे ॥
कोर बाँधि पाँचौ भए ठाढ़े। आगै धरे जँजालनु गाढ़े ॥
हथनाल रु हयनाल उदंडी। तोप रहकला और भुसंडी ॥
अपनौ कटक घेरिकै ठाढ़े। कोस दोइ डेढ़क भुव बाढ़े ॥७॥

दोहा

तबही सिंह सुजान सौं कही दूत ने धाइ।
आजु तुरक बाहर कढ़े सजे सैन बहु भाइ ॥ ८ ॥
रुस्तमखाँ सु हकीमखाँ कुबरा अरु बलधारि।
फतेअली सु अलीकुली निकसे जंग बिचारि ॥ ९ ॥

सोरठा

सुनि तहँ सिंह सुजान चार्‌यौं चौकी दृढ़ करी।
सहस दोइ* लै ज्वान आपु चलयो पुठवार कौ॥ १० ॥

छंद अनुगीत

दुहुँ ओर धुंधिय धूरि रुंधिय चमक चुंधिय रुद्ध।
घनपटह बज्जिय गज गरज्जिय भीति भज्जिय कुद्ध ॥
हथनाल हंकिय तोप डंकिय धुनि धमंकिय चंड।
हयनाल छंडिय तरु भुसुंडिय धरनि खंडिय खंड ॥
दुंदुभि धमंकिय भेरि भंकिय तूर संकिय कूर।
अति घोर सोर भयान बढ्ढिय मारु रढ्ढिय सूर ॥
लखि दूर नद्दहिं कद बिहद्दहिं बदन बद्दहिं टेरी।
कुहकंत बान चलाइ चंडिय देत गोल बखेरि ॥

---

*पाठांतर-सहस दोइ परमान ज्वान संग निज लै चढ्यो।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धर धरत देत धवान कौं खरखरत बखतर अंग।
तरतरत तेहनु सौं भरे ढरढरत ढाल निषंग॥
कर करत धनुषन कौं खरे भरभरत बीर सुतीर।
थरथरत धर्द्ध डिहाव सौं नहिं टरत एकहुँ बीर॥
दुहुँ देखि दपटत हयन झपटत जाइ लपटत धाइ।
फिरि फेरि अहुटत चलत चुहटत दुहूँ पुहटत आइ॥
नहिं जमनि ठट्ट अहट्ट खाइय रहिय पाइ रुपाइ।
व्रज-बीरहू रनधीर रुप्पिय जैति हेत लुभ्याइ॥ ११॥

छप्पय

या विधि जुद्धहि करत दिवस बीतन जब लग्गिय।
तुपक तोप* जज्जाल चोट इनही की दग्गिय॥
यह सुनि सूरज कहिय आज ए जान न पावैं।
करिहैं श्री हरिदेव सोब करनौ कह तामैं॥
यौं बचन मानि सबही सुभट सनमुख धाइय रोस धरि।
इकबार सिमटि चहुँ ओर तें कहत देव हरिदेव हरि॥११२॥

भुजंगी छंद

छुटे एकही बार सो जुद्ध काजै। जुटे जाइकै धाइकै छोह साजैं॥
खुटे खग्ग हथ्थौं अरब्बीनु चढ्ढे। हटैं नाहिं कोऊ सबै साथ बढ्ढे॥
चहूँ ओर सौं सोर यौं घोर छायौ। मनौ सिंधु सद्दे हवा कौं हलायौ॥
किहूँ सेल सम्भारिकै हाँक कीनी। बियै तेग सौं काटकै डारि दीनी॥
किहूँ बाढ़ कै सेर समसेर वाही। किहूँ लैं भुसुंडीनु सौं देह दाही॥
तहाँ चंड कोदंड लै हथ्थ केते। धए सत्रु के सामुहैं पग्ग देते॥
कहूँ लेहु रे लेहु रे लेहु सद्दैं। कहूँ देहु रे देहु रे बीर बद्दैं॥
अहट्टैं भयौ सद्दता भूमि माहीं। तहाँ आपनी आपनी चोट वाहीं॥

---

* पाठांतर—तीर।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कहूँ सेल सन्नाह कौं फोरि बैठे । मनो भानुजा में फनी जात पैठे ॥
कहूँ साँग दुहुँ आँग कौं भेदि अच्छी। किधौं औन पानी चली भाजि मच्छी॥
लगे तीर तीखे कछू भाल* दीसैं । मनौ तीन नैना धरैं ईसरी सें ॥
कहूँ तेग तेगौ झरैं झार उट्ठी । मनो जोर ज्वालामुखी जंग रुट्ठी ॥
किते भाल भालेनु सौं लाल कीने । मनौ फाग के ख्याल के रंग भीने ॥
भरैं बत्थ सौं बत्थकैं लत्थपत्थैं । मुखौं मारुही मारु कौं बीर कत्थैं ॥
पलक एक ऐसे भई मारु भारी । लखैं दूरिही तैं हँसैं रैनचारी ॥
घए सूर के सूर दै पाइ अग्गैं । डराने तहीं खान के लोग भग्गैं ॥
जिन्हैं स्वामि के काम की लाज भारी। खड़े खेत खूनी नहीं संक धारी ॥१४

दोहा

अलाकुली सु फतेअली कुबरा गए पलाइ ।
रुस्तमखाँ रु हकीमखाँ ए पग रहे गड़ाइ ॥ १४ ॥

हरगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं ।
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं ॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकै ।
अति दुंद जुद्ध बिरुद्ध उद्धत तृतिय अंक सुनाइकै ॥१५॥

इति तृतीय अंक ॥ ३ ॥

दोहा

दुहूँ गयंदन पैं चढ़े धनुष बान गहि हत्थ ।
जम-किंकर जिमि कोह कै नरनु करत लथपत्थ ॥१॥

---

* पाठांतर—पार ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छप्पय

तिनके जुद्धहिं देखि बहुत चरबीचर आइय ।
जुग्गिनि जोरि ज़माति जहाँ जाहर जमुहाइय ॥
काली करत कलोल खलखलैं तहँ खबीस गन ।
भैरव भभर्‌यौ फिरत पिता के हार हेत रन ॥
जहँ ईस दूत जगदीस के गीरबान गनिका उमगि ।
जहँ रुस्तमखाँ रु हकीमखाँ स्वामि काम हित रहिय पगि ॥२॥

संजुता छंद

रन तैं न पाइ चलाइयै । धनु बान लै समुहाइयै ॥
बलु आपनौ सब संग लै । बिफरे सुबीर उमंग लै ॥
तिहिं देखि जट्ट झपट्टिए । पल एक माहिँ दपट्टिए ॥
तहँ गौर गोकुलराम ने । बहु रंग जंग मचावने ॥
करि कुद्ध जुद्धहिँ पिल्लियौ । गहि सेल साँगनु भिल्लियौ ॥
तिहिं भ्रात सूरतिराम हैं । बहु सूरता कौ धाम हैं ॥
बलिराम बिक्रम-आगरौ । गहि तेग जुट्टि उजागरौ ॥
हरताप कूरम केहरी । बरसाइ बाननु की झरी ॥
सिवसिंह सार सम्हारिकै । भिलि गयौ फौजहिं फारिकै ॥
अरु मीर बीर बिहंडनौ । बहु रीति जुद्धहिँ मंडनौ ॥
लहि तेग तीरन जुट्टियौ । पर भूमि तैं नहिं छुट्टियौ ॥
सर स्यामसिंह सम्हारिकै । अरि मारियै ललकारिकै ॥
ब्रजसिंह बीर महाबली । जिनि लै अनी अरि की दली ॥
पखरैत पाखरमल्ल हैं । करि धयौ पारतु हल्ल हैं ॥
अरु किसनसिंह दरेर दै । गहि दई साँग करेर दै ॥
बलवंड सिंभू कौ तनै । जिहिं नाम हरिनाराइनै ॥
अरु औरहू बहु सूर हैं । पर प्रान पीवन पूर हैं ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इतमें इते बलवान हैं। उत सेख मुगल पठान हैं ॥
तिन मैं मच्यौ घमसान है। सर सेल साँग कृपान है ॥
दुहुँ दट्टि दट्टि दबट्टहीं। अरि नाम लै लै रट्टहीं ॥
इक देत घाइ झटक्किकै। हय तें सुदेत पटक्किकै ॥
इक देत हूल हटक्किकै। इक एक परत लटक्किकै ॥
सुहकीमखाँ भुज-दंड तैं। अरु रुस्तमाँ बलवंड तैं ॥
ज्यौं कुपित सेही अंग तैं। त्यौं छुटत बान निषंग तैं ॥
तिहिं देखि सिंभू को बली। रिसज्वाल अंतर उच्छली* ॥
फटकार सेलहिं हत्थ मैं। हय हंकियौ अरि गत्थ मैं ॥
सुहकीमखाँ लखि आवतौ। जो हुतौ चाप नचावतौ ॥
तिहिं कान लौं कसि बान कौं। तकि दियौ ताकि भुजान कौं ॥
सर सो लग्यौ उर आइकै। छत कर्‌यौ श्रौन बहाइकै ॥
वह बीर तीरहिं कढ्ढिकै। रस रुद्र रंगहि बढ्ढिकै ॥
हय हंकियौ गजदंत पै। मनु राखिकै अरि अंत पै ॥
ज्यौं सिंह गज मदमंत पै। हय लस्यौ यौं करि-दंत पै ॥
फटकारि सेलहि उद्ध कौं। तकि आपुनो अरि सुद्ध कौं ॥
वह सेल गज ग्रह मेद कै। सुहकीमखाँ तनु छेद कै ॥
तब ही सुतीरन वुट्ठियौ। सु हकीमखाँ रन रुट्ठियौ ॥
इक दयौ सरकटि तक्किकै। वह लग्यौ हिरनहिं धक्किकै ॥
तब ही सुसिंभू पूत ने। गहि तेग बल मजबूत ने ॥
गज कुंभ दइय करक्किकै। मनु परिय बिज्जु तरक्किकै ॥
फिरि धाइ गज गद्दी दली। कसना बिदारिय भुजबली ॥
सु हकीमखाँ भुव पारियौ। गज पिट्ठि तें गहि डारियौ ॥
इमि गिरत लोग निहारियौ। मनु कन्ह कंस पछारियौ ॥
तबही सु सेल रु साँग की। बरषा भई चहुँ आँग की ॥

---

* पाठांतर-तिहिं देखि सिम्भू को तनै—रिस ज्वाल उर अन्तर सनै।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तबही सु औरन दौरिकै । लिए रुस्तमा झकझोरिकै ॥
करि एक एकहि, चोट सौं । राख्यौ हकीमहिं ओट सौं ॥
तबही सु तिनके साथ के । करि एक एकहिं हाथ के ॥
सरदार जूझत खेत मैं । भजि गए बहुत अचेत मैं ॥
तजिकै हथ्यारनु पिट्ठि दै । धस गए लसकर निट्ठि दै ॥
व्रज-बीर हू तिन संगही । चलि गए कटक उमंगही ॥ ४ ॥

दोहा

तबही वकसी के कटक खलभल परी अपार ।
आए आए सब कहैं सूरज सुभट उदार ॥ ५ ॥
घरी चारि डेरा लुटे बुटे तुरक बेहाल ।
जट्ट जट्ट कहते फिरैं सबने जान्यौ काल ॥ ६ ॥
फेरि बगद व्रज-बीर सौं आए ताही खेत ।
जहाँ परे रुस्तमबली अरु हकीमखाँ रेत ॥ ७ ॥

कवित्त

हुब्ब पै हकीमखाँ सुधक्कपक्क छोड़ि धायौ,
पग न डिगायौ भरि आयौ मन रीस नैं ।
निपट भयान छिन मान रन थान कर्‌यौ,
सान धरै बाननु चलाइ दस बीस नैं ।
रेत खेत भयौ तऊ सेत जस लेत रह्यौ,
नेत नेत गायौ कोटि तीन और तीस नैं ।
जोगिनी रकत पायौ तन ताकौ प्रेतपूत,
सीस पायौ ईस ने असीस व्रज-ईस नैं ॥८॥
तोम तम छाए सुलतान-दल आए, सो तौ
अमर भजाए उन्हें छाई है अचकसी ।
काल कैसी रसना कराल करवाल तेरी,
ब्याल भाल काढ़िकै करन लागी तकसी ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सूदन सुजान मरदान हरिनाराइन,
देव हरिदेव जंग जैति तोहिं बकसी।
जूझत हकीमखाँ अमीरनु कैं धक सी,
औ बकसी के जिय मैं परी है धकपक सी ॥६॥
चौंकतु चकत्ता जाके कत्ता की कराकनि सौं,
सेल की सराकनि न कोऊ जुरै जंग है।
कैयक अमीर मीर धीर तें फकीर करै,
बीर बलबीर कौं सदाही सुभी संग है।
सूदन सकल देस देसन अदेस भयो,
भाजत दुवन ज्यौं लियैं तुरंग तंग है।
जैति कौं निधान तेज भान के समान मान,
आजु तौ जहान मैं सुजान मुख रंग है ॥१०॥

सवैया

जुद्ध जुरैं न मुरैं ब्रजबीर सु सेलन सौं धकपेल मचाए।
जुग्गिन खप्पर पूरि नची पर के सिर दौर हरै पहराए॥
फेर फिरे तन श्रौन भरे मनु भोर के भान सुरेस पैं आए।
देखत सिंह सुजान अमान भुजान भरे उठि अंक लगाए ॥११॥

त्रिभंगी छंद

बाजे सहदाने सुजस पुराने तूर पुराने गुन गाने।
बकसी दल भाने मंगल माने यौं सुख साने हरषाने।
आए अतुराने बाँधे बाने जे मरदाने समुहाने।
ते कंठ लगाने दै बहु माने सूरज माने जग माने ॥१२॥

छंद हरगीत

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं।
जानें दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकै।
सु हकीम रुस्तम बित्तियौ रन अंक चौथो गाइकै ॥१३॥

इति चतुर्थ अंक ॥४॥

तोमर छंद

तबही सलाबत खान। मन मैं भयौ कलिकान ॥
हत जानि दोऊ बीर। अब को धरै रन धीर ॥
जबही सु साम उपाइ। अपने हियैं ठहराइ ॥
तबही वकील बुलाइ। कहियौ बहुत समुझाइ ॥
तू जा सुजानहिं पास। हमसौं करैं इखलास ॥
सब मुलक उसकौ देहुँ। अरु आपने सँग लेहुँ ॥
ज्यौं बनैं त्यौं तू लाउ। करिहौं बड़ो उमराउ ॥
जब यौं कही नव्वाब। सु वकील दीन जुवाब ॥
ज्यौं कहत आपु नवाब। त्यौं कहौं जाइ सिताब ॥
वह है सुजान अमान। जो मानिहै बलवान ॥
कहि यौं उठ्यौ सिर नाइ। तिहिं बार आयौ धाइ ॥
जहँ हो ब्रजेस कुँवार। रनभूमि कौं जितवार ॥
तिहिं निकट पहुँच्यौ जाइ। करि राम राम बनाइ ॥
तिहिं देखि सिंह सुजान। कछु लग्यौ मृदु मुसिकान ॥१॥

दोहा

कहि भेज्यौ सु नवाब ने सो सब सुनी सुजान।
कही कि कह्यौ नवाब कौं हम कौं सबै प्रमान ॥२॥
तब सूरज ने यों कह्यौ मंद मंद मुसिकाइ।
मेरौ जाय सलाम तू कहियौ सीस नवाइ ॥३॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बेअदबी हमतें बनी ताहि न राखैं चित्त।
ज्यौं चाकर हम साहि के त्यौं नवाब के नित्त ॥४॥
बिनती एक नवाब सौं मेरी रुखसद देहिं।
लाला सिंह जवाहरै अपनो हरवल लेहिं ॥५॥
जैसी कही नवाब की मानी सिंह सुजान।
त्यौंहीं सूरज की कही करी सलाबतिखान ॥६॥
लाला सिंह जवाहरै लीनौ वेगि बुलाइ।
सब सेना ताकौं दई बकसी दियौ मिलाइ ॥७॥
श्रीसुजान के पूत कौ हरवलु लियौ नवाबु।
कूँच ढुँढाहर कौं कियौ दोउन गाँठ्यौ दाबु ॥८॥
मुस्तकीम लखि तनय कौं हिय हरिदेव मनाय।
धायो आयौ ब्याह कौ रैन दिना इक भाय ॥९॥
तीन कर्म में एकहू ज्यौं मथुरा में होइ।
फेरि न आवै जगत मैं यह बिचार चित टोइ ॥१०॥
दोइ कर्म परबस निरखि एक जान निज हाथ।
कर्यौ ब्याह मथुरा पुरिहिं कृपा पाइ यदुनाथ ॥११॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराज श्री ब्रजेंद्र बदनेस कुमार श्रीसुजान-सिंह हेतवे कवि सूदन विरचिते सुजानचरित्र सलाबतखाँ समर विजय वर्णनो नाम तृतीय जंग समाप्तम् ॥३॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चतुर्थ जंग

छप्पय

खुलित केस अधखुलित भेस लोचन दिनेस-सिसु ।
चंद्रभाल त्रयनैन ज्वालमाला कृपाल किसु ॥
कर कपाल नौगुन सुब्याल सँग स्वान माल-धर ।
असि त्रिशूल षड्वांग डमरु कर भस्म दिगंबर ॥
सिव सिवा नंद समसान गृह समर सुरापानहिं करहिं ।
जय बटुकनाथ जगनाथ जय भूत साथ जय उच्चरहिं ॥ १ ॥

दोहा

अष्टादश षट बरस रितु पावस भादौं मास* ।
सूरज ह्वै मनसूर सँग किय पठान दल नास ॥ २ ॥
नवल राय मार्‌यौ गयौ करि पठान सौं जुद्ध ।
सुनि वजीर मनसूर कैं तन मन उपज्यौ क्रुद्ध ॥ ३ ॥
तुरत अहम्मद साहि सौं अरज करी यह जाय ।
भाई काइमखान कैं अमल बिगार्‌यो आय ॥ ४ ॥
मुझ कौं रुखसद दीजियै ज्यौं न लगै कछु देर ।
हुकुम पाइ कैं साह कौं डारौं मऊ बखेर ॥ ५ ॥
सुनत साह दीनो हुकुम जो कछु चहियै लेउ ।
बे अदबी जोई करै तिसै ज़ेर करि देउ ॥ ६ ॥
सिरोपाउ समसेर लै करि सलाम घर आइ ।
जिते रिसाले साह के ते सब लिए बुलाइ ॥ ७ ॥
जितौ अराबौ त्यार हौ सो सब लीनौ संग ।
उतरि पार डेरा दए ठठि पठान सौं जंग ॥ ८ ॥

---

* पाठांतर—अष्टादस सत बरस षट पावस भादौं मास ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बाईसी सब साह की कियौ खजानौ हाथ।
कियौ कूँच मनसूर ने दस हजार हय साथ ॥ ९ ॥

तोमर छंद

इक कूँच एक मुकाम। चलतें लए बहु ग्राम ॥
दस पाँच दिन के बीच। पहुँचे सु कोल नगीच ॥
तिहँ थान कीन मुकाम। बहु सैनसाजि सकाम ॥
दस सहस हैं असवार। दस दोइ पाइक त्यार ॥
सत तीन कुंजर गुंज। रथ ऊँट पुंजनि पुंज ॥
तिहिं सैन नौबति आठ। सु निसान के बहु ठाठ ॥
अरु जबर जंग अगार। सत एक बहुत जजार ॥
यह सैन संग वजीर। धरि कोल बैठिय धीर ॥
जिय जानिकै बलवान। वह राउ बुद्धि-निधान ॥
हय साजि दोइ हजार। वह पर्यौ आइ अगार ॥
पौरच पुंडीर नरेस। सजि आइयौ यह वेस ॥
गहिकै सुकलम नवाब। लिखियौ सुपत्र सिताब ॥
व्रजराज-कुँवर सुजान। तुझसा न हिंदू आन ॥
यह देखतें फरवान। करना मुझै बलवान ॥
इस बख़ ढील न होइ। चढ़ि आवना सब कोइ ॥
रब करैगा कछु खूब। यह जानियौ न हबूब ॥
हमसैं तुम्हैं इखलास। दरपुस्त सैं यह रास ॥
कछु खरच की नहिं ढील। हय लाउ पैदल पील ॥
नहिं दर का यह बख़। मुझ पै परी अब सख्त ॥१०॥

दोहा

यौं लिखिकै रुक्का दयौ दयानाथ के हाथ।
सुतरसवार चलाइदै तुझकौं रहना साथ ॥ ११ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यौं सुनि हुकुम वजीर कौ तब वकील सिर नाइ।
ड्यौढ़ी बाहिर आइकै दीनो डाँक चलाइ॥ १२॥
सुतुरसवार सवार हो चल्यौ चाल उत्ताल।
पहुँच्यौ आइ सहार में जहाँ कुँवर ब्रजपाल॥ १३॥
करि सलाम कागद दयौ अरज करी यह बोल।
सफदरजंग नवाब अब डेरा कीने कोल॥ १४॥
मुझे आपके पास कौं रुखसद किया नवाब।
कुछ पठान की तरफ सें जाना होतु दवाब॥१५॥
सफदरंजग वजीर कौ कागद बाँचि सुजान।
अरज करी बदनेस सौं तबही बुद्धिनिधान॥१६॥
लिखि भेज्यौ मनसूर ने दीन वचन महाराज।
जु कछु आप आइसु करौ करनो मोहि सुकाज॥१७॥
सुनि ब्रजेस अज्ञा दई करनौ याको संग।
पै इन तुरकन सौं कछू बूझतु नहीं प्रसंग॥१८॥
जौ यह भेज्यौ साह कौ चल्यौ पठानतु पास।
तौ तोहूकौं पहुँचनौ पै न करौ बिसवास॥१९॥
आइसु लै बदनेस कौ सुभ दिन कियौ पयान।
ठौर ठौर की फौज कौं भेजि दए फरवान॥२०॥
उतरि पार डेरा दए कालिंदी के तीर।
सुनि सुजान के बचन कौं आए सब ब्रज बीर॥२१॥
भले भले सरदार जे ते सब पहुँचे आइ।
तौ लौं सफदरजंग कौ रुक्का आयौ धाइ॥२२॥
बखत नहीं अब देर का सुनियै सिंह सुजान।
इस कागद के बाँचते करियौ बेग पयान॥२३॥
देखत रुक्का कुँवरजी कही हरौलहिं बोल।
अब बहीर चलती करौ काल्हि पहुँचनो कोल॥२४॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हुकुम पाइ कुतवाल ने दई बहीर लदाइ।
सूरज सूरज उदित हो चल्यौ कोल कूँ धाइ ॥२५॥

हरगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेसनंद सुजान हैं।
जानैं दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं।
ताको चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकै।
सजि सैन कोल पयान कीने प्रथम अंक सुनाइकै ॥२६॥

इति प्रथम अंक ॥ १ ॥

छप्पय

धमिय धमाधम बंब धमक धरनीधर धक्किय।
धाम धाम अरि धूम धरा धूरह धव रुक्किय* ॥
धावत धवनि हयंद गयंदनि की बर रबकनि।
उग्गिय दुग्ग पताक ताकि दुसमन लिय दबकनि ॥
तूरिय अवाज पूरिय दिगनि सुनत जमन दरक्यौ हियौ।
ब्रजराज-पूत मजबूत मन जबहि कूँच कोलहिं कियौ ॥१॥
बिप्र बरन बहु सीस बाहु अवनीस बाहु भव।
बनिक उरू अत्यंत चरन चय चरन भए सब ॥
सेल साँग सर रोम रजत अवतंस भुजा बर।
सूरज सूरज नैन चंद चमचमत छाह कर ॥
पूषन मयूष भूषन झमक बहै कहै कवि तेज-तपु।
गज बाजि कंध ब्रजराज बपु मानौ लसतु बिराट-बपु ॥२॥

---

* पाठांतर—धमिय धमाधम बंब धमकि धरनी धुव रुक्किय।
धाम धाम अरि धूम धरा धरनी धर धुक्किय ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छंद गाहा

सुनियं खबरि वजीरं बदन-तनं आइय सह सूरं ।
इसमाइल तिहि अग्गं दिय पठाइ छाय सुखपूरं ॥३।

कुंडलिया

सूरज इसमाइल मिले दुहूँ परस्पर धाइ ।
ज्यौं सूरज भुवसुत मिलत एक रास में आइ ॥
एक रास मैं आइ दुहूँ आनंदन छाए।
इसमाइल लै आइ मिसल डेरा करवाए ॥
करवाए सनमान भेज मीरन मन सूरज ।
भूरज राखनहार जबै आयौ सुनि सूरज ॥४॥

सोरठा

सफदरजंग नवाब आयौ जान सुजान कौं ।
हियैं मिलन कौ चाव करि बैठ्यौ दीवान तब ॥५॥
खबरि भई तिहिं बार सूरजमल्ल कुँवार कौं ।
कही कि जौ दरबार तो चलि मिलौं नवाब सौं ॥६॥
यों कहि सिंह सुजान त्यार भयौ दरबार कौं ।
जे निजु कृपानिधान तिनु सिरदारनु संग लै ॥७॥

कवित्त

जीत रनजीत हठीसिंह औ अनूपसिंह
जैतसिंह बलू बलराम बीर बंका है ।
बड़ा चहुँवान मरदान मीर दुरजन
गोकुल सुराम सुखराम अनसंका है ।
रामचंद तोमर कटारिया सुरतिराम
पाखर सुमल्ल जौ करतु रन हंका है ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उद्धत उदार सरदार दरबार काज
साज चढ़्यौ सूरनु* सुजान देत डंका है ।।८।।
आयौ सिंह सूजा हिंदू ता सम न दूजा और
सुनत वजीर न समात फूल्यौ ३ंग मैं ।
आगै उठि लीनो भरि मोद अंक भीनो बहु
कीनौ सनमान सबही कौ परसंग में ।
बूझि कुसरात गहि हाथ सौं सुजान हाथ
बैठक बताइ इखलास के प्रसंग मैं ।
मीर उमरावन की भीर मैं दिपत दोऊ
भानु भृगु सोहैं ज्यौं सुरासुर के संग मैं ।।९।।
हाथी हय हीरा सिरपेच जेगा चीरा संग
केते सरोपाव पासबान लै लै आए हैं ।
अतर गुलाब बीरा होत हैं पवन सीरा
लैकर नवाब सबही कौ पहराए हैं ।
सफदरजंग ने सुजान सनमान हित
सबै सरदारनु के कीने मन भाए हैं ।
रुखसद पाइ सुख पाइ चले ब्रज-बीर
ज्यौं धनेस धाम तैं सुरेस सुर धाए हैं ।।१०।।

पवंगा छंद

दूजे दिन दरबार सुजान सु आइकै ।
देखत ही मनसूर महा सुख पाइकै ।।
खिलवति करी नवाब जताइ वकील सौं ।
मसलति बूझन काज सुजान सुसील सौं ।।११।।
तब वजीर मनसूर कुँवर बर बुज्झियौ ।
मेरा इस मैदान आवना सुज्झियौ ।।

---

* पाठांतर—सूरज ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नाहक अहमदखान पठान अरुज्झियौ ।
नवल राइ करि जंग तिन्हौंसैं जुज्झियौ ॥१२॥

दोहा

नवल राइ मार्‌यौ नहीं मार्‌यौ मोहि पठान ।
तौ लौं कल नहिं दैंउगौ जौ लौं इस तन जान ॥१३॥

पवंगा छंद

जौं लौं इस तन जान पठान न रक्खिहौं ।
मऊ फरक्काबाद खोदिकै नक्खिहौं ॥
बंगस वंस बिगारि नारि नहिं छंडिहौं ।
बिन पठान करि भूमि फेरि घर मंडिहौं ॥१४॥
यही अरज मैं करी साह सौं जायकै ।
पाइ साह कौ हुकुम चल्यौ सुख पाइकै ॥
जु कछु अराबौ त्यार लयौ सुधराइकै ।
दस हजार असवार पार उतराइकै ॥१५॥

दोहा

रमजानी अरु इसाखाँ मीर बका ए साथ ।
आए जुजवी फौज सौं नहीं इन्हौं के साथ ॥१६॥

छंद पवंगा

नहीं इन्हौंके साथ रिसाले साह के ।
रेजा और अमीर न खातिरखाह के ॥
मेरा तौ इतकाद एक है तुज्झ सौं ।
अब करना सो कहौ कुँवरजी मुज्झ सौं ॥१७॥
केती लाए फौज और क्या आवनी ।
सो सब लेउ बुलाइ न देर लगावनी ॥
जो कोइ तेरे साथ मिलैगा आइकै ।
करनी तिसकी गौर मुझे सुख पाइकै ॥१८॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दोहा

यौं सुनिकै बदनेस-सुत ता वजीर के बैन ।
बोल्यौ तासौं अरि-दवन हियैं बढ़ावन चैन ॥१६॥
ठाकुर साहिब ने कह्यौ मो सौं चलती बार ।
जो कछु हुकुम नवाब कौ करनौ तुमकूँ सार ॥२०॥

पवंगा छंद

करनो तुमकौं सार न देर लगाइयै ।
नवलराय कौ बैरु बेग बगदाइयै ॥
एक लाख तरवार जु सिंसिनवार की ।
सो नवाब के साथ पार औ वार की ॥२१॥

दोहा

ठाकुर साहब की प्रकृति है सो सुनौ नवाब ।
जासौं पनु परि जातु है फिरै न कोटि दबाव ॥२२॥

छंद पवंगा

फिरै न कोटि दबाव होंहिं जौ साह के ।
जासौं पनु परि जाइ रहैं वे ताहि के ॥
मोसौं चलती बार कह्यौ उन टेरिकै ।
मेरौ धर्म थिराइ करौ सो हेरिकै ॥२३॥

दोहा

मैं आयौं ढिग आपके जो कछु अज्ञा देउ ।
ताकौं मैं हाजिर अबै करिहैं श्री हरिदेव ॥२४॥

सवैया

जो कछु फौज रही ब्रज मैं अब सो सब आपके पास बुलाऊँ ।
चाहन जो सरदार हमें निरधार तुम्हारे ही पास लगाऊँ ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्री बदनेस के आपु प्रताप तैं बंदगी मैं न कछू कम लाऊँ।
साह के काज की आपकौं लाज है राज के काज कौं मैं उठि धाऊँ ॥२५॥

दोहा

ऐसे बचन सुजान के सुनि कै सफदरजंग।
बोल्यौ सब हिंदून मैं है व्रजेंद्र मुख रंग ॥२६॥
रूपसिंह तेरा चचा और शहादतखान।
है सलूक दर पुस्त सैं दूना किया सुजान ॥२७॥
यौं कहिकै मनसूर ने लै मोतिन की माल।
श्री सुजान के कंठ मैं डारी होत खुसाल ॥२८॥
श्री सुजान सिरु नाइकै करि सलाम कर जोरि।
अरज करी मनसूर सौं अपनी बुद्धि बटोरि ॥ २९ ॥

छप्पय

जो नवाब की फौज रही पूरब में छाई।
लीजै बोलि सिताब ढील काहे जु लगाई ॥
भूमि भदावर देस सिंह हिम्मति है राजा।
तासौं लीजै काम गौर करि करियै ताजा ॥
मैंडू जवादि खुरजादि के सबै सुभट आवत चले।
अरु जो न आइहैं या समैं जानि परै जु बुरे भले ॥३०॥

कुंडलिया

ऐसें कही सुजान ने सुनि वजीर सुख पाइ।
तेरा आवन जो हुवा तौ क्या रही तबाइ॥
तौ क्या रही तबाइ करौ चारिक मुकाम अब।
आइ इकट्ठे होइ लोग मेरे तेरे सब॥
सब सलूक हो जाइ आप करना है जैसे।
अब डेरे कूँ जाहु कही मनसूर सु ऐसे ॥ ३१ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सोरठा

तबही सिंह सुजान करि सलाम आयौ चल्यौ।
सहित मंद मुसिकान दाखिल निज डेरनु भयौ॥ ३२॥

तोमर छंद

दिन दूसरे मनसूर। इखलास राखन पूर॥
करि आपनो दरबार। सब कौं कह्यौ तिहँ बार॥
चलना मुझे इस बार। जु सुजान के दरबार॥
इकु बोल कै प्रतिहार। करि पालकी अबत्यार॥
अबही जु होतु सवार। करनी न मोहि अवार॥
सुनि दूत ने ततकाल। करि खबरि सूरज माल॥
इत आइ पालकि हाल। चढ़ियौ वजीर बिसाल॥
चढ़ि आइयौ बड़ भाल। बदनेस कौं जहँ लाल॥
लखि आवतौ मनसूर। उठि धाइ सूरज सूर॥
करिकै अनेक सलाम। धरिकै नजरि बहु दाम॥
गज बाजि साज ललाम। जिनके सुमोल उदाम॥
अरु आपु अदबु बजाइ। दरबार गयौ लिवाइ॥
मसनंद बैठि नवाब। जहँ और की नहिं ताब॥
तब देख सफदरजंग। कहियौ जु सहित उमंग॥
अब बैठि सिंह सुजान। हमसै तुम्हैं नहिं आन॥
तबही अदाबु बजाइ। बैठ्यौ सुजान सुभाइ॥
जब ही बिलोकिय बीर। लगिहौं न सीत समीर॥
अरु आस पास खवास। बहु वेस वेस सुबास॥
धरि हेम संपुट बीच। धरिकै सुगंध नगीच॥
अरु पानदान अपार। भरिकै धरे सु अगार॥
सु वजीर सौं कर जोर। कहियौ सुजान निहोर॥ ३३॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कवित्त

हम जिमींदार सरदार किए आपु आइ
हमैं निरधार बंदगी में नित जानौगे।
राजा राना राय उमराय सब साहिब के
कहे एक बार के अनेक करि मानौगे।
सूदन सुजान॰ कहै साहिब नवाब सुनौ
करनौ है मोहिं जोई मुख तैं बखानौगे।
चकत्ते चकत्ता जू के चोरनु कौं चूर* करि
चुगल चवाइन कौं चौकस कै भानौगे ॥ ३४ ॥

दोहा

ऐसे वचन सुजान के सुनि वजीर मनसूर।
बोल्यौ जो हम तुम मिलैं तौ सब होइ जरूर ॥ ३५ ॥
यौं कहि सफदरजंग ने लीने पाँव उठाइ।
अपने डेरनु कूँ चल्यौ सूरज सौं सुख पाइ ॥ ३६ ॥
फेरि कह्यौ मनसूर ने करि मुकाम ह्वाँ दोइ।
लोग बाग की हाजरी कूँच आगिले होइ ॥ ३७ ॥

रोला छंद

यौं कहिकै मनसूर आपने डेरनु आयौ।
सूरज निज दरबार बैठि आनंदहिं पायौ ॥
ठाकुर साहिब पास पत्र इक तबै पठायौ।
लिखि वजीर कौ मिलनु और डेरनु जो आयौ ॥
फेरि लिख्यौ महराज देस जो फौज रही है।
भेजौ करि ताकीद जंग की बात सही है ॥
दिना दोइ में कूँच होइ आगैं नवाब कौ।
तातैं ढील न होइ काम यह है सिताब कौ ॥ ३८ ॥

* पाठांतर–चून।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छंद आभीर

यौं लिखि सिंह सुजान। ब्रजपति चित सुखदान।
जाके उर नहिं आन। श्रीहरिदेव समान॥ ३९ ॥

हरगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं।
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइ कै।
मनसूर-सूरज कौ मिलनु कहि दुतिय अंक सुनाइ कै॥४०॥

इति द्वितीय अंक ॥२॥

—:*:—

दोहा

फिर बीते द्वै तीन दिन सफदरजंग नवाब।
कहि भेज्यौ नृप-कुँवर सौं करियै कूँच सिताब॥१॥
यह सुनिकै सूरज कही अबहीं डंका देउ।
जित कौ कूँच नवाब कौ तित कौ पैंड़ो लेउ॥२॥

छप्पय

सफदर जग नवाब बीर बदनेस-तनय बर।
सेरजंग रमजान मीर बक्का उद्धत घर॥
ईसखान कौं आदि और उमराव दिली के।
हिम्मतिसिंह नरिंद राव अरु रंग भली के॥
औरौ भुवाल लघु हाल कै जिमींदार कहँ लगि गिनौं।
चालीस सहस हय कूँच किय सजल जलद धाए मनौं॥३॥

कवित्त

डंकनि के सोर चहुँ ओर महा घोर घुरे
मानो घन घोरि घोरि उठे भुव ओर तैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धवल पताका ते बलाका नील पीत स्याम
कैयौं रंग रंग के बिहंग आदि मोर तैं।
मीन मनु दामिनि गयंद-मद नीर पाट
बाजंत हयंद ज्यौं परतु जल जोर तैं।
पावस प्रकास कौं चढ़त पाकसासन ज्यौं
सफदर जंग ने पयानो कर्यौ कोर तैं ॥४॥

पादाकुलक छंद

सिंधुज गंज देइकै पाछैं। डेरा किए कटक लै आछैं ॥
कछुक दिननु मुकाम करवाए। पुनि धाए मारहरें आए ॥
तहँ मुकाम कीये बहुतेरे। सूरज सुरट भए बहु भेरे ॥
असी हजार हयंद इकट्ठे। सफदर जंग संग भए पट्ठे ॥
पंद्रह सहस संग सूजा के। धरा धरा के धीर लड़ाके ॥
ऊँट गयंदनु की को बूझै। पैदल कौ जु अखैदल सूझै ॥
रथ पालकि नालकी अहद्दै। चलत चाल भुव चाल जमद्दै ॥
सफदर जंग जंग कौं काप्यौ। डेरा जाइ नदरई रोप्यौ ॥
कारी नदी उतरि अतुरानौ। कासगंज पहुँच्यौ तररानौ ॥
कासगंज दिन पाँचक बसि कै। श्रीसुजान राख्यो वह हँसिकै ॥
फिर करि कूँच नौलखा लीनौ। तहाँ व्यूह-रचना कौ कीनौ ॥
सफदरजंग बुद्धि करि नीकौ। जथा जोग्य दइ बाँटि अनी कौ ॥५॥

छप्पय

सेर जंग* भुज बाम तासु ढिग राउ बहादुर।
मीर बका इक और पुट्ठि रमजान खान पुर ॥
ईस खान कर जोर अग्ग धरि हिम्मति राजा।
इसमाइल धरि पुट्ठि जंग रंगनि मैं ताजा ॥

---

* पाठांतर—सिंह।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अरु आपु मद्धि सु अवद्धि है यौं नवाब निजु बल धरिय ।
उद्धत उदंड भुजदंड बल श्री सुजान हरवल करिय ॥६॥

छंद दुपई

यह सुनि अहमद खाँ पठान ने सब पठान सौं भाखी ।
अब वजीर आयौ समुहायौ तुम क्या मसल्लति राखी ॥७॥
आवन कहत रुहेले ते भी आए कछू न आए ।
जिसे तेग बाँधे को हिम्मति ते क्या रहैं दुराए ॥ ८ ॥
भाई काइम खाँ के भाई जेते बड़े कहाए ।
ते सब कटैं हटैं नहीं रन सैं सबही काम सु आए ॥ ९ ॥
अब बीबी साहिब ने मुझ कौं ए हथियार बँधाए ।
जे भाई इस काज लाज पै मेरे जान खुदा ए ॥ १० ॥
रुस्तमखाँ भाई से कहना अब हरीफ चढ़ि आए ।
मऊ पठान बारहे सैयद काहे बिरद कहाए ॥ ११ ॥
यौं सुनि अहमद खाँ का कहना सब पठान उठि धाए ।
जौ पठान तिस कौ तौ लरना ऐसे बचन सुनाए ॥ १२ ॥

कवित्त

बंगस की लाज मऊ खेत की अवाज यह
सुने ब्रजराज से पठान बीर बबके ।
भाई अहमद खान सरन निदान जान
आयौ मनसूर तौ रहै न अब दबके ।
चलना मुझै तो उठ खड़ा होना देर क्या है
बार बार कहे तें दरार सीने सब के ।
चंड भुजदंड वारे हयन उदंड वारे
कारे कारे डीलनु सँवारे होत रब के ॥१३॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छंद चौबोला

अहमद खाँ देखत ही देखत सब पठान बर बाजि चढ़े।
मनौ अदित-सुत कौ प्रताप सुनि दिति-तनूज धरि तेह कढ़े ॥ १४ ॥
तब काइम खाँ कौ लघु भाई दिल अंदर यह सोच चढ़्यौ।
अब पठान मुरने न जंग सौं ह्वै सवार निज मंत्र पढ़्यौ ॥ १५ ॥

दोहा

चलत अहम्मद खान के जेतो जाति पठान।
लरके जोरू संग धरि आए बुद्धि-निधान ॥ १६ ॥

छप्पय

कंचन कलित तुरंग बलित कंचन दुति भूषन।
बिसद बसन धनु बान धरिय मनु चंद मयूषन ॥
तेगा तीछन हथ्थ किते नेजान फिरावत।
ढुक्कत तबल निसान असित धावत फहरावत ॥
सित असित डट्योरे दीह तन सजि सनेह रोसन सने।
बंगस सुभट्ट संघट्ट ह्वै करि उभट्ट चाहत रने ॥ १७ ॥

छंद दुमिला

सुनि सफदरजंगै चित धरि जंगै करि सिलाह उच्छाह मढ़े।
दस सहस रुहेले सार सकेले गंग पार तें उतरि ठढ़े ॥
दै दुंदुभि डंके होत निसंके क्रूर ग्रह ज्यौं कोपि कढ़े।
अहमद खाँ संगै करत उमंगै ठानि अठान पठान चढ़े ॥ १८ ॥

दोहा

सफदर जंग नवाब तें पाँच कोस के बीच।
गंगा खादर देखिकै डेरा किए नगीच ॥ १९ ॥
रुस्तमखाँ अरु हबसखाँ सुत सुजात करि टेक।
सुनिकै अहमद खान कौं आए सूर अनेक ॥ २० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तनय महम्मदअली ने कहि भेज्यौ तिहँ बार।
मुझको आया जानियौ तुमसौं चलत हथ्यार ॥ २१ ॥
अहमद खाँ* सनमुख भयौ यह सुनि सफदर जंग।
मसलति करी सुजान सौं करनौ कहौं सुढंग ॥ २२ ॥

सवैया

सुनि सूरज भूरज राखनहार बिचार यहै निरधार कह्यौ।
अब जंग कियैं बिन रंग नहीं वह गंग के तीर पठान रह्यौ ॥
तुम सैन सजैं पुठवार रहौ अब आयसु देहु न और सह्यौ।
हम जाय जुरैं पहले उन सौं तुम गौर करौ लखि लोह बह्यौ ॥ २३ ॥

सोरठा

यौं कहि सिंह सुजान करि सलाम मनसूर कौं।
पायौं बहु सनमान निज डेरनु कौं आइयौ ॥२४॥

दोहा

पीछैं कटक नवाब के निज बहीर कौ राखि।
सूरज कियौ बिचार चित जमींदार मति भाखि॥२५॥

छंद संजुता

तबही नकीब बुलाइकै। कहियौ सु ताहि सुनाइकै ॥
सब सैन में अब जाइकै। कहि आउ यौं समुझाइकै ॥
सुबहीर कौं लदवाइकै। मनसूर के ढिग जाइकै ॥
लखि ज्यौं रहौ सुख पाइकै। गजहू बहीर पठाइकै ॥
अरु हैं सवार हयंद के। सबही सुजात बिलंद के ॥
सजि आवही मो पास कौं। लघु रहैं दाना घास कौं ॥
यह पाय आयसु धाइयौ। कहियौ सुत्यौं कहि आइयौ॥
तबही बहीर लदाइयौ। कुतवाल लै पहुँचाइयौ ॥

---

* पाठांतर—असदखान।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मनसूर डेरन पुट्ठि में। डेरा किया एक मुट्ठि में ॥
इकजात बाजिनु पै चढ़े। सर सेलु साँगन लै बढ़े ॥
अब आइ सूरज तीर कौं। करि राम राम सुधीर कौं ॥
लखि सो सबै दलु आइयौ। तबही हयंदु मँगाइयौ ॥
चढ़ि सूर बीरन सौं कही। बर जंग लीजति है सही ॥
कहियो चढ्यौ सूरज बली। सबही कही सुभली भली ॥
करिकै निसानन घोर कौं। पियरी धुजा चहुँ ओर कौं ॥२६॥

कवित्त घनाक्षरी रूपक

जब होत असवार भुव भार के निवारक,
वंदी सरदार बदनेस को कुँवार।
तब सिनसिनवार दै अवारिया अगार और,
खुँटैला जुझार बीर चाहर अपार।
पुनि सोगरवार भिनवार नौहवार सूर,
सबै इकसार खिनवार रुतवार।
सब साजे नर बार भीर भोंगरे उदार चढ़े,
गूदरे गुरार दै दरेर दै सवार ॥ २७ ॥

हरगीत छंद

रनजीत जीत अनूपसिंहजु हठीसिंह अवारिया।
वह जैतसिंह अरिंग ठाकुर पाखरान सवारिया ॥
बलिराम अरु बलराम बल्लू बीर लालक चढ्ढियौ।
किसनेस गोकुल राम और प्रताप कूरम बढ्ढियौ ॥
भट मीर मोहनसिंह सूरतिराम सूर कटारिया।
वर रामचंद्र कुँवार ठाकुरदास सेंगर रारिया ॥
वह समरसिंह चँदेल जादौं सकल धनसिंह गौर हैं।
अरु उदैभान सुभ्रात स्यौसिंह फतेसिंह जुझौर हैं ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वह मिसुर हरनागर उजागर सहित भ्रातन संग में ।
चढ़ि कै उदोत अनूपसिंह सुद्धिजनु द्विजवर जंग में ॥
अरु बीर लछमनदास पैमा पृथीसिंह उमंग मैं ।
जयकृष्न मनसाराम स्यौसिंह लोकमन एक रंग मैं ॥
मतिवंत किरपाराम तोफाराम हरनाराइनौ ।
अरु स्यामसिंह सु जैतसिंहहु जंग रंग मचावनौ ॥
औरौ अनेक सु एक मन करि संग सूरनु सोहियै ।
करि ग्वाल बालन संग मैं मन कृष्न कंसहि कोहियौ ॥२८॥

छप्पय

चंद्रभाल विष भू कराल सुरभोग मंद हँसि ।
कंबु कंठ मद कोह रोग रिपु कृपाश्रीय ससि ॥
सुर-गज गति सुर-बाजि चढ़िय सारंग धनुष लसि ।
कामद गाइ सुकित्ति काम-द्रुम करहि वृषभवसि ॥
रंभादि सक्ति भूषहि प्रभा कौस्तुभ मनि उर उर बसिय ।
यों भूरज राखन रतन-जुत सागर सम सूरज लसिय ॥२९॥

छंद अरिल्ल

तीन कोस सूरज भुव लिन्निय । घेरि पठान सबै इक किन्निय ॥
चारिहुँ ओर धूम करि दिन्निय । तऊ पठान रोस नहिं भिन्निय ॥
आस पास दलदल बहु पिक्खिय । यातें रार होत नहिं दिक्खिय ॥
कछू पठान बान दै बुट्टिय । इतहु बान दबान बहु छुट्टिय ॥
ऐसे दोइ तीन दिन बित्तिय । बंगस-सुत भेदहि चित चित्तिय ॥
बोलि दूत तिहँ बार पठाइय । सूरज पास जाह तू भाइय ॥
मेरा अवल सलाम सुनाइय । पाछैं कहना सो सुनि जाइय ॥३०॥

छंद नीसानी

भाई सूरजमल्ल सें कहना यह, भाई ।
हम तुम बंदे साह के बुज्झै न लराई ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जो तुम संग वज़ीर कैं तौ भी नहिं बुज्झै ।
जमींदार सौं आइकै जमिंदार न जुज्झै ॥
इस वज़ीर दा संग क्या करना था तुज्झै ।
जिसकौं अपना गैर का कुछ सोच न सुज्झै ॥
अवल रुहेलौं सैं लरैं काइमखाँ मूवा ।
तिसौ बख्त सुनि साह सैं यह रुखसद हूवा ॥
जबती करने आइया हम भी यह जानी ।
बीबी साहब संग लै हूवे अगमानी ॥
जु कछु माल था सो दिया उसने कपठानी ।
इस जमीन दे रक्खने गंगा विच आनी ॥
तौ भी हम सैं ना टरा वह नेक बिचारा ।
ओल दई हम साह कौं कीना निरवारा ॥
कसम खाइकै गंग की यह मुलक बताया ।
तुमकौं बकस्या साह ने मैं भी फुरमाया ॥
तीप रहकला माल सब लै ओल सिधाया ।
बैठि जहानाबाद में तौ भी न सिराया ॥
नवल राय मर्दूद कौ हम पै सिखलाया ।
उसने चार्यौं ओर सैं यह मुलक छुड़ाया ॥
तब चारिक खंदे मिले वह मारि गिराया ।
यह लोभी इस देस दा हम पै खुनसाया ॥
ओल हमारा साह सै लै जिभै कराया ।
एते पै सब फौज लै देखौ चढ़ि आया ॥
अब इस्सैं हमसैं वही जो रब्ब बनाया ।
करिकै इस इतबार कौं कहि कौन सिराया ॥
हम तौ अच्छे आप सैं यौं कहि पठवाया ।
तुमसैं हम नहिं लड़ैंगे क्यौं आन दबाया ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सफदर जंग नवाब सैं मेरा है दाया।
उसकौं आगैं दै लड़ौ कीजै मन भाया ॥३१॥

दुपई छंद

अहमद खाँ समझाइ दूत कौं सूरज पास पठायौ।
अपनै स्वामि-काम के काजैं सो सूरज पै आयौ॥
जैसे कही अहंमदखाँ ने तैसे अरज करी है।
श्री सुजान यह सुनि कै भाखी अब तौ रारि खरी है ॥३२॥
अब तौ रारि बनेगी जैसै तैते लरनौ आयौ।
कालिह वजीर हरीफ तुमारो भोरहि आवै धायौ ॥३३॥
ऐसे ज्वाब पाइ सूरज सौं दूत जु निजु सिर नायौ।
करि सलाम अपने आगा कौं ज्यौं कौ त्यौं समझायौ॥
सुनत पठान यहै ठहरायौ जब वजीर कौं देखौ।
अपनी फौज त्यार करि रक्खौ नहीं और सौं लेखौ ॥३४॥

दोहा

सूरज हू मनसूर सौं कहि भेज्यौ ता बार।
ए पठान मारे धरे जौ तुम होउ सवार ॥३५॥
सुनत कही मनसूर ने सुनियौ सिंह सुजान।
लरना इन पाजीन सैं मुझकौं क्या मैदान ॥३६॥
एती फौज करौ खड़ी जिसका यह उनमान।
घोड़ौं ही की लीद में मारौं आटि पठान ॥३७॥
हिम्मति गई वजीर की ऐसी कीनी बुद्धि।
होनहार जैसी कछू तैसीयै मन सुद्धि ॥३८॥

सवैया

पुनि यौं सुनि सिंह सुजान बली मनसूर के पास रिसाय गयौ।
अब आप कहा फुरमावत हौ बिन जंग कहूँ अरि जेर भयौ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अत तौ सब बीस हजारहि हैं फिर लाख जुरें नहिं जाय दयौ।
अरु जो तुमरे मन में यह बात तौ काहे कौं मोहि अगार दयौ ॥३६॥

दोहा

है मेरी मसलति यहै अब सवार तुम होहु।
धीरज सौं ठाढ़े रहौ देखौ बजै सु लोहु ॥४०॥
ईसाखानहु यौं कह्यौ मसलति यही नवाब।
जंग विना क्या मुद्दई मनैं और दबाव ॥४१॥
जे मरने कौं त्यार है तिसकौं फौज करोर।
करि क्या सके लड़े विना चंग व्यार बिन डोर ॥४२॥
सुनि वजीर तैयार ह्वै कही कि होहु सवार।
सबही लसकर में कहौ बाँधैं बेगि हथ्यार ॥४३॥
करि सलाम सूरज कही मोकौं रुखसद देउ।
आप होहु असवार जब सब चौकस करि लेउ ॥४४॥
करि सलाम सूरज चली आगैं कियौ पयान।
जहाँ मोरचा आपनो आयौ ताही थान ॥४५॥

हरगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं।
जानैं दिलो दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं॥
ताकौ चरित्र कलूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकै।
मनसूर सूरज चढ़ि्ढयौ अहमदखाँ समुझाइकै ॥४६॥

इति तृतीय अंक ॥ ३ ॥

छंद संजुता

तब तो वजीर सितावही। सबकों सुमिसिल बतावही॥
वह राउ संग अहीर लै। कहुँ सेरजंगहिं मीर लै॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रमजान खाँ बक्सी-तनै । सँग मीर बच्चा सैं सनैं ॥
ए पाँचहू भग आगरे । हो जबरदस्त उजागरे ॥
इसमाइलै बुलवाइकै । नृप हिम्मतै समझाइकै ॥
वह जेरदस्तहिं ओर कौ । रन रुपियौ कर जोर कौ ॥
अरु जे भुवालइ संग में । सब राखि पुस्त उमंग में ॥
अरु इसाखाँ पनपाल कौं । सनमुक्ख राखिय ढाल कौं ॥
तिहिंतै अगार जंजाल दै । हथनाल औ गयनाल दै ॥
धरि तासु अग्गय तोप कौं । करि कोप कौं अरि-लोप कौं ॥
सब तैं अगार सुजान हैं । वह जंग रंग निधान हैं ॥
अरु पुट्ठि राखि बहीर कौं । तिहँ संग रक्खिय धीर कौं ॥
बल यौं वजीर बनाइकै । गज पै चढ़्यौ वह धाइकै ॥
बहुमान दुंदुभि बज्जियं । भर पूर तूर अवज्जियं ॥
तबही सुभट सब सज्जियं । असमान आस गरज्जियं ॥
फहरी अनत सुहैं धुजा । सित स्याम रंग सिती कुजा ॥
मनसूर सूरनु लै चढ़्यौ । कलिकाल कोपहि ज्यौं बढ़्यौ ॥
इक लक्ख दल है संग मैं । बहु पील पैदल जंग मैं ॥
खुर थार धूरि उछल्लियं । गति धीर धीर सुचल्लियं ॥
लखि यौं वजीरहिं आवतौ । मनु सिंधु भूमि छिपावतौ ॥
तबही पठाननु-सैन मैं । करिकै सिलाह सचैन मैं ॥
अहमदखाँ सबसौं कही । ततबीर क्या तुमकौं सही ॥
तब यौं पठाननु भाखियौ । मरना हमैं दिल राखियौ ॥
सुनिकै सुवंग सपूत नै । तबही कह्यौ मजबूत नै ॥
मरना हमैं क्यों मारना । किस रीति जंग बिचारना ॥१॥

छप्पय

तबहिं मंत्र यह कियौ सबै सरदार रारि हित ।
अलीमहम्मद पूत मीर बक्का लरना जित ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सादिल खाँ कौं जंग इसाखाँ सैं नहिं टरना।
इसमाइल की तरफ हबसखाँ कौं धुकि परना॥
अरु तुम वजीर जितकौं रहौ रुस्तमखाँ सै यौं कहौ।
हज्जार हक्क पठ्ठान लै सूरज सैं तेगैं गहौ॥ २॥
यौं कहि उठे पठान बान करबान सँभारत।
मनौ रुठे जमदूत भीति भूतन कौं धारत॥
धरि धरि आयुध हथ्थ गथ्थ के गथ्थ उछल्लिय।
दै दै दिघ्घ निसान करत आपुस मैं रल्लिय॥
चल्लिय उछल्लि चहुँ ओर तैं* घुमड़ि घना घनघोर से।
धरि असित अग्ग नीसान कौं वेई नाचत मोर से॥ ३॥

दोहा

उत पठान अहमद्दखाँ इत वजीर मनसूर।
उद्ध जुद्ध कौं कुद्धि कैं रुपे खेत भरपूर॥ ४॥

छंद हरगीत

भरपूर भेरिभयान भंकि सुनत संकिय कायरं।
दुहुँ ओर पटह प्रचंड बज्जिय मनहुँ गज्जिय सायरं॥
लखि दै निसाननु कुहक बाननु पंच आनन के तनं।
हथनाल अरु हयनाल देत जँजाल कालनि के तनं॥
रव धुंधमाँक धमाक धुंधर धडड धुंकत धननन।
धर धूम धामधड़ाक धद्धर धूम उठ्ठिय बननन॥
भभकार भब्भड भडडडं भंकार भग्गत भननन।
कहुँ सननन कहुँ खननन कहुँ झननन कहुँ ठननन॥
इकसार उड़त हजार गोला और गोली छार से।
कहुँ उठत धूम पहार से मनु काल भूजत भार से॥

---

* पाठांतर—अछिय कहत।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कुहकंत बान कुहक्कुहं कहुँ होत सद्द धरा धरा।
दिस धुंधरी चकचुंधरी मुसमुंधरी सुबसुंधरा॥
बेहद्द नद्द गरद्द मैं सुदुरद्द कट्टिय आरसी।
लगि गोल सौं गहि गोल फुट्टतु करतु जाम ज्यौं फारसी॥
तहँ जबर जंगनि अंग तैं बहु कढ़ति धूम कराल सी।
धुनि काल सी विकराल सी भषु पाइ मीचु डकार सी॥ ५॥

छंद भुजंगी

सुनैं सद्दकौं जुग्गिनी जूह ठट्टे। धए प्रेतपूता लए बाँधि मुट्टे॥
तहीं कालिका काल लै संग धाई। सिवा ईस के धाम मैं यौं बधाई॥
खलं भच्छ गच्छे तजे ग्रेह अच्छे। तिहीं जुद्ध के उद्ध मैं लच्छ लच्छे॥
तहाँ स्याहुरी यौं फिरैं ब्याहुली सी। शृगालीनु के हीय में चाहुली सी॥
किती जछ्छनी गच्छनी व्यौमरंगा। महामीचु हूँ ने लई जागि जंभा॥
चिकारी चहूँ ओर तैं चाइ चिल्हीं। घरौं काइरौं कैं सुने माइ ढिल्ही॥
उलू कोचरी टिट्टिभा और कौवा। फिरैं फूल फैले मनौ ए बधौवा॥
हरष्षी धरत्ती हियैं यौं उमाही। तहाँ तेग तेगीन की जंग चाही॥
हुतौ बीच मैं धीर ब्रज-बीर गाढ़ौ। मनौ स्वर्न के वर्न कौ खंभ ठाढ़ौ॥
कछू धीर धारे चले अग्ग बड्ढे। सबै सूर के सूर संग्राम रड्ढे॥
तबै दूत ने धाइ मनसूर पासैं। करी बीनती जोर जा ओर रासैं॥
रुहेले जिते जंग कौं मीर बक्का। इसाखान सौं सादला लेइ धक्का॥
तरफ दाहिनी कौं हबसखान आवै। तरफ आपकी कौं अहंमद्द गावै॥
कही रुस्तमा ने सुनौ बीर भाई। जहाँ सिंह सूजा तहाँ है लड़ाई॥
सुनैं दूत को बात मनसूर मानी। तरफ दाहिनी को कमी फौज जानी॥६॥

दोहा

तब वजीर वा दूत कौं दै इनामु कहि खूब।
जहाँ खड़ा सूरज बली तहाँ जाइया तूब॥७॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

करि सलाम वा दूत ने तबही कियौ पयान ।
धायौ आयौ नौंन बस जा थल सिंह सुजान ॥८॥
जो कछु कही नवाब ने सो कहि दीनी दूत ।
सुनत दाहिनें कौं मुख्यौ सूरज पन मजबूत ॥९॥
बढ्यौ दाहिनी ओर कौं सूरजमल्ल कुमार ।
वल्लू बल्लभ गढ़पती राख्यौ आप अगार ॥१०॥
जैतसिंह और मेव सब दीने ताके संग ।
दै निसान ठाढ़े भए गाँव ओट लै जंग ॥११॥

छंद प्रमानिका

तहीं वलू हला कस्यौ । उठाइ शत्रु मैं पस्यौ ॥
जड़ाक दोइ तीन कै । दई कृपान बीनकै ॥
हयंद पाँच सात कौं । कियौ जु आप हाथ कौं ॥
फिस्यौ सुफेरि साथ कौं । फते निसान गाथ कौं ॥
सु आइ आपुने वलै । जताइ जुद्ध यौं थलै ॥
उही पठान कुद्धियौ । हियैं विरुद्ध रुद्धियौ ॥
कही सु जाइ रुस्तमैं । रहे सु बैठि पुस्त मैं ॥
न देखते हवाल कौं । गहौ न तेग ढाल कौं ॥
लड़ौ कि भाग जाइयै । न आब कौं घटाइयै ॥
तबै सु रुस्तमा कही । कहौ सु मोहि है सही ॥
जबै पठान बुल्लिये । हियें बिचार खुल्लिये ॥
मँगाइयै तुरंग कौं । चलौ चलौ सु जंग कौं ॥
सबै पठान अग्गही । लड़ैं सु साथ पग्गही ॥
पठान बीज होइकै । भजै सु आब खोइकै ॥
लड़ौ सु नाहिं वा फिरै । तिसै सु जान काफरै ॥
जबै सुभाइ यौं कही । किए सु रुस्तमा सही ॥
मँगाइ तब्ब पालकी । नहीं सुजंग चाल की ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गह्यौ कवान ढाल कौं। लियौ करै रुमाल कौं ॥
बदन्न कौं सुधारिकै। दुहूँ करौ उभारिकै ॥
सुमंत्र आपनौ पढ़्यौ। तबै सु पालकी चढ़्यौ ॥
कह्यौ सु बीर ता समै। सबै सुनाइ वा समै ॥१२॥

दोहा

मैं मरने कौं त्यार हौं जो कोइ साथहिं देउ।
काम कहारौं का नहीं हाथ पालकी लेउ ॥१३॥
सुनत पाँच सौ ज्वान ने घोड़े दीने छोड़।
तिनमैं तैं दस बीस ने लई पालकी ओड़ ॥१४॥
तहाँ पाँच सत पैदरनु लिये हाथ मैं बान।
उनहूँतैं आगैं भये लै लै स्याम निसान ॥१५॥
पाँच हजार सवार ह्वै रहै पालकी पुट्ठि।
काढ़ि काढ़ि तेगान कौं चले जंग कौं रुट्ठि ॥१६॥

छप्पय

उट्ठ्यौ रुस्तमखान रुठ्यौ पालकी चढ़्यौ जब।
षट हज्जार पठान संग आगै पाछै सब ॥
चलिय बीर उच्छल्लि हल्लि करि युद्धहिं धुक्किय।
पाइक चंड चलाक धाइ बानन सब मुक्किय ॥
तिहि पुट्ठि तेग तेगा कढ़े तासु मद्धि रुस्तम लसिय।
मन सहस किरिनि ग्रीषम रितुहि दलबद्दल भीतर धसिय ॥१७॥

छंद अरिल्ल

प्रथम बीर बल्लू सँग जुट्टिय। तहाँ दवान बान बहु छुट्टिय ॥
सेल साँग सर सररर बज्जिय। मारु मारु मुख तैं भट गज्जिय ॥
तेग तराक तराक तरक्किय। तोरि सनाह करक्कि फरक्किय ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तहाँ बीर बल्लू गहि सेलहिं। करिय रेल ह्वै कैं धकपेलहिं॥
तब ही चैन सिंह दृग दिन्निय। करि उभ्भट्ट आयौ रिस भिन्निय॥
लसि पठान केते भए चालन। तहाँ बीर हाल्यौ नहिं हालन॥
प्रथम सेल पुनि तेग सँभारिय। किते पठान भूमि गहि डारिय॥
स्वामि-हेतु आपुन सिर दिन्यहु। हर ने दौरि आप सिर लिन्यहु॥
तिहिं लखि साहिबराम उमंडिय। तात भ्रात पाछैं जब छंडिय॥
महाबीर रनधीर सपट्टिय। हय झपट्टि अरि ब्यूह लपट्टिय॥
इक्के सेल इक्क हिय पोहिय। साहिबराम रुद्र रस मोहिय॥
फेरि काढ़ि दूजे कैं हाथर। लगत पठान लटक्किय ता थर॥
जबही सेल हबक्कन चाहिय। तबही सत्रु आनि सिर वाहिय॥
सेल छोड़ि खग्गहि करि लिन्निय। साहिबराम रोस रस भिन्निय॥
दई सीस अपनौ अरि तक्किय। गर तैं सिर भुव जाइ फरक्किय॥
तबही बान आन उर लग्गिय। तऊ बीर खग्गहि नहिं बग्गिय॥
तजत प्रान नहि आन निहारिय। गिरत गिरत एकहिं गहि मारिय॥
यौं लखिकै खुट्टावह बाभन। करिय एड़ आयौ चित चावन॥
कही साहिबा मो बिनि चल्लिय। आवतु साथ गथ्थ यह भल्लिय॥
यौं कहि बीर धुक्यौ अरि गथ्थहि। किते पठान किये लथपथ्थहि॥
तिनहूँ प्रान दिये तिन सथ्थहि। दुहूँ सूर-मंडल लिय पथ्थहि॥
तहाँ तिलोकसिंह वह तोमर। रुप्पयउ जंग खैंचिकै तोमर॥
निमिष इक्क खुंधार वरष्यिय। तबहीं जान बँदूक धरक्किय॥
लगत मान गोली के छुट्टिय। परिय भूमि तउ प्रान न बुट्टिय॥
लखिय बीर बल्लू मन मोहिय। भ्रात पूत रन में परि सोहिय॥
गहि कर तेग दई अरि सीसहिं। देखैं तौ सँग सुभट न दीसहिं॥
तबही चित्त राज मत आइय। सूरज पास जंग यह ठाइय॥
जबहीं बीर बाग गहि मोरिय। सूरज दृष्टि दई तिहिं ओरिय॥
निकट देखि मातुल सुखरामहिं। तासौं हुकुम कियौ तिहिं ठामहिं॥१८॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दोहा

सूरज नै सुखराम सौं कही कि मामा बेग।
जाहु जहाँ हैं चौधरी उड़ी बहुत क्यों रेग ॥ १६ ॥

सोरठा

यौं सुनिकै सुखराम आगैं चल्यौ रबक्कि कै।
बिना सुभट संग्राम देख्यौ आवतु चौधरी ॥ २० ॥

हरगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं।
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं ॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकै।
जहँ खान रुस्तम भिल्लियौ कहि अंक चौथौ गाइकै ॥ २१ ॥

इति चतुर्थ अंक ॥ ४ ॥

दोहा

तबही अहमदखान पै खबरि गई भ्रमु पाइ।
रुस्तमखाँ करि जंग कौं लीनी फौज उठाइ ॥ १ ॥

छंद मुतियादाम

अहमद खान सुनी तिहिं बार। कहिय न बीर बजावहु सार ॥
तवै सुनि सादलखाँ किय हल्ल। बड़े सरदार महाभट मल्ल ॥
तहीं महमंद अली-सुत धाइ। हवस्सलुखान तुरंग दबाइ ॥
करी जित दौरि सुबंगसपूत। हुतौ मनसूर जहाँ मजबूत ॥
कुहक्किय चारिहुँ ओरन बान। चुहक्किय घामहु मीचु दिसान ॥
भुहक्किय नद्द जुहक्किय बाज। लुहक्किय हत्थ हुहक्कि अवाज ॥
उमंडिय कोह घुमंडिय धूरि। जुमंडिय रारि पटानतु भूरि ॥
भुसंडिय और कुबंडिय साधि। परे दुहूँ ओरन तें भटआँ धि ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रबक्कि इतै रु उतै धकपेल। बबक्कि बबक्कि भये घमसेल॥
हबक्कि हबक्कि चलाइय साँग। जबक्किय बीर बियैं दुहूँ आँग॥
दबक्किय सोइ न चक्किय कोइ। सबक्किय जीय तबक्किय खोइ॥
जुटंत तहाँ इक इक्कन चंड। छुटंत सु साइक खैंचि कुवंड॥
फुटंत कपाल कहूँ गज मुंड। तुटंत कहूँ तरिवारन तुंड॥
कुटंत कितेक भए तन रुंड। भुटंत मुटंत सुटंत निघुंड॥
घुटंत गरे भट धूमनु भुंड। गुटंत हुटंत बुटंत सु झुंड॥
लराकनि आइ धरा कहि दीन। मरा कहिकै सुभ राँक जमीन॥
जरा रहियौ बहुख्यौ रिस भीन। खरा कहि खंजर मारिय सीन॥
कराक कराक सनाह कढ़ंत। छराक छराक धरा सुपढ़ंत॥
सराक सराक सरौ सननाइ। भराक भराक बिदारिय काइ॥
पराक पराक परैं भुज-दंड। चराक चटक्कत हाड़ उदंड॥ २॥

छंद नीसानी

सान धरैं फरसान लियैं घमसान करैं।
बान किते किरवान कटे तनत्रान परैं॥
ठानत इक्क अठान पठाननु आनि भिरे।
खट्टिय खून उखट्टिय हट्टिय नाहिं घिरे॥
कट्टिय सीस बिकट्टिय चट्टिय श्रौन झरे।
उट्ठिय भूरि कवंध्र सुरुट्ठिय अंध अरे॥
सक्कत सूर सरक्कत सक्कत लोह लियैं।
तक्कत आवत बक्कत रक्कत रंग कियैं॥
हक्कत हुव्व हयंद हबक्कत संगर मैं।
चक्कत कोइ उचक्कत जक्कत जंगर मैं॥
भुक्कत इक्क बिभुक्कत कुक्कत कोह सने।
मुक्कत सीसनु साँग सुरक्कत धुक्कि बने॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

घाइन इक्क घुमाइ अघाइय रत्त बहे ।
सत्त रहे नहिं गत्त तऊ तन ग्रीव गहे ॥
दब्बत लुत्थिनु अब्बत इक्क सुखब्बत से ।
चब्बत लोह अचब्बत श्रौनित गब्बत से ॥
चुट्टित खुट्टित केस सुलुट्टित इक्क मही ।
जुट्टित खुट्टित सीस सुफुट्टित तेग गही ॥
कुट्टित घुट्टित काइ बिछुट्टित प्रान सही ।
छुट्टित आयुध हुट्टित गुट्टित देह दही ॥
अंतनि इक्क अरुझि्झत दंतनि पीस रहे ।
हंतनगंत मुरंत अनंतन रीस गहे ॥
दंतिनु के गहि दंत चढ़े इक अंतक से ।
रंतकि आइ धुरं तकि संत सुरंत कसे ॥
कद्दनि इक्क बिहद्दनि नद्दनि पूरि रहे ।
बद्दनि बद्दिय इक्क दुरद्दनि इक्क गहे ॥
मद्दनि मूलि गरद्दनि हद्दनि नाह चहै ।
गद्दनि गद्द उमट्टु जु सद्दनि सत्र बहे ॥
अंगन श्रोनित रंग किते उतमंग फटे ।
तंग कटे भट भंग तुरंगनि टाप बटे ॥
पंग परे इक लंगनि अंगनि तेग कटे ।
तीर तुफंगनि खंग अरंगनि जंग पटे ॥ ३ ॥

छप्पय

घरी अद्ध अति उद्ध जुद्ध भट कुद्ध कुद्ध किय ।
बज्झे सादल हबस बीर उद्गीर रुक्कि लिय ॥
महमदअली-तनूज तबहि निज सेन हँकारिय ।
तरफ आपुनी जबर जंग दुलकी क्यौं पारिय ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सब सुनत रुहेले रोस भरि सहस इक्क असि खैंचि लिय ।
चल्लिय उछल्लि अल्लिय कहत पर-दल्लिय भिल्लिय बलिय ॥ ४ ॥
निपट बिकट असिधार निकट उदभट भट आवत ।
दहन गहन बन कूप कूर डरकाइ छिपावत ॥
बाँधत शस्त्र अनेक उदर पालन हित सब कुल ।
सनमुष धाइ सुखाइ और नहिं सुकृत तासु तुल ॥
देही अनित्त मृतु नित्त है बिनु निवित्त परिहै न रन ।
लहि जित्ति कित्ति ज्यौं बित्ति है स्वामि-हित्त यह सूरपन ॥ ५ ॥
यह पन महमदअली-तनय भट धरिय जंग महँ ।
धाइय होत निसंक संक पारिय पर-दल कहँ ॥
तिहिं लग्गिय भग्गिय सेर जंग बक्का रमजानी ।
राउ बलोच अहीर पिट्ठि दिय तजि हग पानी ॥
लखि चलत चमू बिचलित कटक चकित उजीर सरोस हिय ।
रनधीर इसाखाँ बीर तहँ भीर चीर जंगहि लहिय ॥ ६ ॥

सारंग छंद

नग्गौं गहैं खग्ग अग्गो लखे बीर। भग्गो किते चाहि खग्गो किते धीर ॥
रुप्प्यो इसाखानु कुप्प्यो लखैं जंग । रंगे किते श्रौन अंगे किते भंग ॥
हूवे सुभेले रुहेले महा चंड । ले ले कहे तेग रेले दिये दंड ॥
संनावते इक्क फंनावते बान । खंनावते खग्ग घंनावते आन ॥
ढंनावते ढाल मंनावते मुच्छ । ठंनावते मुंड गंनावते गुच्छ ॥
झंनावते साँग संनाह कौं तारि । धंनावते धिग बंदूक दै मोरि ॥
तंनावते चाय घुम्मावते सेल । लंनावते सूर हूवे घलामेल ॥
धक्के परे ते धुकाए धराधीर । झक्के करे फौज सक्के नहीं बीर ॥
पैठे रुहेले सकेले घनौ कोह । खग्यो इसाखान पग्यो महा छोह ॥
तेगा झरैं झंन जेगानु पै ठंन । लेगा कहैं एक देगा रटैं रंन ॥
जुट्टे झमाझम्म देते घमाधम्म । केते गमागम्म लेते दमादम्म ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बाजौं चढ़े नेज बाजौं खमाखम्म । लाजौं लपेटे दराजों घमाघम्म ॥
तीरों जटे इक्क बीरों गहे खग्ग । खग्गों कटे धाइ तीरों जुटे अग्ग ॥
धक्का धुके इक्क हक्का रटैं नीठि । सक्का भए औंन भक्का श्रवैं पीठि ॥
चक्का दचक्का मचक्कान दे सूर । लक्कानु के रूप लेटे भये चूर ॥
खंडे कहूँ हत्थ हंडेनु सै मुंड । डंडेनु के भेस चंडे भुजा भुंड ॥
कंधे टुटे इक्क अंधे फुटे नैन । चुंधे भये इक्क धुंधे रुकै रैन ॥
अंधे कबंधे दुरंधे करे अंग । संधे सुगंधेनु कौं पाइकै जंग ॥
फट्टे कहूँ पेट कट्टे कहूँ अंत । घट्टे किहू पग्ग कट्टे किहूँ दंत ॥
कट्टे सपट्टे लपट्टे हटे नाहिं । रट्टे मुखौं मारु खट्टे खरे खाहिं ॥
कत्तेन सौं देह लत्ते करे खेत । रत्ते रकत्ते लरत्ते बिना चेत ॥
तत्ते भये इक्क पत्ते कहैं जुद्ध । घत्ते किहू लत्त मत्ते महाकुद्ध ॥
सीसे सरीसे सुदीसे फुटे सीस । रीसे कहूँ दाँत पीसे कढ़े खीस ॥
जी से गये एक खीसे रहे डारि । तीसे तनौ इक वही से गए हारि ॥
पिल्ले रुहिल्ले सुभिल्ले करी पास । मिल्ल्यौ इसाखान भिल्ल्यो नहीं त्रास ।
खिल्ले खरे खग्ग गिल्ले भए रत्त । छिल्ले घने गत्त चिल्ले नहीं मत्त ॥
बुल्ले कुजा हस्त इस बख़ मंसूर । बुल्ल्यौ इसाखान मन खेत में पूर ॥
यौं भाखते राखते ज्यौं कढ़ी ज्वाल । सब्बै रुहेले किये नैन यौं लाल ॥
त्यौंहीं इसाखानहूँ खैंचि कंमान । तानैं घनैं बान तानैं धरैं सान ॥
माने जने ते अमाने रहैं संग । काने जने ते न जानैं कहाँ जंग ॥
हथ्थी चढ्यौ हथ्थ हथ्थौं मड्यौं बीर । मथ्थी किती सेन सथ्थी कटे तीर
तब्बै रुहेलेनु लै लै करी रेल । खेलैं मनो फागु देले भये मेल ॥
कोई चढ्यौ दंति दै दंत पै पाउ । काहू गही पुच्छ की राह कै दाउ ॥
केती छुनाछुन्न बाजी तहाँ तेग । मानो महा मेघ मैं चंचला वेग ॥
किन्नो इसाखान कौं मारिकै चूर । कट्टयो तऊ सीस हट्टयो नहीं सूर ॥
हाथी सुधां सब्ब हाथी पर्‌यो खेत । संग्राम मैं स्वामि के काम के हेत ॥
कुट्ट्यौ इसाखान लुट्ट्यौ धरा पिट्ठि । बुट्ट्यौ लखै छुट्टि मंसूरहू निट्ठि ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मंसूर कौ भागनौ सो कहै कौन। मानौ घटै गौन लागै महा पौन ॥
अस्सी सहस बाज छोड़ी सबै लाज। जैसे कुलंगा बुटैं देखते बाज ॥
जा खेत मंसूर भग्ग्यौ सु धाँ मीर। ता खेत सूजा रुप्यौ है महाधीर ॥७॥

हरगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं।
जानैं दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं ॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकैं।
जुज्झियौ इसखाँ भग्गियौ मनसूर पंचम गाइ कै ॥८॥

इति पंचम जंग ॥ ५ ॥

चंचला छंद

तथ्थही समथ्थ सथ्थ रुस्तमाँ करी सुहल्ल।
सामुहैं विलोकियौ सुजान बीर है अटल्ल ॥
चल्लियौ वजीरहू तऊ न हल्लियौ सुजान।
रल्लियौ उठाइ वेगि दल्लियौ घनै पठान ॥
पल्लियौ ब्रजेस पैज मल्लियौ महा समान।
खिल्लियौ सबै सु खेल हल्लियौ खुमान खान ॥
खान रुस्तमाँ पठान भान सौ सुजान क्रुद्ध।
उद्ध जुद्ध कारने दुहूँ रहे विरुद्ध रुद्ध ॥
काल से कराल बीर आवते उताल चाल।
ब्याल से करै कवाल घालते बिसाल भाल ॥
हाल से हवाल एक धावते धरत्नि पिट्ठि।
लाल नैन ज्वाल झाल सी झरी दुसाल दिट्ठि ॥
काढ़ि काढ़ि तेग कौं सबेग बीर धाइ धाइ।
सारि वाहि खेत गाहि पैठियौ सुबीच आइ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जब्बही धसे पठान तब्बही कितेक बीर।
दब्बही हयंद अग्ग नब्बही कमान तीर॥
ता समैं हरी जु सिंह चैनसिंह सौं सुनाइ।
सेल लै करी सुरेल सत्रु कौं दियौ घुमाइ॥
एक कौं पटक्कि फेरि दोइ कौं झटक्कि दीन।
त्यौं अचान बान लागि झट्ट दै पर्यौ जमीन॥
ज्यौं मुहक्कमाँ अमान सार धार कौं सम्हारि।
मारु मारु भाखियौ दवारि ज्यौं अरीनु जारि॥
यौं अपार देत मार आइयौ पठान सब्ब।
ता समैं कितेक अग्ग ह्वै गये कितेक गब्ब॥
आगिले भये पछार पाछिले भये अगार।
को हरौल को चँदौल ना रही कछू सम्हार॥
भूरि धूरि धार मैं झमाझमी बजंति तेग।
सेल साँग टूटही जु जूटही तजंत बेग॥
इक्क सीस फुट्टिगे सु लुट्टिगे धरा धराक।
तुट्टिगे चरन्न इक्क कुट्टिगे कराकराक॥
बुट्टिगे कपूत धूत खुट्टिगे हथ्यार हथ्थ।
घुट्टिगे सरीर भीर गुट्टिगे सुलथ्थ पथ्थ॥
बज्जई क्रवाल ढाल गज्जई सुमारु मारु।
तज्जई तुरीन सद्द सज्जई हथ्यार डार॥
गज्जई गरूर सूर भज्जइ अनेक कूर।
रज्जई कितेक घाइ व्है गये सुभूर चूर॥ १॥

कवित्त

गरद मसान किरवान बरछा बानन तैं
रुस्तमखान घमसान घोर करतौ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कहूँ रहैं मुंड कहूँ तुंड भुजदंड झुंड
　　कहूँ पाइ काइ फर मंडल को भरतौ।
सेल साँग सिप्पर सनाह सर श्रौनित मैं
　　कोट कांट डारे धर पाइ तौ सौ धरतौ।
हरतौ हरीफ मान तरतौ समुद्ध जुद्ध
　　कुद्ध ज्वाल जरतौ अराकनि सौं अरतौ ॥ २ ॥
गरद गुबार मैं अपार तरवार धार
　　मानौं नीहार मैं किरनि भीर भान की।
कहरि लहरि प्रलै सिंधु मैं अधीर * मीन
　　मानौ धुरवान मैंत मक तड़ितान की।
दावानल † ज्वाल है कि ज्वाला कौ अचल चल
　　ऐसी जंग देखी तहाँ प्रबल पठान की।
भृकुटी भयान की भुजान की उभय सान
　　मंगल समान भई मूरति सुजान की ॥ ३ ॥

दोहा

रुस्तमखाँ सनमुख लख्यौ करि सुजान दृग लाल।
कालजमन के काल कौं ज्यौं मुचकुंद भुवाल ॥ ४ ॥

छप्पय

झलझलात रिस ज्वाल बदनसुत चहुँ दिसि चाहिय।
प्रलय करन त्रिपुरारि कुपित जनु गंग उमाहिय ॥
तिहिं लखि सब व्रज बीर उमड़ि गन जिमि रंगनिधरि।
अंगनि भरे उमंग जंग हित भुवभंगनि करि ॥

---

* पाठांतर—अधीन।
† पाठांतर—ज्योतिन को।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दै अग्ग पग्ग फरमग्ग मैं रग्ग बग्ग सायुध धइय ।
लै लै दवान मैदान मैं सब अमान सनमुख भइय ॥ ५ ॥
दै धमाँक धंनाक धूम धुंकार धराधर ।
धरधरात धरधाम धमक धुकि जात परापर ॥
उठिय धूम अति प्रबल मनहुँ नीहार बितानिय ।
मनहूँ गुंग कौ मिलन सूरतनया तररानिय ॥
इमि घोर मारु चहुँ ओर दै फेरि सेल साँगहिं लहिय ।
सरसान सिरोही सिप्परनु सूरज के सूरनु गहिय ॥ ६ ॥

पद्धरी छंद

गहि सेल साँग समसेर ढाल । धाए सुजान भट रन कराल ॥
बड़हत्थ बलू बलिराम बीर । महमद पनाह वह मीर धीर ॥
गहि गौर सुगोकुलराम सेल । परताप कमठ-कुल करिय रेल ॥
सूरत सुराम वह कुसल पूत । व्रजसिंह सिंह रन में सपूत ॥
सुखराम सँभरि सब सहित सूर । हरनाराइन सामंत पूर ॥
किय हल्ल सुपाखरमल्ल तत्थ । अरु रामचंद्र तोमर समत्थ ॥
बाला सोगरिया सहित सत्थ । गहि सेल सुतोफाराम हत्थ ॥
जैकृष्न सुमंसाराम संग । रनसिंह सुधाइय रन अभंग ॥
हय दब्बिय ठाकुरदास जब्ब । धनसिंह गौर धाइय सुगब्ब ॥
अरु पेमसिंह पृथिसिंह धाइ । वह स्यामसिंह उठ्यि रिसाइ ॥
स्यौसिंह बीर हिय धारि क्रोध । पुनि स्यामसिंह बलवान जोध ॥
वह जैतसिंह सेवा तनूज । द्विज उदैभान स्यौसिंह-अनूज ॥
मतिवंतसिंह मोहन उदंड । हरनागर बहु बीरन प्रचंड ॥
हुव माथुर कुल जाहर जहान । उद्धत अनूपसिंहहु अमान ॥
कुल कौ उदोत धाइय उदोत । जैसिंह सिंह सम कौन गोत ॥
प्रोहित प्रचंड घमँडी अमान । सुत चंदभान सम चंद्रभान ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अरि लोप करन वह ले न्नि। सुगरा सम्हारि साँगहि करन्नि ॥
किसनेस बीर पुहपा कुँवार। सुत सारदूल धाए उदार ॥
सावंत सूर औरौ अपार। सूरज अगार ह्वै करी मार ॥
लखि रुस्तमखाँ आवंतु रिसान। उतमें पठान अति क्रोध ठान ॥
इत श्रीव्रजेस बीरहु अमान। तिन भई परस्पर जंग जान ॥
ज्यों दैत्यदेव बलि इंद्र मान। सरराति बान घर घोर धान ॥
फरराति तीर अहिपूत मान। छरराति गात तैं कढ़ि भयान ॥
खरराति सेल बखतरन तोरि थरराति तेग चिलतहनु मोरि ॥
ठहराति कोइ भहराति कोइ। हहराति इक्क झहराति जोइ ॥
कहुँ झरत बाहु तरवार सेल। झुकि परत कहूँ पर घाव झेल ॥
झटकंत इक्क गहि गहि भुजान। खटकंत खग्ग बखतरनु भानि ॥
कटकंत सीस लटकंत पुट्टि। मनु केतु राहु सौं चलिय रुट्टि ॥
हटकंत हूल करि हूह सद्द। सटकंत सरोही बिय मरद्द ॥
पटकंत बीर गहि साँग जोर। अटकंत नहीं असि लागि घोर ॥
गटकंत रुधिर जे कटिय जाव। ठठकंत इक्क लगि मर्म घाव ॥
छुटकंत धरनि भट ह्वै अचेत। नटकत मनहुँ महि कला लेत ॥
चटकंत सुभट जे परिय टूटि। घटकंत प्रान इक पेट फूटि ॥
झटकानि उड़त उतमंग उद्ध। नटबटा फिरावतु मनहुँ सुद्ध ॥
फटकान फटकि असि चलत घोर। मानहुँ अलात मंडल अछोर ॥
लटकान लेत घाइल सुमार। पटकानि पटक इक बिन हथ्यार ।
बटकानि भरत गटकानि लेत। घटकानि घटक श्रोनित समेत ॥
खटकानि करत सर सेल टोप। लटकानि भिरत भुव भरत ओप ॥
मटकानि सरिस मुंडनि बगाइ। सटकानि सटक भुज पाइ काइ ॥
कै देहु देहु बिय लेहु लेहु। बरसंत सार उर भरे तेहु ॥
सिविका सवार रुस्तम पठान। नरबाहन ज्यौं पुष्पकबिमान ॥
तिहँ संग बीर पलभच्छ जच्छ। करि घोर मार भुव परे दच्छ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इक तीर पीरहू वे गरक्क । कटि कटे इक्क धर पर फरक्क ॥
असि देत लेत व्रज बीर धाइ । तहँ रुस्तमखाँ किय घोर घाइ ॥७॥

छंद त्रिभंगी

लखि रुस्तमखाँ कों करि करि हाँकौं सब भट बाँकौ असि भारी ।
पालकी बिदारी भुव पर पारी उनिवा ढारी कर धारी ॥
तबही पठनेटे लोह लपेटे देत चपेटे हथ्थ करे ।
देते गनि झटके साँगनि सटके खंजर खटके रत्त भरे ॥८॥

छप्पय

कस्यौ जुद्ध अति उद्ध सुद्ध भट स्वामि-काम पर ।
उट्ठिय भूरि कबंध लुट्ठि केतेक धराधर ॥
बिना मथ्थ बिनु हथ्थ काइ बिनु पाइ फरक्किय ।
कहुँ दंत कहुँ अंत लुथ्थि पर लुथ्थि अरक्किय ॥
तिहिं देखि खान रुस्तम बली कूदि पालकी तैं परिय ।
तहँ कछु पठान तिहिं अग्ग ह्वै लहि खग्गहिं जंगहिं करिय ॥ ९ ॥

छप्पै अभिराम

गज्जिय भट बज्जिय क्रवाल तज्जिय पठान तन ।
सज्जिय रिस भज्जिय न कोइ मज्जिय सुपाथ गन ॥
झरिय सार तिहिं पर अपार मुख मारु मारु रर ।
ज्यौं पहार पर जलद धार बरसंत साँग सर ॥
अटकेनु पटक झटकेन सौं व्रजबीरनु रन उद्धरिय ।
उदभट पठान मैदान मैं रुस्तमखाँ बिनु सिर करिय ॥ १० ॥

कवित्त

गैंदा से गुलफ गुलमेहँदी से अंत भार
कुणयकलित तास खोपरी सुभाल की ।
नासा गुलबासा मुख सूरजमुखी से भुज
कलगा बधूक ओठ जीव दुति लाल की ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कोकनद कर ज्यौं करन गुलकोकन से
इंदीवर नैन बाल जाल अलि-माल की।
पानी किरवानी सौं हरवानी कर सूरज कै
पर-भूमि फूली फुलवारी मानौ काल की ॥ ११ ॥
एकै एक सरस अनेक जे निहारे तन
भारे लाज भारे स्वामि-काम प्रतपाल के।
चंग लौं उड़ायौ जिन दिल्ली कौ वजीर भीर
पारी बहु मीरनु किए हैं बेहवाल के।
सिंह बदनेस के सपूत श्रीसुजानसिंह
सिंह लौं झपटि नख दीने करबाल के
वेई पठनेटे सेलु साँगन खखेटे भूरि
धूरि सौं लपेटे लेटे भेटे महाकाल के ॥ १२ ॥

छंद त्रिभंगी

रुस्तमखाँ अंगे बिन उतमंगे लखि भट जंगे छोड़ि गए।
अति संकहिं मानैं नहिं समुहाने तजि तजि बाने विकल भए।
ज्यौं टूटत बंधैं जात कबंधैं क्यों फिर संधैं खीन खए।
ब्रजबीर अवाने देत धवाने सब मरदाने पिट्ठि भए ॥ १३ ॥

दोहा

चढ़े पिट्ठि दस कोस लौं सब ब्रजबीर अवान।
फते पाइ सूरज बली ठाढ़ौ ता मैदान* ॥ १४ ॥
रुस्तमखाँ सुर मान सौं भाज्यौ जाही खेत।
दै असीस जदुबंस कौं ईस नच्यो गति लेत ॥ १५ ॥

सवैया

आइ परे सु उछाह भरे नहिं नेकु डरे रस बीर बिलासी।
खाइकै घाइ अघाइ गए तरवार की धार लही तिनुका सी।

* पाठांतर—खड़ो खोलि नीसान

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सूदन सोई सराह करैं मुख तैं उचरैं धन रे व्रजबासी।
ताहि असीसत सिंह सुजान पठान भए जे बिमान के बासी ॥ १६ ॥

सोरठा

यह अचरज की बात दोऊ जीते जंग में।
उत पठान हरखात इत सुजान नरसिंह सौं ॥ १७ ॥

दोहा

रुस्तमखाँ तन दै छुट्यौ भाजि छुट्यौ मनसूर।
अहमदखाँ सूरज बली दुहूँ रहे मगरूर ॥ १८ ॥

छप्पय

जहाँ मीर मुगलान सेख सैयद पठानगन।
तहाँ खान सुलतान राउ राजा उद्धत मन ॥
छोड़ि छोड़ि गज बाजि साज तजि लाजन भग्गिय।
सहित सैन मनसूर जात पलकौ नहिं लग्गिय ॥
लखि सनमुख प्रबल पठान कौं इक लक्ख हय पिट्ठि दिय।
तिहिं खेत खगिय सूरज बली जंग जित्ति जय पत्ति लिय ॥१९॥

दोहा

साठ सवारनु सौं खड़ौ रन में सूरज सूर।
तहाँ खबर पाई यहै भग्यौ कूर मनसूर ॥ २० ॥
भग्यौ सुन्यौ मनसूर जब सूरज मन रिस धारि।
फिर पठान सौं जंगहित चल्यौ सेल पटतारि ॥२१॥
उद्धत जानि सुजान कौं जुद्ध हेत ब्रजबीर।
अरज करी कर जोरिकै ज्यौं समुझै रनधीर ॥ २२ ॥

सोरठा

सुनि महराज कुँवार ए पठान दस सहस हय।
इत मैं साठ सवार कहा रारि कैसे बनै ॥ २३ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छंद पद्धरी

अरु कहत बड़े लागहु प्रमान। है जुद्ध रीति दुहुँ बल समान ॥
दस पाँचहु की बरनी सुजंग। सत एक भिरैं यह नहिँ प्रसंग ॥
अरु आप फौज पहुँची अगार। भग्गो पठान तिनके पछार ॥
जब लग्गि सुभेले होंइ सब्ब। तब लग्गि रहौ इक ओर अब्ब ॥
इमि सुनत कुँवर बर नरनुनाह। बिरम्यौ पलास बन की सुछाँह ॥
लखि पीत धुजा पुच्छिय पठान। इह खेत कौन खग्गिय अमान ॥
तब कही दूत यह है सुजान। जिनि रुस्तमखाँ खाइय पठान ॥
सो सुनत कही अहमंदखान। सनमुख न आउ इसके पठान ॥
इत सूरज तूरज कौं बजाइ। इक जाम तहाँ बिसराम पाइ ॥
अपनी अनीक की राह देखि। यह कही सिंह सूरज बिसेखि ॥
मम फौज कौन बिधि मिलै आइ। सोई उपाय कीजै बनाइ ॥
तब अरज करी सबही सुनाइ। कालिंद्री पै इकन कौ आइ ॥
जौ आह कही तौ कहत एहु। चलि कारी सरिता तटहिं लेहु ॥
यौं सुनत सिंह सूरज गँभीर। कीनौ पयान गति धीर धीर ॥
निसि एक बसे तिहि तीर पास। सत दोइ सुभट हुव निकट जास ॥२४॥

दोहा

तहाँ खबरि निज फौज की पाई सिंह सुजान।
कछूक मैंडू मैं रही कछूक मथुरा थान ॥ २५ ॥
त्यौहीं सुनी वजीर नैं दिल्ली कियौ पयान।
तब आयौ निज देश कौं आपनु सिंह सुजान ॥ २६ ॥

हरगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेसनंद सुजान हैं।
जानैं दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइ कै।
रन माँझ बिस्तिय रुस्तमाँ छस्यौ सु अंक सुनाइ कै ॥२७॥

इति षष्ठ अंक ॥ ६ ॥

सोरठा

मुख गयंद सिर चंद दुति अमंद बंदन धरैं।
जयति जयति भवनंद दुख-निकंद आनंदकर ॥ १ ॥

दोहा

साहि जहानाबाद में जाइ फेरि मनसूर।
लिखि भेज्यौ मल्लार कौं आओ आप जरूर ॥ २ ॥
अर्ध लक्ख हय लै चल्यौ दच्छिन तैं मल्लार।
खबर पाइ मनसूर फिर डेरा कियो अगार ॥ ३ ॥

मालती छंद

फिर्‌यौ मनसूर कियौ बल पूर। कढ़्यौ करि कोप धरैं बहु तोप ॥
करैं सनमान बुलाइ सुजान। कियौ बहु मान वजीरहिं आन ॥
लियौ सु अगार सुजान कुँवार। कियौ सुपयान दुहूँ बलवान ॥४॥

आभीर छंद

पुनि उतरि पार जमुना अपार। उत मैं पठान हुव सावधान ॥५॥

दोहा

एक ओर मल्लार दलु दूजैं सिंह सुजान।
उतहि रुहेले अग्ग धरि सनमुख भए पठान ॥ ६ ॥
चहूँ ओर धौसान के छाए सइ अहद।
मनहुँ गंग के मिलन कौं आयौ सिंधु बिहद्द ॥ ७ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दोइ जाम बीतन लगे खड़े सुभट बिनु जंग।
तब सुजान के दलबलनु आगैं करी उमंग ॥ ८ ॥

तोमर छंद

करिकै उमंग अगार। सरदार सिनिसिनवार ॥
गहि सेलु साँगनु हत्थ। लहिकै बँदूकनि सत्थ ॥
उततैं कुहक्किय बान। इत सेल साँग कृपान ॥
दल दक्खिनी इक ओर। बिय ओर जदु-कुल जोर ॥
तिन सौं रुपे बलवान। ठानै अठान पठान ॥
रव धुँधमाक धनाक। सर सेल साँग भमाक ॥
रस धूँधरी दिग चारु। मुख सद्द मारुहि मारु ॥
दल दक्खिनी करि रल्ल। भिलि गए लै भुज भल्ल ॥
झमकी झमाझम तेग। घन माँहि दामिनी बेग ॥
धरि मुच्छ गुच्छनि ताउ। इक लेत सीसनि घाउ ॥
इक तानि बान कमान। धरि कान के उनमान ॥
तकि देत सीस भुजान। तन-त्रान बेधत जान ॥
जुटि सक्ति सौं गहि सक्ति। तन फोरि बोरिय रक्ति ॥
असिवार सौं असिवार। निज वार सौं निज वार ॥
फरसानि सौं फरसानि। बरछानि सौं बरछानि ॥
करि चोट सिप्पर ओट। कहुँ होत लोट कपोट ॥
छुत जात गात अन्हात। भहरात फिर झुकि जात ॥
पुनि उट्ठि मुट्ठिय बंधि। असि देत रोसहिं अंध ॥
किलकार पार अपार। इक कहत डारि हथ्यार ॥
उचटंत चर्मनि फूल। तन तूल ही के तूल ॥
सननात सेल सनाह। खननात खग्ग सिलाह ॥
सर छोड़ि छोड़ि रटंत। इक ओड़ि ओड़ि हटंत ॥
करिकै महा घमसान। खगि रहे खेत पठान ॥ ९ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दोहा

उत तैं धायौ ताँतिया इत तैं सिंह सुजान।
दुहूँ दबटि दल मैं परे जिहिं थल रुपे पठान ॥ १० ॥

छंद कंद

बली सिंह सूजा करी रौर जा ठौर।
जहाँ खेत खूनी पठानौं करी दौर ॥
कितेकौ धमंकी धमाधम्म बंदूक।
कितेकौ गए लूकि केते गए सूक ॥
किते बीर दै तीर चीरैं घनी भीर।
मिलै छीर मैं छीर ज्यौं नीर मैं नीर ॥
बजै दुंदुभी औ गजै मारुही मारु।
महा धूरि मैं सद्द मानो भुजै भारु ॥
चलैं सेल साँगैं घलामेल है सूर।
भलैं रे भलैं रे रह्यौ सद्द यौं पूर ॥
झनक्कै झमाझम्म तेगा धरे सान।
ठनक्कै ठनाठन्न तनत्रान पै बान ॥
भरैं कोहलैं लोह धाए बिना मोह।
रँगे रक्त में गत्त बाढ़े महा छोह ॥
जुटै इक सौं इक औ दोइ सौं दोइ।
कहूँ सोट से लोटपोटौं रहे सोइ ॥
कटे झुंड झुंडा फुटे भाल सौं लाल।
खुसी हाल ह्वैकै नच्यौ काल दै ताल ॥
कहूँ पाइकै धाइकै साइकै संधि।
परे आइकै चाइकै छाइकै अंधि ॥
खुटे खग्ग हत्थौं जुटे बीर संग्राम।
लुटे स्वामि के काम संग्राम के धाम ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बहैं तेग तेगा सहैं सूर सावंत।
भरैं श्रौन धारा परैं पेट तैं अंत॥
कहूँ खंड खंडे भुजा दंड औ मुंड।
दुरे रुंड पै रुंड और डुंड पै डुंड॥
झरी फुलझरी सी झमाझम्म समसेर।
करी कौंचकी सी परी ढेर की ढेर॥
सपट्टे लपट्टे झपट्टे भरैं तेह।
परैं बान किर्वान बरछन्न के मेह॥
गहैं हथ्थ सौं हथ्थ औ मथ्थ सौं मथ्थ।
भरैं बथ्थ सौं बथ्थ लेटे लथापथ्थ॥
रुहेले पठानो करी यौं घरी मारु।
बली बीर जट्टौं बजायौ घनौसार॥
कटे भू पटे सोहटे खेत पट्ठान।
जहाँ सिंह सूजा कर्यौ घोर घमसान॥
परे चारिहू ओर तैं दक्खिनी टूटि।
भजे खेत पट्ठान लीने कछू लूटि॥
फते पाइ सूजा खड़ौ खोलि नीसान।
तमैं भानि ऊ औ महासान सौ भान॥ ११॥

दोहा

जंग जीति सूरज बली आयौ जहाँ नवाब।
तब वजीर पट्ठान पैं आगैं कियौ दबाव॥ १२॥

कवित्त

सेलनु धकेला तें पठान मुख मैला होत
केते भट मेला हैं भजाए भ्रुव भंग में।
तंग के कसैं तैं तुरकानी सब तंग कीनी
दंग कीनी दिल्ली औ दुहाई देत बंग में।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सूदन सराहत सुजान किरवान गहिं
धायौ धीर धारि बीरताइ की उमंग मैं।
दक्खिनी पछेला करि खेला तैं अजब खेल
हेला मारि गंग मैं रुहेला मारे जंग मैं ॥ १३ ॥

छप्पय

ह्वै कलकान पठान समौं मन माँहिं बिचार्‌यौ।
करि मलार सौं संधि वखत आपनौ गुदार्‌यौ ॥
तीन भाग भुव करी एक मनसूरहिं दीनी।
एक दई मल्लार एक अपनी करि लीनी ॥
उलर्‌यौ उजीर दिस पूर्व कौं गंग तीर की राह गहि।
पर-दल विदारि परदेस तैं श्रीसुजान आयौ घरहि ॥ १४ ॥

हरगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस नंद सुजान हैं।
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं ॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकै।
पुनि गंगपार पठान मारिय अंक सप्तम गाइकै ॥ १५ ॥

इति सप्तम अंक ॥ ७ ॥

सिद्धि श्री महाराजाधिराज श्री ब्रजेंद्रकुमार सुजानसिंह
हेतवे कवि सूदनविरचिते सुजान-चरित्रे पठान युद्ध
उभय वर्णनो नाम
चतुर्थ जंग
समाप्त ॥४॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पंचम जंग

छप्पय

अनकप- आनन अमल कमल-कर कोस-दोस-हत ।
औषधीस सुभ सीस कोटि तैंतीस करत नत ॥
हंस अंस-अवतंस-बंस भवभच्छि उजागर ।
एक दसन सुचि बसन रसन नवनिधि-सिधि-सागर ॥
जगमात-तात उतपातहर जगविख्यात मोदक असन ।
रवनीय रवन वानीवरद जयति जयति मूषक-लसन ॥ १ ॥

दोहा

ब्रह्म सिद्धि धरि बिंदु निधि बरष गतागत माह ।
घासहरे पैं कोप करि चढ्यो सूर नरनाह ॥ २ ॥
हुतै नगरपुरहूत कैं सूरज सफदरजंग ।
दोउन मिलि मसलति करी करनौ जो जो ढंग ॥ ३ ॥
तब वजीर मनसूर ने कही कि सिंह सुजान ।
जिन्हौं न मुझको तन दियो तिन्हैं करौं बिन जान ॥ ४ ॥
अवल मुझै बड़गूजरै ताखत करना जानि ।
रफते रफते और भी रहे मुखालिफ भानि ॥ ५ ॥

मल्लिका छंद

यौं कही वजीर धीर । बुल्लियौ सुजान वीर ॥
जो कछू कहै नवाब । ताहि कीजियै सिताब ॥
साहि कौ हुकुम्म लेउ । आपुही मुहीम देउ ॥
सो वजीर चित्त धारि । साहि पै गयो बिचारि ॥
सीसु नाइ कै सलाम । भाषियौ अनेक काम ॥
साहि के हरामखोर । ते बढ़े मरोर जोर ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यौं सुनी दिलीस तब्ब । बोलियौ तबै सगब्ब ॥
चाहियै तुझै नवाब । ताहि कीजिये सिताब ॥
साह कौ हुकुम्म पाइ । आपने अवास आइ ॥
श्रीसुजान को बुलाइ । यौं नवाब ने सुनाइ ॥
साह ने तुझै सराहि । एक वंदगी सुचाहि ॥ ६ ॥

दोहा

हुकुम साह कौ है यही तुम कौं सिंहसुजान ।
राउ बहादुरसिंह कौं तावत करनौ जान ॥ ७ ॥
सरोपाइ समसेर दै फुरमायौ मनसूर ।
घासहरे पै कुंवर जी जाना तुमैं जरूर ॥ ८ ॥

चौपाई

हय गय सरोपाउ समसेर । लै सुजान कीनी नहिं देर ॥
करि सलाम निज डेरन आइ । कर्यौ कूंच दुंदुभी बजाइ ॥
उतरि पार कालिंदी तीर । डेरा करै समौंगर बीर ॥
कोल माँझ बैठ्या सुनि राउ । ताकौ करन सुजान उपाउ ॥
ऐसौ कछू ब्यौंत चित धरिए । याहि घेरि घासहरैं करिए ॥
थोरी चमू आप ढिग देखि । लिख्यौ देस कौं पत्र बिसेखि ॥
श्रीब्रजराज राज सिरताज । अपने आप सुधारन काज ॥
देखत पत्र सीख दै लालै । सुत जवाहरै सहित रसालै ॥
और देस में जो कछु सैन । ताहि भेजियौ कहिकै बैन ॥
पत्र बचाइ तुरत ब्रजपाल । बोल्यौ सिंह जवाहर हाल ॥
सीख दई ब्रजपति ने जबै । सूजा पास जाहि तू अबै ॥
जौ कछु फौज देस की और । पीछैं भेजौं तेरी गौर ॥ ९ ॥

दोहा

सीख पाइ बदनेस तैं सिंह जवाहर बीर ।
करि सलाम ताही घरी साजी सैन गँभीर ॥ १० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कवित्त

कर रकवाहे किलबाकी कुही काबिल के
खुरासानी खंजरीट खंजन खलक के।
गूढ़ गिलगिली गुलगुल से गुलाब रंग
चहर चगर चटकीले हैं बलक के।
जरदा औ जाँग जिरही से जग जाहर
जवाहर हुकुम सौं जवाहर झलक के।
मंगली मुजन्नस सुनौंची स्यामकर्न स्याह
सिरगा सजाए जे न मंदिर अलक के॥ ११॥

छंद नाराच

सज्जियै तुरंग ते कुरंग गौंन गंजनै।
परिंद-मान भंजने नरिंद-प्रानरंजनै॥
सुरंग स्याह से लिया दुरंग बोज केहरी।
कुमैत संदली दुबाज हैं सुरक्ख जेहरी॥
कुला समंद सूर से सजाव खिंग हैं हरे।
गरा गुलाब आननैं अनेक रंग जे भरे॥
नवीन जीन कीनते अरीनु मान खंडनै।
दिगीस हीसके करैं व्रजेस-ग्रेह मंडनै॥
किते पदाति जाति राति रूप तें भयावनैं।
कितेक लाल पोस आसपास के सुहावनैं॥
किते जलालदार आबदार लावदार हौ।
किते निसान बानसान के भरे तयार हौ॥
अनंत रथ्थ सथ्थ ही मनौ सुचंद भान के।
भरे बिलंद सान मान ढाहने बिमान के॥
बिसाल लाल पालकी अनेक नालकी सजी।
चमू सुवारि रंग की अनेक रंग है गजी॥ १२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छंद त्रिभंगी

गाढ़े गढ़-गंजन सुर-गज-मंजन मानहुँ अंजन-गिरि राजैं।
जरकस की भूलनि रवि ससि तूलनि धावत हूलनि गल गाजैं॥
चरखिनु आकरषैं सदजल बरषैं पर दल धरषैं भले भले।
पिलवान पुकार आँकुस भारैं कहि कहि हारैं दले दले॥
सिंदूर भुसंडे बहु बिधि मंडे तिनपै भंडे फहराने।
दंतनु की सोभा है जनु गोभा दिस दिस लोभा दरराने॥
चरननु के धरते भरके परते दानव धरते मले मले।
पिलवान पुकारैं आँकुस भारैं कहि कहि हारैं दले दले॥ १३॥

दोहा

सबै सैन तैयार हुव करि दुंदुभी धुकार।
सिंहजवाहर निकट हुव जै जै शब्ग अपार॥ १४॥

छंद अनुगीत

तिथि त्रोदसी सनमुख ससी रवि राहु कौं बल पाइ।
धरि ध्यान हिय मधि प्रीति सौं हरिदेव कौं सिर नाइ॥
सुभ लग्न में निरविघ्न चढ़ि्ढ्य तनय सिंह सुजान।
फहरान पीत निसान प्रबल प्रताप पावक मान॥
अति दीह दुंदुभि बज्जियं मनु गज्जियं घनघोर।
बल सज्जियं गल गज्जियं चहुँ ओर ज्यौं पिक मोर॥
ढमकंत ढोल ढमाक डफला तबल ढामक जोर।
सहनाइ तुरही बंकिया भभकार भेरनु सोर॥
करि करि सिलाह सनाह चिलतह ओपची बरबाह।
भरि भरि उछाह सिपाह चढ़ि्ढय सहित संग उमाह॥
चहुँवान कूरम जादवा राठौर गौर बघेल।
पंमार अरु परिहारि सेंगर सोलँकी चन्देल॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निर्वान सुरकी तोमर रु पुंडीर पौरच पूर।
सीसौदिया खीची खँगार जघार जादृस सूर॥
बरं बैस पुनि बड़गूजरौ गहलोत सजिय बुँदेल।
चहुँ बरन उद्धत घरन के सँग चढ़िढयौ करि रेल॥ १५॥

कवित्त

बखत बिलंद तेरो दुंदुभी धुकारन सौं
दुन्द दबि जात देस देस सुख जाही के।
दिन दिन दूनौ महि मंडलु प्रतापु होत
सूदन दूनी में ऐसे बखत न काही के।
उद्धत सुजान-सुत बुद्धि बलवान सुनि
दिल्ली के दरनि बाजे आवज उछाही के।
जाही के भरोसे अब तखत उमाही करै
पाही से खरे हैं जो सिपाही पातसाही के॥१६॥

दब्बत अदब्ब महि पब्बय से पीलनु सौं
गब्बर गरट्ट अरिठट्टनु निघट्ट कर।
बब्बर के वंस के अटब्बर के रच्छक हैं
तच्छक अलच्छन सुलच्छन से स्वच्छ घर।
जब्बर भुजब्बर सुभट्टनु सघट्ट हर
नट्टत न हट्टत न थक्कत न खग्ग धर।
उग्ग दुग्ग दंडन दरिद्र दुःख खंडन
प्रताप आप मंडन जवाहर तिहारे कर॥१७॥

छंद कड़खा

चलत उच्छलत हयबलित कंचन करनु
ललित मदकलित गजराज गाप।
झलित नीसान उज्झलित असमान लगि
खलित खल नारि धुधुकार पाप।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धूरि धारानि सौं पूरि ससि सूर कौं
चूरि बिटपीन भुवि पूरि छाए।
सुभट उदभट लियैं ओज दस दिस कियैं
सेन सजि सूर-सुत जबहिं धाए॥१८॥

छंद पद्धरी

सो साहि करिय चारिक मुकाम। पुनि करहु कूँचि अति ओज धाम॥
फिर उतरि पार जमुना अपार। पुनि दयो गोपपुर किय बिहार॥
यह खबरि पाइ कै श्री सुजान। किय कूँच समोगर तैं अमान॥
करि कूँच हुहूँ आए जवारि। लखि श्रीसुजान हिय हरख धारि॥
तब सिंह जवाहर पास आइ। किय राम राम निज सीस नाइ॥
सुत* कौं निहार बदनेस-नंद। आनंद पाइ उर मैं बिलंद॥
सब समाचार ए राउ पाइ। तजि कोल गयौ तट गंग धाइ॥
इत सूरज हू सुत सहित कोल। आए बजाय दुंदुभि अतोल॥
तब कही सिंह सूरज अमान। अब है बड़गूजर कौन थान॥
सुन कही दूत वह गंग तीर। यह खबर ठीक परिहै अधीर॥
यौं सोधु पाइ बदनेस पूत। किय हिय बिचार तबही अभूत॥
एक जाति बाजि बर साजि लेउ। अरु सब बहोरि ह्याँ थाँभि देउ॥
मत यौं सुजान कौ सुनत बीर। करि करि सिलाह आए गँभीर॥
द्वै सहस हयंदनि सजिउ दंड। वह सिंह जवाहर बल अखंड॥
हय दोइ सहस सूरजहु संग। यौं चार सहस हय लै अभंग॥
करि करि निसान की घोर घोर। कीनौ पयान उर धरि मरोर॥
बड़गूजर हू यह खबर पाय। आयौ सुजान मेरे उपाय॥
लरनौ न बनै या भूमि मोहि। निज भूमि माँझ होनी सो होहि॥
बड़गूजर हू निज दुग्ग राह। तज़ि गंग-तीर सजिबे सनाह॥

---

*पाठान्तर = सब।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दस कोस भूमि के अंतराइ। दोऊ कलिंदनंदनि मझाइ॥
घासहरैं दाखिल भयौ राउ। निज बिबर ब्याल कैं करि उपाउ॥१६॥

छंद हरगीत

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेसनंद सुजान हैं।
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महा कलिकान हैं॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यो छंद बनाइ कै।
करि फौज भेरिय राउ घेरिय प्रथम अंक सुनाइ कै॥२०॥

इति प्रथम अंक ॥१॥

दोहा

उग्ग * दुग्ग बिबौर धसि ब्याल रूप, ह्वै राउ।
ताकौं ढूँक्यौ आनिकै सूरज ज्यौं खगराउ॥१॥
रवि राका मकरंद की सूरज रोपिय रारि।
है-दल पैदल संग लै हल्ल करिय रिस धारि॥२॥

छप्पय

ठुक्किय दिग्घ निसान पुंज गिरवरगन गुंजिय।
पीत केतु फहरानि देखि दुसमन मन मुंजिय॥
चंचल तुंग तुरंग जंग हित भरत बलंगनि।
पाइक साइक संधि अगाहुब करत छलंगनि॥
इम सैन साजि सूरज चढ़िय जिहि सम सूर न भूमि बिय।
वढ़ि बीर बिकट तिहिं दुग्ग तनु घार दृष्ट चहुँ ओर दिय॥३॥
जोजन अर्ध अकार दुग्ग दुर्गम माध सरवर।
दच्छिन पच्छिम ओर प्रबल जग रह्यो पूरि जर॥
बसु हजार नर सुभट रहे समुहाइ शस्त्र गहि।
लोह-जंत्र चहुँ ओर तासु तट कौन सकै लहि॥

---

* पाठान्तर = दुग्ग।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

लखि ताहि सूर सूरज बली सिंह जवाहर सौं कहिय।
तुम जंग धनद-दिस तैं लहौ पुव्व द्वार आपुन गहिय ॥४॥

तोटक छंद

यह आयसु पाइ सुजान-तनं। लहि सिंह जवाहर मोद घनं ॥
चहुँ सैनपतीनु बुलाइ लियं। तिन सौं यह आयसु आपु दियं ॥
इक सूरतिराम सुगौर-कुलं। बिय कूरम भर्थ बली अतुलं ॥
अरु दौलतराम सिलाह कियं। पुनि गूजरराज हरिष्ष हियं ॥
लखि चारिहु सैनपतीनु बली। तिन सौं हित जंग जताइ भली ॥
सुनि भर्थ सुदुग्गहि जंग लहौ। सिव की दिस तैं निज जोर गहो ॥
अरु राजहि गूजर सौं कहियौ। दिस वाइव तैं गढ़ कौं गहियौ ॥
अरु सूरति दौलतराम दुओ। गढ़ द्वारहि कौं बल पूर किओ ॥
तिहिं अग्ग धरौ बहु पैदल कौं। पुठवार कह्यौ बहु है-दल कौं ॥
निज यौं बल राखि सुजान तनं। करि दुंदुभि दीह अवाज घनं ॥
उत सूरज ह्व ततबीर कियौ। भट मीर पनाह अगार दियौ ॥
अरु गोकुलरामहिं बाम भुजा। रन जित्तन की जिहि हथ्थ धुजा ॥
वह कूरमसिंह प्रतापु महा। गढ़ पूरब द्वारहिं कौं उमहा ॥
सिवसिंह तिहीं तट जोर गह्यो। हरिनागर तासु परैं उमह्यो ॥
सुखराम सुमातलु सौं कहियौ। तुम मीर की मद्दति मैं रहियौ ॥
अरु तोमरराम सुचंद बली। हरिनागर की पुठवार भली ॥
बलिराम सुबल्लम दुग्गपती। सब सैन सजैं सबको मद्दती ॥
अरु जे बरछैत बली तन के। तट सिंह सुजान महा मन के ॥
इमि सूरजसिंह जवाहर ने। बलु थापि कियौ आर ठाहर ने ॥
लखि ताहि बहादुरसिंह महा। उर कोह भर्यौ रन कौं उमहा ॥
दुति देखतु दीरघ भुंडन की। अति उन्नत देह बितुंडन की ॥
करि चौकस चारिहु डंडन की। मति मंडन की अरि खंडन की ॥
निज मातुल दच्छिन ओर धर्यौ। वह छत्रिय धर्म गरूर भर्यौ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दिस उत्तर ओर जवाहर की। तहँ भीर भरी जुग नाहर की ॥
इक जालिमसिंह सुपेहल कौ। वह वीर महा भुव ठेहल कौ ॥
अरु देवियसिंह सुभ्रात बली। तिहिं के तट राखिय भाँति भली ॥
दिग पच्छिम हाथियराम धर्यौ। अरु मंधाता तट तासु कर्यौ ॥
धरि पूरब आपुन मंत्रिन कौ। अरु आप रह्यौ सब जंत्रिन कौ ॥
भरि पाँच हजार बँदूकनि कौं। बहु तोप जजाल अचूकनि कौं ॥
पुनि छत्रिय धर्म सम्हार हियैं। गढ़ पुव्वहिं द्वार विचार कियैं ॥
हित जंग कर्यौ वह राउ तबै। सत सात तुरंगम साजि जबै ॥
सत वेद सुपाइक अग्ग धरे। बड़गूजर यौं रन कौं निकरे ॥
लखि सूरज सूरन हल्ल कियं। उत सिंह बहादुर कोह कियं ॥५॥

दोहा

रन भुग्गिनि जुग्गिनि जगीं सुनि दुंदुभि धुंकार।
महा भयानक भुव भई खल भल दुग्ग अपार ॥ ६ ॥

छंद तूफा

खलभल परी दुग्ग मँझार। दलबल दपट देखि अपार।
कलमल करत नर अरु नार। छलबल कोट-ओट निहार ॥
दरबर धाइ सूरज सूर। अरबर पारियौ पर पूर।
हरबर कही राउ निहार। नर करौ सकल सम्हार ॥
झरभर होन लागी चोट। भर भर काँगुरन की ओट।
धर धर धुंधमाँ धमाक। घर घर घुँण्वाक घनाक ॥
तरतर परत गोली घोर। करकर कै रही चहुँ ओर।
सरसर जबर जंगनि अंग। झरझर उठत ज्वाल उतंग ॥
गोला गोल में गन्नात। तोला लागतें मन्नात।
झाला बाइसौं फंफात। बोला काल ज्यौं हंकात ॥
चोला सुभट के ले जात। खोला ढोल ज्यौं दुर जात।
हाला हौन लागै सैन। डोला डोल ज्यौं लागै न ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चार्‌यौं ओर माँची घोर। धूँवाँ धुंधरी गढ़ कोर।
सूजा देखि ऐसौ हाल। फूले नैन ज्यौं गुल्लाल॥
चाह्यौ * त्यौं जवाहर बीर। गाह्यौ † चहत जुद्ध गँभीर।
दै दै दुहूँ दिग्घ निसान। धाए दै हयर धवान॥
करि करि दुहूँ दिष्ट करूर। सूरज औ जवाहर सूर।
गढ़ के ईस को दिस ओर। निरख्यो मोरचौ अति घोर॥
तापर दबट मीर पनाह। पूरब सहित सूर सिपाह।
प्राची औ उदीची ओर। माँची रारि ऐसो घोर॥
कड़बड़ बजत टाप हयन्द। भड़भड़ होत शब्द बिलंद।
गड़बड़ भयौ चाहत सूर। झड़बड़ आयुधन की पूर॥
गोली भौंर सी भननात। पिक ज्यौं गाल कुहकत जात।
धूवाँ त्यौं पराग उड़ात। गंधक गंध सौरभ गात॥
टुट्टत तरवरन की डार। सोई होतु है पतझार।
देखैं ए उदीपन साज। गढ़ ज्यौं सदन है रितुराज॥
तासौं ह्वै सकाम सरीर। धाए सामुहैं जदुबीर ‡।
गढ़ की भूमि सो नव नारि। भूषन वस्त्र शस्त्र बिचारि॥
बुरजैं उरज ही के भाइ। तिनकौं गह्यौ चाहतु धाइ॥ ७॥

कुंडलिया

पुब्बहिं दरवाजैं सुन्यौ बड़गूजर बड़ हथ्थ।
तहाँ चल्यौ सूरज बली रोक्यौ सुभट समथ्थ॥
रोक्यो सुभट समथ्थ तथ्थ समुझाइ सुजानहिं।
परे बीर बहु धाइ हथ्थ गहि गहि किरवानहिं॥
गहि गहि मौन गरूर पूर अपने हिय दुब्बहिं।
तहीं उड़त बहु सारु भारु ज्यौं भुनतु अपुब्बहिं॥ ८॥

---

* पाठांतर—चार्‌यो

† पाठांतर—गार्‌यौ

‡ पाठांतर—ब्रजबीर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चामर छंद

दै धवान धाइयौ घुमाइ सेल साँग कौं।
लै कमान बान भान और दुग्ग आग कौं॥
सूथियौ जहाँ सुराउ अक्खु सूर संग लै।
ह्वै गए घलासुमेल जट्ट-जूह जंग लै॥
लेहु लेहु नद्द को अहद्द सद्द बढ्ढियौ।
मारु मारु उत्तह्व अनेक बीर रढ्ढियौ॥
वज्जई हथ्थ्यार वेग सज्जई तुरंग कौं।
गज्जई वँदूक अद्ध उद्ध प्रान-भंग कौं॥
तज्जई न खेत देत लेत घोर घाउ कौं।
भज्जइ अनेक दुग्ग प्रान के बचाउ कौं॥
लथ्थई अजीतसिंह पथ्थ ही सुराउ तैं।
बड्ढि बीर आइयौ पिता सु अग्ग चाउ तैं॥
सक्ति कौं सम्हारि हथ्थ सत्रु पैं चलाइयौ।
यौं हरष्षि राउ ह्वू बरष्षि बान धाइयौ॥
देखि सिंह जालिमा तुरंग हक्कि अग्ग ही।
ता समैं सुरामचंद लै हयंद बग्गही॥
त्यौं अनेक सूरबीर आयुधौं उभारिकै।
जुट्टियौ अरीनु जुद्ध उद्ध कुद्ध धारिकै॥
छुट्टियौ इतै दवान सेल साँग संग ही।
गुट्टियौ गयंद सेर जे सुरुद्र रंग ही॥
फुट्टि रामचंद गौ दवान लग्गि जंग में।
चुट्टि कै सुमारु भौ अजीतसिंह अंग में॥
लग्गियौ वँदूक इक्क जालिमा सरीर में।
इक्क आनि लग्गियौ सु राउ पाउ पीर में॥
चुट्टि फुट्टि तुट्टिगे कितेक बार संग में।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ताहि चाहि राउहू मलीन चित्त जंग में ॥
तात भ्रात गात पात न्हात श्रौन रंग में।
दुग्ग कौ मुख्यौ सु राउ चाउ चित्त जंग में ॥ ६ ॥

दोहा

मुख्यौ देखि वन राउ को बकसराम गहि तेग।
मानो गज मदमंत पर धायौ सिंह-सवेग ॥ १० ॥

सोरठा

निकट जाइ नर-बीर नाम सुनायौ टेरिकै।
राउ महारनधीर एक खाइ एकै दई ॥ ११ ॥

छंद सवंगा

लयौ मोरचौ मारि मीर सुखराम ने।
तुपक तीर तरवार जंग करि चाव ने ॥
बकसराम असि खाइ भिर्यौ फिर नीठ दै।
रत्त रँग्यौ रन राउ धँस्यौ गढ़ पीठ दै ॥ १२ ॥

छप्पय

उत्तर दिसि गढ़ विकट निकट जुट्टिय जग जाहर।
सेनापति तिहिं चारि रारि हित सिंह जवाहर ॥
दै दवान किरवान बान धाइय तिहिं ठाहर।
सह्यि घोर घमसान तोप जंजाल हियाहर ॥
बहु तोरि फोरि मुरचान कौं मोरि सुभट अरि उग्ग हिय।
पुर-द्वार रुक्कि ठाढ़ौ बली सबै दुग्ग मुसमुंद किय ॥ १३ ॥

छन्द पद्धरी

सो खबरि पाइ बदनेस-पूत। निजु तनय काम कीनौ अभूत ॥
तिहँ बार साँडिया दिय पठाय। यह कहौ वाहि समुझाइ धाइ ॥
सुत तोहिं सपथ मेरी अनेक। पग अग्ग देइ धरि हिय बिबेक ॥
यह बात कहा ता काज कोहु। जीजत इतेक बिन-हेत लोहु ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मैं कही ताहि सुत मानि लेउ। या मसलति पै निज चित्त देउ॥
जो जहाँ पहुँच्चिय सुभट जाइ। सो भूमि देउ ताकौं बताइ॥
दिन कही लेइ ओटहिं बनाइ। निस देउ मोरचा बहु खुदाइ॥
यौं जहाँ तहाँ करि सावधान। तू उसरि मोरचा दै सयान॥
तुम जो न मानिहौ यह अमान। तौ मैंहूँ आवत तिहीं थान॥
यौं कहि पठाइयौ श्रीसुजान। जहँ हुतौ जवाहर रन अमान॥
उनि कह्यौ आइ वाही बिधान। जब सुनिय जवाहरसिंह कान॥
चित सोचि सोचि यह गुन निधान। तब कहो ताहि उद्धत भुजान॥
यह तौ न वात इह समै मान। पै मोहिं कह्यौ उनकौ प्रमान॥
पीतु-बानि मानि चिम करी सोइ। जो जहाँ हुतौ सो तहीं लोइ॥
निज उसरि दुग्ग तैं तीर चार। लिय आप मोरचा हिय बिचार॥
उत राउ गयौ रन तैं सुमारु। लखि ताहि दुग्ग कलबल अपारु॥
सब जान्यौ जो धुर-धरनहार। सो भयौ प्रथम रन मैं सुमारु॥
सब छाँड़ि कोट अरु प्रान आस। तजि तजि हथ्यार हुए उदास॥
वह राउ महा धीरज-निधान। ह्वै घरी दोइ मैं सावधान॥
तब कही वीर क्यों सूनसान। कह पलटि गयौ गढ़ ते सुजान॥
सो सुनत कहौ जो हुते तीर। है फौज जहाँ की तहाँ बीर॥
रन संग तुमारे नए धीर। ते सब सच्छत देखे सरीर॥
लखि तुम्हैं महा घाइल सुअंग। यौं भए मोरचन तैं सुभंग॥
यह सुनत राउ चहुँवा निहारि। सुत भ्रात गात घाइल बिचारि॥
धरि धीर उठ्यौ वह तिहीं तंत। चित चाहतु है परदल-सुअंत॥१४॥

छप्पय

सस्त्ररु बस्त्र बँधाइ जान चढ्ढिय नरबाहन।
झलझलात रस रुद्र नैन मानों कन दाहन॥
धरिय मुच्छ पर हथ्थ तथ्थ सैंधूहि घुराहिय।
दे निसान धुंकार सूर गोमुखहि पुराइय॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गुन गाइक गावत बिरद गिरद सुभट संघट्ट हुव ।
बल बढ़िय कढ़िय पुनि सदन तैं महा धीर हठि सिंह हुव ॥१५॥

तारक छंद

निजु मंदिर तैं कढ़ि बाहिर आयो ।
लखि सैन सबै मन धीरज पायौ ॥
गढ़ पूरब द्वार चल्यौ अतुरानौ ।
तहँ आइ कह्यौ यह बैन सयानौ ॥
एहि बार रहौ सब चौकस भाई ।
अरि कौं नहिं देखन देउ जु खाई ॥
समयौ वह धीरज ही धरिबे कौं ।
नर बीर पराक्रम के करिबे कौं ॥ १६ ॥

दोहा

दुग्ग-द्वार चौकस रहौ गाढ़े करौ कपाट ।
रैन दिना जागत रहौ जानौ अरि ए जाट ॥ १७ ॥

दीपक छंद

यौं कहत चहुँ ओर । फिर दुग्ग करि जोर ॥
वह राउ बुधवान । करि सूर सनमान ॥
जे जहाँ हैं ज्वान । तहँ थापि बलवान ॥
धरि और पुठवार । हिय जान सरदार * ॥
वह दुग्ग के द्वार । तहँ राखि बहु भार ॥
अरु तोप जज्जाल । हयनाल गयनाल ॥
करि दीन फिर त्यार । लगि होन बहु मार ॥
गहि कोट की ओट । वंदूक की चोट ॥
लगि होत कहुँ मोट । कहुँ लोट कहुँ पोट ॥
फिर देत भौ मारु । बरसाइ बहु सारु ॥

---

* पाठांतर—निरधार ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ब्रजबीरहू भूमि। गहि रहे गढ़ भूमि॥
करि घोर घमसान। भइ रैन छिपि भान॥ १८॥

दोहा

टूटि फूटि बहु सुभट गे दिखा दिखी इत उत्त।
रैनि भए भड़के भए जैसे अच्छर दुत्त॥ १६॥
निसा जानि सूरज बली बेलदार बुलवाइ।
सुभट हुते जे दुग्ग तट तिन पैं दए पठाइ॥ २०॥
जैसी पाई भूमि जिन तैसी ओट बनाइ।
भुव खुदाइ परिखा निकट दिए मोरचा जाइ॥ २१॥

हरिगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं।
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महा कलिकान हैं॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यो छंद बनाइ कै।
रन दुग्ग घासहरौ प्रथम दिन दुतिय अंक सुनाइकै॥ २२॥

इति द्वितीय अंक॥ २॥

छंद दुपई

या बिधि बासर ईस समर दुहुँ ओर।
जब्बर जंग जज्जाल परिय घन घोर॥
चंडी चलत भुसंडी खंडी सैन।
मंडी रारि उदंडी छंडी हैन॥
तब चित माहिं बिचारिय बदन-कुमार।
चहुँ दिसि गढ़हिं निहारिय ह्वै असवार॥
दच्छिन पच्छिम ओर हुतो जो नीर।
सो कहुँ कहुँ गयो सूखि सुगढ़ के तीर॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ताहि बिलोकि बदन-तन सिंह सुजान ।
दुग्गहिं चहुँ दिस घेरन कियहु बिधान ॥
सुतहिं जान बलवान सुसमर प्रबीन ।
दुग्गहिं दच्छिन ओर मोरचा दीन ॥
आपुन पच्छिम आस बिलासहिं कीन ।
सूरज सुबुधि समथ्थ समर किय पीन ॥
पितु कौ आइसु पाइ जवाहर तथ्थ ।
दुग्गहिं दच्छिन ओर दबटि किय हथ्थ ॥
भूरज-राखनहार सु सूरज बीर ।
जथा जोग बल थापन कियहु गँभीर ॥ १ ॥

छंद पद्धरी

दिसि चित्रभान हरबल सुभाल ।
थाप बैरि दुग्ग कौ चमूपाल ॥
धरि तासु पुब्ब दुरजन ससथ्थ ।
बलिराम तास तट थप समथ्थ ॥
पुनि थप्पिय तोमर रामचंद ।
सो जुद्ध बुद्धि मैं है * बिलंद ॥
पुनि तासु पुब्ब गढ़ पुब्ब द्वार ।
हरनागर थप्पिय बल अपार ॥
धरि निकट तासु उदभट समूह ।
दल्ला सुमेव चाहत फतूह ॥
पुनि रतनसिंह मैंडू—नरेस ।
थप्पिय सुजान तजि मन कलेस ॥
अरु पुहुपसिंह कुसलेस—नंद ।
वह मस्तराम गौतम बिलंद ॥

* पाठांतर—जानत ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इक किसनसिंह उद्धत सुगात।
सादूल नंद थप्पिय सुभ्रात॥
सत पंच बीर थपि मीर संग।
महमद पनाह रुप्पिय उमंग॥
सुखराम सुमातुल बलनिधान।
थप्पिय. सुजान उद्धत भुजान॥
धरि तासु भ्रात-नंदनहिं सथ्थ।
हरि नाराइन जो रन-समथ्थ॥
दिगसिखा आदि तैं ईस लग्गि।
दिय जोर मारवा गढ़हिं खग्गि॥
दिस बित्तपाल थप्प्यौ सुहाल।
किरपा सु राम गूजर गदाल॥
दै सुभट जाल थप्पिय कराल।
बलिराम सुबल्लभ दुग्गपाल॥
पुनि सहित सैन थपि जैतसिंह।
फौंदा—तनूज ठाकुर अरिंग॥
पुनि रहित भीत रनजीत रक्खि।
रुप्पिय अमान दुग्गहिं धरक्खि॥
अरु तासु तटहिं बहु गहिय जोर।
उद्धत अनूपसिंह रन कठोर।
वह हठीसिंह सब सहित सैन।
उत्तर दुवार गढ़ रुपिय लैन॥
तट तासु भर्थसिंहहिं समप्पि।
अति बिकट भूमि हिय जान थप्पि॥
गढ़ मरुन कौन थप्पिय सुजान।

* पाठांतर—ज्ञनत।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बहु बीर सुहरसै के अमान ॥
ईसान आदि लगि पवन आस।
दिय मोरचान किय गढ़ उदास ॥
गढ़ बरन ओर प्रथमहिं गँभीर।
खूँटैल बीर थप्पिय सुधीर ॥
स्यौसिंह बीर बहु सुभट जाल।
परताप कमठकुल सैनपाल ॥
सत चार संग भट लै कराल।
दिय मोरचानि गहि गहि सुढाल ॥
पुनि प्रबल बलहिं साजैं जुझौर।
वह रुप्पिय गोकुलराम गौर ॥
व्रजसिंह आदि चहुँवान बीर।
सूरत्तिराम सुत कुसल धीर ॥
अरु स्यामसिंह पँघौरवार।
बिय स्यामसिंह थाना कुँवार ॥
जैकृष्ण सुमनसाराम दोइ।
अरु पाखरिया हू सहित लोइ ॥
पुनि सहीराम रुप्पिय अदंद।
अरु फतेराम ऊधमा-नंद ॥
कुलपूज राजकुल सावधान।
घमँडी अमान-सुत चंद्रभान ॥
इमि किते बीर बरछैत संग।
आपुन सुजान रुप्पिय अभंग ॥
गढ़ पूरब उत्तर बरनु ओर।
यौं श्री सुजान किय घोर जोर ॥ २ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दोहा

देवीसिंह अरु अषैसिंह श्री ब्रजेश-सुत धीर।
राखे सिंहसुजान दे दोऊ बीर सुतीर ॥ ३ * ॥
गढ़ नैऋत दच्छिन दिसा अति उद्भट भट सथ्थ।
दिए मोरचा जोर करि सूरज-सुत बड़ हथ्थ ॥ ४ ॥

छन्द तोमर

दिस जानि नैऋत ओर। तहँ थप्पियौ कर जोरि ॥
बकसी सुमोहन राम। द्विज सज्जि सूर उदाम ॥
ढिग तासु राजाराम। अति सूरता कौ धाम ॥
धरि धीर बलका बीर। चहुँवान साहिब तीर ॥
धनसिंह ठाकुर दास। गढ़ निकट कीन निवास ॥
बल सहित दौलत राम। लगियौ करन संग्राम ॥
पुनि पैमसिंह जुझार। अरु पृथीसिंह पँवार ॥
नरराज सिंह अजीत। सब भ्रात सहित अभीत ॥
परसोतमा रुपि तथ्थ। सब भ्रात सहित समथ्थ ॥
तेहि संग हरिबल बिप्र। लगि गोल जुज्झिय छिप्र ॥
तहँ रुप्पियौ अति भीर। हठिसिंह है नर बीर ॥
वह मेदसिंह सजोर। बहुतै सुभट्ट कठोर ॥
गहि सेल साँग कृपान। गढ़ लेन कौं समुहान ॥
तिमतै सु दहिनी ओर। दिय मोरचा अति घोर ॥
बलवान सूरतिराम। सब) सैनपाल उदाम ॥
तिहँ संग जादौ बीर। सुलतान समर गँभीर ॥
रनधीर तिरखाराम। रन सुद्ध भीखाराम ॥
औरौ अनेक सुभट्ट। रुपियौ सुगौर सघट्ट ॥

---

* यह दोहा दूसरी प्रति में नहीं है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धरि तासु की पुठवार । वह मेदसिंह कुँवार ॥
अरु त्यौं भवानीसिंह । गढ़ लैन रुप्पिय धिंग ॥
पुनि श्री दलेल अमान । थपियौ महा बलवान ॥
तिहिं के अगार उदार । दै सुभट संग अपार ॥
वह उदैराम सुनंद । है सदाराम बिलंद ॥
तिहिं तैं सुपच्छिम ओर । द्विज-उदैभान सजोर ॥
जहँ हुतौ गूजर पूत । रजराम रन साबूत ॥
तिहिं पुट्ठि धरि मजबूत । अबधूत ऊधम पूत ॥
तिहिं निकट सुभट अनेक । रुप्पिय धरैं रन टेक ॥
अरु आप सब पुठवार । सुत श्री सुजान कुँवार ॥५॥

छप्पय

बीरनराइन बलीराम बलसिंह खुस्यालहि ।
मान गुमान अमान संग ए तात भ्रात गहि ॥
अमरसिंह श्रीराम चौधरी सिंह अजीतहि ।
औरौ बहुत सुभट्ट लिए संघट्ट अभीतहि ॥
मतिवंत करन अरि अंत कौं गुर महन्त रच्छक रहिय ।
सब मोरचान पुठवार ह्वै सिंह जवाहर रन लहिय ॥ ६ ॥

छंद त्रिभंगी

धरि चारिहुँ ओरन पैदल घोरन देत मरोरन मुच्छन कौं ।
बहु तोप जँजालन अरु हथनालन भरि घुरनालन गुच्छन कौं ॥
चहुँ कोनन घेरिय ज्यौं पग वेरिय गौन निवेरिय दुग्ग रहा ।
छुंडत वहु चंडिय जोर भुसंडिय धूम धुमंडिय घोर महा ॥ ७ ॥
लखि दुग्गहि घेरा निपटहिं नेरा साँझ सबेरा माँझ करैं ।
बड़गूजर बंका तजि जिय संका दै दै डंका सार जरैं ॥
बलकैं रस बीरैं सुभटनु धीरैं फिर गढ़ तीरैं डार डरैं ।
चौकस चहुँ डंडिनि करि बल मंडनि निज भुज दंडनि तेग धरैं ॥ ८ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दुहुँघा बंदूकैं चलत न चूकैं उठत भभूकैं धुंकारैं।
छूटै जंजालैं होत दुसालैं मानौ कालैं हुंकारैं॥
कड़कड़ धुनि छाई तत्तड़ाई धध्धड़धाई धूम धरा।
धद्धर धर हालैं धूम करालैं सद्द महा लै घूमि घरा॥ ९॥
चहुँघाँ झर गोला ज्यों जम बोला मानौं श्रोला अररानैं।
मूड़ौ लै उड्डैं पेटौं बुड्डैं तोरैं गुड्डैं फररानैं॥
भुज दंडौं तोरैं मस्तक फोरैं यौं दुहुँ ओरैं झकझोरैं।
करि काल कलोलैं इत उत डोलैं नहिं मुख बोलैं टकटोरैं॥१०॥
टकटोरैं काली खुसी कपाली दै दै ताली भूत नचैं।
धर श्रोनित आली परी निराली खैंच श्रृगाली भौंन सचैं॥
गिद्धागन कौवा भरैं गलौवा तहीं चलौवा चंड भए।
षद्धंग खुलाने मुंड डुलानै कहूँ फुलाने खंड खए॥११॥

छंद मधुभार

दुहुँ ओर उद्ध किय घोर जुद्ध गढ़ देखि रुद्ध पुर लोग कुद्ध।
सब है उदास गए राउ पास अति त्रास धार कहियौ पुकार॥
सुनि राउ बीर तुमकौं न पीर तुमतौ अभीत हम तौ * सभीत।
नृप की सुरीति करियै सुनीति लखि देस काल निज बुद्धिहाल॥
पुनि बलु विचार करियै सुरारि अरु साम दाम है भेद काम।
करियै उपाय जब ना बसाय तब जुद्ध आइ नृप कौ उपाइ॥
तुम तौ प्रवीन हम हैं अधीन तजि रोस देउ गढ़ राखि लेउ।
पुर चहूँ ओर घिरियौ सुघोर नहिं है निकास लखि आस पास॥१२॥

दोहा

पुर परजा पतिनो तनय बचैं दिएहूँ बित्त†।
तौ सलाह करि राउ तू है सब ही के चित्त॥ १३॥

---

* पाठान्तर—ए हैं।
† पाठांतर—पुर परजा पतिनी दियै तनय और प्रद बित्त।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सवैया

दोस बिना रचि कोस धरै तजि कोस कभू सब देस बचावै।
देसहू त्यागत नग्र बचै तजि नग्रहु कौं परजा सुख ध्यावै॥
दै परजा पतिनी न तजै पतिनी हि तजै तनु जौ सचु पावै।
सुःख तजै सब कौ सुख तौ नृप देत सरीर घरी न लगावै॥१४॥

दोहा

सब नीतिन की नोति यह राउ रंक सब कोइ।
समौ देखिकै अनुसरै अंत सुखी बहु होइ॥ १५॥

सोरठा

या सुनि बोल्यौ राउ अब उपाय नहिं संधि कौ।
जौ सब करौ दवाउ तौ जालिम कौं भेजियै॥ १६॥
यह सुनिकै पुर लोग आए जालिमसिंह तट।
है अति * बाँकौ रोग सो कटिहै तुम तैं बली॥ १७॥

दोहा

सब की मसलति जानिकै जालिमसिंह बिचार †।
कौल बचन करि राउ सौं चल्यौ मिटावन रार॥ १८॥

छंद दुपई

जालिमसिंह बैठि नरवाहन जब गढ़ बाहिर आयौ।
जाकौं देखि सिंहसूरज नै बहु सन्मान करायौ॥
जो कछु अरज करो जालिम ने सो सूरज ने मानी।
तुरत आइ सो कही राउ सौं जो कछु दैनि बखानी॥
तबही राउ कही जालिम सौं कहौ कहा करि आए।
कैसे करी सलाह कुँवर सौं तब जालिम समुझाए॥

---

* पाठांतर—यह।
† पाठांतर—कुमार।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कहे इन दस लाख रुपैया तोप रहकला सब्बै।
जब ही ए पहुँचैं सुजान पै उठै मोरचा तब्बै॥
यह सुनि कही राउ मैं देहौं दस के द्वैहू औरौ।
तोप रहकला देउँ न एकौ स्यानौं कहौ कि बौरौ॥१६॥

सोरठा

ये सुनि जालिम बैन महा हठीले राउ के।
फिर न दिखाए नैन तरफरात ही ज्यौं तज्यौ॥ २० ॥

दोहा

जालिमसिंह मर्‌यो जबै खबरि पाइ कै सूर।
जान्यौ अब ही राउ को घस्यौ न नेक गरूर॥ २१ ॥

छंद पावकुलक

जालिमसिंह जु मोपै आयो। ताको फेरि जुवाब न पायौ॥
तातैं लेनौ सौंधौ याकौ। तब उपाव करिहौं मैं ताकौ॥
अमरसिंह मंझा सुत बोल्यौ। तासौं मंत्र आपुनौं खोल्यौ॥
अब तुम जाउ राउ कै पासैं। देखौ वाके मन कौ आसै॥
अरु गढ़ कौ सौंधौ सब लैयौ। चौहाननहू कौं समुझैयौ॥
अमरसिंह सुनि सूरज बानी। चल्यौ दुग्ग कौं चतुर प्रमानी॥
घासहरे में कियौ पयानौ। सूर सुपूत सुसील सयानौ॥
अमरसिंह गढ़ मैं यौं पैठ्यो। मानौं सनि आठे घर बैठ्यो॥
बैठ्यो हुतौ राउ जहँ बंका। अमरा आयौ तहाँ निसंका॥
मिले परस्पर दोऊ त्यौंही। करि सनमान बिराजे ज्यौंही॥
कुसल बूझि दोउ बतराने। प्रथम राउ ए बैन बखाने॥
अमरसिंह तुमहू कछु जानी। सूरज क्यौं हमपै रिस ठानी॥
उमरावन सौं जो धर लीनी। सो सो तजि सूरज कौं दीनी॥
और जु है याके मन माहीं। मोपै सो बनि आवत नाहीं॥
एक बात मेरी सुनि लीजै। तापै अमरसिंह चित दीजै॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

असदखान मोकौं मति जानौ। सैसलावतहू मति मानौ ॥
रुस्तमखाँ आतुर हो माख्यो। धीरज सो जानौ नहिं टाख्यो ॥
सिकरवार गूजर मैं नाहीं। गढ़ी मढ़ी जिनकी तुम ढाहीं ॥
यही जानि मोपै चढ़ि आए। घने द्योस के सोच घटाए ॥
जानतु मैं तुम हौ बल पूरे। पै अबलौं आए नहिं सूरे ॥
जो दिन दस पहलैं कहि देते। तौ यह भुव ऐसे नहिं लेते ॥
अबहू हरी भूमि बिनु चाहै। दुग्ग न पैहौ रन अवगाहे ॥
है कन पानि दुग्ग में जौ लौं। तौ लौं गनौं न तुमसे सौ लौं ॥
जब बारूद अन्न छिति जैहै। तब होनी ह्वैहै सो ह्वैहै ॥
गहि कर खग्ग दुग्ग के द्वारैं। अपने कर्म धर्म उर धारैं ॥
मंगलमई भूमि करि दैहौं। कीरती सुना रची गति पैहौं ॥२२॥

दोहा

धरनी धरनी नरन की बरनी है जो साथ।
करि करनी भरनी दुओ फरनी प्रभु के हाथ ॥ २३ ॥

सोरठा

जो इन कौ करि भोग ह्वै बियोग जीवत रहै।
तिन कौं फिरि न सँजोग गाम नाम आराम कौ ॥ २४ ॥
ऐसे बचन अनेक बड़गूजर बलक्यौ जबै।
तब हिय धरे विवेक अमरसिंह नैं यौं कह्यौ ॥ २५ ॥

कवित्त

करनी करै न अनकरनी * कहैई क्रूर
हठ अपजस कौ निधान वही खरु है।
साँचो सीलवन्त सूर सरल सनेही सुचि
प्रभु सौं प्रतीति धर्म पालक सु नरु है ॥

* पाठान्तर—अनकहनी।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

काम क्रोध लोभ मोह ईरखा न जाके मन
परदुख भंजन दयालु ताको घरु है।
सूदन सबर सरबज्ञता सुघर सोई
अमर नरहू है अमर हू अमरु है॥
बौरे बड़गूजर बकतु कहा बार बार
व्रज में व्रजेस भयौ बदन प्रचंड है।
ताको सिंह सूजा सुत भूजा के अधीन सब
जाको तू बिरोधी रह्यौ चाहतु अदंड है।
जैसे जै बिजै जगदीस ते जनमु पाइ
जगत में जान्यौं त्यौंही तुहू भयौ चंड है।
जाको यह खंड चढ़ि आयौ बलवंड
सोई तोकों धरि दंड महा उद्धत उदंड है॥२६॥

छंद वैतवै

कही तैं राव हम बिन दोष आही। करी तकसीर तेरी घनी ठाही॥
कहावै साषि द्वै तैं तू हमारौ। कह्यो मल्लार सौं तैं ज्यौंतु न्यारौ॥
दियौ तैं असदखाँ की जंग टारौ। जुदाई करि भयौ मनसूर प्यारौ॥
कछू सोऊ न तौपै बनी भाई। वही मनसूर ताकौं दुक्खदाई॥
अभू तौ छोड़तौ नाहीं हठै तू। नहीं सरदार जान्यौ है सठै तू॥
पठायौ तौ तू जालिमसिंह काहे। कही ताको करी ना प्रान दाहे॥
कह्यौं मैं आइ तोसौं मीत नातें। लही दुरबुद्धि ऐसी कहि कहाँ तें॥
अरे ए हैं पिता पाँचौ समानै। जनम जो देइ दूजौ गुरु प्रमानै॥
नृपति जो आपनौ तीजौ सुजानै। महा भय तैं बचावै ताहि मानै॥
असन कौं देइ पाँचौ ए बखाने। बढ़े धन धर्म इन सौं हार माने॥
सु तू मन माँझ सोचै क्यौं न भाई। कहौ किनि भूमि तैं का पास पाई॥
पिता सौं पुत्र जो हठि जुद्ध चाहै। वही जसु किर्त्ति खोवै दुःख गाहै॥
यहू मैं कहत तोसौं मूढ़ टेरें। गयौं गढ़ जानि आयो मैं जु तेरें॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुनी जब राव ने ये अमर-बानी । भरी छल की तबै हिय बुद्धि ठानी ॥
कही जब राव ने सुनि अमर भाई । सही तेरो कहो मो चित्त आई ॥
वही जो मामलति पहले चुकाई । करौ सो जाय तेरे हाथ भांई ॥
इती ततबीर करनी और भैया । जु मोपै माल तिनके करि रुपैया ॥
कछू जो चाहियै तौ आप लीजै । नहीं दिल्ली कौं तौ सब भेज दीजै ॥
पठै जन आप साहूकार कीजै । गिरौं धरि माल हुंडी हाथ लीजै ॥
घिर्‌यौ गढ़ जान कोऊ ना पतीजै । निसा ज्यौं होइ त्यौंही तोष कीजै ॥
निसा की सुनि सुबानी अमर मानी । सुजानैं पास ज्यौं की त्यौं बखानी ॥
यही सुनिकै कही सूरज सु कीनी । नहीं तौ जर गई हम जान लीनी ॥
पठायो अमर वाकौ माल आछैं । निसा वाकी करौ हमरी सु पाछैं ॥२७

छंद पद्धरी

साँचे बचन बिचार बदन-सुत के सबै ।
अमरसिंह सिर नाइ गयौ गढ़ मैं तबै ॥
माल सबै लदवाइ राव कौ तथ्थ ही ।
दिल्ली दियौ पठाइ मनुज निज सथ्थ ही ॥
छली बहादुरसिंह लिख्यौ निज पूत कौं ।
लीजो याहि सँहारि आपुने कूत कौं ॥
पोतदार जो आयौ इनकौ साथ है ।
ताकौं बाले देउ तुमारे हाथ है ॥२८॥

दोहा

बाबूराय वकील सौं दीजौ ताहि मिलाइ ।
ताके हाथ पठाइकै दीजो वाहि बताइ ॥२९॥
पितु कौ कागद बाँच कै सुत ने माल सम्हार ।
सूरज के अनुचरन सौं कीनौं ज्याब बिचार ॥३०॥
खिमानंद ने जब करी अति तागीद जताइ ।
फतेसिंह तब यौं कही देहौं निसा कराइ ॥३१॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बाबूराइ वकील पैं तबही गयौ लिवाइ।
करी हुती ताकीद सो दीनी ताहि सुनाइ ॥३२॥

सोरठा

सो सुनि बाबूराय खिमानंद सौं यौं कही।
हम पै पहुँचे आइ ये दस लाख सुजान के ॥३३॥
खिमानंद तुम जाउ कुँवर बहादुर सौं कहौ।
दीनौ तुम कौं राउ जो चाहौ सो कीजिये ॥३४॥

दुपई छंद

खिमानंद यौं ज्वाब पाइकै सूरज के ढिग आयौ।
जो कछु कौतुक भयौ दिली मैं सो सब आनि सुनायौ॥
सुनि सुजान मुसिकाइ राव की ए छल-बल की बातैं।
कही कहा जानतु मैं नाहीं बड़गूजर की घातैं॥
ज्यौं पयपान भुजंगै दीजै केवल विष ही बाढ़ै।
पटल पेटि ज्यौं धरै दहन कन जहाँ परै तहँ डाढ़ै॥
ज्यौं खल सौं कीजै सज्जनता सज्जन सौं खलताई।
लहै न सिद्धि एकहू जग मैं कहा रंक कह राई ॥३५॥

दोहा

बदी करै तासौं बदी करत दोसु नहिं होइ।
अब याकौं हौं मारिहौं होनी होइ सु होइ ॥३६॥

छंद हरगीत

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस नंद सुजान हैं।
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइ कै।
गढ़ घेरि थापि सलाह फेरि उथप्पनौ समुझाइ कै॥

॥ इति तृतीय अङ्क ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दोहा

माधव बदि छठि भूमिसुत सूरज हिय निरधार।
दुग्ग लेन निजु दल बलन कहि भेज्यौ हित रार ॥१॥
आस पास वा दुग्ग कौं सुभट रहे जे घेरि।
कहि भेज्यौं तिन सौं गुपत आजु न करनी देर ॥२॥
एक जाम निस भोर की* सुनि टामक कौ सद्द।
चहूँ ओर तैं दुग्ग पै हल्ला करौ मरद्द ॥३॥
सो सुजान की आन सुनि करि सलाह चहुँ कोद।
समौ निहारत जुद्ध कौ सूर मानि मन मोद ॥४॥
त्यौंहीं सिंहजवाहरैं कहि पठयौ ता बार।
घरी पाँच छः राति सौं लेहु दुग्ग ललकार ॥५॥

सवंगा छंद

पितु कौ आइसु पाइ जवाहर चाह सौं।
फूल्यौ मुख ज्यौं कमल दरस दिननाह सौं ॥
अति आनंदित हीय जुद्ध-उत्साह सौं।
रहौ आजु तैयार कह्यौ जु सिपाह सौं ॥
तीन पहर निस गई भई वह बेर है।
सूरज कहि हरिदेव गही समसेर है ॥
गढ़ के उत्तर ओर चल्यौ रिस धारि है।
मनौं त्रिपुर के नास भयौ त्रिपुरारि है ॥
त्यौंहीं गोकुल रामसिंह परतापु है।
जैतसिंह हठिसिंह अनूप सु आपु है ॥
रनजीतहु रनजीत सु बल्लू चौधरी।
भर्थसिंह सब अग्ग धयो जिहिं नौधरी ॥

---

* पाठांतर—जब निसि रहै।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

काइथ कुल नरसिंह और सुखराम हैं ।
हरनाराइन बीर धस्यौ गढ़ सामुहैं ॥
महा धीर रनबीर* गहैं कर खग्ग कौं ।
मीर पनाह उछाह लयौ गढ़ मग्ग कौं ॥
पुहुपसिंह किसनेसु नंद सार्दूल के ।
पुहुपसिंह सुत कुसल जवारि समूल के ॥
मस्तराम द्विज मस्त दस्त गहि तेग कौं ।
चंचल भोज तनूज संग ही वेद† कौं ॥
अजमतिखाँ अति उद्ध सुदल्ला मेव है ।
हरनागरु सैनेय विप्र रनदेव‡ है ॥
रामचंद्र कुल पांडु चंड ह्वै धाइयौ ।
तब ही दुरजनसिंह दुग्ग समुहाइयौ ॥
वली बीर बलराम बहुत भट संग हैं ।
हरिबल दवस्यो बैरि चमूपति जंग है ॥
जैतिसिंह जैकृष्ण सु मंसारामु हैं ।
पाखरमल्ल प्रचंड सु सूरतिरामु हैं ॥
तोफा अरु स्यौसिंह स्यामसिंह बीर हैं ।
फतेराम सार्दूल सु लछमन धीर हैं ॥
स्यामसिंह ब्रजसिंह सुरज्जुवागंग है ।
प्रोहित प्रबल अभंग घमंडी जंग है ॥
देबीसिंह उदंड अखैसिंह बीर हैं ।
ए सुजान के संग धए धरि धीर हैं ॥ ६ ॥

---

* पाठांतर—महावीर रनधीर ।

† पाठांतर—जेग को ।

‡ पाठांतर—नरदेव ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दोहा

पूरब पच्छिम उत्तरौं तीन्यो दिसि तैं धाइ।
घासहरे के दुग्ग पै सूरज दीने पाइ ॥ ७ ॥
दुग्ग दछिन दिस तच्छनों हियैं धारि उत्साह।
जाहर सिंह जवाहरौ धायौ सज्जि सिपाह ॥ ॥ ८ ॥

छप्पय

पितु कौ आयसु मानि समौं पहचानि जुद्धहित।
बहु सुभट्ट संघट्ट लिएउ गब्बर गरट्ट तित ॥
जिते हुते मुरचानि तिनहिं निजु हुकुम पठाइय।
मैं आवतु तुम सथ्थ तथ्थ गढ़ करहु चढ़ाइय ॥
सुनि वेहू सब चौकस भए लए हथ्थ आयुध सबर।
इत सिंह जवाहर सिलह करि गहिय ढाल तलवार कर ॥९॥
जुहें अग्ग मुरचानि सैन सरदार रारि हित।
गौर सुसूरतिराम संग जादव जुझार मित ॥
दौलतराम सुभट्ट ठट्ट जब्बर सु भुजब्बर।
सदाराम रन सिंह प्रेम प्रथिसिंह नाम नर ॥
द्विज उदैभान स्यौसिंह अरु हरीसिंह कहि जोध जुत।
बलकासु राग साहिब सहित परसोतम श्रीराम सुत ॥१०॥
राजाराम सु नाम तीनि सत संत बीर धरि।
किसुनसिंह औधूत बहादुर हठीसिंह भरि ॥
साकर खाँ* जैसिंह मेदसिंह बिजैराम गनि।
चैनसिंह धनसिंह जंग ठाकुर सुदास मनि ॥
नर-राज सिंह रन रतनहू थानसिंह हठिसिंह बिय।
द्विज मोहन नैऋत कौन तैं दुग्ग ओर सनमुख भइय ॥११॥

---

* पाठांतर—साकर खाँ जैकृष्ण मेदसिंह बिजैराम मनि।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सिंहदलेल कुँवार मेद अरु सिंह भवानी।
सिंह खुस्याल गुमान मान नृप-तनय अमानी॥
बीरनराइन बीर रामबल सभाराम नर।
सदाराम श्रीराम अमरसिंहहु अजीत बर॥
मतवंत संत सुमहंतहूँ सिंह जवाहिर निकट हुव।
जैसे सुरेस-सुत जीव सँग वृत्ति हेत किय क्रुद्ध भुव॥१२॥

दोहा

सब तैं स्याम निसान लै सीदी जुट्यौ अगार।
पाइक कौ नाइक बली पर्यौ अंत ज्यौं भार॥१३॥

हरी छंद

दिसि बित्तपाल ओरैं। बहु सुर सुभट जोरैं॥
धायौ सुत्तान घौरैं। गढ़ की सफील तोरैं॥
इत तैं तनूज आयौ। रस बीर बीर छायौ॥
गढ़ दच्छिन दिस धायौ। रवि-पूत ज्यौं छुहायौ॥
लहि सैन संग चंडी। सकतोर औ भुसंडी॥
कोदंड बान तानै। बरछानि बाँधि बानै॥
खंजर कटार डोरी। खपुबानि मूठि जोरी॥
बिछुवा सुवाँक पट्टे। लट्टे उनुलेत कट्टे॥
फरसा दुधार भल्ले। बल्लम फिराइ चल्ले॥
तेगा असील रोही। सिप्पर किदो सिरोही॥
चिलतहनु अंग काछैं। सुर बार अंग राछैं॥
बहु टोप ओप भाछैं। कर देत मुच्छ आछैं॥
सजि सब्ब बीर बंके। चलि दुग्ग त्यौं निसंके॥
कछु भूमि मौन लीनी। फिर लेउ लेउ कीनी॥
गढ़ चारिहू दिसा कौं। खाई लई चलाकौं॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यों सुनत सब्ब बानी। गढ़ भूमि खलभलानी ॥
प्रेतादि पूत जग्गे। घर छोड़ि छोड़ि भग्गे ॥
सिव सिवा बैल साज्यौ। भैरव भयान गाज्यौ ॥
भयभीत भूरि बट्टी। तहँ मीचु डाढ़ कट्टी ॥
वेहद्द नद्द बड्ढ्यौ। सुनि राव कोह मड्ढ्यौ ॥
तवही तुरंग चड्ढ्यौ। निजु आलय तैं कड्ढ्यौ ॥
फिर चारिहू दिसा कौ। यह कहि फिर्‌यौ लराकौ ॥
अब देउ मार बीरौ। अरि आइ जुड़्यौ नीरौ ॥
सब हौ मरद्द भाई। रहिहै यहै बड़ाई ॥
लखि आप पास भाई। तिनसौं यही सुनाई ॥
अव लेउ दुग्ग द्वारे। सब आपु मोरचा रे ॥
यह सुनत राउ-बानी। सबही सुरारि ठानी ॥
दागी कराल तोपैं। किलकारि काल कोपैं ॥
जज्जाल जाल छंडी। टेरी उदंड दंडी ॥
हयनालहू धुँकारी। ज्यौं जोगिनी हँकारी ॥
फुक्की घनी भुसुंडी। रहकला धूम मंडी ॥
अररान गोल लग्गे। फरराान बान दग्गे ॥
कररान धनुष सुन्नी। मररान बीर दुन्नी ॥
धररान कूर लागे। तररान सूर आगे ॥
चररान बास उट्ठी। सररान तीर मुट्ठी ॥
भररान भीर भारी। ढररान ग्रीव सारी ॥
करिकै अनंद* हाँ हाँ। लीनी चढ़ाय बाँहाँ ॥
इत लेउ लेउ सद्दे। उत देउ देउ बद्दे ॥
अति घोर सोर उट्ठ्यौ। मनु सिंह सद्द रुट्ठ्यौ ॥

---

* पाठांतर—अनंत ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

घन धूम धाम माहीं । सुनवंत नाम नाहीं ॥
गढ़ चारिहु दिसा कौं । लखि जाट के हला कौं ॥
बड़गूजरहु कोह्यौ । पंचानन ज्यौं छोह्यौ ॥
गढ़ दच्छिन दिस आयौ । जहँ सूरज-सुत धायौ ॥
तानै यही सुनाई । छत्री कहाइ भाई ॥
अब हौ तुम्हीं सहाई । अरि आनि लगे खाई ॥१४॥

छंद भुजंगी

सुनें राउ बानी सबै सूर मानी । महा घोर घमसान की रार ठानी ॥
इतै बीर सीदी हमीदौ उठायौ । धरैं स्याम नीसान सौं सूर धायौ ॥
तवै गौर सूरतिहु राम पिल्यौ । लियैं तीन सौ सूर सौं दुग्ग भिल्यौ ॥
रुक्यौ गूजरौं मैं लिये बीर ताजा । तनैं दूदिया कौ महाबीर राजा ॥
जुट्यौ पग्गही अग्गही षग्ग लिन्ने । जगी ज्वाल के झल्ल से नैन किन्ने ॥
धयौ आपुने मोरचा तें छुहायौ । सजैं सूर दौलत्तिहुराम धायौ ॥
उदैराम पूता सदाराम उट्ठ्यौ । तहाँ सामुहैं ठाकुरौदास रुट्ठ्यौ ॥
बली बीर बल्फा प्रथीसिंह पैमा । धरैं धोर परसोतमौ बिप्र खैमा ॥
इतै उत्त तैं बीर दोऊ हँकारे । चढ़े कोटबेरा धरा पै निहारे ॥
उदंडी भुसंडीन के मेह पारे । धरा धावते आवते भुंजि डारे ॥
सही मारु धीरौं नहीं पाइ टारे । परे टूटिकै स्याम नीसानवारे ॥
लई धाइ खाई महाबीर सीदी । कही जाहु रे भागिकै वेगि गीदी ॥
लख्यौ राव ने स्याम नीसान खाई । सबै आपनी फौज कौं यौं सुनाई ॥
कहूँ दुग्ग मेरे इसे बीर होते । घने जट्ट के ठट्ट या भूमि सोते ॥
सुने राउ के सूर ऐराब वैना । कछू बीर कूदे भरे कोह नैना ॥
कछू कोट की ओट तैं चोट चल्ली । भुसंडी सुहंडीन की ज्वाल झल्ली ॥
इतै बीस के तीस सौ कूदि सीदी । उतै कोट कैं कूद कै चोट लीदी ॥
धमाधम्म में यौं झमाझम्म बीती । छमाछम्म समसेर की मारु कीती ॥
भभूकैं उड़ैं यौं झबूके फुलंगा । मनो अग्निबैताल नच्चैं खुलंगा ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जरैं ज्वाल की झाल कैं बीच जुट्टे। मनौं देव बारूद के ब्याह छुट्टे॥
तरैं नीर यौं ऊपरैं अग्गि छाई। तहाँ बीर सीदी लड़्यौ नाखि खाई॥
अधौं ऊध कीयो दुहूँ मार माहीं। गयौ जूझि सीदी टरयौ पाउ नाहीं॥
कर्‌यौ देखि सीदी हर्‌यौ लोग केतौ। लख्यौ सूर के पूत ने आप तेतौ॥
धयौ पग्गही अग्ग वा दुग्ग मग्गैं। लियौ हथ्थ खग्गैं हिये मैं उमग्गैं॥
चह्यौ आव तौ पुट्ठि पै आप स्वामी। तहाँ दौरि कै गौर ने सैन थामी॥
कह्यौ वा समै पास जे सूर तासौं। अरे भाजिकै जोरिहौ नैन कासौं॥
इती भाषिकै दुग्ग त्यौं बीर दौर्‌यौ। मृगाधीस ज्यौं मृग्ग कै जूह झौर्‌यौ॥
यही जानकै दूदिया-नंद कोह्यो। गहैं ढाल सम्सेर सौं सूर रोह्यो॥
दुहूँ आपने आपने गोल धक्के। तहाँ गोल गोली करैं बीर पक्के॥
परैं बान किरवान बरछानु धारा। लरैं माँस माटी अनूठौ अखारा॥
तजैं बीर हाँडी भरी ज्वाल-माला। मनौ होलिकाहो भर्षैं*भष्ष आला॥
झरैं काँगुरैं काँगुरैं फुलझरी सी। मनौं दीपमाला परै यौं ढरी सी॥
कहूँ बान कूकैं उठैं यौं भभूकैं। किधौं आग बरसाइकै प्रेत धूकैं॥
छुटैं घोर हुक्का करैं मारु भारी। धुवाँ मेघ तैं ज्यौं परैं बिज्जुरारी॥
इसी मारुहु मैं धँसे फाँदि खाई। दुहूँ बीर बकसीनु की बीरताई॥
गहैं काँगुरैं दुग्ग पै चट्टि चालैं। बली गौर सथ्थी सुपीथामहालैं॥
बिना प्रान हूँ कैं परे खेत माहीं। जुटे जाइ जारौ निसंके तहाँहीं॥
चढ्यो बीर राजा करै जोर रल्ला। फँद्यो धाइ खाई कर्‌यौ लेउ हल्ला॥
तरैं काँगुरौं कैं जुटे सेनपत्ती। जहाँ सारधारा की ज्वाला झरत्ती॥
इतै सेल साँगैं बरच्छा बरच्छी। किहूँ बान किरबान कम्मान अच्छी॥
उतै चंड कोदंड उद्दंड छुंडे। घनैं खंड झाटेनु की मारु मंडै॥
सिला ढीम ढाहैं इलाबीर बाहैं। धडाधड्ड सद्दैं भडाभड्ड ह्लाँहै॥
जडाजड्ड बीतो गडाबड्ड ऐसी। ढडाढड्ड लंका करी राम जैसी॥
सनासन झनाझन छुनाछन्न सुन्नी। भनाभन फनाफन ठनाठन्न दुन्नी॥

* पाठांतर—भरैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

महा घोर घमसान सम्सान फैल्यो । तहाँ सार असरार ज्वाला कि मैल्यो ॥
किती छूटि हंडीनु की देह भंडी । किती बान की ज्वाल ते जारि खंडी ॥
किते तीर की पीर सौं धीर धुक्के । किते पोटरी बारि बारूद फुक्के ॥
किते ज्वाल हुक्केन सौं मारि मुक्के । तऊ बीर कुक्के न चुक्के न लुक्के ॥
कहूँ भाल भाठेनु सौं लागि फाटे । कहूँ मारि लाठेन सौं भूमि पाटे ॥
जरे कै मरे यौं परे सूर सोहैं । कटे मुंडहू की डटी बंक भौंहैं ॥
घरी तीनि की राव यौं रारि ठानी । घरी एक ही रैनि में हार जानी ॥
तहीं सिंह सूजा तनै आइ खाई । सबै आपने सूर कौं दै दिखाई ॥
लखैं बीर कौं बीर दूने रबक्कैं । रए दुग्ग पै पाउ सब्बै बबक्कैं ॥
भए काँगुरौ तेग तेगौं तमक्के । लखैं राउहू दुग्ग दूजैं चमक्के ॥
जबै कोट पै सिंह कौ सिंह आयौ । तबै राउहू दूसरे दुग्ग धायौ ॥१५॥

छंद नीसानी

हथ्थौं सिंह जवाहरै लड़ि राउ हटाया ।
उथ्थौं सिंह भरथ्थ ने देवीसिंह ढाया ॥
मज्झौं मिलिया राव सैं मंसा रिस छाया ।
उसने भी बंदूक दै गढ़ राउ फस्याया ॥
पुव्व ओर गढ़ हुव्व सैं बहु बीर उछल्ले ।
तिस वेला सिंभू-तनै चढ़िया गढ़ हल्ले ॥
उस उप्पर * हथयार दे वैरी झरझल्ले ।
उसनूँ श्रीहरिदेवजी रक्खा निजु पल्ले ॥
हिक भट्टि सिर खाइकै गढ़ उप्पर चढ्ढे ।
तिस कढ्ढा लखि खग्गनू नहिं वैरी वढ्ढे ॥
तिथ्थौं मीर पनाह भी बकसी रनबंका ।
हभ्भौं बीर हँकारिकैं गढ़ चढ़ा निसंका ॥

---

* पाठांतर—वेला

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उथ्थौं मारु घनी पड़ी सथ्थी मुख मोड़े।
हंडी हुक्के अग्गि दे गढ़वालौं छोड़े॥
तिस वेला उस मीर ने सब से यौं अख्या।
नहीं भटौंदा कम्म जो पग पीछें रख्या॥
खाइ धनी दे नोन नू एक ही नहिं किज्जै।
कित्ति बधे इस लोक मैं पग अग्गौं दिज्जै*॥
होरु जुद्धाली बंधनू फिर कोई बुज्झै।
बिन साँई दे हुकम सैं कोई रन जुज्झै॥
यौं कहि बीर उछल्लिया गहि सिप्पर कत्ती।
दिया पग्ग गढ़ उप्परां जहँ झार झरत्ती॥
इसी गल्ल सुनि मीर दी औरौ भट पिल्ले।
सेल साँग समसेर ले पग दै गढ़ भिल्ले॥
मारु मारु मुख अक्खिया चोयाँ उन नक्खी।
किसू तौर तरवार † दी रक्खी भी चक्खी॥
दुग्ग चढंते मीर नूँ गोली धड़ फोड़ा।
तौ भी सैयद वंकड़े नाहीं मुख मोड़ा॥
तिस वेला उस मीर ने एही गल अक्खी।
असी कम्म तौ कढ़ि गया दिल की दिल रक्खी॥
है कोई ऐसा साहिबौं मेरा दिल रक्खै।
तनक सहारा हथ्थ दै गढ़ भीतर नक्खै॥
भाई बंदे भानजे सुनि सैयद गल्लाँ।
हम्भौं पास सुनाइयौं गढ़ हम ले चल्लाँ॥
तहाँ लोह करि वे बली गढ़ लोक धरक्खा।
सैयदजादा मीर लै गढ़ ऊपर रक्खा॥

---

* पाठांतर—एदुहि किज्जै

† पाठांतर—किसतूरी तरवार दी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हेक बिरादर हौर भी तिस बेला झड़ियाँ।
दोय बीर तिस नालही घायल हो पड़ियाँ॥
अप्प अप्प दै मोरचौं तजि बीर हकाले।
हम्भौं मारु घनी करी गढ़ करि करि आले॥
कित्ते पट्टे कट्टिए नट्टे गढ़वाले।
चढ़े दुग्गभद्द सूरदे नहत मतवाले॥
श्रीसुजानदे गोल* नूँ गढ़ ऊपर जाना।
हुई खुसी उस मीर नूँ दिल तेह सिराना॥
तेह गएँ उह मीर ने दिल व्याकुल जाना।
कहा आपने सथ्थियौं मरना पहचाना॥
सूरज मेरा साइयाँ तिससे यह अरजी।
करि सलाम मुझ ओर सैं कहनी लै मरजी॥
मीर तसद्दुक हो गया पहला गढ़ पाया।
फिदवी के दिल में रही नहिं वैरी ढाया॥
तू साहिब ने सो रचा दिन ओज सवाया।
बचै न दुसमन एक भी तुस्सैं करि दाया॥
यौं सुनाइ सथ्थीनु सैं वह रुखसद हूवा।
मीर स्वामि के काम पै घासहरैं मूवा॥
फते हुवा गढ़ बाहला बहु लोक† बिलुन्ना।
कोलाहल पुर‡ में पड़ा हाहा सुर सुन्ना॥
जिसने लोह सम्हारिया जट्टौं ते कट्टे।
हट्टे बट्टे पाड़िए घर घर दहवट्ट॥

---

* पाठान्तर—लोग

† पाठान्तर—गढ लोग

‡ पाठान्तर—गढ़

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कोट काँगुरो पुर गलो मरहट्ट लखाया।
कहीं मुंड कहिं रुंड है कहिं फट्टी काया॥
कहीं भभूके अग्गि दै धूवाँ घुमड़ाया।
कहिं निगर कुड़िए कहीं कहिं भाया जाया॥
कहिं मामू कहिं भानजा कहिं ससुरा साला।
कहीं माइ कहिं पुत्त है बहुवा बिनु बाला॥
जिसनूँ सूरज चंद दी उप्पम कवि टोही।
तिसनूँ लाज जिहाज दी कुलकानि अमोही॥
हब्भौं खड़े पुकारदे सूरज दी दोही।
हुए रैयत हैं रावली करुणाचित जोही॥
वह मतिमंदा राव था कर्मां दा मारा।
सूरजराज कुँवार सैं जिन दोष बिचारा॥
असी हाल एहा हुवा रख्यो निजु साया।
जेहा जिसनूँ लोड़ियै तेहा फल पाया॥ १६॥

छंद सुंदरी

यौं पुर लोग पुकारत आरत बार फिकारत ठौर ठए।
छोड़ि तिन्हैं व्रजबीर बली अति उद्धत धामनु धाइ गए॥
जीवत जानत राव बहादुर जासु लियें भट भूरि हए।
छंडत चंड भुसंडिनु ठंड सुमंडित मोरचा फेरि गए॥ १७॥

इंद्रवज्र छंद

पैठ्यौ किले में तब *राव रास्यौ। मानौ कटी पूँछ फन्नी बिसास्यौ॥
दीनौ मलीनौ लखि कोट टूट्यौ। भाई सहाई सुनि प्रान बूट्यौ॥
फूट्यौ कि लूट्यौ निजु नग्र चाह्यौ। बेटा कि भाई बिनु चित्त दाह्यौ॥
स्वासा लई आस तजी जिया की। नाहीं प्रिया की न किसू भिया की॥

---

* पाठांतर–रत

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सम्हारिकै फेरि उठ्यौ छुहानो। मानौ रुठ्यौ प्रेत महाभयानौ॥
बोल्यौ अरे बीरन हारि मानौ। छत्रीन कौ धर्म गहौ पुरानौ॥
मरना हमैं बीस बिस्से बिचारौ। हैगी नफा शत्रु जु मारि डारौ॥
यौं भाषिकै कोट फिर्‌यौ अमानौ। दूजे गढ़ै राउ घमसान ठान्यौ॥१८॥

छंद हीरक

छुट्टत इत तोप टुट्टत पहहार से।
बुट्टत अधउद्ध धूम घुट्टत अँधियार से॥
कुट्टत महि गोल गोल फुट्टत ह्वै छार से।
लुट्टत कहुँ हुट्टत नहिं मीचु के अहार से॥
धुंकत जज्जाल जाल हुंकत भौंचाल से।
फुंकत बंदूक व्याल फुंकते कराल से॥
कुक्कत बहु कुहक बान मुक्कत दुहुँ ओर हैं।
भुक्कत गहि ओट कहूँ लुक्कत बिनु सोर हैं॥
झरत झार परत सार लरत कोट ओर हैं।
अरत इक्क परत इक्क ढरत लोट पोट हैं॥
धद्धद्धरभभ्भभ्भर झभ्भझभ्भझर बैरही।
कक्ककर पप्पप्पर तत्तत्तर ह्वै रही॥१९॥

छंद मरहठा

पुर कोटहु टुट्टिय बहु भट कुट्टिय पुर लुट्टिय बेहाल।
सुत भ्रातहु कट्टिय भुव तैं हट्टिय घट्टिय तोप जँजाल॥
जल अन्नहु बित्तिय दारू रित्तिय कित्तिय रन दिन तीनि।
घाइन अघवाइय औन बहाइय राउ समर अति पीनि॥२०॥
तब भाई वंदन बिकल बिलंदन समुझायो बहु राव।
पुर देस लुटायौ लोग कटायौ तऊ न आई आव॥
पहलै गढ़ घेर्‌यौ अब अरि नेर्‌यौ तासौं नहीं बचाव।
तबहीं नहिं मानी भई सुजानी करियै साम उपाव॥२१॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कछु है कुल बाकी पुर परजा की जीवनता की एहु।
मिलिबौ अभिलाषौ नरमी भाषौ राषौ रहनौ गेहु॥
जौ जीवत रहिहौ फिर बल गहिहौ लहिहौ बैरु सतेहु।
अब रारि थँभाओ लाजहिं चाहौ जाहो फेरि न छेहु॥२२॥

छंद उल्लाला

यौं सुनत राउ सब के बचन अपनौ चित निहचैं कर्यौ।
मिलनौ न मोहि मरनौ सही तबहिं बक्र बिधि उच्चर्यौ॥२३॥

छंद दोधक

हौ सब सूर सहायक मेरे। जुद्ध करे तुमने बहुतेरे॥
हौ तुम जान अजान न कोई। लाज रहै करियै अब सोई॥
पै इतनौ मत मो सुनि लीजै। दीन भयैं अरि सौं बहु जीजै॥
सूरज सौं मिलबौ मत दीजै। जौ यह जानत तौ भल कीजै॥
भूमि यहै तुमकौं फिर दैहै। औरन संग तुमैं भर लैहै॥
तोप जँजाल तुरंगम वाकी। ते हमपै रहिहैं तुम ताकी॥
और यहू तुमरे मन भावै। बैरिनु सौं मिलि जीवतु आवै॥
जो कबहूँ हम जीवत छोड़ा। तौ करिहै अपनौ करि ओड़ा॥२४॥

दोहा

साहब नौबत मैं भयौ पायौ राव खिताब।
बारगीर पदवी हु कौ तुम सब करत उपाव॥२५॥
सौ जुग रहि बैकुंठ में भोग पलक सम जाइ॥
निमिष एक नर्कहिं लहै कोटिन कल्प बिताइ॥२६॥
रिपु-प्रताप कानन सुनें राजसीनु दुख होइ॥
नैनन लखियै दीन ह्वै या सम नर्क न कोइ॥२७॥
और कहत परजा बचै पतिनी तनय सभ्रात॥
बिना आरबल भोग ए तजै न काऊ गात॥२८॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गीता हू में यों कह्यौ बेद पुरानन टोहि ।
अनहोनी होनी नहीं होनी होइ सु होहि ॥२९॥
आब राखिहै मर्म छत आब अन्न प्रिय देइ ।
बिजै और नहिं होइ रन भजै न दीनति लेइ ॥३०॥
जे मानत जुग जुग जियैं तिनकौं सब सौं हेत ।
ते जानत मृतु* सक्ति है तिनकौं प्यारौ खेत ॥३१॥

छंद दुपई

अब जो मिलाप सो होनहार है सो मैं तुम सौं भाखी† ।
अरु करौ सबै मिलि आपु सिताबी जो मसलति करि राखी ॥
जल बूड़त नाव राखिहै सोई जोई करिया पूरौ ।
सब करौ सलाह देव जो माँगै मैं कहु तुमतैं दूरौ ॥
यह सुनत राउ के बचन सबन मिलि चलत अराबौ राख्यौ ॥
चढ़ि दुग्ग कुँवर सौं मिलन आइहै चहूँ ओर यौं भाख्यौ ॥
अरु देउ पठाइ बेग रथ बहलैं कढ़ै कबीला जैसौ ।
सब लोग बाग कौं लेउ काढ़िकै सहित लाज जिय ऐसौ ॥
बहु ए पुकार सुनि श्रीसुजान कहि यहू बात हम मानी ।
अब ह्वैहैं कहा गरीबनु मारैं निकसौ करैं अमानी ॥
तब परे लोग खरराइ दुग्ग तैं सूरज की सुनि बानी ।
ज्यौं जीरन जार तोरिकै भाजै मीन देखि ढिग पानी ॥
सब सस्त्र बस्त्र सौं जत्र तत्र ह्वै परे कूदि भयभीते ।
मुख देत दुहाई श्रीसुजान की बिकल भए मुख पीते ॥
ते लिए राखि बदनेसनंद ने गढ़ खाली करि डार्‌यौ ।
सब रहे पाँच सै मनुज राउ सँग सूने डंडा चार्‌यौ ॥ ३२ ॥

---

* पाठांतर—नित्य ।
† पाठांतर—अभिलाषी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छंद विजोहा

देखि या हाल कौं दुग्ग के चाल कौं। राउ बोल्यौ जबै पास देखे सबै ॥
ढील क्यों है करी भाजिबे की घरी। प्रान राखौ अरे होहु मोतें परे ॥
खान पानौ दियौ मान* मानौ कियो। राखि या आस कौं जंग के पास कौं॥
आज सोही घरी भाजिबे की करी। सिंह देवी नहीं पूत जीता कहीं ॥
और चौहानहूँ जालिमाहू कहूँ। रामचँद सै बली जंग जासौं भली ॥
भोज सेनापती जुद्ध का जो मती। मात भ्राता अबै प्रान दीने सबै ॥
आज वे जौ नहीं बात तौ मैं कही। यौं प्रलापै कियौ फेर थंभ्यौ हियौ ॥
नैन रत्ते करे हथ्थ मुच्छौं धरे। ओठ ओठौं पिसे दंत दंतौं घिसे ॥
राउ देख्यौ इसौ सिंह धायौ जिसौ। इक्क मीयाँ तहीं बोलि उट्ठ्यौ जहीं ॥
राउजी क्यों थको वक्त नाहीं तको। कै सुजानै मिलौ जंग कौं कै गिलौ ॥
तैं बुलाया हमैं संग लीजै दमैं। देर कीजै नहीं सथ्थ हैं सब्बही ॥३३॥

छंद चौबोला

ऐसे बैन सुनत बड़गूजर उठ्यौ ढाल तलवार लियैं ॥
गयौ तुरत ही भौन भीतरैं जंगरंग की राखि हियैं ॥
क्रुद्ध दीठि सौं राउ गयौ घर लखि काइर मुख सूकि गए ॥
तजे तुरंत† अंग के आयुध टलाटली के बौन लए ॥
राउ चढ़ौ प्रासाद सैनिकैं किये परंभन प्रानपिया ॥
मृदु मुसिकाइ मँगाइ वारुनी पान परस्पर दिया लिया ॥३४॥

छंद घनाच्छरी

बैठे एक आसन सुबासन के बासन से
भूषन उजासनु प्रकास बहु कीनौ है ।

---

* पठांतर—पाम
† पाठांतर—तजि हथियार

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सरस बिलोकि फेरि करके परस भए
दरसि दरसि दोऊ रति मति कीनौ है।
भुजन उसारि लीनी उर सौं लगाइ प्यारो
अरस परस अधरामृत कौं लीनो है।
दोऊ जलजात मुख मानो मनजात जान
इंदु अरविंदु कौ मिलाप कर दीनौ है ॥ ३५ ॥

कवित्त

सैंन के सदन दोऊ राजत मदन भरे
बदन-बिलोकि कै ललकि लपटाने हैं।
उर सौं उरज मिले अधरसुधरु चारु
चूमत कपोल लोल लोचन लजाने हैं।
हार उरझाने मुरझाने हैं कुसुम भार
अंग मदसूदन तऊ न अरसाने हैं।
बैन तुतराने सतराने भौंह ताने रस
साने मुसिकाने ललचाने रतिमाने हैं ॥ ३६ ॥

जौलौं रह्यौ अंग मैं अनंग तौलौं संग कीनो
रति-रंग भीनो उठ्यौ जंग मनु कीनो है।
चुहटीं चिबुक चाँपि चूँ बिलोल लोइन कौं
रस मैं बिरस कह्यौ बवन मलीनो है।
मिलन हमारौ फिर ह्वैहै परलोक प्यारी
मन तैं न न्यारी प्रेम-पंथ पग दीनो है।
गहि भरि लीनौ कछू ऊतर न बाल दीनौ
हाल से हवाल राउ अंक भरि लीनौ है ॥ ३७ ॥

सोरठा

फेरि राउ धरि धीर कह्यौ बैन बर बाम सौं।
प्यारी होत अधीर शत्रु मारि फिरि आइहौं ॥३८॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छंद मुक्तादाम

कह्यौ रति-मंदिर तैं वह राउ। चढ्यौ रन रंग दियो मुख ताउ ॥
चल्यौ फिर नारि विवाहित गेह। हुती दुहिता रु वधू जिहि नेह ॥
मिल्यौ इक सेवक मद्धि अवास। सुपुच्छिय ताहि बिलोकि उदास ॥
अरे इत आइय क्यौं तुव धाइ। कही उन शत्रु चढ़े गढ़ आइ ॥
इती सुनि राउ कही रनधीर। धसौ रनवास लहौ मति पीर ॥
रहै मम लाज करौ वह काज। सवै मम गेह सँघारहु आज ॥
कहे जब राउ सुने इमि वैन। भले कहि कैं जु चल्यो भरि नैन ॥
बिलोकिय भौन पतिव्रत नारि। बधू दुहिता सँग राजकुँवार ॥
कियौ उन जौहरु बीर भुलाइ। तिहूँ तिय के दिय सीस उड़ाइ ॥
फिर्यौ वह वीर गहैं कर खग्ग। खड़ो जहँ राउ भयौ तिहिं अग्ग ॥
कह्यौ महराज कर्यौ वह काज। कहा करौ ढील चढ़ौ अब बाज* ॥
यही सुनि राउ कही हय लाउ। कहा अब ढोल निसान बजाउ ॥
हुते हय तथ्थ तयार समथ्थ। चढ़्यौ बड़गूजर दै सिर हथ्थ ॥
लख्यौ दृग फारि सुभट्टनु ओर। रहे सत डेढ़ चढ्यौ जब घोर ॥३९॥

छंद छप्पय

चढ़्यौ जंग कौं राउ रंग मनु उदित दिवाकर।
करिय दुग्ग परनाम फेरि कीरति तनया घर ॥
कटि कृपान कम्मान बान आयुध कर लिन्निय।
धरि मुच्छन पर हथ्थ तथ्थ डंका करि दिन्निय ॥
सुनिकैं निसान खलभल परिय लेहु लेहु चहुँ ओर भुअ।
गढ़ पै जवान ब्रजभान के आसमान मघवान हुअ ॥ ४० ॥
प्रथम चंड करि चंड बहुरि परचंड पवन चलि।
अंधधुंध भुवषंड उमड़ि घन धूम धूरि हलि ॥

---

* पाठांतर—आज

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तड़तड़ान तड़िता रु गज्ज मंडिय उदंड अति ।
अद्ध उद्ध बेहद्द नद्द हुव प्रबल सिंधुगति ॥
झरझंरिय बारि भरि भरि झटकि करि सिलाह दुग्गहिं मढ़िय ।
सुरराज उद्ध ब्रजराज अग जबहिं राउ रन कौं कढ़िय* ॥४२॥

छंद कंद

कढ्यौ दुग्ग तैं राउ दै घोर नीसान ।
घरी तीन असमान में ज्यौं रह्यौ भान ॥
जु हे डेढ़ सै में रहे एक सौ ज्वान ।
चढ़े राउ के संग आसा तजै प्रान ॥
किलै पुब्ब द्वारैं पिल्यौ आइयौ बीर ।
तहाँ सूर के सूर की ही भरी भीर ॥
तहाँ राउहू जंग कौं आन औसान ।
लए हाथ टंकारि कम्मान औ बान ॥
चल्यौ मंद ही मंद बैरीनु के फंद ।
मनौं क्वार के बादरौं में धँस्यो चंद ॥
चल्यौ गाहतौ चाहतौ जूह के जूह ।
मनो पथ्थ के पूत पैठ्यौ चक्राब्यूह ॥
किधौं नीर गंभीर कौं चीरतौ ग्राहु ।
सुराधीस की सैन मैं ज्यौं धँसै राहु ॥
चहूँ ओर तें आयुधौं के छुए जाल ।
परैं तीर बंदूक जज्जाल की झाल ॥
तरैं तेग तेगा घलामेल ह्वै सेल ।
बरच्छी बरच्छान की है महारेल ॥
अनी सौं अनी यौं धनी सौं छुनी देह ।
परैं तीर गोली अटा तैं घटा मेह ॥

* पाठान्तर—चढ़िय

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सितारे निसानाथ के साथ तैं छूटि।
परैं राव के सूर यौं जंग मैं टूटि॥
चल्यौ आपने भौन तैं तीर के मान।
तहाँ मोरचा रोपि सिंभू-तनै आन॥
पर्यौ डीठि ताकी चलाकी करी बीर।
दई राव के अंग बंदूक की पीर॥
गई फोरि गोली तऊ ना धुक्यौ धीर।
कर्यौ तथ्थ संधान कम्मान मैं तीर॥
इती मारुहू कौ लियो ओड़िकें सारु।
मिल्यौ बीच त्यौंही प्रथीसिंह पंमारु॥
जुरी डीठि सौं डीठि दोऊ तकैं घाउ।
प्रथीसिंह बोल्यो कहाँ जाइहै राउ॥
रहे बीस कै तीस सथ्थी तिहीं सथ्थ।
कटे कै हटे भू पटे दुग्ग के पथ्थ॥
चितै रावहू ने कियो बान कौ घाउ।
दियो बान पंमारहू ने बच्यो राउ॥
गजै घोर आकास भू पै बजै सारु।
परै मेह दोऊ छयौ जोरु अंध्यारु॥
टुटे कंध कंधा लुटैं के बुटे जात।
फुटे सीस के श्रौन धारान सौं न्हात॥
छुटैं बाज कै यौं खुटे हथ्थ हथ्यारु।
जुटेहू कुटे हू रटैं मारुही मारु॥
घनी भीर कौं चीर कैं सो कढ़्यौ धीर।
रहे राव के संग में पाँच ही बीर॥
फंद्यौ कोट खाई उठाई तहाँ बाग।
मनौं पौन प्राची लगै कढ्ढियौ नाग॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कहँ चारिहू ओर तें लेउ रे लेउ।
कहूँ देउ रे देउ रे देउ रे देउ॥
तबै चित्त चित्यौ सुबड़गूजरौ नाहु।
लई काढ़ि समसेर धायौ महाबाहु॥
जिते में बदल्ला सुहल्ला कस्यौ तथ्थ।
जहीं तेग तेगा कढ़े एक ही सथ्थ॥
झमाझम्म बीती धमाधम्म ता ठौर।
झरी फुलझरी सी मनौ बिज्जु की झौर॥
जुस्यौ देखि राबै बुटे तीनि ता बार।
रह्यौ राव के संग मैं एक असवार॥ ४२॥

छप्पय

तबै मेव यह कही बीर ठाढ़ौ रहि ठाढ़ौ।
अब नहिं जीवत जाइ लोह करिहौं रन गाढ़ौ॥
सुनत राव ह्वै क्रुद्ध जुद्ध मैं तेगहिं झारिय।
तहीं मेव गहि छेव तुरंगम तैं गहि डारिय॥
भू पारि परो ह्वै तीनि असि बड़गूजर के अंग पर।
लिय सीस काटि सथ्थी सहित राव-रुंड सोयौ समर॥४३॥

कवित्त

खेलना पनारौ पूना माँडौ गज नई ऊना
रनथंभौर जा सितारे हू कौ दुर की।
कालिंजर गोपाचल इंदौर महोबा कौन
काढ़ी नरवर बैंड़ अलवर उर की।
विंध्याचल निकट बकाई बड़गूजर की
घासैरैं बजाई गढ़पती राजु धर की।
अड़ राखी पेंड़ राखी मैंड़ रजपूती राखी
राउ रज राखि राह लीनी सुरपुर की॥ ४४॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भटनि समूह उद्भटन सरीरवारे
तीरवारे तरल तुरंगम सजाइकै ।
चंडकर कर से प्रचंड कर खग्ग धरि
अग्ग धरि पग्ग पल चरनि गजाइकै ।
डंका दै निसंका बीर बंका श्री जवाहिर सु-
जाहिर ह्वै धायौ पर-दलनु भजाइकै ।
भूजर उपारिकै कहूँ जरनि राखी तिनि
ऊजर कर्‍यौ है बड़गूजर बजाइकै ॥ ४५ ॥

छंद पद्धरी

बिन सीस पर्‍यौ वह राउ खेत । रन विजय शब्द सूरजहिं देत ॥
वज्जे सहदानै घोरि घोरि । बुल्लत फतूह सूरजहिं ओर ॥
पुनि श्री सुजान हूँ हरषि पाइ । भट भेटि जुद्ध श्रम दिय मिटाइ ॥
अरु सिंह जवाहर हू हरषि । निज सुभट भेटि मौजहि बिरषि॥
पुनि अमरसिंह भंभा सुनंद । निरख्यौ सुजान नै बुधि बिलंद ॥
घासहरैं थप्पिय सो अमान । बहु सुभट तासि सौंपिय सुजान॥
यौं सबै थान करि सावधान । पलट्यौ सुजान पुनि दै निसान ४६।

कवित्त

दलन गतैया दीह देसन दबैया उग्ग
दुग्गन-दरैया खल-खंडन रह सूक्यौ सौ ।
छिति के छितीसनु की छाती छनि छार भई
पेखत प्रताप तेरौ प्रबल भभूक्यौ सौ ।
सूदन सबल सिंह सूरज तिहारे धाक
धूमनु करत रहै दक्खिनी बिभूक्यौ सौ ।
सहित अमीर पीर धीर न धरत उर
चौंकि चौंकि चाहत चकत्ता चित चूक्यौ सौ ॥४७॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हरिगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं।
जानैं दिलीदल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइके।
वह राउ मारिय गढ़ बिदारिय अंक चौथो आइकै ॥४८॥

इति चतुर्थ अंक

इति श्री मन्महाराजाधिराज व्रजेंद्रनंदन श्री सुजानसिंह हेतवे
कवि सूदन विरचित सुजान-चरित्र घासहरो विजय
नाम षष्ठमो जंग समाप्तम् ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

षष्ठ जंग

छप्पय

धरि सत रज तम रूप स्रजति पालति संघारति ।
आरत लखि सुरराज बिपति असुरन कौं पारति ॥
धूम चंड अरु मुंड महिष रकता रज भंजति ।
सिंभु निसुंभु चबाइ चारु दस लोकन रंजति ॥
जाकी बिभूति परब्रह्म ह्व निरगुन तैं गुनमय बरनि ।
मुनि देव मनुज सूदन रटत जयति जययि शंकर-घरनि॥१॥

दोहा

गत पुरान सत बरष दस मधु रितु माधव मास ।
सूरज हित मनछूर कैं गह्यौ दिली पै गाँस ॥२॥

छप्पय

सप्त दीप कौ दीप दीप जंबू अति आगर ।
नव खंडनु बर खंड भर्थ नृप खंड उजागर ॥
तासु मद्धि मधिदेस वेस देसनु की मनि गनि ।
मथुरामंडल निकट पाँच पथ महि अनूप भनि ॥
हैं द्वीप खंड अरु देव बहु तन मैं ज्यौं तन सीस लहि ।
भाभोग नीति नर प्रीति जुत नागनगर सुर वेस कहि ॥३॥
तासु मद्धि परसिद्ध नागपुर संतन राजा ।
तनय तीन भए तासु भीष्म भुमि भारथ काजा ॥
तिहिं बिमात तें अनुज चित्रबपु बिय बिचित्र रज ।
जिहिं बालनु तें भए अंध पांडुव सुबिदुर अज ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सत एक एक सुत अंध कै पंडव कैं पाँचै भए।
वृषपूत भीम अर्जुन नकुल सहदेव देवनु दए ॥४॥

दोहा

पंडु मर्यो मुनि-श्राप तैं रहे पाँच हू पूत।
अंध नृपति तिन कौं दए पंच पथ्थ मजबूत ॥५॥
पानीपथ सुनिपथ दुऔ बागपथ्थ तिलपथ्थ।
इंद्रपथ्थ पुर थप्पियौ पंडु पूत समरथ्थ ॥६॥
देवलोक ज्यौं गगन मैं बलिपुर ज्यौं पाताल।
इंद्रप्रस्थ त्यौं भूमि पै रच्यौ धर्म नरपाल ॥७॥
स्वारथ कौं भारथ रच्यो पारथ कृष्ण सहाइ।
अंध-बंस निरबंस करि गए हिमालय धाइ ॥८॥
अर्जुनसुत अभिमन्यु की पतिनी गर्भ मँझार।
कृष्ण-कृपा तैं सो बच्यौ भयौ भूमि-भरतार ॥९॥
सो नृप तच्छुक ने डस्यौ श्रीशुक किया उधार।
जन्मेजय ताकौ तनय बैर बहोरन हार ॥१०॥
इंद्रपथ्थ यौं पंडुकुल भुगतीं बरष अनेक।
फिरि आई चौहान कैं बिलसी धरैं बिबेक ॥११॥

छंद पद्धरी

चहुँवान कर्यौ बहु बरष राज। प्रथिराज जुद्ध कीने दराज ॥
लिय सात बार गोरी सुबंध। पुनि भयौ भूप तिय-नेह अंध ॥
बारह सै संबत अंत आइ। लीनी सहाब दिल्ली दबाइ ॥
रन पकरि प्रथीराजै सहाब। गजनई दुग्ग लैगौ सिताब ॥
तहँ गयौ भट्ट बरदाइ चंद। नृप सहित साहि कीनौ निकंद ॥
तब तैं सु बढ्यौ तुरकान घोर। रोजानिबाज भुव भई गोर ॥
पुनि भयौ साहि अल्लावदीन। दिल्ली-भतार कर्तार कीन ॥
सत दोइ बरष भुगती पठान। पुनि भयौ चकत्ता साह आन ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तूरान भूमि तैं षग्ग जोर। तैमूर साहि आयौ कठोर ॥
ताकौ किरान पद भयौ साहि। मीराँ जु साहि ताकौ सराहि ॥
सुलतान मुहम्मद पुनि दिलीस। तिहिं अबूसैद बलवंड ईस ॥
हुव उमर सेख पुनि साहि चंड। बब्बर जु साहि ताकौ उदंड ॥
ताकौ जु हिमाऊँ साहि हूअ। तासौं पठान सौं भयौ जूह ॥
लीनी पठान दिल्ली छिड़ाइ। वह साहि हिमाऊँ गौ पलाई ॥
पुनि भए दिलीपति सो पठान। दो सेर सलेमहु साहि जान ॥१२॥

दोहा

प्रगट हिमाऊँ कैं भयौ अकबर साह उदंड।
तिन पठान मारे सबै राज कस्यौ अति चंड ॥१३॥

छंद पद्धरी

वह भयौ चकत्ता अति अमान। जिन जीनी बसुधा निज कवान ॥
ईरान और तूरान लीन। अरु* फिरंगान सरहद्द कीन ॥
हबसान और खुरसान जीति। तिलँगान आपनी करी नीति ॥
किलवाँक साहि की आन मान। इसफाँह बजे जाके निसान ॥
बुगदाद जीतियौ बदकसान। अरबान और ईरान जान ॥
किय रूम साम आसाम जेर। डास्यौ कुसावह्न कौं बखेर ॥
कसमीर जीति बहु† नीर देस। दिय कोह काफह्न में कलेस ॥
कहकह दिवाल दहदह प्रतापु। मरहट्ठ ठट्ठ लिय साहि आपु ॥
मारू मलार सोरठ दबाइ। दच्छिन दिसाहि जीत्यौ बजाइ ॥
अंग वंग तिरलंग दाहि। अरु द्रविड़ देश लीनौ उमाहि ॥
वह आठ काठ अरु घोर घाट। बंगाल गौड़ मगधीस डाट ॥
करनाटक और लीनी बराट। नद ब्रह्मपुत्र मास्यौ उचाट ॥
परबती भूप करि आप हत्थ। बरफान देस लीन्यो समत्थ ॥

* पाठांतर—पुनि।
† पाठांतर—सब।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चौदह हजार भुव कौ समान। किय आन चकत्ता निज भुजान ॥
यौं कर्यौ राज अकबर उदंड। पंचास और द्वै बरसु चंड ॥
पुनि जहाँगीर हुव तासु पूत। दिल्ली जु साह उद्धत अभूत ॥
बाईस बरस बसुधाहि भोग। पंचत्तु पाइ हुव भूमि जोग ॥
सुत साहि जहाँ ताकौ दिलीस। तिन कियौ राज बरसै बतीस ॥
पुनि भयौ साहि औरंग साहि। जिन तुरक रीति कीनी उमाहि ॥
पंचास बरस किय राज घोर। दिसि दच्छिन जाकी भई गोर ॥
पुनि भयौ बहादुर साह उद्ध। जिनि गहि कृपान किय बहुत जुद्ध ॥
किय पाँच बरस बसुधा सुभोग। लाहौर तख़ हुव भूमि जोग ॥
सुत भयौ मौजदी पातसाहि। एक बरस भूमि करि भोग ताहि ॥
पुनि भयौ साहि फरुक जु सेर। छह बरस राज कीनो सुबेर ॥
पुनि भयो रफीदरजाति साहि। किय मास तीन प्रभुता धराहि ॥
पुनि साहजहाँ पतिसाह जान। वह चार मास भुव भोगमान ॥
पुनि भयौ साहि महमंद साहि। तिहिं तीस बरस किय राज चाहि ॥
जब साहि महम्मद तजे प्रान। सुत साहि अहम्मद भौ जवान ॥ १४ ॥

दोहा

पातसाहि अहमंद कै भौ बजीर मनसूर।
पोता मलिक निजाम कौ बकसी भौ मगरूर ॥ १५ ॥
तूरानी बकसी भयौ ईरानी सुवजीर।
नाचाखी दोऊन मैं दिल्लीपति के तीर ॥ १६ ॥

छंद नीसानी

एक रोज पतसाह दी बकसी लै मरजी।
बिन वजीर दीवान मैं कीनी यह अरजी ॥
हजरत सफदर जंग मैं क्या अदब बजाया।
नाजर फिदवी साहि का दै दगा खिपाया ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हो वजीर हिंदुवान दा यह इसम बढ़ाया ।
नाहक उरझि पठान सैं भगना ठहराया ॥
दौ मलाइ दखनीन कौं सब मुलक लुटाया ।
साहिजिहानाबाद मैं जद सैं यह आया ॥
तद सैं हुकुम हजूर दा नहिं एक बजाया ।
पोता मलिक निजाम दा जब यौं बतराया ॥
सो सुनिकैं पतसाहि भी दिल मैं सब ल्याया ।
तिसी बखत मनसूर सैं यौं कहि भिजवाया ॥
जाना अपने मुलक कौं हजरत फुरमाया ।
जद यौं सुना वजीर ने दिल मैं खुनसाया ॥
तौ भी दिन दस बीस लौं दिल मैं नहिं लाया ।
फेरि साहि मनसूर कौं अहदी लगवाया ॥
साहिजिहानाबाद तैं तदही कढ़वाया ।
तूरानी मिलि साहि सैं यौं बैर बढ़ाया ॥
ईरानी मनसूर कौं पुर सैं कढ़वाया ।
बड़ा कुँवर अरु काइदा मनसूर गँवाया ॥
स्वासा लेत भुजंग ज्यौं उस रूप लखाया ।
करि आपुस के बैर नूँ कहि कौन सिराया ॥
जेहा खेलाखेल नूँ तेहा फल पाया ।
दिल्ली सैं बाहर हुवैं मनसूर रिसाया ॥
जुजबी फौज निहारि कैं पुर मैं मँडराया ।
अहंकार दिल मैं चढ़्या तद कौंन उपाया ॥
जे रफीक थे अपने तिन कौं बुलवाया ।
पूरब सैं निज फौज नूँ जलदी फुरमाया ॥
चाकर मेरा है वही जो आवै धाया ।
घासहरे कौ कुँवर भी फरचा करि आया ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

खबर पाइ मनसूर भी खुसियौं से छाया।
तिसी बख्त मनसूर ने फरमान लिखाया॥
रहमति दै कहि आफरीं इलकाब बधाया।
कुँवर बहादुर आवना करि मेरा साया॥
तूरानी गलबा दिया मुझकौं अकुलाया।
इसी बख्त के वास्तैं इखलास बधाया॥
चाहौ मैंड़ी जिंदगी तौ आवौ धाया।
यौं लिख सफदरजंग ने फरमान पठाया॥
घासहरैं था कुँवर जी रनरंग अठाया।
तिस कागज के बाँचतैं सूरज मुसिक्याया॥
अपना बिरद सँभारिया दिल और न लाया।
अच्छी साइत देखिकैं डंका लगवाया॥
सिंह जवाहर संग लै तदही चढ़ि धाया।
पंद्रह सहस सवार लै पैदल बहु भाया॥
आनि फरीदाबाद मैं डेरा करवाया॥
फेरि कूँच करि दूसरा रविजा तट आया।
तहँ फरजंद वजीर कैं मिलना ठहराया॥ १७॥

सोरठा

पुनि मिलि सिंह सुजान सफदरजंग वजीर सौं।
डेरा किए अमान खिदरबाग रविजा-तटहिं॥ १८॥

कलहंस छंद

दिन दूसरैं मनसूर सूरज पास कौं।
दरबार ह्वै असवार सो इखलास कौं॥
लखिकैं वजीर सुजान हू सनमान कौं।
बहु भाइ अदबु बजाइ दै बहु मान कौं॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ढिग देखि सफदरजंग सिह सुजान कौं।
सब पूछियौ बिरतंत आवन जान कौं॥
फिरि आपनो सुहवाल भाषि वजीर हू।
मुगलान जो कलकान की चहुँ वीर हू॥
भरि स्वास लेन उसास देखि अकास कौं।
बिसवास कै इक आस है तुब पास कौं॥
यह मैं मुकर्रर है किया तुम सें कही।
अब तौ दिली दहबट्ट करनी है सही॥
इस वास्तैं तुम कौं बुलाइय मैं बली।
करनी न देर सुजान मो दिल कौं भली॥
जब यौं कही मनसूर सूरज सौं सबै।
समुझाइयौ सुवजीर कौं बहुधा तबै॥
तुम हौ पनाह सनाह या हिंदुवान के।
नहिं आपु लाइक बात ए गुन आन के॥
गहि एक कैं सुबिगारि आलत देस कौं।
रहिहै यहै सुकलंक पेस हमेस कौं॥
अब तौ यही जु सलाह है मिलि साहि सौं।
करिकैं दिलीपति हाथ जंग जुताहि सौं॥
सुनियैं जु सफरदरजंग बैन सुजान के।
मुरझाइ आनन नैंन बैंन बयान के॥ १६॥

महालच्छिमी छंद

फेरि मनसूर बोल्यौ यही। सिंह सुजा कहा तैं कही॥
टेक तूरानियौं की रही। आब मेरी जिन्हौंने लही॥
साहि भो है उन्हौं का सही। होइगा क्यौं हमारा वही॥
आंस मैं एक तेरो गही। आंप उम्मेद मेरी दही॥
एक फर्जंद जल्लाल दीं। दौम बीबी उसैं पालदीं॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आपने संग लीजै इन्हैं। जिंदगी चाहिये है जिन्हैं ॥
गोद ए होइ तेरो वली। सीख दीजै मुझै जो भली ॥
जंग कैहौं दिलीसैं करौं। नेस नाबूद बैरी करौं ॥
नाहिं तौ सीस टोपी धरौं। हाल ही जाइ मक्कैं मरौं ॥२०॥

छंद मधुभार

मनसूर वैन सुन कै सचैन कहियौ सुजान करि सावधान
कहिहै नवाब करिहौं सिताब पुर-सहित साहि हनिहौं जुवाहि
अबकैं दिलीस रहिहै न ईस* मुगलात सब्ब तजिहैं गरब्ब
पुर इंद्र जोर करिहौं निजोर तुव सत्रु मारि बकसी बिगारि
यह पातसाहि रहिहै न चाहि मुद्दई जितेक तितने अनेक
सबतें मिटाइ पुर कौं लुटाइ लहि तौ प्रतापु करिहौं सु आपु
तजियै सुछोहु गहियै सुलोहु मत एक एहु धरि चित्त लेहु
चकते सवंस नहिं और अंस इकु पातसाहि करियै सुचाहि
तखतै चढाइ धरि छत्र ताहि तब दै निसान चढ़ियौ अमान ॥२१॥

दोहा

हम चाकर हैं तखत के सकती करी न जाइ।
यह उपाइ करिहौ अपुन तौ बलु सबै बसाइ ॥ २२ ॥
चार लाख बदनेस कैं हैदल पैदल त्यार।
ते नवाब के जानियौ हुकम-बजावनहार ॥ २३ ॥
अब दिन द्वै में रामदलु आयौ जानौ पास।
श्रीहरिदेव भली करैं क्यों तुम होत उदास ॥ २४ ॥

सोरठा

यह सुनिकैं मनसूर दोऊ कर ऊँचे करे।
फिर मुख आयौ नूर कह्यौ बहादुर आफरीं ॥ २५ ॥

---

* पाठांतर—हीस

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इस डाढ़ी की लाज कुँवर बहादुर है तुमैं।
है यह काज दराज होवैगा तुझ हाथ सैं ॥ २६ ॥
अब सवार तुम होउ जाइ माँदगी कटक की।
कालिह बजावैं लोहु साहि तख्त बैठारिकैं ॥२७॥
लख्यौ सुदीन वजीर सूरज सवै कवूल किय।
ह्वै सवार रनधीर दिल्ली के सनमुष भयौ ॥ २८ ॥

सवंगा छंद

सूरज सफदरजंग जवाहर संग लै।
दै दै दिब्ब निसान सैन बहु रंग लै ॥
प्रथम दिना पुरइंद्र दिखायौ साथ कौं।
ज्यौं किसान लहि सगुन करै कृषि हाथ कौं ॥२६॥

हरगीत छंद

भूपालपालक भूमिपति बदनेसनंद सुजान हैं।
जानै दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं ॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकैं।
मनसूर-सूरज-मिलन दिल्ली प्रथम अंक सुनाइकैं ॥३०॥

इति प्रथम अंक।

दोहा

फेरि आइ मनसूर ने कीनौ भेद उपाइ।
पोता काम जु बकस कौं लीनौ बेग मँगाइ* ॥१॥

छप्पय

ताहि तख्त बैठारि धारि सिर छत्र जटित जर।
चँवर मोरछल ढारि कियउ इतमाम आम घर ॥

---

* पाठांतर--लीनो गुपत बुलाइ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अरुन बरन नीसान तानियौ अरुन बितानहिं ।
सहदाने घन घोरि दियौ उमरावनु मानहिं ॥
उद्धत हयंद सुगयंद नर बहु सुभट्ट हाजिर प्रबल ।
सूरज सहाइ मनसूर नैं थप्यौ साहि अकबर अदल ॥२॥

छंद पाधकुलक

अकबर अद्ल साहि धरि आगैं । सफदरजंग जंग अनुरागैं ॥
अपनी चमू साजि गज चढ़्यौ । तूरानिन पै अति रिस बढ़्यौ ॥
इसमाइल राजेंद्र गुसाँईं । सफदरजंग भए अगवाँईं ॥
द्वादस सहस हयंद हँकारे । हे वजीर के संग तयारे ॥
तबही सूरजह्न ने डंका । सब तैं आइ चढ़्यौ रनबंका ॥
तातैं अग्ग जवाहर धायौ । सजिकैं सैन दिली समुहायौ ॥
पंद्रह सहस तुरंगन वारे । ब्रजबासी चढ़े रन रारे ॥
अनगिनती पाइक ललकारे । दिल्ली के लूटन पग धारे ॥
सफदरजंग जोरि दल एतौ । चढ़्यौ इंद्रपुर कौं भय देतौ ॥
जिते हयंद-गयंदन-वाले । ते सब रेती के पथ चाले ॥
पाइक लगी राह मन भाई । जो जाके सनमुख ही आई ॥
एक ओर तैं लूट मचाई । करत किसान खेत ज्यौं लाई ॥
पुर बाहर जे हे पुर छोटे । ते सब भए उही दिन बोटे ॥
किसनदास* सरवर दै पाछैं । बारह पुरा लूटियौ आछैं ॥
लियौ तोपखानौ करि हल्ला । अरवलराइ मचाई अल्ला ॥
इतनौ देखि वजीर सिहानौ । फिर डेरनु कौं कियौ पयानौ ॥३॥

मालती छंद

अहमदसाहि सुनै अकुलाहि रह्यौ दग चाहि कछू न बसाहि ।
सबै उमराइ लए सुबुलाइ॰ कह्यौ समुझाइ करौ सु उपाइ ।

* पाठांतर—किसनरास ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गजद्दियखान तबै ढिग आन करी जु सलाम भख्यौ जहँ आम ।
कह्यौ जु निहोर दुहूँ कर जोर हुवा मनसूर वजीर गरूर ।
जथा उस नाम किया वह काम हुवा बदराह जु खातरख्वाह ।
जिसैं फुरमाइ करौ सु बिदाइ वहै अब धाइ गहै उस जाइ ।
कहौ अब रास जु है मुझ पास सु हाजर हाल सु जानहु माल ॥४॥

दोहा

जान माल सैं साहि का फिदवी हाजर हाल ।
रजा होइ सुगुलाम कौं मनसूरा क्या माल ॥५॥

छंद कुंडलिया

अरजी बकसी की सुनत साहि अहम्मद साहि ।
पोता मलिक निजाम कौ कियौ वजीर सराहि * ॥
कियौ वजीर सराहि और यह मतौ उपायौ ।
समसामुद्दौलाहि मीर बकसी ठहरायौ ॥
ठहरायौ सब दैन तोपखानौ रन गरजी ।
सुनी अहम्मद साहि गाजदीखाँ की अरजी ॥६॥
तबही उन दोऊन कौं सरोपाव समसेर ।
सादलखाँ सु नजीमखाँ जान पठान रुहेल ॥
जान पठान रुहेल साहि तब यौं फुरमायौ ।
रेती के मैदान मोरचो तुम्हैं बतायौ ॥
तुम्हैं बतायौ सबै अराबौ लैकैं अबही ।
उस हरीफ कौं लेउ जंग कौं आवै तबही ॥ ७ ॥

छंद संखजारी

सुनै साहि बानी सबै मीर मानी करी सावधानी चमू साजि आनी ।
लयैं तोपखाने मनो देव दाने रुपे जाइ रेती हुतीं तोप जेती ।

---

* पाठांतर—बकसी कियो सराहिं ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

किती हाथ बाहैं सुकोऊ अठाहैं कछू बीस हथ्थी धरी एक सथ्थी।
सहस दोइ ऐसी भुजा मीचु कैसी किती अष्टधाती किती लोह-जाती।
कछू बाघ-मुक्खी किती मुक्ख रुक्खी धरी एक मोटी तहाँ दोइ छोटी।
करैयौं जजीरा बढ़े धीर धीरा सुतरनाल मंडी सुहथनाल चंडी।
तहाँ बानवारे हजारौ सँभारे कढ़ैं गोल गोला करैं तोल तोला।
भरैं एक दारू ररैं मारु मारू नकीबौं सुनाई चलौ अग्ग भाई।
यहै सद्द छायौ नहीं पारु पायौ सजे* बीर बानैं चढ़े लै निसानैं॥८॥

छंद तिलक

तव साद‌लखाँ सु नजीम जहाँ सु हरौल भए तन तेह छए।
अरु सैन पती इनकौ मदती पुठवार रह्यौ बहु जोर गह्यौ।
सु अमीर जिते सब संगति से बहु तोपन कौं अरि लोपन कौं।
धरि अग्ग धुके महि जात रुके बहु स्याम धुजा बहु रंग कुजा।
सित स्याम घनी बहु नील बनी इक जोजन लौं भुव छाइ दलौं।
सजि सैन चले सब बीर भले रिस बैन कहे रस बीर गहे।
मनसूर जहाँ गहि लेइँ तहाँ ॥ ६ ॥

दोहा

निकट अहम्मद साहि के रह्यौ गाजदीखान।
बकसी तैं जु वजीर भौ जुद्ध हेत बलवान॥ १० ॥

छंद लीलावती

सुनि सफदरजंग उमंग अंग धरि जंग हेत तदबीर करी।
राजेंद्र गुसाँइँ इसमाइलखाँ दुहुनि संग भटभीर भरी॥
बेकरि हरौल सनमुख्ख हँकारिय जितहिं अराबौ घोरि धर्यौ।
गहि जमुना-तीर बीर धरि धारैं हय हंकिय नहिं बिलम कर्यौ॥११॥

---

* पाठांतर—सरे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पुनि श्री सुजान अरु सिंह जवाहर करि सिलाह धरि आह बढ़े ।
लै मसलत अकबर अदल वजीरहिं सहर पुराने चाइ* चढ़े ॥
हैदल सब संग अग्ग धरि पैदल तिनहिं वीर यह हुकुम कियौ ।
अब लेउ ईंट करि देउ ईंट सौं दिली सहर हम तुमहिं दियौ ॥१२॥

छप्पय

जब सुजान नर कहिय तनय जाहर सु जवाहर ।
तब सुनि सब ब्रजबीर हरखि हुंकिय ज्यौं नाहर ॥
करिय हल्ल बहु मल्ल रल्ल पुर मद्धि मचाइय ।
कहत देव हरिदेव देव-पति की जु दुहाइय ॥
चहुँ ओर सोर अति घोर हुव तोरि फोरि भवननु भरिय ।
दिल्ली दरयाव बहु आव जुत सूरज-दल दलदल करिय ॥१३॥

छंद त्रिभंगी

करि करि ललकारे,गली गल्यारे,तोरि किवारे पुरवारे ।
गहि करनि पनारे लहि उपरारे उच्च अटारे पग धारे ॥
बज्जंत कुठारे लत्त लठारे पौरि दुआरे भुव पारे ।
तारिनु झनकारे कहूँ कुसारे तिष्ष छुरारे पटतारे ॥ १४ ॥
पटतारे तारे खुटे दुआरे फुटे तिबारे चौबारे ।
भज्जे घर-वारे ज्यौं पषवारे बहु हटबारे।भौभारे ॥
केते हथियारे सीस फिकारे डारि झगारे डर डारे ।
अटके लरिटारे भटके न्यारे होत अगारे हक्कारे ॥१५॥
हक्कारे पारे जाटौं मारे मुगल महारे मनहारे ।
आरे के आरे बारह द्वारे कछु न सम्हारे गहि डारे ॥
ऊँचे घर-वारे खड़े पुकारे हुवा कहा रे करतारे ।
रव हाहाकारे घोर महा रे बूढ़े बारे चिक्कारे ॥ १६ ॥

---

* पाठांतर—जाइ ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चिक्कारनु पारे धावत रारे आरे जारे ले जारे।
लै कै तरवारे देत धवारे दिल्लीवारे बेजारे ॥
गए हकाबकारे लगत धकारे ह्वै बिकरारे गहि नारे।
व्रजबासी प्यारे भरत सरारे साँझ सकारे असरारे ॥ १७ ॥

छंद ललितपद

रारे लेह लेह करि धाए गेह गेह चढ़ि साजे ॥
सूरज सुभट कटकि पुर कटकनु थँभे लाल दरवाजे ॥ १८ ॥

कवित्त

लाल दरवाजे पर सूरज सुभट गाजे
ताजे ताजे बीर हथ्थ आयुध दराजे हैं।
भाजे पुर लोगन कपाट दरवाजे दीने
ऊरध भुसंडिनु कैं उद्धत* अवाजे हैं।
कहूँ सर बाजे छुर बाजे लमछुर बाजे
बाजे बाजे भाठिनु सौं भोरे सिर साजे हैं।
जग के लराजे उभराजे लहि छाजे ओट
केते लोट पोट मिले आजे पर आजे हैं ॥ १९ ॥
पावत पराजे दरवाजे वारे भाजे देखि
केते लोट पोट कोट चोटन सुमार में।
टूटन किवार हाहाकार ता बजार परी
बार बार बिकल बिलंद भीर भार में।
आए आए कहत बगाए माल भौंहरेनु
जाएहू गँवाए नारि सहित अगार में।
माए कहूँ बाए बाल रटनि बुवाए ताए
लेहरी ददाए तो चचाए आए खार में ॥ २० ॥

---

* पाठांतर—उबत।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

खारीं खतरानी कतरानी सतरानी फिरैं
बाँभनी बिन्यानी तुरकानी थररानी हैं।
काइथी अरोरी थोरी बैसनि तमोरी गोरी
काछिनी किरानी औ भट्यानी भहरानी हैं।
हीरी बहु कीरी नर नीरी तीरी पीरी भई
सूरज के तेज-चंद-कला ज्यौं परानी हैं।
नूपुर वलय वलयानु रसनानु धुनि
मानहुँ प्रभात पंछी बानी मँड़रानी हैं॥ २१॥
डोलती डरानी खतरानी बतरानी बेबे
कुडिए न वेखी असी मी गुरुन पावाँहाँ।
किथ्थे जला पेउ कित्थे उज्जले भिड़ाउ असी
तुसी कोलग्रीवाँ असी जिंदगी वचावाँहाँ।
भट्ट ररा साहि हुवा चंदला वजीर वेखो
एहा हाल कीता वाह गुरू नूँ मनावाँहाँ।
जाँवाँ किथ्थे जाँवाँ अम्मा बाबे के ही पाँवाँ जली
एही गल्ल अखैं लखौ लख्यौं गली जाँवाँहाँ॥ २२॥
आव्या तमें आगल न ल्याव्या माटी कागलनै
डागला नड़ीटू कौ कठामरून लीध्यूँ छै।
डीकरी न छैया साथैं मोकल्या न मामी हाथैं
घरणू न आथे भूड़ा पौतियौं न दीध्यूँ छै।
हालरू हम्हारू बाट माहें जारे आवी जोयूँ
हहरू हमारूँ पूठी पेला माहँ वीध्यूँ छै।
चीधू छै न पाहै सीधू खावानै नहाहै हवै
सिव जी सहाहै जिनैं एवूँ हाल कीध्यूँ छै॥ २३॥
के कराँ सभागी भीसू भाई भाग्यौ टापरे से
आपुरे घटाऊ ए लुटाऊ घर घाले हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पापरी नवापरी मुगोरो भाँड घाली पड़ो
लोड़िये न के के लेके आएसासू लाले हैं।
काके पैर पाके मूनै आके लेन जाके भागे
तागे हू न छूटे फूटे ऐसे आनि ताले हैं।
केवे हुवा केवे लेवे देवे देवे देखि
वे वे ज्वाले माई अब तेरे हम बाले हैं॥ २४॥
कौठे रह्या ठाकराँ कि ठाकराँ पधास्या वीरा
चाकराँ न लारैं म्हें उभारै पग धाँवाँ छाँ।
जाया कास्या जाटराँ जनायो छै जुलम ऐंठैं
ऊठैं टेठैं म्होंवीतो सवाई रा कहाँवाँ छाँ।
जिसी भालि बाज़ी तिसी गली चली बाजी
म्होंनो टारडा न टारडी अवार कोठ्याँ पावाँ छाँ।
काकाजी कागला का अगार ओजौ बाईजी थे
ल्याँवाँछाँ जी ल्यावाँ कोई आँवाँछाँ जी आवाँ छाँ॥२५॥
महलसराइ सैरवाने बूआ बूबू करौ
मुझै अपसोस बड़ा बड़ी बीबी जानी का।
आलम में मालुम चकत्ता का घराना यारों
जिसका हवाल है तनैया जैसा तानी का।
खने खाने बीच सैं अमाने लोग जाने लगे
आफत ही जानो हुवा ओज दहकानी का।
रब की रजा है हमैं सहना बजा है वक्त
हिंदू का गजा है आया ओर तुरकानी का॥२६॥
बबुआ न आवा मोर भैयन न पावा याक़
तुपक की न लावा गाँठ डीवू आन घावा है।
चाकरी की लकरी की फकरी बिहानी कीन्ह
मनई न कनई दिहाँन याँ बतावा है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अस कस कीन्ह ख्वार दिल्ली का नवाब ख्वार
चीन्हत न सार मनसूर जट्ट ल्यावा है ।
तुहिकाँ न मुहिकाँ कपीं लुहिकाँ रही न जाग
भाग कुल और तोपखान बाघ ब्यावा है ॥२७॥
इंघें चालि इंघें ऊँघें ऊँघें के धस्यौ छै थारो
टालौ भी न चाल्यौ छै चरैया घनौ पाला कौ ।
बेटौ थाँभि बेटौ भौंड़ी लागिसै चपेटौ कएँ
कूणके लपेटो फेटो लाग्यौ घरघाला कौ ।
गाड़ी एक पाड़ी दोइ नाड़ी तीन पीजनोन
नागला तुलावाचारि मूने सोच जाला कौ ।
आला कौ रह्यौ सै आला जाला कौ न जाला चौंध्यौ
ताला न लाध्यौ सै भरोसौ कस्यौ माला कौ ॥२८॥
कैहाँ जैहौं कैहाँ जैहौं तैंहाँ तैं न पैहाँ आऔ
देखन न वैहौं क्यों ललाजू उभरानें हौ ।
अैयाँ बैयाँ गैयाँ लै लुगैयाँ लैयाँ पैयाँ चलौ
वारौ न अथैंयाँ कहूँ जात खुभरानै हौ ।
कैसी करी भैंयाँ मोड़ा मोड़ी न कन्हैयाँ घरे
खात हैं लुचैयाँ कभू पेट न भरानै हौ ।
चैयाँ चैयाँ गहौं चैयाँ नैंयाँ नैंयाँ पेल्रैं बोलो
बढ़ि दैया करी दैया हमैं काहे छुभरानै हौ ॥२९॥
बरनौं कहाँ लौं भुवलोक में जहाँ लौं भई
दिल्ली में तहाँ लौं बानी सूरज प्रताप ते ।
मुगल मलूकजादे सेख बेसलूक प्यादे
सैयद पठान अवसान भूले लापते ।
आया रोज क्यामत मलामत सैं पाक हुवे
रहैगा सलामत खुदाई आप आपते ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जार जार रोती क्यौं बजार मीरजादी यारौ
जिनका छिपाउ महताब आफताब ते ॥३०॥

छंद पद्धरी

यौं पर्यौ सोर दिल्ली अपार। पुरलोग पुकारत बार बार॥
अजबीर हँकारत डार डार। फटकार खग्ग सेलनु उसार॥
कलबल गलीनु खलभल बजार। छलबल सँभार भज्जत अगार॥
इक तज्जत आयुध छोर छोर। इक लज्जत आनन मार मोर॥
इक गज्जत दामन फोरि फोरि। पुरगली गल्यारे तोरि तोरि॥
भहरात फिरत नर खोरि खोरि। हाहा रटंत कर जोरि जोरि॥
इक कहत धिक्क अहमंद साहि। नहिं देखतु या पुर की दसाहि॥
जिहिं जियत इंद्रपुर यौं कुटंत। गज बाज ऊँट बृषभा लुटंत॥
महिषी महिष्य गो लच्छ लच्छ। पडरादि बच्छ लूटैं समच्छ॥
अज अजा भेड़ मेढ़ा कुरंग। खच्चर सु गोरखर खर दुरंग॥
बहु मोल स्वान पाले लवंग। बिल्ली बिलाव नहिं तजत अंग॥
चीते सुरोझ साबर दबंग। गैंडा गलीनु डोलत अभंग॥
अरु स्याहगोस बिश्रंग श्रंग। रिच्छादि खौरिहा छुटे अंग॥
लुटियौ सु बाज जुर्रा बिहंग। जिनको सिकार कौवा कुलंग॥
बहरी सु बेसरा कुही संग। जे गहत नीरचर बहुत खंग॥
बहु लगर झगर पुनि चगर तंग। जे हनत सुसा बुज्जर उतंग॥
बाँसा बटेर लव औ सिचान। धूती रु चिप्पका चटक भान॥
दहियर सुतुरमति बगुलहान। सुरखाब आब के जीव आन॥
जल मृगनि सहसरव कहनहार। तूती सूतीतरा बहु प्रकार॥
बहु रंग देस के कीर बेस। जो सुनत बैन बोलत हमेस॥
मैना मलूक कोइल कपोत। बगहंस और कलहंस गोत॥
सारस चकोर खंजन अछोर। तमबोर लाल बुलबुल सुमोर॥
चकई हरील पिद्दी अपार। खुमरी सु परेवा बहु प्रकार॥३१॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छंद रोला

तुपक तीर तरवार तमंचा तेगा तीछन ।
तोमर तबल तुफंग दाब लुट्टियौ तिहीं छन ॥
पट्टा पट्टी परस पासि बिछुवा बर बाँके ।
बल्लम बरछा बरछि धनुष लिय लूटि निसाँके ॥
बुगदा गुपती गुरज डाढ़ जमकील बतारी ।
सूल अंकुसा छुरी सुधारी तिष्ष कुठारी ॥
खिप्पर सिरी सनाह सहसमेखी दस्तानैं ।
झिलम टोप जंजीर जिरह लुट्टिय मस्तानैं ॥
पक्खर गक्खर लक्ख राग बागे रु निषंगा ।
आयुध और अनेक और चिलतह बहु अंगा ॥
पुनि बासन भर लुटिय देग देगचा रकाबा ।
चमचा चमची जाम तवा तंदूर गुलाबा ॥
चपनी लोटा चिलम-पोस सरपोस जमावा ।
हुक्का हुक्की कली सुराही अरु अफताबा ॥
तँबिया कलसा कुंडि ततहरा बटली बटला ।
दुकरा और परात डिबा पीतर के चकला ॥
बेला बेली लुटैं तमहड़ी लुटिया झारी ।
अमृतबान अमृती रु थार रकेबी बहु थारी ॥
प्याली गंगाजली टोकनी गंगासागर ।
कुंजा जंबू डबा और ताँबे की गागर ॥
छलनी चलनो डोहि और करछी बहु करछा ।
पौंना झाँझर तई बिलाई परछी परछा ॥
करवा कौंपर पानदान चौघरा तबेला ।
अरघा संपुट धूप आरती लेत सकेला ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अष्टा अरु आधार भर्ते के बहुत खिलौना।
परिया टमटी अतरदान रूपे कै सौना॥
पीलसोज फानूस कुपी तिखटी सुमसालैं।
सँड़सी सुवादराँत डँढ़ारे कुसा सम्हालैं॥
झाड़ दुसाखे झाम बसूला बरम हथौरा।
टाँकी नहनी घनी अरा आरी सुमथौरा॥
कुदरा खुरपा बेल गुलसफ़ा छुरा कतरनी।
नहनी सौंहन परी डरी बहु भरना भरनी॥
पीढ़ा पलँग मचान दुसेजा तखत सरौटी।
खरसल स्यंदन बहल बहुत गाड़ी सुनबौटी॥
डोला अरु चंडोल घने म्याने सुपालकी।
कंचन-रंजित सुभग टुटीं अरु लुटीं नालकी॥ ३२॥

छप्पय

दुंदुभि पटह मृदंग ढोलकी डफला टामक।
मँदरा तबल सुमेरु खंजरी तबला धामक॥
जलतरंग कानून अमृतगुंडली सुबीना।
सारंगी रु रबाब सितारा महुवरि कीना॥
सहनाइ भेरि तुरही दरक बंसी गोमुख बाँकिया।
अलगोय ताल कठताल तर झालरि झाँझ निसाँ किया॥३३॥

दोहा

मदनभेरि अरु घूँघरा घंटा घनैं मतीस।
मुहचंगी कौं आदि दै आवज लुटे छतीस॥ ३४॥

सोरठा

तंबू पाल कनात सापबान सिरआइचे।
रावटिहु बहु भाँति पुनि कुंदरा कलंदरा॥३५॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मसनद गद्दी उसीस सतरंजी जाजम जबर ।
परदा चँदनी ईस कालीचा दुलिचा घने ॥३६॥
सीतलपाटी टाट लोई कंबल ऊन के ।
बची न एकौ हाट खेस निवारहिं आदि दै ॥३७॥

छंद त्रिभंगी

रूमाल दुसाला पट्टू आला चूँनी जाला सोभ बनी ।
मखमल बन्नातें अरु सकलातें भाँतिनु भाँतैं छींट घनी ॥
बहु रंग पटंबर पसमी कंबर धवल सुअंबर* कौन गनै ।
जरदोज मुकेसी दाना केसी मसरू बेसी लेत बनैं ॥३८॥
बादला दरयाई नौरँग साई जरकस काई झिलमिल है ।
ताफता कलंदर बाफ़तबंदर मुसजर सुंदर गिलमिल है ॥
थीसकर बिलंदी दुरिघरंदी मानिकचंदी चौखानै ।
किमखाब सुसालू खादी खालू चोलैं चालू जग जानै ॥३९॥

छप्पय

नीमा जामा तिलक लबादा कुरती दगला ।
दुतही नीमास्तीन कादरी चोला झगला ॥
तंबा सूथन सरो जाँघिया तनियाँ धवला ।
पगरी चीरा ताजगोस बंदा सिर अगला ॥
दुपटा सु दुलाई चादरैं इकलाई कटिबंद बर ।
कंचुकी कुलहैया ओढ़नी अंग वस्त्र धोती अबर ॥४०॥

अरिल्ल

चोटी चुटिला सीसफूल बर । बैना बंदी बँदनी सु बर ॥
बेसर नथ्थ बुलाक सु लटकन । जाट जूह लागें सब झटकन ॥
पीयर पर्न भुलमुली तरिवन । बहुखलेल झूमिका सुभरमन ॥

---

* पाठांतर—सुकंबर ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कर्नफूल खुटिला अरु खुंभिय। लोलक सौनसीकहूँ चुंभिय ॥
गुलीबंद पचमनियाँ चौसर। तीनलरी पचलरी सतौसर ॥
चंपकली सु हुमेल हाँसवर। बीजनि बौरी उरवसीनु भर ॥
विद्रुम मुक्तमाल मनिमालहु। कंचन रजत रतन के जालहु ॥
रसना छुद्रघंटिका लिन्निय। बटुवा कुथरी जान न दिन्निय ॥
बाजूबंद बराकर छिन्निय। बँगुरी चूरा लेत न गिन्निय ॥
टाड पछेली छिन्न छिनाइय। चूरे चूरि चुरी चटकाइय ॥
कंकन गुजरी पहुँची अनगन। दुहरी तिहरी जटित रतनगन ॥
छल्ला घनी अँगूठी कंचन। आरसी रु जंजीर झमंकन ॥
पाइल औ पगपान सु नूपुर। चुटकी फूल अनौट सु भू पर ॥
तेहरि* झाँझन गुजरी टुट्टिय। बहु भूषन मैं एक न छुट्टिय ॥४१॥

छप्पय

कलगी तुर्रा और जग सिरपेच सु कुंडल।
मोती गुरदा और गोखरू रुद्राछ भल ॥
तोरा कंठी माल रतन चौकी बहु साँकर।
बेढ़ा पहुँची कटक सुमरनी छाप सुभाकर ॥
किंकिनी कौंधनी पैजनी हथ संकर झंकर खुटे।
आभरन नरन बहु भाँति के फुटे बुटे टूटे लुटे ॥४२॥

पावकुलक छंद

कस्तूरी केसर कसमीरी। हैं कपूरकचरी सुकरीरी ॥
कुटकी किटी कपूर कलाये। कडूकूठ कासिनी कबाये ॥
कैंछक चूरकटोर करंजा। किसमिस कैथ कुलींजन कजा ॥
काथ करौंजी कारी जीरी। काइफरो कुचिला कनकीरी ॥
कुकरौंदा करहरी कतीरा। कनक कटाई कारी जीरा ॥

* पाठांतर—जेहरि।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कुलथी कमलगटा सुकबेला। ककरासिंगी कंद सुकेला॥
कमलमूल किरवार कसेरू। काचनून कर मूल कनेरू॥
खिरनी बीजखरी खसजूरा। खार खोपरा बीज सुखीरा॥
खूबानी खसखस के दानैं। खंडखार खुंभी खस जानैं॥
गोरोचन गेरू गोगोली। गोंद गिलोइ गोखरू ओली॥
गंधक गुंजाफल गंगोला। गोपीचंदन लुभ्यौ अतोला॥
गुलगुलाल अरु गोरखमुंडी। घास घोमसा घाइल घुंडी॥
नौजा नरियर नेतरवाला। नीम निसौत निर्विसी नाला*॥
नीलाथोथा नील निर्मली। नागरमोथा नगद त्रिलमिली॥
चव चिराइता चित्रक चीता। चोक चोबचीनी चरलीता॥
चंदन चूक चिरौंजी चपरा। चोख चाँवरी चंद्रकलपरा॥
छारछबीलौ छिकनि छुहारी। जावित्री जंगाल जुरारी॥
जाइफलौ सु जवाइन जीरा। जंडीजरी जलाँजर तीरा॥
झकझोरी टकटोरी टोरी। ठौर ठौर डोरी गहि ढोरी॥
तेजपत्र तज तालमखानैं। तिबी तमाखू तुखमतरानैं॥
तुलसी बीज तुरंज तुरंजन। देवदारु दंती दुखभंजन॥
ठुड्ढीदल दाड़िम के बकला। दूब दालचीनी द्रगदकला॥
धना धमासा धूम सुधुंधी। धौर धौह की छाल धुरंधी॥
पित्तपापरा पाह पतंगी। पत्रजंपनी पीपर पंगी॥
पथरसगा पचरंग पमारौ। पाडर† फूल पापराखारौ॥
पोलपखान भेदपन पारा। परवरपाती पतर पचारा॥
फली फिटकरी फूल हु फैंना। बादामी ब्रह्मी व चबैना॥
बाइबिरंग बेल बालंगा। बीजबंद बालेसुर बंगा॥
बेरजरी सुबिलैया बूटी। बरू बहेर बाबची लूटी॥

---

* पाठांतर—आजा।

† पाठांतर—पाजर।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बासौं बंसलौचनौ बंदा। बेलगिरी सुबहेर बिलंदा॥
बिही ब्रह्मदंडी बिसवेरा। भारंगी भिंडी सुभँगेरा॥
भैंसा-गूगल भंग भिलाए। भोडरभाह सुभेंट्र भाए॥
मिरच मोचरस मैंदा लकरी। मुरदासन मनसिल मिस मकरी॥
मलयागिर महँदी मुहलैठी। मस्तंगी मुहमूँदी * मैंठी॥
मैनफरौ मुंडी मधुमोथा। मूढ़मूसली दोऊ चौथा॥
मौख मुनक्का मृत मुलतानी। मैंथी मालकाँगुनी सानी॥
मैद मैंडुकी मोध मिमाई। मदन मखाने मिसरी भाई॥
मोम महावर मूली-बीजा। अकरकरा अजमोद अलीजा॥
आलूचा अमिली अँबहलदी। आल आँवरा साल अफलदी॥
असगँद अगर आविली अंडी। अर्क अतीस आँवला ठंडी॥
इसबगोल इंदरजौ जानौ। इंद्रानी इलाइची आनौ॥
ऊँटकटेरा एलुआ एला। रेवतचीनी राई रेला॥
रूमी रतनजोति रसवंती। रारे रँगमाटी रुदवंती॥
लौंग लौंगचूरौ लगलाही। लोद लछमना लहसन काही॥
लाँफ लेखनी लोचनवाला। इसबँद सीतलचीनी आला॥
सौंठ सौंफ सालिम जु सुपारी। सौंध सनाइ सिलखरी सारी॥
सज्जी सौंचर सैंवर सोरा। साँखाहूली सीपसिकोरा॥
समुदफैंन साबुनौ सुपैदा। सिंगरफ सैंदुर सारसमैदा॥
सौनमक्खि संखिया सुहागा। सूलसम्हालू सबरस सागा॥
हरद हींग हरतार हरीतो। हरडा हाल्यौं हिरमिचहीती॥
हुलहुल हिल्ल हिमामहुदस्ता। फूलमूल कागद के दस्ता॥४३॥

दोहा

अमल अफीमहिं आदि दै चोवा अतर फुलेल।
सीसी चीनी मीन के मुहरदराबी रेल॥४४॥

---

* पाठांतर—मुह मूँठी।

१२

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छंद त्रोटक

लुटियौ लड्डुवा बहु भाँतिन के। नुकती अरु मादक पाँतिन के ॥
कलकंद सुमेंथिय मूँगदला। सिमई सतसूत मगद्द भला ॥
सुठि सेव सु औरिहु गौंदगिरी। खुरमा मठरी भरि ली गठरी ॥
गुपचुप्प गुना गुलपापरियाँ। खजला सु खजूरि खड़ापरियाँ ॥
अमृती रु जलेबिनु पुंज लुटे। खिरसादर भिस्ति चुटे सुफुटे ॥
गुझिया गुलकंद गुलाबकरी। तिरकौंनु सुहारिन मोट भरी ॥
बहु घेवर बाबर मालपुवा। अरु सेव कचौरिन लेत हुवा ॥
हलुवा हिसमी बहु फेनिनु की। कतरी रसनासुख चैननु की ॥
कहुँ लेत निवात बतासन कौं। लु गिंदौरन ए रनत्रासिन कौं ॥
अरु खोवन ढेर बखेर दए। बहु खाँड खिलौनन लेत भए ॥
अरु लाइचदाननु गोद भरैं। दधि दूधन के परसाद करैं ॥
कुजतीतिल सक्कर रेवरियाँ। बहु पाक पुडार जु सेवरियाँ ॥
पकवान जथा रुचि और घना। बुहरी परमल्ल सुखोल चना ॥४५॥

छप्पय

गेहूँ चावर चना उरद जवा मूँग मौंठ तिल।
चौरा मटर मसूर तुवर सरसौं मडुवा मिल ॥
सँवाँ पसाई मका काँगुनी कोदौं मकरा।
चैना कूरीवटी सिंघारे कुलथी सकरा ॥
घृत तेल नौन गुड़ तूलरस मिले विरस मौटन खुटे।
पुरइंद्र अन्न कौ कूट ज्यौं सब रस कोटिन मन लुटे ॥४६॥
साम यजुर रिग निगम अथर्वन धर्म पतंजल।
मीमाँसा वेदांत न्याय साहित्य तर्क भल ॥
विष्णु वायु शिव अग्नि गरुड़ नारद बलिरच्छक।
मच्छ कच्छ बाराह पद्म हरनच्छक तच्छक ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पुनि स्कंद मारकंडे भविष ब्रह्मबर्त्त ब्रह्मंडबर ।
भागवत मेघ मघु रघु कुँवर पुनि किरात नैसध्र अवर ॥४७॥
छंद कोस व्याकर्न कर्म जोतिस निरुक्ति रस ।
मंत्र जोग धनुं गान वैद्य स्वोदय गनती जस ॥
सामुद्रिक पुनि कोक सर्पबानी अरु भारथ ।
नाटक भासादेस यमनबानी ग्रन्थारथ ॥
लखिकैं अधर्म सु अनीति अति सब विद्यनु चलनौ रढ़िय ।
पुरइंद्र छाड़ि ब्रजबास कौं जबासिनु के कर चढ़िय ॥४८॥

दोहा

देस देस तजि लच्छिमी दिल्ली कियौ निवास ।
अति अधर्म लखि लूट मिस चली करन ब्रजबास ॥ ४९ ॥

छंद भुजंगी

लुटै द्यौस दिल्ली निसाँ ज्वाल जारै । मनौ सूर कौ तेज पापै पजारै ॥
जरैं रंग रंगे घने काठ खंभा । हलै ज्वाल की झाल ज्यौं पात रंभा॥
टुटैं गोलमर्गोल टोडा सुहाटी । मनो स्वर्न को खान तैं सोठ काटी ॥
जरैं बंगला बंगली चित्रसाला । मनौ पेखने को रुप्यौ ख्याल आला॥
जरैं दारु की पुत्रिका यौं दती सी । मनौ धाम को बाम ठाढ़ी सती सी॥
कहूँ आँच सौं काँच के भौन फूटैं । महा तेज सौं ज्यौं वृथा तेज बूटैं ॥
जरी यौं दरोची तिबारी अटारी । सतौं मेरु की शृंग जैसी निहारी ॥
बरंगा बरंगो करो यौं जरी हैं । मनौ ज्वाल नैं बाहु लच्छी करी हैं ॥
जरी कोटि प्रासाद ते भू परी है । सिला मेरु के सीस तैं ज्यौं ढरी है ॥
जरैं बाँस यौं काँस उड्डै फुलंगा । नचै भूमि कौ पूत कै कोटि अंगा ॥
कहूँ जाल के जाल मैं ज्वाल झोरैं । किधौं धाम धारा धरौ बिज्जु दोरैं ॥
सिखा की सिखा तैं धुआँ व्यौम धायौ । भजै तामसो राजसी ज्यौं सतायौ॥
किवारी किवारे उसारे पनारे । जरैं जालि पानैं करे भौन न्यारे ॥
उड़ैं खास सींगी धनैवान भारे । फिरैं आग लेती मनौ दै हँकारे ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फिरैं वायु के बेग सौं बाइ मीता। सुरेसापुरै आपुनै रूप कीता॥
चहूँ ओर यौं ज्वाला-माला निहारी। दुलहैया दिली बादलाज्यौं सिंगारी५०

कवित्त

धर्म-सुत-धाम जान जमुना निकट मान
सर्व मेद जज्ञ कौ बनायौ ब्यौंत पूर है।
पत्र फल फूल सब औषध समूल रस
षट अनतूल धात धान धन भूर है।
अंडज जरायुज औ स्वेदज उद्भिज हब्बि
कर्यौ पूरनाहुति चकत्ता कुल मूर है।
औज की अगिन इंद्रपुर सौं अगिनकुंड
होता श्री सुजान जजमान मनसूर है॥ ५१॥

दुपई छंद

कलिकी आदि कूर मघवा ने बृज पै कोपु जतायो है।
वही अकस धरि श्री ब्रजेस-सुत इंद्र पुरहिं लुटवायौ है॥ ५२॥

हरिगीत छंद

भूपाल-पालक भूमि-पति बदनेसनंद सुजान हैं।
जानै दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकैं।
दिल्ली लुटाइय पुनि दहाइय दुतिय अंक सुनाइकैं॥ ५३॥

छंद त्रिभंगी

सत सहसौं धावत अयुतौं आवत लच्छौं पावत भाल धर्यौ।
सूरज-गुन गावत बिरद बुलावत जग ललचावत चाल पर्यौ॥
सबही बिधि ताजा सकल समाजा छिन मैं राजा रंक किए।
ज्यौं धनपति धावै सुरग न पावै हाथ लड्यावै हरष हिए॥१॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हिय संकत नाहीं आवत जाहीं खाली नाहीं मोद* भरे।
जैसी गति लंका करी अतंका रघुकुल-बंका आनि अरे॥
ज्यौं रच्छस खंडे यमन विहंडे जदुकुल चंडे सुखरासी।
जलधर जिमि गज्जत बारिद बज्जत यौं धुनि सज्जत ब्रजबासी २
ब्रजवासी सगरे करि करि दगरे दिल्ली बगरे लूटि करैं।
मनसूर बिचारै अब को टारै याहि सँभारै संक भरैं॥
सूरजहिं बुलायौ कहि समझायौ सो दलु हायौ समुहायौ।
अब लूटहि थंभौ जंगहि रंभौ कह्यौ अचंभौ मन भायौ॥३॥

दोहा

मन भायौ ह्वैहै सबै सूरज कही नवाब॥
अब मैं लूटहिं बंद करि लैहों जंग सिताब॥ ४॥

छंद अनुगीत

यौं कहि सिताब सुजान उट्ठिय मनहुं तुट्ठिय ईस।
ढिग बोलि सिंह जवाहरै किय हुकुम बिस्वा बीस॥
अब फौज राखहु एकठी अरु करहु लूटहिं बंद।
सुत तो बिना यह को करै नहिं आन कौ परबंद॥
यह सुनत जाहर सुत जवाहर तात हुकुम बजाइ।
तिहिं बार ह्वै असवार धाइय दई लूट मिटाइ॥
ज्यौं बायु के बस बारि बाहक मंत्र के उतपात।
त्यौं सलभ साबर के प्रयोगहिं छिनक में उड़ि जात॥
लखि ऊर्ज नाभी बदन ˘ है तार कौ बिस्तार।
त्यौं श्री जवाहर नै कियौ सब लूट कौ परिहार॥
पुनि सैन सज्जिय पटह बज्जिय गज गरज्जि हयंद।
यौं सुनतहो मनसूर चढ़्डिय दैन दिल्लिय दंड॥

---

* पाठांतर—गोद।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दुहु दल उमंडिय रज घुमंडिय भानुजा के तीर।
सुत सहित सूरज सरपस्या सजि सुभट संग वजीर॥
उत सादुला सु नजीमखाँ अरु खानदौराँ-पूत।
धरकैं अरावौ अग्ग रुप्पिय कोठरा मजबूत॥
इत सहर दिल्ली उतहिं जमुना मद्धि बड्ढिय भीर।
कुरुखेत ज्यौं सुत अंध पंडव रचिय जुद्ध गँभीर॥
तहँ तुमल नद्द गरद्द उड्डिय रुट्ठ वुट्ठिय काल।
हरष्यौ कपाली देत ताली हेत माल कपाल॥
गंधर्व किन्नर अपछरा भइ गगन में अति भीर।
रसमसी चंडी कसमसी जग जुग्गिनी जुत बीर॥
मसहार छाए नभ पुराए धरनि धाए स्यार।
भुव भरभरानी भय दबानी खरखरानी ब्यार॥
लगे कूर धरषन सूर हरषन दुहूँ परखन वार।
दल प्रबल घोर घटा जुरी रस सार बरसन हार॥
उत साहि अहमद सुभट रुप्पिय इतहि सफदर जंग।
तिहिं संग सूरज अरु जवाहर ठठिय जंग अभंग*॥
तहँ छुटत बान भयान सहसन रहकला हथनाल।
जज्जाल पुनि घुरनाल अयुतन जबर जंग कराल॥
अगगगग अगग अगगगं सगग सग गगसंन।
धगगग धगगगग धगगगं धंमांक धुंकर धंन॥
धधकार धधधधधधध धंधू धाइ धूमक धाइ।
भभकंत भक्क भड़ाइ भंकत भडडडडंभं भाइ॥
भंनात भद्द भड़ाक भड़ भड़ भभक भूरि भयान।
भड़कंत भभकत भभभभंभट भेष भासत भान॥

---

* पाठान्तर—उमंग

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अति घोर घोष घुख्यौ जहाँ घरधरत जमुना नीर।
झरझरत गोली गोल ओला इंद्रपुर के तीर॥ ५॥

सारंग छंद

छायौ महा धूम धूली घटाघोर। उट्ठैं जहाँ रंजकैं बिज्जु सी जोर॥
पज्जैं घनी तोप गज्जैं निरद्धार। देखैं दुहूँ सैन के जात आकार॥
धुंधी धरा धूसली धूम गुब्बार। मानौ प्रलैकाल कौ घोर अँधियार॥
ओलानु के भेस गोलानु के मेह। फोरैं घनै मुंड ढोरैं कहूँ देह॥
बौछारि गोलीनु की चारिहूँ ओर। बानौन की घोर मानौ उड़ैं मोर॥
लुट्ठै कहूँ बाजि फुट्टैं कहूँ भाल। गोलानु की गैंद खेलैं मनौं काल॥
सन्नात घन्नात फन्नात नासाँस। भासै नहीं भान और आस आकास॥
तामैं घुर्‌यौं घोष ज्यौं गाज के पात। कै सेल के सीस पै बज्र को घात॥
सद्दैं सुन्यौ कै गरद्दैं लखी नैन। भैचक्क से सूर ठाढ़े दुहूँ सैन॥
नीचैं तपै भूमि ऊपर तपै भान। भारी भयद्दान जारैं जगत प्रान॥
या हाल कौं देखि सूजा भर्‌यौ तेह। बौल्यौ तज्यो बीर हो संक संदेह॥
ह्वैहै लिख्यौहाल गोपाल जो भाल। एतौ भयज्जाल है भून के ख्याल॥
हौ भाग पूरे सुदिल्ली लह्यौ खेत। है स्वामि कौ काम कालिंदरी-रेत॥
यातैं गहौ खेत अग्गौं पगो देत। या तोपखाने घरी चार मैं लेत॥
यौं भाषि सूज्यो लख्यौ पूत की ओर। ठाढ़ौ हुतौ पास ज्यौं भान है भोर॥
भारथ्थ मैं भीम पारथ्थ के भान। कंसारि ज्यौं काम बैरीन के जान॥
दोऊ महाबीर दिल्ली रुपे धीर। लंका खगे राम ज्यौं लछमना बीर॥
सूजा कहैं बैन सुन्ने सबै सैन। मुच्छौं धरे हथ्थ रत्तो किए नैन॥
हथ्थैं गहे सेल लत्तौं तुरी हंकि। जैसैं कपी-जूह लंका परैं दंकि॥
संका तजैं दोह डंकानु कौं देत। हंका करैं बीर बंका दिली हेत॥ ६॥

दोहा

सेल साँग समसेर सैर गहै भुसंडी हथ्थ।
मसकि मसकि बानीनु कौं हल्ल करी इक सथ्थ॥ ७॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छंद हनूफाल

सबते अग्ग गोकुल राम । कुंभानी प्रताप उदाम ॥
सिंह भरथ्थ सूरतिराम । धरि हिय स्वामि काम उदाम॥
व्रजसिंह बंस कौ चहुँवान । स्यौसिंह है गदाल अमान ॥
तिरखा जादवाँ सुलतान । भीखाराम सिंह गुमान ॥
मोहनराम द्विज बलधाम । राजाराम दौलति राम ॥
बल्लू और बाला बीर । हरि बलराम कृष्ण गँभीर ॥
तिहिं की पुट्ठि धाइय छिप्र । हरि नागर चमूपति विप्र ॥
किरपा राम दानी राम । दुरजनसिंह मुहकम नाम ॥
दवछ्यौ जोर सुभट समूह । वह बलिराम लेत फतूह ॥
रनसिंह उदैसिंह खुस्याल । हरिबलिराम: छत्तरसाल ॥
मेदा जैतसिंह संतोष । पह्नोपा रतनसिंह सरोष ॥
किरपा बिप्र लछमन दास । अरु जैकृष्ण मनसा पास ॥
तोफा स्याम सिंह सुजोध । धीरज सिंह भीम अरोध ॥
सकता और दाता दौर । पाखरमल्ल पारी रौर ॥
उदभट सुभट लै इक सथ्थ । हरनारइनौ समरथ्थ ॥
तोमर रामचंद तिलोक । ठाकुरदास सैंगर थोक ॥
धनसिंह गौर गंगाराम । फत्ते ऊधमासुत स्याम ॥
हरसुख रतीराम अजीत । प्रोहित है घमंड अभीत ॥
सेखावत उमेद प्रचंड । बल्लभ सिंह कमधुज चंड ॥
स्यामहु सिंह थानापूत । हरजी राम जी मजबूत ॥
पैमा प्रथी सिंह पमार । मंगू सदा राम अपार ॥
मंत्री सदा राम मुकुंद । राजू रतन सिंह अरुद्ध ॥
नाथूराम खैमा विप्र । बाला और गिरिधर छिप्र ॥
हरि सिंह हठी सिंह अजीत । बकसीराम जंग अभीत ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जैसिंह तुला हट्टी जोर। बलका अमरसिंह * कठोर ॥
साहिबराम जालिम जोत। रंनू सदाराम सुनीति ॥
दंल्लामेव साकिरखान। गुलखाँ किते और पठान ॥
है पुरुषोत्तमौ श्रीराम। मेदा विजै राम उदाम ॥
बहादुर सिंह श्रौ श्रौधूत। कन्हईराम वैदा † पूत ॥
साजैं सूर बहु सावंत। श्रीगुरु ‡ रामकृष्ण महंत ॥
सुत कुसलेस सूरतिराम। मुहकमसिंह उद्धत नाम ॥
है सुखराम मातुल उद्ध। स्यौसिंह उदैभान समुद्ध ॥
देवीसिंह श्रो श्रखैसिंग। सूरज श्रनुज धाइयधिंग ॥
तिनके मद्धि सिंह सुजान। नवग्रह जूह जैसैं भान ॥
सिंह दलेल सिंह खुस्याल। मेदहु सिंह ब्रजपतलाल ॥
उदभट सुभटसिंह भवान। बीरनराइनौ बलवान ॥
वंके मानसिंह गुमान। उद्धतराम बलमँतवान ॥
बुधिबल सभाराम बिलंद। एवदनेस भूपतिनंद ॥
एते श्रीजवाहिर संग। षटमुख-सहित गन ज्यौं जंग ॥८॥

दोहा

मेरसिंह रनजीत श्ररु जैतसिंह हठिसिंग।
सिंह श्रनूप चँदौल किय भूप श्रवार श्ररिंग ॥९॥
उतहि श्रहम्मदसाहि-दल इत मनसूर-सुजान।
इंद्रप्रस्थ जमुना-निकट कस्यौ घोर घमसान ॥१०॥

छंद संयुता

घमसान घोर जहाँ घुस्यौ। तिहिं जुद्ध तैं भट ना मुस्यौ ॥
गति मंद मंद हयंद की। सुपदाति और गयंद की ॥

---

* पाठांतर—मभरसिंह ।
† पाठांतर—भैंरा ।
‡ पाठांतर—वह गुरु ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुधि धारि दिल्ली-कोट की। इत दिष्टि सूरज जोट की॥
अति घोर मार जहाँ छुरी। दसहू दिसा भई धुंधरी॥
धरधद्धरं धरधद्धरं। भड़भब्भरं भड़भब्भरं॥
तड़ तत्तरं तड़ तत्तरं। कड़ कक्करं कड़ कक्करं॥
घड़ घग्घरं घड़ घग्घरं। झरझब्भरं झरझब्भरं॥
अर रर्ररं अर रर्ररं। सर रर्ररं सर रर्ररं॥
धर रर्ररं धर रर्ररं। ढर रर्ररं ढर रर्ररं॥
खर रर्ररं खर रर्ररं। फर रर्ररं फर रर्ररं॥
कड़ डड्डुड़ं कड़ डड्डुड़ं। सड़डप्पुड़ं सड़डप्पुड़ं॥
बहु सद्द कौं इक सद्द है। तम घोर धूम गरद्द है॥
जग अंत को अँधियार सौ। रितु सीत को नीहार सौ॥
छुटि बान भासत भासते। ग्रह पात जिमि आकास ते॥
मष सर्व धूम महाल सी। मनु कालराति कराल सी॥
सर सैकरौं सर राहटे। लखि ब्याल ज्वाल उछाहटे॥
नर बाजि कुंजर खाहटे। बिल पाइ मानहुँ चाहटे॥
लगि गोल मोल घराहटे। लखि काइरौं थरराहटे॥
मुखमर्द कैं मरराहटे। भुजदंड होत फराहटे॥
चहुँ ओर गोलिनु की झरी। छुटि सार की मनु फुलझरी॥
करिधार कुंभकरी फिरैं। पिलवान अंकुस दै भिरैं॥
लगियौ तुरंगनि थरथरा। नथुनान लग्गिय फरफरा॥
इहि भाँति दुहुँ दल साँकरी। फर भूमि घोर निसाकरी॥
भुजदंड खंडित उड्डियं। कहुँ जंघ ऊरू गुड्डियं॥
कहुँ रुंड मुंडनु झुंड है। कहुँ कुंथ पै कहुँ तुंड है॥
लगि गोल फूटत पेट हैं। मनु देत फाल चपेट हैं॥
महि होत श्रोनित लाल सी। फुटि बात रंग पखाल सी॥
गज बाजि श्रोनित यौं झरैं। दुति धाउ फूलन की धरैं॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तिहिं बार राम सुचंद नैं। हय हंकि जुद्ध बिलंद नै॥
धनु बान हत्थ सँभारि कै। हित स्वामि कौ उर धारि कै॥
निज खेत जान हरष्षियौ। सर-सार-धार बरष्षियौ॥
तबही सुगोली लग्गियौ। उर फोरि श्रोनित जग्गियौ॥
वह धीर बीरहि रंग तैं। रहिं बाग मोरिय जंग तैं॥
सत दौरि सूरतिराम नै। किय हल्ल जुद्ध मचावनै॥
गुल तासु गोली सौं फुटी। करकी न बाग तऊ छुटी॥
तुलसी फुट्यो पपहेरिया। तिहिं जाय सुरपुर हेरिया॥
बहुतै सुभट्ट जहाँ फुटे। गोली चुटे धरनी लुटे॥
बहु होत लोटक पोटही। तउ जट्ट ठट्ट हटे नहीं॥११॥

कवित्त

श्रोनित अरघ ढारि लुत्थि जुत्थि पाँवड़े दे
दारू-धूम धूप दीप रंजक की ज्वालिका।
चरबी कौ चंदन पुहुप पल टूकनु के
अच्छत अखंड गोला गोलिनु की चालिका।
नैवेद नीकौ साहि सहित दिल्ली कौ दल
कामना बिचारी मनसूर पन-पालिका।
कोटरा के निकट बिकट जंग जोरि* सूजा
भली बिधि पूजा कै प्रसन्न कीनी कालिका॥१२॥

छंद त्रोटक

तिहि औसर सिंह सुजान तनं। अति सिंह जवाहिर रोस मनं॥
हय हंकि धमंकि उठाइ रनं। जिमि सिंह-छवा कढ़ि सैन बनं॥
बरषा जहँ गोलिय गोलनु की। गरजै बहु बानन बोलनु की॥
चमकै बरछा जिमि बिज्जु छटा। उमड़े पुरइंद्र सुभट्ट बटा॥

* पाठांतर—अरि काटि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बरसा सरसार अचूकन की । बहु तोप जँजाल बँदूकन की ॥
तित जाहर सिंह जवाहर भौ । तिहिं ठाहर जुद्ध अठाहर भौ ॥
इत उत्त धमाधम खूब भई । कछु साहि चमू हहराइ गई ॥
फुटमुंड अनेकनु रुंड गिरे । बहु गोलनु सौं गज बाजि खिरे ॥
कहुँ अंग उड़े गति चंगनु की । लखि दाबहिं देह पतंगन की ॥
कहुँ अंतन दंतन पाँति परी । मनु रेसम रंगनि सूकि धरी ॥
बहु लुथ्थनि श्रोनित धार झरैं । मनु भारथ रूप अपार धरैं ॥
अति उद्धत जुद्धत रुद्ध रयौ । दुहुँ आकुल व्याकुल जोग भयौ ॥१३॥

कवित्त

तूग तैं तरेर दैं दरेरनु सौं दिल्ली दाबि
प्रवल पठान ना उड़ायौ पौन पत्ता सौ ।
कूरम रठौर हाड़ा खीची औ पँवार राना*
बाना डारि छूटे बाँधि कीनौ एक बत्ता सौ ।
सूदन सपूत ससिबंस अवतंस बीर
ताही दिल्लीपति कौं लपेटि राख्यौ गत्ता सौ ।
जाहर जगत्ता है जवाहर प्रताप तत्ता
जाके कर कत्ता सौं चकत्ता जात्यौ लत्ता सौ ॥१४॥

दोहा

प्रवल अराबौ साहि कौ बिकट सहर पुठवार ।
बृथा जुद्ध करिबौ इहाँ होत सुभट संहार ॥१५॥
यौं समुझाइ सुजान नैं आइ जवाहर पास ।
घरी चारि दिन के रहत डेरनु कियौ निवास ॥१६॥
जे सच्छत आप सुभट तिनकौ कियौ उपाय ।
जिन पायौ पचत्तु कौं ते जमुना पहुँचाय ॥१७॥

---

* पाठांतर—खंगार ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हरगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेसनंद सुजान हैं।
जानैं दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिान हैं ॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकै।
रन कोटरा-तट करिय सूरज अंक तृतिय अघाइकै ॥१८॥

इति तृतीय अंक।

छंद मंथान

सूजारु मंसूर भेले भए सूर। बोल्यौं भरें ताप मंसूर यौं आप ॥
मेरा तुही अब्ब कै दूसरा रब्ब। कीना जु तैं काम पाया बड़ा नाम॥
लीनी घनी जंग दिल्ली करी दंद। लूटा इता लोग छूटा नहीं रोग ॥
दै तोप की ओट टूटा नहीं कोट। हैगी मुझे चोट कीया जिन्हैं खोट ॥
लीयै तुझे जोट मारौं दिली कोट। करना कछू तोहि सो भाषियै मोहि ॥
मंसूर के बैन सूजा सुने ऐन। कीनौ यही तंत दीनौ तबै मंत ॥
रेती तजौ आपु औट्यो घनौ तापु। लीजै अबै भील कीजै नहीं ढील ॥
ह्याँ आइ है घोर कालिंदरी तोर। तासौं कहा जोर डारै दलै बोर ॥
यातैं उतै मारु कीबौ हमैं सारु ॥१॥

दोहा

इतमैं लूटि चुके दिली उतमें रही अदग्ग।
ह्याँ वे बाहर आइहैं तब ही बाजै खग्ग ॥ २ ॥

छंद हंद

सूरज बानी सो सब मानी। कूँच करायौ देर न लायौ ॥
दुंदुभि डंके देत असंके। ढोल दमामैं बाजत आमैं ॥
गोमुष गज्जै तूर गरज्जै। हत्थिय घोरैं पैदल थोरैं ॥
उच्च पताका पार न ताका। यौं दलु उट्ठ्यौ ज्यौं घन तुट्ठ्यौ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

देत हरेरैं झीलहि नेरैं। देरनु देकैं चौकस कैकैं ॥
फेरि उमाह्यौ जुद्धहिं चाह्यौ। सूरज बंका देत अतंका ॥३॥

घत्ता छंद

इसमाइल राजेंद्र गुसाँई हे नवाब के हरवल चंड।
देसवार ह्वै जुटे दिली सौं सहस सहस हय लै बलवंड ॥
सिंह सुजान सुभट सैनापति सूरत गौर दयौ तिहिं सथ्थ।
हरसुख नाम द्विजन मैं दीरघ लियैं भुसंडी सेलनु हथ्थ ॥
उत तैं आइ साहि अहमद भट रुप्पिय कुप्पि अराबौ तथ्थ।
लागनि लगी परस्पर बीतनि गोली गाल गथ्थ लथपथ्थ ॥
हय हंकत संकत नहिं हंकत चार्यौं करत दिली तट दौर।
आयुध सजैं बजैं बहु डंका सुरपतिपुर पारी अति रौर ॥४॥

छंद उद्धत

दुहूँ ओर बंदूक जहँ चलत बेचूक रव होत धुंधूक किलकार कहुँ कूक।
कहुँ धनुष टंकार जिहि बान झंकार भट देत हुंकार लंकार मुँह सूक ॥
कहुं देखि दपटंत गज बाजि झपटंत अरिव्यूह लपटंत रपटंत कहुँ चूक।
समसेर सटकंत सर सेल फटकंत कहुँ जात हटकंत लटकंत लगि झूक ॥
हुव जाम जब दोइ दुहुँ रुद्र रस भोइ इमि जुद्ध जहँ होइ उहि कोइ अहुटंत।
उत साहि दल जोर किय सस्त्र झर घोर दिय रत्तीरस ओर चहुँ ओर अहुटंत ॥
तब गौर समरथ्थ सूरत्ति इक सथ्थ राजेंद्रगिरि तथ्थ बड़ हथ्थ चुहटंत।
लिय जंग गहि संग बहु अंग रन रंग जहँ होत भट भंग उतमंग लुहटंत ॥५॥

छप्पय

तिहिं फरमंडल बीच परिय गोलिय झर झरझर।
तहँ फुट्टिय कर गौर थौन छुट्टिय छुत छुर छुर ॥
तऊ न चल्लिय धीर बीर अग्गहिं हय हंकिय।
तथ्थहिं हरसुख बिप्र छिप्र धाइय अनसंकिय ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तबही अचान राजेंद्रगिरि लगि गोली तन तैं छुट्यौ।
वह सूर समर मधि स्वामि हित परमहंस गति कौ बुट्यौ॥६॥

दोहा

मर्‍यौ सुन्यौ राजेंद्रगिरि मन वजीर दुख पाइ।
जुद्ध भूमि तैं सुभट सब डेरनु लिए बुलाइ॥७॥

वसंत-तिलका

अत्यंत शोक मनसूरहिं चित्त छायौ। राजेंद्र आजु फरमंडल काम आयौ॥
त्यौंही नवाब उमराउगिरै बुलायौ। दैकें गयंद सिरपाउ गदी लसायौ॥८॥

दोहा

थपि गद्दी राजेंद्र की गिरि उमराउ अनूप।
बिदा किए फिरि जुद्ध कौं इक तैं दोइ सरूप॥६॥

छंद तोमर

तब सूर सिंह सुजान। बकसी महा बलवान॥
कुल गौर गोकुलराम। चित चाहिकैं संग्राम॥
लखि भ्रात घाइल हथ्थ। हुव क्रोध के बस तथ्थ॥
चढ़ियौ अनीक सजाइ। गहरौ निसान बजाइ॥
लहि हुकुम सिंह सुजान। रन कौं चल्यौ बलवान॥
पहुँच्यौ दिली तट धाइ। दिय धूम धाम मचाइ॥
उत साहि सैंन सँघट्ट। गहि ओट तोप गरट्ट॥
इत जट्ट ठट्ट अघट्ट। किय घोर सैन झपट्ट॥
परे-हेत देत धवान। करि लावदार दवान॥
कहुँ सिंधिवान कमान। धरि मुट्ठि हथ्थ कृपान॥
इत उत्त चाहि अभीत। हित स्वामि प्रीत प्रतीत॥
तहँ आइयो भट साहि॰। भुव बाढ़िकैं समुहाहि॥
धरि अग्र स्याम निसान। कवची कितेक जवान॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कितने कि भालनबद्द । करहीं हयंद निछंद ॥
बरछी अनेकन साँग । सम्सेर सिप्पर आँग ॥
बढ़ियो सुखेत सओज । चढ़ियो कुमेत निवाज ॥
लखियै सु बकसी बीर । हुव रोस के बस धीर ॥
कहियौ सुभट्टनु टेर । रन लेउ हांहि न फेर ॥१०॥

छंद गंगोदक

यौं कही गोकुला दोकुला सुद्ध सो
मोकला सूर सामंत सौं ता घरी ।
देखि दिल्ली दलैं दोह डंकानु दै
दौर कीनी बली देत सत्रौं भरी ।
आपने आपने बाज ताते किए
नैंन राते मनौं भान की भाभरी ।
टाप ठन्नाहटे होत फन्नाहटे ।
गोलियौं आहटे रंजकौं की भरी ॥११॥
चंड कौदंड सौं बान संधैं किते
सेल सम्हारिकैं साँग ओजैं भटा ।
काढ़ि समसेर कौं बीर धाए घने
धूम धारा धरैं बिज्जु की सी छटा ।
धद्धरा धद्धरी बद्दरा से गजैं
लेउ रे लेउ दात्यूर के कीरटा ।
मास आसाढ़ की आपगा सी बढ़ी
सूर सैंना धइ तोरि दिल्ली तटा ॥ १२ ॥
धाइ जुट्टे बली देह फुट्टे किए
कोइ लुट्टे मही बाज लुट्टे जहीं ।
गौर की दौर की रौर भारी परी
मारि गोलीनु सौं साहि सेना दही ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बान कम्मान दम्मान देते भए
सेल समसेर की चोट नाहीं वही ।
जट्ट ठट्टौं सही जित्ति कित्ती लही
दिट्ठि दिल्ली दलौं राह दिल्ली गही ॥ १३ ॥
फेरि पाछैं लग्यौ देखि बैरी भग्यौ
सेल साँगौं खग्यौ गौर नैं भौर की ।
हंकि बाजी धयौ छोह कै उग्गयौ
सिंह रूपै भयौ मृग्ग पै दौर की ।
चाहि वेऊ मुरे दै दवानौ जुरे
धम्म धम्मा घुरे चोर ज्यौं रौर की ।
लागि गोली गिस्यौ गोकुला ज्यौं खिस्यौ
प्रान नाहीं विस्यौ स्वर्ग मैं ठौर की ॥ १४ ॥

दोहा

लगत भुसंडी मर्म छुत गौर कही यह बात ।
ह्याँ तौ भाँडौ फूटि गौ थँभौ न बैरी जात ॥ १५ ॥
बकसी कौ ऐसौ वचन* मेघराज रनधीर ।
गौर उठाइ हयंद तैं धस्यौ गयंद सरीर ॥ १६ ॥

छंद गीतिका

इहि छे उपाइ दिलीस सैनहिं जात बार न लग्गहीं ।
गज बाजि पैदल छोड़िकैं थल-जुद्ध तैं भल भग्गहीं ॥
पुनि आइ सूरज के सुभट्टनु दिक्खि गोकुलराम कौं ।
रन-भूमि तैं धरि लै चले गज पाइ दुःख उदाम कौं ॥
सुनि सिंह सूरज ता घरी रन जित्ति बकसी जुभिझयौ ।
मन लै उसास उदास दूतहिं फेरि बात न बुभिझयौ ॥

---

* पाठांतर—हुकम ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पुनि गौर कौं बर ठौर भेजिय सब्ब सूरन सथ्थ दै।
गति ध्याइकैं परलोक की रविलोक की बिधि हथ्थ दै॥
ढिग आय सूरजमल्ल के मनसूर ने तब यौं कही।
अब कूँच ही करना सही इस खेत सैं न वफ़ा लही॥
नहिं चून घीव सबील ही तसदीह सबही की सही।
न हरीफ़ बाहर आवते जिस वासतैं तुमने गही॥
मत मानिकैं मनसूर कौ बदनेसनंद कबूल कैं।
तिहिं बार कूँच कराइयौ सुचिराक दिल्ली कूल कैं॥
करि एक दोइ मुकाम दोउनि फेरिकैं तिल पत्तिली।
तहँ ईत बढ्ढिय मेघ चढ्ढिय फेरि जंग सुमत्तिली॥ १७॥

छंद उल्लाला

यह खबर गाजदीखान पैं साहि जहानाबाद हुव।
मनसूर-सहित सूरज बली उलटि गए तिलपत्ति धुव॥ १८॥

छंद नीसानी

पोता मलिक निजाम दा सुनि एही गल्लाँ।
हुकुम माँगिया साहि सैं हुए अग्गैं चल्लाँ॥
फरमाया पतिसाहि भी अच्छी दिलजोई।
अग्ग अराबा ले चढ़ौ हरवल करि कोई॥
करि सलाम रुखसद हुआ गाजुद्दीं आया।
संग पठान रुहेल लै पुर ही तट छाया॥
तद गाजद्दी खान जी दंती मति ल्याया।
अग्गैं गढ़ी मिदान दी * रुहेल पठाया॥
हुकम गाजदीखान दा रुहेलों पाया।
हैदल पैदल सथ्थ लै तदहीं चढ़ि धाया॥

---

* पाठांतर—गढ़ि मैदान दी।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एही फौज रूहेल दी फर रूप लखाया।
कालजमन करि कोह नूँ काबिल सैं धाया॥
यह सँदेस सूरज बली तिलपति मैं सुन्ना।
हरषि उगा सब अंग मैं रन काजैं दुन्ना॥
अद्धी निसा गई जबै बलिराम बुलाया।
बल्लू वाला दुरजनैं आगैं भिजवाया॥
कूरम सिंह प्रताप भी अरु गोकुल सैना।
सैंगर ठाकुरदास और हरनागर पैना॥
मोहन हरसुख स्यामसिंह हरिबल स्योसिंगा।
सूरतिराम कटारिया अरु धौंकल धिंगा॥
हरनाराइन पाखरा सुखराम असंका।
राजा गूजर भरथसिंह चढ़िया भट वंका*॥
सबै जवाहर सिंह दै भट सूरज भेजे।
सेल साँग बंदूक सर हथ्थौं धरि नेजे॥
हम्मौ सुभट चढ़ाइया सूरज बिन डंका।
घरी चारि पीछू चढ़यौ आपुन अनसंका॥
देखि गढ़ी मैदान दी वैरी दल दिट्ठा।
जंग बिचारन लग्गिए चढ़ि बाजिनु पिट्ठा॥
तिस बेलाँ सूरज बली करिकै धकपेला।
उथ्थौं ही बहु सूर लै हूवा भट भेला॥२०॥

दोहा

निरषि रुहेले की चमू श्री सुजान भे क्रुद्ध।
दुष्ट दिष्ट आए भलैं कह्यौ चाहि चित जुद्ध॥ २१॥
देव देव हरिदेव की जाइ दुहाई लच्छ।
जो बिपच्छ नहिं तच्छ है गच्छत सच्छत अच्छ॥२२॥

* पाठांतर—दै डंका।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छंद त्रिभंगी

सुनि सूरज-बानी रिस-लपटानी धरनि सिहानी भूख भरी ।
पलके आहारी ललके भारी अंबरचारी भीर करी ॥
गिरि धूरिजटी के जुद्ध जुटी के मद्ध कुटी के रौर परी ।
मारू सुर लीना आवज बीना नृत्यहिं कीना तेह घरी ॥२३॥

दोहा

तेह घरी असि कर करी सूरज परगन चाहि ।
कही सूर सेनाधिपनु* सत्रु न जीवत जाहि ॥ २४ ॥

छंद भुजंगप्रयात

जहीं सूर के सूर लै सेल साँगैं । चहूँ ओर तैं घोर यौं सोर साजा ।
सतौं संधि कैं तीर कोदंड तानै सहस्रौं सरोही लिये हाँकि बाजा ॥
किते तेग तेगा जु नब्बीनुबारे भुसंडीनु कौं छंडिकैं फेरि गाजा ।
धरा लेहु रे लेहु रे लेहु छायौ कहूँ देहु रे देहु रे देहु बाजा ॥२५॥
घलामेल ह्वैकै चला सेल साँगैं ढलामेल दीनौ नला बीच भाजा ।
अलाकै हँकारे रुहेला सँभारे झलाबोल सारे डला औन ताजा ॥
तरातर तरातर यहै सद्द सुन्यौ धराधर धराधर परे स्वामि-काजा ।
झमाझम झमाझम बजैं सार-धारा लखै जुद्ध कौं देवता दैत्य लाजा२६

वृद्धिनाराच छंद

जुटे रुहेले जट्टहीं । न कोई वीर हट्टहीं ॥
सुपक्क एक डट्टहीं । झपट्टहीं लपट्टहीं ॥
अनेक अग्ग वाहहीं । कितेक मार छाँहहीं ॥
किते परे कराहहीं । हकार सौं रपट्टहीं ॥
कहूँक हत्थ हत्थहीं । भरैं कहूँक† वत्थहीं ॥
परे सु लत्थ पत्थहीं । सपट्टिकैं चपट्टहीं ॥

---

* पाठांतर—सेनापति ।
† पाठांतर—कवत्थ ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उताल चाल हाल सौं। धवंत कोह ज्वाल सौं॥
गहैं कृवाल ढाल सौं। अरीनु कौं कपट्टहीं॥
धमंकि धिंग धावही। तमंकि तेग आवहीं॥
झमंकिकैं चलावहीं। बुलावहीं बलक्किकैं॥
कटंत कंध* कुंडला। छुटंत बाहु डुंडला॥
फटंत पेट† रुंडला। ढुलावहीं ढलक्कि कैं॥
लरैं कहूँ छुराछुरी। परैं कवंध रातुरी॥
कितेक टूटि जावुरी। हुलावहीं हलक्कि कैं॥
भलक्कि भाल भालहीं। झलक्कि झाल झालहीं॥
रलक्कि घाव घालहीं। घुलावहीं घलक्कि कैं॥२८॥

छंद नीसानी

उथ्थौं ठाकुरदास भी सैंगर समुहाया।
हथ्थौं सक्ति सँभालिया वैरी बहु पाया॥
फैंकि साँग रूहेल दे उर अंदर घत्ती।
देखी दूजैं आँब दी भारी कर कत्ती॥
जिसी हथ्थ सैं सैंहथी छुट्टी दग डट्टी।
तिसी हथ्थ दे उप्परां रूहेले सट्टी॥
करकट्टा जिस डुंड सैं सैंगर यौं सोहा।
मनौ दंड लै काल भी रन-मंडल कोहा॥
मार करी उस सथ्थ यौं मथ्थी पर सैना।
हुवा तथ्थ समसेर दा लैना कै दैना॥
स्यामसिंह गहि सेल नूँ धसि जंग अखारे।
तन घत्ते रत्ते अरी फरमंडल पारे॥

---

* पाठांतर—कंठ।
† पाठांतर—बाहु।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इक घाव तिस जंघ * में रूहेलौं कीता।
तौ भी बीर न हट्टिया अग्गैं पग दीता॥
हरिनाराइन तिस घड़ी बाजी करि तत्ता।
धसा कुरंगौं जूह मैं पंचानन मत्ता॥
किते रुहेले तिन किए कत्तौं सौं लत्ता।
घनैं मुंड फर पाड़िये धर थर फरकत्ता॥
हम्भौं वीरौं दी चली जहँ साँग सिरोही।
मारि रुहेलौं दी अनी कित्ती रंग लोही॥
हिक्क हिक्क दे हीय नूँ सर साँगौं फोड़ा।
हिक्क सीस भुज पाइ भी तरवारौं तोड़ा॥
कोइ कर्न बिहूनिया नासा बिन कोई।
भौंद फटे कोई पड़े स्वासा बिनु होई॥
कोई अस्यौं † फिराँवते हूवे रन रूते।
कोई प्रान गँवाइयाँ सुख-सेजौं सूते॥
कहीं अंत छुट्टे पड़े कहिं दंत उघारे।
कहूँ बिना हूँ मूँड़ ले सीने गहि फारे॥
मारु मारु मुख अक्खदे दे दे हक्कारे।
सेख रुहेले भागिए छुट्टा छुक्का रे॥
गिरते पड़ते घत्तिये करि कत्ते कत्ते।
सूरज सूर पुकारदे सूरज दी फत्ते॥२९॥

दोहा अमृतधुनि

कढ़ि कढ़ि अति श्रोनित उमगि गढ़ि गढ़ि अरिनु उदंड।
चढ़ि धाइय बदनेस-सुत खग्गग्गहि रनमंड॥

---

* पाठांतर—जंग।
† पाठांतर—खग्ग।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

खग्गग्गहि रनमंड समर उद्दंडद्दलनि।
खंडक्करि नित खंडत खलनि विमुंडद्धरनि॥
झुंड कटिय समुंड फटिय चमुंड ज्जय रढ़ि।
तंडव करत उमंडत धरनि वितुंड कढ़ि कढ़ि॥३०॥

कवित्त

हेला देत आए बगमेला ज्यौं रुहेला बीर
मैदाँ गढ़ी के तीर सुभट महारथी।
तेई काटि डारे रुंड मुंड झुंड ढारै दै
चमुंडनु अहारे भौ प्रसंग जुद्ध पारथी।
रुधिर के थारे परे बीच असरारे पारे
रविजा-मिलाप कौं सुरेस भयौ सारथी।
सूदन सुजानसिंह विक्रम-निधान महि
जान बान-गंगा कौं करी कवान भारथी॥३१॥

छंद मालिनी

सुभट सिमटि आए। सूर के पास धाए।
हरषनु हिय छाए। जंग की जैति पाए॥
धन धन रव लाए। कंठ सौं लै लगाए।
समर-श्रम मिटाए। मान सनमान पाए॥ ३२॥

छंद हरगीत

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं।
जानै दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं॥
ताकौं चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकैं।
रन मैं गढ़ी मैदान पाइय अंक चौथैं आइकैं॥३३॥

इति चतुर्थ अंक।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छंद सादरा

दिन बीत दस बीस पुनि धारि मन रीस।
सजि सैन भयदैन चढ़ि नंद ब्रजईस॥
लिय साहि तुकलान गढ़ भूमि बलवान।
जहँ कालिका थान रन देखि मरदान॥ १॥

छंद निशिपालिका

सूर-दल देखि उत साहि बल सज्जियौ।
बाजि गजराज गजि* तूर बहु बज्जियौ॥
केतु फहरान घहरान घन दुंदुभी।
सस्त्र खहरान ठहरान चकचुंधुभी॥
बान किरवान तन-त्रान धरि कढ्ढिये।
जान भरि सान मरदान बहु बढ्ढिये॥
होइ असवार तिहिं बार इक ओर तैं।
गोल करि गोल बहु मोल हय सोर तैं॥ २॥

छंद रुचिरा

साहि-अनीक बिलोकि बदन-सुत चरहिं बुलाइ कह्यौ तबही।
है इन मैं को को सेनापति कहु दूत दुहूँ कर जोरि कही॥३॥

छंद पावकुलक

ए जहँ स्याम निसाननुवारे। ते पठान ठाढ़े रन रारे॥
है जित धुजा नील सित चंडी। सो रुहेल की सैन घुमंडी॥
जहाँ भगौही उड़े पताका। तहाँ दक्खिनी जंग चलाका।
लाल सेत जहँ ए धुज ठाढ़ी। यहै सैन बकसी की बाढ़ी॥
जहाँ सेल साँगं बहु भाले। सो अंबरी रिसाले वाले॥
जिन के बाजि करत बहु छंदा। ते ब्रालासाही मतिमंदा॥

---

* पाठांतर—सजि।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जिनके निकट गरूर सिपाही। वे जानौ सब आलासाही ॥
लिए चारु बाजी बल पूरे। नीम बास ए हैं रन रूरे ॥
जौ यह गोल अग्ग वढ़ि ठाढ़ौ। सो सरदार बदकसी गाढ़ौ ॥
जो यह चमू फिरतिं है दौरी। सो सवार पाइक पेसौरी ॥
जहाँ सद्द ढक्का धर धरवी। ब्रजपति-नंद जानिए अरबी ॥
जो भुव स्याम घटा रहि दब सी। ठाढ़े तहाँ सुभट रन हबसी ॥
जहाँ भुसंडिनु कौ भर भारी। ते इतबारी निपट हजारी ॥
हैं जहँ लाल लाल खल कारे। नादिरसाही टोपीवारे ॥
आस पास इनके भय दानौ। रुप्यौ तोपखानौ समसानौ ॥
सब की पुट्ठि छाइ दल चंडौ। दे रन दाखिल है बलवंडौ ॥
नाम गाजदीखाँ बलवंडो। विक्रम बलित वुद्धि परचंडौ ॥
श्री सुजान सुनिकै चर-बानी। जुद्ध-बुद्धि-निहचै मन ठानी ॥
अपने सेनापती बुलाए। जंग हेत आगैं रुपवाए ॥
जोजन अर्ध अर्ज पर सैना। निरखि सूर बल थप्पि सचैंना ४॥

छंद मुक्तादाम

करे इक ओर वलू बलिराम। रुपाइय बीर दुहूँ भुज बाम ॥
हरवल वैरि चमूपति तथ्थ। थप्यौ तिनके तटही समरथ्थ ॥
रुप्यो तिहि पुट्ठ* लियैं बल घोर। चमूपति है हरिनागर जोर ॥
थप्यौ भुज दच्छिन ओर सुनाम। सुकूरमसिंह प्रताप उदाम।
जुहीं सिवसिंह कियौ बलवान। बली ब्रजसिंह रुप्यौ तिहिं थान ॥
लियै किरपा सब नाहर सैन। ठढ़ौ तिनके तट हीरन लैन ॥
सहस सवार लिए मनसूर। किए सुचँदौल सुजान गरूर ॥
कियौ हिय अग्ग सुभट्ट समाज। घमंडिय प्रोहित राज सलाज ॥
रह्यौ सबकी पुठवार सुजान। दिली दल दाबहि कान्ह प्रमान ॥
रच्यौ अध जोजन व्यूह अनीक। बजाइय दुंदुभि मारुव ठीक ॥५॥

---

* पाठांतर—पुब्ब।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छंद घनानंद

यौं थपि सिंह सुजान व्यूह अमान सकल सूर सेनाधिपति।
सद्दिय पटह निसान तूर भयान समर हेत चलि मंद गति ॥६॥
फहरत पीत निसान तड़ित समान कैं प्रताप ज्वाला लपट।
परगन इंधन जान लखि ललचान लगि उछाह मारुत झपट ॥७॥
देत कवाद कमान भरत दवान जग हेत रस बीर लहि।
करत हयंदन छंद सुभट बिलंद सेल साँग नेजान गहि ॥८॥

छप्पय

इहि बिधि दुहुँ भट पिलिय खिलिय लखि सुंभ-सँघारनि।
झटपट मनमथ-दहन गोसु तहँ लग्गिय झारनि॥
स्वान-सवार सपट्टि एक-रद तथ्थ मनाइय।
बाम-पुट्ठि-सुखदानि आनि फरमंडल छाइय॥
पल-भषन-हार पुलके गगन प्रेतपूत कुद्दिय किलकि।
सज्जिव विमान देवांगना हरषि बदन उट्ठिय चिलकि ॥९॥

दोहा

वासर के तीजे पहर साहि सुभट करि रल्ल।
जुटे आइ स्योसिंह सह लै मरहट भुज भल्ल॥१०॥

छंद पद्धरी

उत साहि सुभट मरहट सजोर। धाए भुज भल्लनु दै झकोर॥
हर हर हकार धर धर धवान। भर भर भराक इततैं दवान॥
मुख जयति देव हरिदेव सद्द। झपटैं व्रजेस बीरहु मरद॥
कड़कंत धनुष करारी कवाद। सटकंत तीर छुट्टत जवाद॥
गटकंत गड़ागड़ होत सेल। भड़कंत भुसंडी घाल मेल॥
अड़कंत दुहूँ मिस स्वामि-काम। फड़कंत तुरंगम हू महाम॥
झड़कंत झरत आयुध अनेक। खड़कंत अंग अस्तनि कितेक॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रड़कंत इक्क लगि हय चपेट। फड़कंत फरहिं भर पिट्टि पेट ॥
ठड़कंत देखि परके हयंद। धड़कंत नहीं जुट्टत सुछंद* ॥
तड़कंत तेग सिप्परनु लागि। चड़कंत अस्ति हय टाप भागि ॥
पड़कंत पड़े सेलनु अरक्कि। घड़कंत घाव श्रोनित सरक्कि ॥
तिहिं औसर गूजर सारदूल। नेजा उठाइ धाइय सफूल ॥
दिय सत्रु हिये मैं घाव घोर। पुनि काढ़ि तेग झारिय सजोर ॥
इक दबटि दक्खिनी ने उताल। किय गुलफ घाव नेजा दुसाल ॥
तहँ सेनपती स्यौसिंह धाइ। हय हंक सेल मेलिय घुमाइ ॥
ज्यौं छुधित बाज लखि गन कुलंग। चुंगल चपेट कर देत भंग† ॥
छुर इक्क दोइ हाथर-चलाइ। पर लथ्थ पथ्थ दीने गिराइ‡ ॥
तहँ एक दक्खिनी दग बचाइ। दिय जंघ माँझ भाला घुमाइ ॥
स्यौसिंह भयौ सौ सिंह रूप। हनि साहि सुभट मृग से अनूप ॥
हुव लाल लाल बसुधा कराल। श्रौनित्त जाल ज्यौं कोह ज्वाल ॥
जहँ सेल साँग समसेर ढाल। बंदूक बान जंजाल जाल ॥
गहि गहि सुजान भट चंड चाल। दिय घोर मार दिय लोह झाल ॥
मुख मारु मारु कै झरत सार। बिकरार भगे दखिनी अपार ॥
रव बिजय पाइ स्यौसिंह बीर। घाइल सुमार फर रुपिय धीर॥११॥

दोहा

विचल पाइ दखिनी निरषि कस्यौ सुदखनिनु जोर।
नीव बाँस सब संग लै परे घमंडी ओर ॥१२॥

छंद भुजंगी

बजी चारिहू ओर तैं टापबाजी। मनौं मेह आसाढ़ की बुंद गाजी ॥
पुकारैं दुहूँ ओर के बीर हाँ हाँ। करी भौंह बाँकी चढ़ाई सु बाँहाँ ॥
छुटी बान कम्मान दम्मान भारी। किहूँ भाल भाले बरच्छी सँभारी ॥

---

* पाठांतर—धड़कंत नहीं रव छंद हंद। † पाठांतर—चुंग।
‡ पाठांतर—पर लथ्थ पथ्थ हो सों स्ववाइ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इतै जट्ट जुट्टे उतै साहि-सैना। भिले जुद्ध कौं उद्ध कैं क्रुद्ध नैना ॥
कहूँ चाप टंकार हंकार पारी। कहूँ धूक बंदूक मैं ज्वाल भारी ॥
कहूँ लैस कत्ती धरत्ती घुमाई। कहूँ सैल की रेल हथ्थौं चलाई ॥
तहाँ आपने आपने हथ्थ किन्ने। तिन्हैं देखिकैं अंबरी मोद भिन्ने ॥
टुटे सार सन्नाह झन्नाहटे सौं। परैं छूटिकैं भूमि खन्नाहटे सौं ॥
भुसंडीनु फुट्टे मही पिट्टि लुट्टे। छुरौं खाइ हुट्टे सरौं फेरि जुट्टे ॥
किते रत्त मत्ते उमत्ते घुमत्ते। तुरत्ते उठे फेरि लै हथ्थ कत्ते ॥
लरत्ते परत्ते बदक्सी उमंडे। दिसा पुब्ब के से जलद्दा घुमंडे ॥
लखैं यौं बदक्सी चमू माहिं पैठे। धए सूर सूरज्ज सब्बै इकैठे ॥
तहाँ यौं घमंडी गहैं सैल धायौ। मनौ द्रौन को पुत्त है छोह छायौ ॥
किधौं पूत जमदग्नि की जंग रुट्ठ्यौ। बदक्सी सहसबाहु पै घाउ बुठ्ठ्यौ ॥
हनैं सैल सौं जाहि भू मैं पटक्कै। सहसबाहु की सी भुजा लै कटक्कै ॥
लखैं त्यौं बदक्सी भरे जी अचंभे। लिखे चित्र के से रहे थान थंभे ॥
हुती एक पैं त्यार बंदूक त्यौंही। दई फूँक कैं धूक मुठभेर ज्यौंही ॥
लगी आन नैंजाब औ जीभ खंडी। धुक्यौं बाजि तैं त्यौं धरा पै घमंडी ॥
गिर्यौ देखिकै शत्रु सब्बैं सपट्टे। लिए आपने आपने सस्त्र कट्टे ॥
पलक लागतैं बाजि चढ्ढ्यो घमंडी। ललक्कारिकैं तेग की जंग मंडी ॥
रंग्यौ रत्त सूँ हथ्थ समसेर सोहै। मनौ देह धारैं रसैं जान कोहै ॥
फुटैं जावकैं जीभ यौं कढ्ढि आई। तहाँ देव नरसिंह की मोह पाई ॥
गहे तेग नंगी करी जंग चंगी। हनी साहि की सैन यौं श्रौन रंगी ॥
तहाँ नंद बदनेस कै दृष्टि दीनी। उदैभान की सी प्रभा अंग भीनी ॥
तुरी तेज कैसैं हथी हथ्थ लिन्नी। हियैं देव हरिदेव की याद किन्नी ॥
मृगांधीस जैसें करी जूह दट्टे। षगाधीस ज्यौं व्याल जालै झपट्टे ॥ १३ ॥

छंद त्रिभंगी

झपट्यौ करि हल्लनि लै भट भल्लनि अरि दल मल्लनि समुहायौ।
जित प्रोहित जुट्टयौ गोली फुट्ट्यौ श्रौनित छुट्ट्यौ दरसायौ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सर साँगनु बुट्ट्यौ सेलनु तुट्ट्यौ घन सम उट्ठ्यौ बरसायौ।
धुनि धीर धमंकनि तेग भ्रमंकनि बिज्जु चमंकनि सरसायौ ॥१४॥
सरसायौ जुद्धै बढ्ढि बिरुद्धै अहिधर कुद्धै ज्यौं रन मैं।
तिरसूल सकत्ती रत्तनि रत्ती ज्वाल भ्ररत्ती अरि-गन मैं॥
करि खंडनि खंडे यमनि उदंडे धरनि बिहंडे परचंडे।
बहु रुंडनि मुंडनि डुंडनि भुंडनि श्रोनित कुंडनि फरमंडे ॥१५॥
फरमंडे हथ्थौं लथ्थक पथ्थौं लुथ्थिनु जुथ्थौं काटि करे।
घन घाइ भभक्कत सेलह बक्कत कोइ दबक्कत जात टरे॥
बहु सस्त्रन बाहत कोह कराहत फिर फिर चाहत भूमि परे।
दे दे रव रट्टिय झट्टकपट्टिय डट्टिय कट्टिय भूमि भरे ॥१६॥
भरि बथ्थनि पटके दै दै झटके हय तैं पटके श्रौन झरे।
अस्तिनु के चटके टापनु बटके अंतनि अटके जाइ परे॥
केते घट घटके आयुध कटके केते सटके संक भरे।
तिहिं सूरज बंका दै रन हंका करि अरि फंका दूरि करे ॥१७॥

दोहा

कटे फटे निबटे हटे लखे साह दल जंग।
फते पाइ सूरजबली लख्यौ सुप्रोहित अंग ॥१८॥

कवित्त

द्रोन अघवाई द्रोनी कृप अँचवाई खवाई
सोई तैं जगाइकैं बुझाई प्यास चंडी की।
ताही खेत प्रेतनु पलाकैं भट पीठिनु के
मुंडनु के बाट हाट आमिष उदंडी की॥
सूदन दिलीस दल चाहिकैं समर गाहि
साहि की प्रतापानल खग्ग जल ठंडी की।
लागिक भुसुंडी जीभ जाव जुग खंडी तऊ
छंडी है न जंग भंडी कित्ति यौं घमंडी की ॥ १६ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सोरठा

प्रोहित लख्यौ सुमारु हय पै सिंह सुजान नैं।
ज्यौं तनु लहै करारु त्यौं तुम कौं मैं लै चलौं ॥ २० ॥
कछू भूमि चहि बाजि कछू खाट कछु पालकी।
लै प्रोहित व्रजराज दाखिल निज डेरनु भयौ ॥ २१ ॥

कवित्त

पाई गननाइक सौं तैंही गननाइकता
त्यौं ही दिगपाल दिगपालता प्रतीति की।
तेज पायौ रवि तैं मजेज सतमष पास
अवनी कौ भोगियौ अधिक नाथ नीति की ॥
सीलताई ससि तैं पवित्रताई पावक तैं
लाज पाई सिंधु तैं सुनीति वेद रीति की।
सूदन अभीत सर्वज्ञता सुबुद्धि सूजा
दीनी जगदीस बिधि तोही जंग जीति की ॥२२॥

छंद समानिका

बीति गे कछू दिना। जंग के किए बिना ॥
एक घोस भोरहीं। दै निसान घोरहीं ॥
ह्वै सवार तथ्थ ही। लै अभीर सथ्थ ही ॥
सो वजीर आइयौ। मंत्र कौं उपाइयौ ॥
श्रीसुजान पास कौं। कूच के प्रकास कौं ॥
थापि मंत्र ता घरी। कूच की हियें धरी ॥
तब्ब ही पयान कै। ईति भीति मान कै ॥२३॥

तुंग छंद

उठत प्रबल सैना। कहत सुथल लैना ॥
मनहुँ जलद धाए। उमड़ि घुमड़ि आए ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हय गय रथ प्यादे। सुतर सुभर लादे ॥
गगन घन पताका। बहु बरन बलाका ॥
धम धमत दमामैं। पटह बजत आमैं ॥२४॥

छंद मनहरण

पयान कस्यौ मनसूर सुजान निसान धुजाननु पैयतु पार।
बिचार हियैं यह खेतहिं देत कढ़ै मुदई कहुँ भूमि अगार ॥
तजी तिलपत्ति बजी तुरही सुरजी सब सैन बजावत सार।
दियैं गढ़ बल्लम कौं पुठवार किए भट भीरनु थान अपार ॥२५॥

छंद मदनहरा

सो खबरि पाइ पोता निजाम कौ
अब वजीर मनसूर टस्यौ
उत कूच कस्यौ।
तबही सजाइ सादल नजीबखाँ
सकल अराबौ अग्ग धस्यौ
यह हुकम कस्यौ।
तुम हरवल चलौ मीर बकसी लै
आज बदरपुर जाइ परौ
रन फजर करौ।
मुझ कौं भी पास जानियौ अपने
निमक साह का दिलहिं धरौ
खतरा न डरौ* ॥२६॥
वे आइसु पाइ गाजदीखाँ कौं
सब अमीर भलभलहिं रढ़े
हिय हरषि बढ़े।

---

* पाठांतर—करौ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सादल नजीब महमूद आखबत
जैता गूजर सहित कढ़े
रव जुद्ध पढ़े ॥
सब नीमवास दखिनी पैसौरी
संग भीर बकसीहिं चढ़े
तन तेह उढ़े ।
दै दिग्घ निसान वान बहु गोमुख
तूर बाँकिया सद्द बढ़े
भुव गगन मढ़े ॥२७॥

दोहा

हुकुम गाजदींखान कौ सब अमीर धरि सीस ।
बड़ौ अरावौ अग्ग धरि हय सहस्र चढ़ि बीस ॥२८॥
साह जहानाबाद तें द्वै जोजन भुव बढ्ढि ।
सब डेरनु चौकस करिय फेरि जुद्ध कौं चढ्ढि ॥२९॥

छंद चर्चरी

सो सुनै मनसूर सूरज सूर बीरनु सज्जियं ।
वज्जियं बहु दीह दुंदुभि व्यौम भूमहिं गज्जियं ॥
ह्वै सवार न बार लग्गि रग्गि वग्गिय सायुधं ।
दै धवान जवान धाइय धुंध छाइय वायुधं ॥३०॥
बाजि कै गजराज पाइक संधि साइक चल्लियं ।
कोस चारि धरा लई भट जुद्ध कुद्धहि रल्लियं ॥
ह्वै हरौल सुजान बढ्ढिय सब्ब सूरनु संग लै ।
आस पास वजीर रुप्पिय जंग हेतु उमंग लै ॥३१॥
तत्थही छन हत्थ आयुध सथ्थि सो बलिराम है ।
गथ्थ सौं सुखरामसिंह प्रताप कूरम नामु है ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जथ्थ जोरि बलू बली बलवंड सूर कटारिया।
हत्थ साँग सम्हारि लछुमनदास पाखर रारिया ॥३२॥
विप्र मोहन रुप्पियौ हरिनागरौ भट जूद लै।
मेदसिंह सिखावतौ* हरिवल्ल वैरि समूह लै॥
है बली व्रजसिंह किरपाराम नाहर को ममाँ।
दव्वि भूमि खड़े भए लगि हौन जंग झमीझमाँ ॥३३॥

छप्पय

तावल तैं कढ्ढिय अमान चढ्ढिय हयंद वर।
बढ्ढिय रस रढ्ढिय सुवीर हरिदेव नामगर॥
पढ्ढिय रन मढ्ढिय सुलोह डढ्ढिय अनीक पर।
डढ्ढिय दग गढ्ढिय भुजान लढ्ढिय कमान कर॥
धरि मुच्छ हथ्थ बड़ हथ्थ नर सथ्थ सहित सनमुष भइय।
अरिसाल सु वैरीसालसुत मुहकमपन मुहकम भइय ॥३४॥

छंद कंद

कढ्यौ सूर सैन तैं सूर ता वार।
अभिमन्यु ज्यौं जुद्ध कौं कुद्ध लै सार॥
मति गान के जुद्ध तैं बढ्ढि मातंग।
गनै नाहिं काहू घनै कै हनैं अंग॥
रुक्यौ नाहिं रोक्यौ धुक्यौ सामहैं जुद्ध†।
चमू कंदरा तैं मृगाधीस ज्यौं क्रुद्ध॥
कियौ तेज बाजी उमंगैं भर्यौ अंग।
महासूर के लच्छनै अच्छ लै रंग॥
गहै सेल समसेर समसेर ह्वै बीर।
लखी साहि सेना झखी ना लही धीर॥

---

* पाठांतर—सिखावतो
† पाठांतर—युद्ध।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

लख्यौ दीह दिल्ली दलौं ने बढ्यौ खेत।
कह्यौ कौन है कौन है रेफ ते लेत॥
सवाधान ह्वै कैं सतौं बीर दै हाँक।
कढ़े साहि की बाहनी तैं भरे साँक* ॥
रटे लेउ रे लेउ पावै नहीं जान।
हटे फेर संकै करैगो धनौ घान॥
बिलोकैं बकैं आपुसों मैं भरे भीर।
नहीं जाउ रे या बलौ कैं कहूँ तीर॥
तबै तोरु गोलीनु की चोट संभारि॥
सबै ठौर ठाढ़े रहे रोपियौ रारि॥
जबै सत्रु देखे बढ़े आपनी ओर।
तबै रोस कै रंग मैं आप कौं बोर॥
मुहक्कम्मह्र है मुहक्कम्म ता बार।
तहीं चित्त चित्यौ यही सार संसार॥
हियैं स्वामि के काम की बानि कौं आन।
मुखै देव हरदेव हरिदेव को गान॥
घुमाए सहथ्थी चल्यौ गोल पै धाइ।
उदंडी भुसंडी छुरी बीच ही काइ॥
लगैं मर्म गोली गिर्‌यौ भूमि गन्नाइ।
तिहीं बार सथ्थी गए भाज ज्यौं बाइ॥
निहार्‌यौ महीपैं कही सत्रु ता बेर।
मर्‌यौ रे मर्‌यौ रे लहौ सीस कौं घेर॥
सुनै सद्द कौं धाइयौं सूर के सूर।
उतै साहि-सैना सपट्टी मतौ हूर॥

---

* पाठांतर—बाँक।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हुते दूरि ए वे सुनीरे गए आइ।
परे पै करैं सींग समसेर के घाइ॥
लटक्कैं धरा तैं कटक्कैं लयौ सीस।
पख्यौ ईस के हार मैं सो बिसे बीस॥
तहाँ बीर बलिराम आयौ गहे रीस।
महा छोह सौं ओठ दंतौं गए पीस॥
चले सीस सो काटि तेई लए दीस।
गही सेल साँगैं दई बीस कैं तीस॥
कुटे हू फुटे हू बुटे साहि के लोग।
लियैं सीस पैठे चमू आपनी जोग॥
लख्यो खेत खाली सुबलिरामहू चाहि।
नहीं या चमू सौं चमू मैं धख्यो जाहि॥
बिचाख्यौ सही जुद्ध कौं चित्त के माँझ।
हटी साहि की सैन भू पैं भई साँझ॥
मुहक्कम्म की ल्हास लै आइयौ तब्ब।
धस्यौ आपनी फौज मैं सो बिना गब्ब॥ ३५॥

कवित्त

एक दस सौक मैं न सहस अयुत बीच
लच्छ दस कोट मैं न काहू नर दम है।
साहस सगूह सूरबीरन कौ साहीदार
सनमुख धायौ कहा कलिहू मैं कम है।
सूदन समर साहि सैन तृन तूल गनी
हनी देह गोलिन न खाई खेत खम है।
तन मन धन रन ऐसै मुहकम होइ
जैसौ बैरीसाल-सुत जूझयौ मुहकम है॥ ३६॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सोरठा

यह सुनि सिंह सुजान निरखि साँझ मन मौन गहि ।
सहित वजीर अमान दाखिल निजु डेरनु भए ॥ ३७ ॥

हरिगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस-नंद सुजान हैं ।
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महा कलिकान हैं ॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइ कैं ।
रनजित्ति एक सुवित्ति मुहकम अंक पंचम पाइकैं ॥ ३८ ॥

इति पंचम अंक ।

छंद पावकुलक

पुनि गाजद्दीं खान चिंतियौ चित्त मैं ।
माधौसिंह बुलाइ करौं निज हित्त मैं ॥
आपा और मलार बेग बुलवाइयै ।
आपुन हो पुठवार इन्हैं उरझाइयै ॥ १ ॥
तब फरमान लिखाइ बहुत इलकाब दै ।
भाईपनो जताइ तेग सिरपाव दै ॥
अकबर मान समान आप दिल मानियौ ।
इसू बख्त सैं सख्त और नहिं जानियौ ॥ २ ॥
हस्त रोज के बीच दस्त करि आवना ।
दस्त आपके पस्त हरीफ करावना ॥
यौं फरमान लिखाइ डाक चलवाइकैं ।
माधौसिंहहिं पास दयौ पठवाइकैं ॥ ३ ॥

दोहा

फेरि दक्खिनिनु कौं लिख्यौ आपु गाजदीं खान ।
सूरज औ मनसूर मिलि किया तख्त कलकान ॥४॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जद सै किबलेगाह कौं संग लै गए आप।
तद सै इन्हौं मुखालफी हम सैं रक्खी थाप ॥५॥
अवधि आमरा साहि नै तुमकौं दियौ बताइ।
नगद खर्च जो फौज का चामिल लैना आइ ॥६॥
एक चाँद के अंदरौं तुमैं आवना रास॥
यह लिखि सुतर-सवार कौं भेज्यौ दखिनिनु पास ॥७॥

छंद सुमुखी

पुनि दल सज्जिय घोर घनौ। पटह गरज्जिय मेघ मनौ॥
फहरत हैं सित स्याम धुजा। अरुन हरीत सुनील दुजा॥
चढ़त चमू चतुरंग महा। उड़ि रज अंबर भान गहा॥
सहित अरावहिं कूच कियौ। तवहिं फरीदहिबाद लियौ ॥८॥

छंद खंधा

साहि सुभट धरि अग्ग अरावौ आनि फरीदाबादहिं छाए।
सूरज सफदरजंग तुरंगन भेजि सवार अधिक अकुलाए॥
या बिधि बीति गए बहु बासर हय गय सुतुर घने हनि लाए।
वेऊ जबरजंग गहि ओटनु चोटनु देत कोस भुव आए॥
तौ लौं अंतरबेद जवत करि गंगा न्हाइ हुकुम पितु पायौ।
रविजा-दरस परसु बृंदावन सूरज पास जवाहर आयौ॥
सो सुनिकैं मनरसूर मुदित ह्वै फेरि समर कौ मत ठहरायौ।
हिम्मति बढ़ति सुभट कौं रन मैं ज्यौं हुकमी आयुध कर आयौ ॥९॥

छंद मोदक

सूरजहू अपने चित सोचत। जंग बिना चित सोच न मोचत॥
माधव औ दखिनी जब आवहिं। तौ इन सौं नहिं जंग रचावहिं॥
जौ लग वे नहिं आवन पावत। तौ लौं साहस एक उपावत॥
एक झपट्ट करौं बिनु संकहिं। लै मनसूर हजूर सुबंकहिं॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तोपनु ओट करैं बहु चोटनु। ते असि साँग हनौं अरि मोटनु ॥
यौं निहचौ करिकैं अपने मन। बोलि नवाब कह्यौ रन कौ पन ॥१०॥

छंद बैतवै

सजे सब सैन कौं यारौ तहाँ मनसूर आया है।
कहौ क्या है बहादुर दिल सुजा नै यौं सुनाया है ॥
नहीं बद नेक कौं जानौं मुझे तौ दस्त साया है।
भला जो होइ सो करना खुदा नै तो बताया है ॥
तबै मनसूर सौं सूजा दुहूँ कर जोरिकैं भाखी।
हुकुम जो आपकौं पाऊँ सही करि जंग मैं राखी ॥
रहौ पुठवार पै ठाढ़े सु मुदई को डरावे कौं।
उठायें आज मैं बागैं निहारूँगा अरावे कौं ॥
भए षट मास संगर को घने भट फेरियौ याने।
बिलोकैं ताहि क्यों रहियै हियौ उनमान ना मानै ॥
सुनी मनसूर ए बातैं कही तौ देर क्या करना।
कहौ जिस वोर सैं मुझकौं नहीं टरना सही लरना ॥
यही ठहराइकैं दोऊ जवाहिर सौं जताया है।
रहौ पुठवार सैं मुहकम तुमैं हम यौं बुलाया है ॥
रहौ चंदौल तुम गाढ़े करैं हम जंग तो आगैं।
तुमारे चारिहु बकसी उठावैं संग ही बागैं ॥
निसा इस ठौर सैं खातर वजीरै यौं सुनाया है।
तुमारे लोग बागौं सैं हमैं इतकाद आया है ॥११॥

छंद आभीर

यह सुनि सूरज-पूत। अति रन पन मजबूत ॥
बोल्यौ बुद्धिनिधान। हाथ जोरि मुख बानि ॥
आपु करी बहु जंग। मैं जब न्हायौ गंग ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अब रहियै पुठवार। मोहि बतैयै रार ॥
कीजै अरज कबूल। जो चित चाहत फूल ॥१२॥

कवित्त

पूत मजबूत बानी सुनिकैं सुजान मानी
सोई बात जानी जासौं उर में छमा रहै।
जुद्ध-रीति जानौ मत भारत को मानौ
जैसौ होइ पुठवार तातें ऊन अगमा रहै।
वाम ओर दच्छिन समान बलवान जान
कहत पुरान लोक-रीति यौं रमा रहै।
लाल जू समर घर दोउन की एकै विधि
घर में जमा रहै तौ खातर जमा रहै ॥१३॥

दोहा

मरजी पाइ सुजान की सिंह जवाहर वीर।
हुकुम मानिकैं बाप कौ भयौ चँदौल गँभीर ॥१४॥
भर्तसिंह अरु लाल जी राजा गूजर तत्थ।
सूरति सेना-जुत करे सदाराम के सत्थ ॥१५॥

छंद तोमर

तबही सुजान अमान। उठि जुद्ध कौं बलवान ॥
किय बाम ओर वजीर। तिहि संग सैन गँभीर ॥
पठयौ सुदच्छिन ओर। करि सदाराम सजोर ॥
पुनि बोलि सिंहप्रतापु। यह कह्यौ सूरज आपु ॥
धसि सामुहैं बड़हत्थ। तुव निकट सिंह भरत्थ ॥
तिहिं पुब्ब बल्लू बीर। थपियौ सुजान सुधीर ॥
बलिराम सूरतिराम। सुखराम तोफाराम ॥
पुनि जैत सेवा पूत। अरु पाखरा मजबूत ॥
जैकृष्ण मनसाराम। वह स्यामसिंह सुनाम ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

किसनेस पुहपा बीर। सजि सैन चढ्ढिय धीर॥
किरपा सुलछमन दास। हरिसुक्ख मोहन पास॥
हरि नागरौ द्विज जोर। हरिबल कियौ इक ओर॥
फतेसिंह ऊधम नंद। ब्रजसिंह बुद्धि बिलंद॥
बहु और सूर समूह। रन-काज चढ्ढिय जूह॥ १६॥

छप्पय

अखैसिंह अमनैत वीर वर हरिनाराइन।
कुसल पूत मजबूत तथ्थ सूरति रन चाइन॥
देवीसिंह कुँवार और बहु जट्ट ठट्ट गनि।
चारि वर्न असि धर्म सबै सरदार सार भनि॥
दिन भाग चतुर्थम के समैं उर उछाह सुभटन बढ़िय*।
सूरज समान सूरज बली समर-काज हय पर चढ़िय॥ १७॥

गगनंगन छंद

ठंडन दुविन बिहंडन मंडन किय बलबंड है।
दंडन धरिय उदंडन सक्ति डंड परचंड है॥
खंडन चहत बितुंडन कटि बंधिय किरवान है।
संकर मनहुँ भयंकर चढ्ढिय सिंह सुजान है॥ १८॥

कुंडलिया

चढ्ढिय जब सूरज बली वढ्ढिय भूरि गरद्द।
मढ्ढिय अवनि अकास उड़ि रढ्ढिय निज मुख सद्द॥
रढ्ढिय निज मुख सद्द आजु सब मो मत किज्जिय।
अनहौनी नहिं होइ तोपखानो अस दिज्जिय॥
दिज्जिय अरिहिं न जान मास षट की रिस कढ्ढिय।
यों कहिकैं तिहिं बार जंग हित सूरज चढ्ढिय॥ १६॥

---

* पाठांतर—मढ़िय

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कवित्त

भूतनु सहित भूतनाथ मजबूत भए
पूतनु जगायौ सुनि चंडिका अवास मैं।
चरवी चरैयनु कैं घरवी रह्यौ न कोई
धरवी अधरवी घुमानै भूष प्यास मैं।
वीर बाम बिहँसि बिहँसि कैं बिमान चढ़ीं
हरि मन हरषि बजायौ बीन हास मैं।
जा समैं समर-काज पास मैं सुनायौ सूर
वा समैं अनंत मोद बाढ़्यौ भू अकास मैं ॥ २० ॥

छंद पद्धरी

जब्बै सुजान किन्नो पयान । सब्बै सुभट्ट दै दै निसान ॥
ज्यौं भीम भीम भारथ रिसान । तुरकान कौरवन करन घान ॥
आवज अनेक बज्जैं भयान । अति उद्ध पताका फरहरान ॥
हहनंत हुब्ब हंकत किकान । ठहनंत टाप लग्गत पषान ॥
ठहनंत ढाल ढक्कनि ढलान । खहनंत कवच धावत धवान ॥
छुहनंत जंग हय घूघरान । झहनंत जिरह लग्गइ पमान ॥
टहनंत सिप्परनु लगि कृपान । भहनंत भूरि भेरी भयान ॥
सहनंत सेल सरसर सरान । फहनंत प्रबल पाइक अमान ॥
ढहनंत छोनि छूवत छवान । घहनंत घंट गजगति गरान ॥
दहनंत दाव जिमि दिष्टि आन । धहनंत धिग धूमनु धवान ॥
करि लावदार दीरघ दवान । गहि सेल साँग हुव सावधान ॥
केतेक धीर संधी कमान । केतेन तेग राखी भुजान ॥
गुन गाइक किय वीरनु बखान । सैंधू सुर पूरिय तिहीं थान ॥
सुनि सूर-बदन जिम उअौ भान । हुव मुच्छ केस मुख सिंह-मान ॥
मुख देव देव हरदेव आन । हिय स्वामि-काम पन किय जवान ॥
तहँ सदाराम सब सहित पान । बिय भर्तसिंह अरि-दुःखदान ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कूरम प्रताप बलिराम जान। सूरत कटारिआ उर छुहान॥
हरिनाराइन रन चंडवान। लछिमन पाखरिया किय उठान॥
ए सब सुभट्ट झपटे हलान। समुहान दिष्ट करि तोपखान॥
घमसान हेत बड्ढे गुमान। आयुध अनेक अवसान आन॥
यह घोर कुलाहल तुरक कान। परियो अचान रिस झलझलान॥
जे तोपखान के पासबान। बहु मुगल सेख सैयद पठान॥
जे रुपे तोपखाने सयान। तिन लोह जंत्र झारिय कसान॥
जज्जाल भुसंडी रहकलान। हथनाल घोर घुरनाल तान॥
लँबछूर अनेक पल भष बचान। जहँ अप्रमान कुहके सुबान॥
तहँ जबरजंग गज्जिय गरान। ते लगि कसान झर झर झरान॥
कहुँ सरसरान कहुँ फरफरान। इमि सलक होति धर धरधरान॥
बन अचल अचानक अरअरान। वह प्रबल धूम चढ़ि आसमान॥
तिहँ कीन और उपमान आन। मनु विंध्यअचल पाइय पषान॥
मुनि-भीति चलिय उठि रतन-सान। कैसे सस्वास पावक प्रमान॥
गल के समान गोला बगान। फुंकार सद्द कलकान कान॥
इत जट्ट ठट्ट झपटे भिलान। हुअ गोल गोल बीचहिं मिलान॥
तिन कियौ सुभट बहु कचरघान। तउ सूर सूर नहिं बिलबिलान॥२१॥

छंद नाराच

कितेक टुट्टि सीस चुट्टि ग्रीव फुट्टि टुट्टियं।
कितेक खुट्टि पीठ पेट खेत माहिं लुट्टियं॥
कहूँक रुंड मुंड डुंड झुंड पाइ उड्डियं।
समेत बाहु डंड ढाल उड्डि जेम गुड्डियं॥
कहूँ कवाल अंतजाल लोह झाल बुड्डियं।
कहूँ कपाल बाल जाल व्याल रूप छुड्डियं॥
कितेक बच्छ फूटि अच्छ कच्छ तच्छ गच्छियं।
कितेक लच्छ टूक ह्वै उड़ेत जेम पच्छियं॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कितेक ख्याल ख्यालही कराल काल भच्छियं ।
कितेक फरफरंत रत्त नीर जेमि मच्छियं ॥
वरष्षि गोल गोलियं हरष्षि साहि के भटं ।
धरष्षि सूर सैन कौं कस्यौ ति भेष ज्यौं नटं ॥
तहाँ उदाम काम कौ सदासुराम रुट्ठियं ।
महाउताल उट्ठियं गहैं कवाल मुट्ठियं ॥
छुटी दवान अंधधुंध धुंधमाक धुंकरं ।
मनौ मलिंदयाचलै फनिंद ब्रंद फुंकरं ॥
इतै उतै धमाधमी भई जु सार छार की ।
वृषादि भान की समीर छार अंधकार की ॥
तहाँ सदासुराम कैं दवान घोर लग्गियं ।
फुटी सुबाख पिट्ठिहू तऊ न बीर बग्गियं ॥
सुमार चोट खाइकैं दिवान खेत खग्गियं ।
अपार गोल चाल मैं चमू बिहाल दग्गियं ॥
छुते फटे बटे कटे हटे कितेक तारनं ।
बिलोकि श्रीसुजान नै थप्यौ सँघार कारनं ॥
हथौं सँभारि सैं हथी पसारि दिष्ठि कोह की ।
जहाँ खरी परै झरी असार गोल लोह की ॥
हयंद हक्कि अग्गियं भयंद भेष धारियं ।
मनौ षड़ाननै चल्यौ क्रवंच पै सम्हारियं ॥
धमंकि धिंग धाइयौ खमंकि बाजि उद्ध कौं ।
मनौं दवागि पान कौं कस्यौं सुकान्ह कुद्ध कौं ॥
उठाय बाग उप्पस्यौ सुबिप्फस्यौ फराक मैं ।
महा अराक अड्डियौ धमाँक धुंधराक मैं ॥
तहाँ धरा धरी करी भराभरी भरब्भरं ।
झराझरी झराझरी खराखरी खरब्भरं ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धस्यौ असारु मारु मैं कुमार श्रीव्रजेस कौ।
घटा गुबार में भयौ प्रवेस ज्यौं दिनेस कौ ॥२२॥

छप्पय

उहिं औसर सुखराम मान दीवान-तनय बर।
हय झपट्टि हुअ अग्ग सिंह सम जहँ सुजान नर॥
कह्यौ तत्थ यह बचन महाराजा-कुँवार सुनि।
उग्ग दुग्ग रचि चार कहा यों ही मरियै भुनि॥
उत काठ लोह कैं अगनि झर इन मनुष्य-संहार हुव।
बिनि दिट्ठि सत्रु आए करत नहिं साहस यह कुमति तुव॥२३॥
लखि बोल्यौ नृप-कुँवर झलझलत झाल सुसाँगहि।
कै मुहि दै रन जान नाहिं अब हनतु तोहि रहि॥
पुनि भाषिय सुखराम काम लाइक भल किज्जहि।
मोहि मारि जब भग्ग पग्ग अग्गौं जब दिज्जहि॥
सब देस दुग्ग दीरघ पिता सुत सोदर तुम मुख चहत।
दौं दाव कीट ज्यौं परत क्यौं निजु स्वारथ हमहूँ कहत ॥२४॥

छंद भुजंगी

तहाँ बोलियौ रोसकैं फेरि सूजा। अरे सामुहैं त परै क्यौं न तू जा॥
जुरैं जुद्ध के दुग्ग औ देस कैसौ। कहा बाप बेटा सु भैया अनैसौ॥
जुहै दार सौं कोस सौं देह नातौ। बँध्यौ नेह मनसूर सौं सो कहाँ तौ॥
बिना ताहि देखैं नहीं बाग मोरौं। कितौ तोपखानैं तजौं देह तोरौं॥
तिहीं काल बेहाल उत्ताल आयौ। हस्यौ खेत इसमाइलौ संक छायौ॥
लखै जाई सूजा खरौई रिसायौ। कह्यो धिक्कु रे धिक्कु तू भाजि आयौ॥
गहैं संग मनसूर तोसे कपूतैं। लहै जित्ति कैसें सबै साथ धूतैं॥
भख्यौ भीति सौं वाँ कछूवैं सुन्यौ ना। गयो भाजिकैं नैन पाछैं कख्यौ ना॥
तहीं खेत मैं पाखरौमल्ल आयौ। लख्यो सिंह सूजा महा छोह छायौ॥
तबै पाखरा बुद्धि जी मैं बिचारी। अड़्यौ जंग सूजा तहाँ यौं उचारी॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चलौ साथ मेरे वजीरै दिखाऊँ। कितौ तोपखानै फते लै कराऊँ॥
इती बानि सूजा सुनै बाजि हंक्यौ। चल्यौ पाखरा संगही है असंक्यौ॥
दई घोर अंध्यार मैं घोर धाई। कभूँ सामुहैं दाहिनै बाम धाई॥
घरी अद्ध मैं लै वजीरै दिखायौ। लिखै सूर मनसूर हू जोव पायौ॥
कही आफरीं आफरीं सिंह सूजा। नहीं हिंद हिंदू सरी तोहि दूजा॥
तहाँ नंद बदनेस कै फेरि भार्षा। लखौ जंग मेरी रहौ पुट्टि साषो॥२५

छंद पद्धरी

सुनकैं सुजान वचननु वजीर। कहियौ हजार रहमति सुबीर॥
तुझकौं न दोस मेरा कलाम। नहिं जंग काम हुइ निसा साम॥
इस बख़्त सख़्त तैं की जु मार। सबही सिपाह हुई सुमार॥
तिसका सुमार करना जरूर। अब अवस जंग करना गरूर॥
नहिं आफताब की रही जोत। अपना न गैर मालूम होत॥
खुसबख़्त मुझे करना जु तोहि। तौ डेरनु दाखिल करौ मोहि॥
अब बड़ी फजर जो हौंनहार। रब की रजा सु करना विचार॥
सूरज समझायौ यौं वजीर। पुनि डेरनु लायौ धीर धीर॥२६॥

दोहा

यौं तोपनु की जंग मैं सूरज कियौ अवाद।
ज्यौं होरी झर बीच तैं हरि राख्यो प्रहलाद॥२७॥

छंद त्रोटक

पुनि भोर भयैं बहु तोप दगीं। इत उत्त धमाधम हौंन लगीं॥
छिपि भान गयौ निस फेर भई। दुहुँ ओर झरी झर लोहमई॥
पुनि ऊगत सूर मरथ्थ गयौ। उनि साहि कही रहि जाय लयौ॥
गज ग्यारह ऊँट तुरंग घनै। हनि लावत भौ मजबूत मनै॥
पुनि कीनिय दौर दिलीस दलं। गढ़ बल्लभ पूरब ओर भलं॥
दस खेत प्रमान रहे जबही। बलिरामहिं सूर कह्यौ तबही॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चढ़ि जाइ इन्हैं दबटाइ अरे। बढ़ि आवतु हैं चहुँ ओर खरे॥
यह आयसु सिंह सुजान दियं। उठियौ बलिराम हरषि हियं॥
असवार भयौ गढ़तैं कढ़ियं। जिमि सिंह छवाबन तैं बढ़ियं॥
तब छतरसाल संतोष हुवौ। अरु रामबली असवार हुवौ॥
पुनि जोधहु सिंह सवार हुवं। गढ़ बैरि रहा तिहिं अग्ग हुवं॥
अरु पाथरहू लछिमन्न महा। हय हंकि धमंकिय जोर गहा॥
सत अर्ध सवारनु लै दबर्‌यौ। झपर्‌यौ अति साहि दलै लवर्‌यौ॥
बस पाँच बँदूक तहाँ धमकीं। पुनि साँग कि सेल असै झमकीं॥
उतहू सरदार महा मनकौ। किय आनि असीलनु कौ झनकौ॥
इततैं बलिराम उठाइ हयं। कर सेल घुमाइ हरीफ हयं॥
उनहूँ असि झारिय रोस सनं। बिचही गहि काटिय सेल रनं॥
लखि जोधहुसिंह उठाइ परं। हिय सेल हवक्किय मीर मरं॥
हय तैं सुगिर्‌यौ वह भुम्मि भरं। बलिराम दई एक तेग गरं॥
हनि तासु सिरै बलिराम बली। तिहिं सैंनहिं धाइय देतु झली॥
सबही भट चोटनु देत भए। अपने अपने अरि बाँट लए॥
मरते परते भट साहि भजे। रन पाइ बिजय भट सूर गजे॥
बलिराम फिर्‌यौ ढिग सूरज कौं। सुबजाय बिजय रन तूरज कौं॥२८॥

दोहा

कछुक द्यौस बीते तहाँ आयौ माधव भूप।
दस हजार असवार की साजे सैन अनूप॥२९॥
प्रथम गाजदीखाँ मिल्यौ पुनि मनसूर सुजान।
मधुकर ने समझाइकैं मनौ संधि कौ ठान॥३०॥
तुम हम सेवक साहि के हुकम बजावनहार।
आपुस के अहँकार सौं होतु दिली-संहार॥३१॥
या कहिकैं आमेरपति सबकौं दियौ मिलाइ।
साहि अहम्मद सौं दुहूँ दीने बिदा कराइ॥३२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चल्यौ अवध के मुलक कौं दर कूचन मनसूर।
सूरजहूँ कौं सीख दै पठयो व्रजहिं जरूर* ॥३३॥
सिंह जवाहर सों कह्यौ छोड़िल करहु मुकाम।
संग तुमारे हम लखैं श्रीव्रजेस यह काम ॥३४॥

कवित्त

मदन के जोरही सौं मदन कौं साध्यौ जिनि
थलन सँभार्यौ केलि जल के प्रवाह तैं।
घन के समान बड़े बन कौं विहारी सब
जन की बिसारी सुधि तन के निबाह तैं।
सूदन उछाह तै कहतु कवि राह तैं
सुचाहतैंई चाह तैं प्रबट बैरी थाह तैं।
दिल्ली नरनाह-गज ग्राह-मनसूर गह्यौ
माधव नै आइ ज्यौं छुड़ायौ गज-ग्राह तैं ॥३५॥

छंद पवंगा

सिंह जवाहर संग चल्यौ कमठेसहू।
आए कामाँ तहाँ मिले बदनेसहू ॥
लै आए पुर दीघ कियौ सनमान हैं।
मधुकर नेह जताइ गयौ निज थान हैं ॥३६॥

हरगीत छंद

भूपाल पालक भूमिपति बदनेस नंद सुजान हैं।
जानै दिली दल दक्खिनी कीने महा कलिकान हैं ॥
ताकौ चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकैं।
किय संधि कूरम दुहुन की रचि अंक सप्तम आइकैं ॥३७॥

इति श्री मन्महाराजकुमार जदुकुलावतंस श्री सुजानसिंह हेतवे कवि सूदन विरचिते सुजानचरित्रे दिल्ली-विध्वंसनो नाम षष्ठमो ऽङ्ग संपूर्णम् ॥

---

* पाठांतर—सूरजहू कौं संग लै व्रज कौं चले जरूर।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सप्तम जंग

कवित्त

रारे द्रोण भीषम करारे जल जयद्रथ
गांधारी-तनय इंदीवर सोभवारे हैं।
सल्य महाग्राह कप प्रबल प्रवाह जहाँ
मिति के निबाह करन ही के कर भारे हैं।
घोर मच्छ कच्छ से बिकर्न असुथामा बीर
दुरजोधन भांर ज्यौं भ्रमर से निहारे हैं।
सिंधु सो भयान सेन सरिता अमान तहाँ
करि या प्रमान हरि पंडव उतारे हैं ॥ १ ॥

दोहा

ठारह सै सुद सोतरा हिम रितु महिना गोप।
दच्छिन-दल दिल्ली-दलनु कीनौ ब्रज पै कोप ॥ २ ॥
करि मिलाप बदनेस सौं कूरम सिंह सुजान।
देखि भर्थपुर देव कौ बहुरयौ कियौ पयान ॥ ३ ॥

करी छंद

चलत कही मधुकर भूपाल। दखिनी आवतु तुम पै हाल ॥
जो तुम करौ आपनी संध। तौ हम ताकौ करैं प्रबंध ॥
तब सुजान मधुकर सौं कही। हमैं आपु करिहौ सो सही ॥
जो कछु पहल मामलति भई। सो महराज सबै सुनि लई ॥
वा माफिक वे मानैं आज। नाहीं तौ नाहीं महराज ॥
ये बातैं कूरम धरिकान। कीनौ अपने देस पयान ॥
पुनि सुजान बदनेस-कुमार। लग्यौ करन निज चित्त बिचार ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

है वह चारि उपाइ उदंड । साम दाम भेदहु पुनि दंड ॥
तब ही रूपराम बुलवाइ । सोहू सब विधि पूरन आइ ॥
रूपराम सों कही सुजान । दखिनिनु पास करो तुम जान ॥
तिनके दल कौ सबै सुमारु । और जु उनके मन कौ सारु ॥
वे जो कहैं सु धरिकैं कान । कीजौ ज्वाब महा बलवान ॥
समाचार ये सबै सिताब । भेजतु रहो ज्वाब पै ज्वाब ॥
ताकौं सबै भाँति समुझाइ । दीनौ दखिनिनु पास पठाइ ॥४॥

मनोरमा छंद

बीते कछू घौसही मैं जहाँ । आधी निसा डाँक आयौ तहाँ ॥
दीने समाचार ताही घरी । मार्‍यौ दगा दै बलू चौधरी ॥
सूजा कही कौन की रीति सौं । बोल्यौ तबै डाँक ता नीति सौं ॥
भूपै लियें आप आए इहाँ । दिल्ली गयौ गाजदीखाँ तहाँ ॥
नीरैं सुने दक्खिनी आइयौ । सो गाजदी मोद सौं छाइयौ ॥
भेज्यौ अतालीक ताही घरी । मार्‍यौ दगा दै बलू चौधरी ॥
खाली करौ दुग्ग कौं द्वार सैं । मिलना मुझै बेगि मल्लार सैं ॥५॥

दुपई

सुनि महमूद आखवत ऐसे बल्लमगढ़ पै आयौ ।
भेजि वकील चौधरी सौं उन बहु इखलास जतायौ ॥ ६ ॥
मुझै गाजदीखाँ वजीर ने तेरे पास पठायौ ।
चारिक बात करैं हम तुमसैं सबै काम बनि आयौ ॥ ७ ॥
अगर करैं हम दगा तुम्हीं से तसबी खुदा बतायौ ।
इस्सैं कसम और नहिं कोई भाई सैं क्या दायौ ॥ ८ ॥
यह सुनकैं गढ़ के भीतर तैं बल्लू बाहिर आयौ ।
बेटा दोइ संग लै कढ़ियौ कालन औसर पायौ ॥ ९ ॥
आवतु देखि चौधरी कौं महमूद आखवत तब्बै ।
ठहरायौ मिलनौ खिलवति को गरकर राखे गब्बै ॥ १० ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तहाँ मिलाप चौधरी सौं करि कहि कहि मीठी बातैं ।
पुनि सारति करि दई तिन्हैं जे दबकि रहे लगि घातैं ॥ ११ ॥
तबही ताकि एक ने वाके पेसकबज गहि घूँसी ।
दूजैं धाइ दूसरी घातैं ग्रीव तेग सौं धूँसी ॥ १२ ॥
दोऊ पूत सहित बल्लू के सीस काटि उठि धायौ ।
तातैं घरी चारि पाछैं हौं चल्यौ आप पै आयौ ॥ १३ ॥

दोहा

दगा करै तासौं दगा निश्चै जानौ होइ ।
जैसी गति वानै करी लहिहै तैसी सोइ ॥ १४ ॥

सोरठा

सो सुनि सिंह सुजान तुरत बोलि बलिराम कौं ।
कह्यौ दीघ कौं जान लाला सौं जाहर करौ ॥ १५ ॥
कहनी यहै सिताब सबै बरूथनि साजिकैं ।
बरसाने कौं जाब मद्दति आगैं भेजियौ ॥ १६ ॥
ह्वै सवार बलिराम आयौ दीरघ नगर कौं ।
जो कछु करनो काम कह्यौ जवाहरसिंह सौं ॥ १७ ॥

सैनिका छंद

सो सुजान नंद सोचि वा घरी । आइयौ ब्रजेस पास ता घरी ॥
सीख माँगि श्रीब्रजेस सौं तबै । दै निसान कूच कै चमू सबै ॥१८॥

दुपई छंद

तबै जवाहरसिंह कूच करि दै देरा बरसानैं ।
चहूँ ओर की खबर लैन कौं तहाँ सैन सरसानैं ॥ १९ ॥
तौ लौं सब बल्लू के बेटा सहित कुटुंबहिं आप ।
तब महमूद आखवत ह्वै नै आगैं पाउँ बढ़ाए ॥ २० ॥
इत मैं रूपराम ह्वै पहुँच्यौ जहाँ दक्खिनी आवत ।
रघ्घू औ आपा मलार मिलि रूपराम सुख पावत ॥ २१ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चलत चलत दखिनी बढ़ि आए जैपुर डेरा दीने।
प्रथम भूप कूरम सौं करते ज्वाब स्वाल ए कीने ॥ २२ ॥
बाकी सहित दाम सब दीजै ब्रज कौ हरवल हूजै।
माधव कही कह्यौ सो करिहैं अब लोजै जो पूजै॥ २३ ॥
जौ लौं साहिपुरा बूँदी कौ रूपनगर औ कोटा।
ए नृप रुजू भए दखिनी सौं नौकोठी कौ जोटा ॥ २४ ॥
राना कौ दीवान आइयौ साँईं सो पुर वारौ।
सब मिलि सामिल भए मलारै काहू रह्यौ न गारौ ॥ २५ ॥
द्वादस लाख रुपैया दैकैं पुनि माधव नृप भाषी।
हरगोविंद होइ तुम सामिल जौ ब्रज कौ अभिलाषी ॥ २६ ॥
ये सब समाचार जैपुर तैं माधव औ दखिनी के।
रूपराम लिखियौ ब्रज-भूपै साठ हजार अनी के ॥ २७ ॥
और लिख्यौ सबकैं ए दखिनी तुम सौं जंगहि जोरैं।
आपुन सावधान ह्वै रहियौ देस दुंद की ओरैं॥ २८ ॥

दोहा

जैपुर सौं फरचौ कह्यौ आपा औ मह्लार।
रूपराम बुलवाइकैं पूछ्यौ कहा बिचार ॥ २९ ॥

सोरठा

पुनि बोल्यो मह्लार दो करोर ह्याँ देउगे ॥
मैं अब होत सवार रूपराम तुव देस पैं॥ ३० ॥

दोहा

अबकैं सूरजमल्ल नैं लूटी दिल्ली खूब ॥
दो करोर क्या बहुत है लिखि भेजै किनि तूब ॥ ३१ ॥

सुगीतिका

तब दै असीस दुहून कौं द्विज॰ राम परम प्रवीन।
सुनिए जुवाब मलार के तब बोलियो मृदु पीन ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बड़ भाग हैं तुम सैन के व्रज देखिहैं भरि नैन।
कछु लैन की बिधि ना बने तहँ देन को कछु भै न॥
यह आपके मन होइगी कछु दैन आइय रूप।
हिय संक मानि पठाइयै हम पास श्री व्रजभूप॥
इखलास राखनु आपसौं निज प्रोहितै पहिचान।
सुभ जानि दोउन कौं करैं हम ज्वाव स्वाल प्रमान॥
तुम सिंह श्री बदनेस सौं किय लैन दोइ करोर।
यह बात मोहि न सूझही वह देइगौ अनरौर॥
सत कोटि हैं उहिं भौन मैं गज बाजि ओर न छोर।
दस साहि के दल लूटिकैं दरबार ओढ़तु घोर* ॥
यह तासु की निज टेउ जानत सो बखानत राउ।
दवि दामहूँ नहिं देइगो उठि खर्च कोटिक जाउ॥
तुम तासु पै जुग कोटि चाहत मोहि है सु अँदेस।
मिलिहैं जु सारहि सार सौं अब कैं मिटै न कलेस॥३२॥

दोहा

उत इत के परताप तैं चारि लाख मो पास।
आतु लेउ सब कुसल सौं मोहि दुहुन की आस॥३३॥

हरिपद

रूपराम के बचन कान धरि यह बोल्यौ मल्लार।
खंडी लै प्रोहित के घर तैं बाढ़ै कुजस अपार॥३४॥

छंद ललित पद

कोटि किलौ खाई घन भाई जल बल जोर सु कहियै।
सो कितेक व्रजराज-बदन कैं सौ सब साँची लहियै॥ ३५॥

---

* पाठांतर—दस पातसाही लूटि के दरबार ओढ़त सोर।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छंद भुजंगी

तबै रूप नै बात साँची उचारी । ब्रजाधील के ठाठ की बात भारी ॥
असी चारि के कोस कौ कोट बाँकौ । किलेदार है साँवरौ चारि घाँकौ ॥
इतै बान गङ्गा उतै भानु-जाई । बिधाता बनाई चहूँ ओर खाई ॥
हवेली किलेदार की कोस नौ की । कलिंदी सुनीरैं प्रलै के न भौ की ॥
किले बीच पायौ तहाँ जन्म स्यामैं । किलेदार ता ठौर पायौ सुनामैं ॥
यहाँ तीनिही कोस पै बुर्ज ऐसौ । घने दुष्ट मारे तहीं नाम तैसौ ॥
अरिष्टा बकी औ तृनावर्त मोहा । तबै नाम ताको महावन्न सोहा ॥
तहाँ गोकुलै जानियौ आप चित्तै । सुचित्तै सुचित्तै दुचित्तै दुचित्तै ॥
हवेली तरैं तीनही कोस नीकौ । रच्यौ साँवरे ने वहै बाग जी कौ ॥
तहाँ तासुने दुष्ट ठोके घने हैं । अघा से बघा से बिधाता मने हैं ॥
हरे बाँस केसी नथ्यो काल काली । पियौ दाव कौ गोपिका प्रीति पाली ॥
थपी राखिबै ताहि वृंदा सुदेवी । धर्‍यौ नाम वृंदाबनं सिद्धि सेवी ॥
दिसा नीर की जो जनैं द्वै उरैहैं । गिराधीस ताकौं सुराहू भुरैहैं ॥
तहाँ मीत राखे अमीतै बिदार्‍यौ । वृषा दैत्य औ संखचूड़ै पछार्‍यौ ॥
हत्यौ धेनुका इंद्र कौ गर्व गार्‍यौ । जथा जोग्य सोतैं नहीं कान धार्‍यौ ३६

छंद दाव

बरस सात के स्याम सिरोमनि खेलत घर घर डोलैं ।
माथैं मुकट पीतपट कटि मैं पाइ पैंजनी बोलैं ॥
लोचन नील कमल से सोहैं भौंहैं अलि-अवली सी ।
जो ब्रजबधू निहारति उर मैं सो रहि जात छली सी ॥३७॥
कानन लसत झूमका प्रभु के नाक बुलाक सुमोती ।
मनौ सुधानिधि बदन जान प्रभु रच्छक राख्यौ गोती ॥
चारु कपोल गोल गुदकारे अरु सुंदर सी ठोड़ी ।
परति धाइ कैं होड़ाहोड़ी सबकी डीठि निगोड़ी ॥ ३८ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गुंजमाल बनमाल लाल के उर के बीच बिराजै।
मनौ स्याम घन मध्य समूरो सुरपति चाप सुराजै॥
सहित नाल कर-कंज मनोहर पहरैं रतन करूला।
मानौ रतनसान जुग कंदर उभै कोकनद फूला॥ ३९॥
पीपर पान समान उदर बर कोमल नवनीतहु तैं।
नाभि गँभीर तरंगन त्रिवली में बूड़तु अवगहुतैं॥
झनक मनक किंकिनि कटि गुंजति जब कितहू कौं दौरैं।
माँगत ग्वाल खेल के दावहि भजत नंद की पौरैं॥ ४०॥
छोटी सी कछनी कौं काछैं कबहुँक बाछैं पाछैं।
निकसत नंद बबा के संगहि ग्वालनु देखत आछैं॥
तरवा अरुन स्याम सुंदर के जे मुनि मन के वासी।
भक्तन कौं बिसराम यही है उर राखति कमला सी॥ ४१॥
या बिधि सौं ब्रज माहिं रमत हैं नँद-नंदन सु कहावैं।
पौरि पौरि फिर ब्रज-बनितन की सबके हिये सिरावैं॥
एक दिना सब ब्रजबासिनु के पूजा इंद्र उछाही।
चौरासी कोसहिं ब्रजमंडल घर घर चढ़ी कराही॥ ४२॥
कृष्ण एक ग्वालिन कूँ पूछी तुमरैं आजु कहा है।
तब उन कही हमारैं लाला पूजा इंद्र महा है॥
यह सुनि कही गुपाललाल वह इंद्र सु कौन कहावै।
गोपी कही जाउ मनमोहन पूछौ अपने बावै॥ ४३॥
कछु रिस-रंजित नैन किए हरि नंदराय ढिग आए।
बाबा कहौ कौन के हित ये तुम पकवान कराए॥
तबहि नंदजू कही स्याम सौं हमरैं सुरपति-पूजा।
गोधन गिरि पै वाहि चरचिहैं यह दैहैं मुख-पूजा॥ ४४॥
तब मघवा राजी ह्वै ब्रज मैं बरसैगो जल नीकैं।
बरस दिना कौं होइ सुचीते हम नृप ब्रज अवनी कैं॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ऐसैं कही नंद ने जबही मोहन महा रिसाने।
को है इंद्र कौन की पूजा हम तौ वाहि न जानें॥ ४५॥
तुम सब लेउ बोलि व्रजबासी मैं गिरि पै चलि बैठौं।
करिहौं गिरि गो द्विज की पूजा तौ तुम्हरे घर पैठौं॥
बहुत भाँति समझायौ सुत कौं पै एकौ नहिं मानी।
डरे नंद इकलौता बेटा कही कृष्ण की ठानी॥ ४६॥
चलौ पुत्र गिरि गोवर्धन पै आवैं सब व्रजबासी।
करिहैं गिरि गो द्विज की पूजा क्यौं सुत होत उदासी॥
यौं कहि नंद स्याम सँग लीने गोवरधन पै आए।
पहुँच्यौ सुन्यौ नंद व्रजपति कौं सब व्रजबासी धाए॥ ४७॥
ठौर ठौर व्रजबासिन गावत आवति लै पकवानैं।
बाजत ढोल मृदंग झाँझ डफ मंगल गीत बखानैं॥
कृष्ण जाइ बैठे गिरि ऊपर नंद-संग व्रजबासी।
पूजन लगे मेरु-सँग स्यामैं गंध फूल सुखरासी॥ ४८॥
तब मोहनजू सिगरे व्रज को घृत पकु भोग लगायौ।
आनि और यौं व्रजरानी कौं अपनौ वचन सुनायौ॥
सब व्रजबासी रहे चकित ह्वै बड़ो अचम्भौ मान्यौ।
तब वा मेरु सिषिर कौ नाम सु आनि और यह गान्यौ॥ ४९॥
यह सुरपति के दूत देखिकैं खबर इंन्द्र कौं कीनी॥
बलि जो देत तुम्हैं व्रजबासी कृष्ण नंद-सुत लीनी॥
सो सुनि इंद्र कही दूतन सौं कृष्ण कौन कौ छैया।
कैसो रूप वहिक्रम कैसो कौन बीर को भैया॥ ५०॥
तब उन दूत कही पुरहूतैं बलि कौ बीर सुनैया।
बरस सात कौ नरम गात कौ नंद गोप कौ छैया॥
यह सुनि इंद्र कही दूतन सौं व्रज सब आजु बहाऊँ।
कृष्ण नंद बलिराम बोरिहौं तौ मैं इंद्र कहाऊँ॥ ५१॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

लए छानवै कोटि मेघ गण चढ़ि ऐरावति धायौ।
चौरासी कोसहि व्रजमंडल घोर रूप दरसायौ॥
तड़ित लई तरवार ढाल घन व्रज लोपनु वितु धाय्यौ।
घोर सद्द चहुँ ओर पवन सौं इंद्र काल किलकार्यौ॥ ५२॥
मूसलधार अखंडित मंडित महा प्रलै जलु लायौ।
कड़कै तड़ित पवन झकझोरन कोरन वृच्छ ढहायौ॥
हाइ हाइ व्रजबाल पुकारैं कहूँ बचाउ न पायौ।
गोपी गोप ग्वाल बालनु मिलि तब गुपाल-गुन गायौ॥ ५३॥
करुना लखि करुनानिधान नैं मन यह मतौ उपायौ।
बाम पानि की छगुनी ऊपर हँसिकै गिरि सु उठायौ॥
ताके तरैं आप मनमोहन बंसी शब्द सुनायौ।
गाय गुवाल और व्रज-जीवन अपने पास बुलायौ॥ ५४॥
सात दिना दिन राति मूढ़मति इंद्र सलिल बरसायौ।
गिरिधारी गिरि राखि फूँक पर व्रज कौं आप बचायौ॥
तब मघवा मन मारि हारिकैं बड़े सोच सौं छायौ।
भयौ कृष्ण अवतार भूमि पै मेरौ गर्ब गरायौ॥ ५५॥
कंपति जिय संकित सो सुरपति उठि चरननहीं धायौ।
सुरद्रुम कामधेनु ऐरावति चरन भेट लै आयौ॥
नारि नवाइ दुहूँ कर जोरै कृष्ण-चरन सिर नायौ।
दीनदयाल दीन लखि इंद्रहिं सुरपुर फेरि पठायौ॥ ५६॥
रूपराम आपा मलार कौं गिरिवर समौं सुनायौ।
झूठ नहीं यह साखि भागवत आप व्यास मुनि गायौ॥
तां कुल मैं बदनेस भूप* है तुम सुरपति-पद पायौ।
कलि की मद्धि स्यामजू ने फिर वही बनाउ बनायौ॥ ५७॥

---

* पाठांतर—नंद।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दोहा

दच्छिन दिस गिरि-पूछ है उत्तर दिस मुख नैन।
तहाँ सरोवर द्वै सरस राधाकृष्ण सुपेन ॥ ५८ ॥

छंद काव्य।

तहँ ते वाइव ओर डेढ़ जोजन के अंतर।
रच्यौ बुर्ज सो स्याम ग्राम जो नंद निरंतर ॥
जोजन मंडल एक नंद लै बसै स्यामघन।
समौ कंस कौ देखि रमैं लै ग्वाल बाल गन ॥
जहाँ कियौ जलपान पानि सौं आपु कृष्ण वर।
सो वह अबहू बन्यौ नाम है पानि सरोवर ॥
तातैं जोजन एक बुर्ज कामाँ सो कहियतु।
वहै कोट कौ कौन वहाँ भोजन थलु लहियतु ॥
उरैं कोस है च्यारि बुर्ज बरसानौ सुंदर।
जहँ की गली बुहारि अजौं बिधि ईस पुरन्दर ॥
तहाँ स्याम की जोति आप राधा पटरानी।
बसै तीनहू लोक वहै जाकी रजधानी ॥
बने दानथल मान खोरि साँकरी भनोषरि
ता प्रभाव कौं लहै सिंधु सातौं सम पोखरि ॥
हाँ गहवर कौं देखि राउ गहुवरही आवै।
ऐसौ जग मैं कौन देखि सुनि सीस न नावै* ॥
दुहुँन बीच संकेत राधिका नंदकुँवर कौ।
सो छिय को कहि सकै भेदु पिय-प्यारी घर कौ ॥
तासौं जोजन एक परम मंदिर जग जान्यौ।
नंद और वृषभान दुहूनि के हित सरसान्यौ ॥

---

* पाठांतर—ऐसौ को जग माहिं देखि जु न सीस नवावै।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अलख नंदसर तहाँ अलख अमरेस-दृगन कौं।
मुनि नर खग पुनि उरग दरसु नहिं भयौ मृगनु कौं ॥५६॥

छंद भुजंगी

इतै की सफीलै किए बुर्ज आठौं। तिन्हों के सुनै राउजी नाम पाठौं ॥
किए कोस छः सात के अंतरा सौं। उभै जोजनौं के बने गिर्द तासौं ॥
प्रथम सिंसिनी कौंचहूँ चक्क जानैं। लह्यौ सिंसनै वार नावैं अमानैं ॥
अजौं एकही कूखि के लाख भाई। तहाँ भूप बदनेस पाई बड़ाई ॥
वहै सिंसिनी साहि ताकौं न पामैं। किते मीर उमराउ आए जु कामैं ॥
भखैं सातहू पातसाहौं लसी है। तहाँ लच्छमी देह धारैं बसी है ॥
तहाँ तैं उभै जोजनौं बीच दै कैं। रच्यौ बैरिनामैं सुबैरी बितै कैं ॥
बसै भूप के पूत कौ पूत बंकौ। प्रतापी प्रतापा तनै सो निसंकौ ॥
प्रतापा कहौ कौन तौ मैं बताऊँ। लख्यौ दुग्ग भूपाल में जो अगाऊँ ॥
तहाँ राउ बाजी लखे हाथ वाके। फिर्यौ आइक बैरिही तीर ताके ॥
थप्यौ तासुतैं जोजनैं तीन पूरौ। धर्यौ नाम ताकौ भरथ वासु रूरौ ॥
घनौही घनौ तासु के तीर छायौ। तहाँ चित्तहू नै नहीं गौन पायौ ॥
जटाजूट कौ सो जटाजूट फैल्यौ। फिरै नीर मंदाकिनी रूप रैल्यौ ॥
गिराधीस-धारी तहाँ थान कीनौ। रहै सिंह सूजा जहाँ मोद भीनौ ॥
तटै तासु के तीनही कोस गाढ़ौ। सुतौ सोगरै मोगरै बैर बाढ़ौ ॥
अवारै लखौ जो अपारै जुरारौ। उहाँ स्याम कौ चारिहू घाँ पसारौ ॥
निहारौ तहीं चार कोसैं अमानी। सही सौंक कासौं ठहै खून खानी ॥
बड़े डौर सों एक पै घौर सोहै। लख्यौ भूप बिसुनेस गो मानि लोहै॥
तिहीं खेत मैं बीर खेतै निहार्यौ। रच्यौ* लच्छमी घेर कुंभेर रार्यौ ॥
लसै भूप जामैं सुतौ दीघ नामैं। सुराधीस के धाम की सोभ तामैं ॥
भरे चारिहू ओर हैं नीर तामैं। अटब्बी सुभृंगी घरै एक धामैं ॥

---

* पाठांतर—लख्यो।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तहाँ कूप का सार बापी जु सूझै। सवै मानसर की प्रभा कौं न बूझै ॥
जहाँ आठहूँ भाँति के कंज फूलैं। मनौ नीर आकास तारे अडूलैं ॥
तहाँ हंस हंसी चकी चक्क डोलैं। किते अंड-जाती करै हैं कलोलैं ॥
तटैं बाग हैं राग के भौन मानौ। फुलैं फूल दैवी जिन्हैं जी सुहानौ ॥
बसैं चारिहू बर्न कर्माधिकारी। मनौ देव गंधर्व ही देहधारी ॥
तिन्हौं के धरा धाम धौरे हजारौं। रथै पालकी हैं करी बाजि द्वारौं ॥
बनी गौख वे जौख की मौख सौहैं। पताकानु केकी पिकी ही अरौहैं ॥
दरीची तिवारी दुवारी अटारी। लगी जाल जारी सरद मेघ भारी ॥
अलंकार धारी जरी तार सारी। फिरैं चंचला सी तहाँ गेह-वारी ॥
रहैं पूतना तीन सौं पूरि होई। बिना बीस वेटा नहीं जाट कोई ॥
फिरैं बालका काम के बालका से। सवै भूमि के तालका पालका से ॥
बड़ी हाट बाजार ब्यौहारवारे। धनाधीस के धाम के से घरारे ॥
जहाँ देखियै चोर तौ नैन कोरैं। ठगैं रूप जानौ परै डीठि भोरैं ॥
सदा बैल के कंध ही पै जुआ है। पिया प्रेम प्याला मदी सो हुआ है ॥
जहाँ भूँट कौ भोजने अंत देखौ। महा मोह तौ साँवरे में सुपेखो ॥
बिना आपके नाँव क्रोधी न कोई। सदा जंग की जीति कौ लोभ होई ॥
इही भाँति सौं सब्बही कोट साजा। बजैं दुंदुभी बुर्ज बुर्जौं दराजा ॥
सवै अन्न धन्नौ दही दूध ताजा। जहाँ सत्रु के लोह कौं तोप बाजा ॥
कँगूरी कँगूरा भुसंडी समाजा। लसैं बीस वेटा बड़ौ सूर गाजा ॥
लखैं ताहि वैरी धरा को न भाजा। बली सूर के पूत पाँचौ अवाजा ॥
जवाहर बड़ौ साहिबी कौ समाजा। वही स्याम जाके करै कोर काजा ॥
सुराजै तहाँ सिंह बदनेस राजा। सुराधीस के धाम की सोभ साजा ॥ ६० ॥

छप्पय

इंद्र इटायैं सहर अग्नि गोपाचल दुग्गहि।
दच्छिन पुरी कल्यान नैरितहिं नीमरान महि ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बरुन हस्याने सीम मरुत दिस गढ़ मुकतेसुर।
उत्तर दिग गढ़ राम ईस सहपऊ परें घर॥
इतनीक भूमि वसुदेव-सुत बदनसिंह भूपहिं दई।
तुरकान तेज परिहरि सकल आन पीतपट की भई॥ ६१॥

दोहा

तुम तारे नृप जे धरनि ते पारे ब्रजराज।
दस हजार भट आपसौं चाहत समर समाज॥ ६२॥
चारि लाख बदनेस कैं हैदल पैदल त्यार।
किलेदार गिरवर-धरन ताकी सैन अपार॥ ६३॥
कोट किलौ परिषा सुभट भाई श्रीय समाज।
मंत्री सिंह सुजान-सुत ब्रजपति को जुवराज॥ ६४॥
ताहि तुम्हैं पर भूमि मैं बजी तेग कै वार।
कहा कहौं सो आपुही जानत राउ मलार॥ ६५॥

हरिगीत छंद

भूपाल-पालक भूमिपति बदनेस नंद सुजान हैं।
जानै दिली दल दक्खिनी कीने महा कलिकान हैं॥
ताको चरित्र कछूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकैं।
ब्रज-बरन-रूप मलार सौं किय प्रथम अंक गनाइकैं॥ ६६॥

इति प्रथम अंक।

दोहा

रूपराम के वचन सुनि बोल्यो राउ मलार।
सत्ति सत्ति तैंने कह्यौ ब्रजपति कौ ब्यौहार॥ १॥
जो धरनी बरनी जु तैं रूपराम सविलास।
ताहि देखिहैं नैन सौं सब दक्खिन तो पास॥ २॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कछू उमाह्यौ हो हमैं कछू बुलाए साहि।
बड़गूजर को मारिबौ सुनि आए भुव गाहि ॥ ३ ॥

कवित्त

गुज्ज भुज्ज द्रविड़ तिलंग बंग गौड़ गढ़ा
मंडला उड़ीसा लै बघेल औ बुंदेलखंड।
झारखंड मगध मलार गंगापार डाँग
ऊमट उचाट मालुया मैं न राख्यौ चंड।
हाड़ौती ढुँढाहर भदावरि दिलीपति के
सहित उजीर उमराई राय पाए* दंड।
सेवा संभा साऊ रामराजा के जलेबदार
एक ब्रज देश बदनेस ही रह्यौ अदंड ॥ ४ ॥

संयुता छंद

पुनि यौं कह्यौ सु मलार नै। थल वै सबै सु निहारनै ॥
लखि रूपराम विवेक कैं। बद जानि तू अब नेक कैं ॥
यह मैं कहौं निज टेक कैं। ब्रज-भूमि दक्खिन एक कैं ॥
तब दो करोरहि लेहिंगे। ब्रजराज दाम न देहिंगे ॥
पटपीत की उन ओट है। इत आपु संकर जोट है ॥
दुहुँ की धुजा फहराँइगी। रन दुंदुभी घहराँइगी ॥
इतके उतै ठहराहिंगी। ठहराइकै भहराहिंगी ॥
तब मामलति ह्वै जाइगी। जुरि जंग कै ठहराइगी ॥
यह भाषि राउ मलार ने। पुनि बोलि आप कुँवार ने ॥
ढिग देखि खंडू सौं कही। अब कूचही करनौ सही ॥
सजि आपुनी सब बाहिनी। धरमेव की अवगाहिनी ॥
मिलि जाहि सो करि आपनो। लहि दाम संगहि थापनौ ॥

---

* पाठांतर—लीनौ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अरु जो गहै हथियार कौं। पठवाइयौ जम-द्वार कौं ॥
दर कूच में बन खूँदिकैं। पुनि साधकी धरि रूँधिकैं ॥
मथुरा थकी करि आपनी। करि हाथ थापउ थापनी ॥
बहु द्यौस कौ नहिं काम है। ब्रजभूमि फेरि मुकाम है ॥
धरि सीस आयुस बाप कौं। दल साजि खंडू आप कौं ॥
असवार चार हजार सौं। किय कूच संग बहार सौं ॥
अति दीह डंकनु देन भौ। भुव मेव की पथ लेतु भौ ॥५॥

छंद विद्गुनमाल

तव खंडू मेवात खूँदिकै चल्यौ साधिकौं आयो।
सो सुनि कै महमूद आखबत आगें मिलिबे धायो ॥६॥
खंडू सौं महमूद आखबत मिलिकै यह ठहरायो।
आपुन करौ कूच होड़िल पैं मैं मेवन पर आयो ॥७॥

छंद चपला

आवै है खंडू मेवातैं। रूपा ने भेजी ये बातैं ॥
मल्लारै आयो ही जानौ। ढीलै ना कीजौ जो ठानौ ॥८॥

छंद सालिनी

खंडू धायौ भूमि मेवात आयौ। आयौ आयौ चारिहू ओर छायौ ॥
मानौ दावाग्नि डोलै रिसायौ। मार्‍यौ वार्‍यौ सामुहैं जाहि पायौ ॥
काहू गव्वै जाइ पव्वै बसायौ। दैकैं दामैं धाम काहू बचायौ ॥
लूट्यौ कूट्यौ मेव देसै भगायौ। ताकै आगे दुग्गऊ दार खायौ ॥९॥

दोहा

आयौ राउ मलार-सुत सुनि सुजान कौ नंद ॥
जुद्ध-काज उद्धत भयौ अंग अंग आनंद ॥१०॥
यह सुनिकैं सूरज बली उतमैं राउ मलार ॥
दोउन कै चिंता बढ़ी जाने पूत जुझार ॥११॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छप्पय

दोऊ उमरि अराक दुहुन उनमाद रारि हित।
दोऊ जानत जीति हारि जानत न दुहूँ चित॥
नहीं जीति या जीति हारि सौं होत हारिही।
दोऊ निजु निजु सुतनु लिख्यौ जलदी बिचारिही॥
खंडू न जंग मो बिन रचहु सपथ लिखी मल्लार ने।
ह्याँ निसाँ करतु ब्रजराज की रूपराम इहि कारनै॥ १२॥

कुंडलिया

त्यौंही सिंह जवाहरै लिखियौ सिंह सुजान।
सुत तुमकौं मो सीस की करनी सौंह प्रमान॥
करनी सौंह प्रमान आन दादा की किज्जिय।
चारिहुगा ततबीर भीर मोही सिर दिज्जिय॥
दिज्जै खंडू जान आनि मरिहै यह यौंहीं।
दीपक रीति पतंग हमैं हतनै यह त्यौंहीं॥१३॥

दोहा

तात सौंह सम मंत्र बस अंग सुजंग उमंग।
फिर्‌यौ जवाहरसिंह ज्यौं पंचानन रिस रंग॥१४॥

पवंगा

तबै जवाहर सिंह दीघ मैं आइयौ।
उततैं सिंह सुजान ब्रजेस बुलाइयौ॥
ज्यौं असुरन के हतन जतन हित देवता।
मतौ करैं जगदीस ईस बिधि सेवता॥

कवित्त

दीघ में दीरघ सभा कै ज्वारि डूँगनु की
बैठ्यौ ब्रजराज बदनेस महाराज है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पूरन पुरुष परिपूरन बिराजै साज
सूरन कौ मंडल अखंडित दराज है।
सनमुख सूरज जवाहर लसत दोऊ
मानौ गुन तीन देहधारी कौ समाज है।
कैधौं सिवलोचन निगम दुख-मोचन कौं
कैधौं तीन देवता बिचारैं सुरकाज है ॥१६॥

छंद मुक्तादाम

सभा-मधि यौं उचर्यौ ब्रजराज। मनौ मृगराज दराज गराज ॥
सुनौ तुम चारिहू डूँग उदंड। सबै बुधिवंत सबै बलवंड ॥
कियौ इत आवनु राउ मलार। कहौ कछु आपन चित्त बिचार ॥
कहौ कबहूँ तुमही कहि देउ। सुतौ मत मो चित कौ सुन लेउ ॥
दियौ हरिदेव हमैं यह राज्ज। नहीं हिय हौंस रही ब्रज आज ॥
लरे उमरावन सौं बहु बार। किए पतिसाहिन के घर छार ॥
इते पर दुग्ग रचे हम चार। यही दिन चित्त बिचित्र बिचार ॥
गयौ लरिकापनु ज्वानिय जोर। जुरापन जंग करौं घनघोर ॥
मिलैं तिनसौं मोहि आवति लाज। बिना रन और रचौं न इलाज ॥
ब्रजेस बिचार सुन्यौ सब कान। कर्‌यौ वह चारिहू डूँग प्रमान ॥१७॥

दोहा

तब सुजान बदनेस सौं अरज करी कर जोरि।
महाराज मेरी सुनौ बिनती सब हित होरि ॥१८॥
ज्यौं चूरामनि के मिलैं पहिले जाइ अगार*।
त्यौं काहू कैं जाइबो सो क्यौं करै अबार ॥१६॥

सोरठा

सुनत कही बदनेस भर्‌यौ देस भैयानु सौं।
यह तो बड़ौ अँदेस को खोटौ को बेस है ॥२०॥

---

* पाठांतर—आगे जाय मलार।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दोहा

यह श्रावन मल्लार कौ वेस कसौटी] मान।
कंचन से, भैयानु की परख परैगी जान ॥२१॥
ज्यौं सब श्राप दक्खिनी त्यौं ता संगी जानि।
जो राखनि हरिदेव है तौ तिनुकी मैं भानि ॥२२॥
यह बानी बदनेस की सुनत सबै सरदार।
सत्य सत्य सब कहि उठे महाराज निरधार ॥२३॥

सोरठा

ताही सभा मँझार बोल्यौ भोपति भाट बर।
महाराज निरधार होनहार बानी सुनौ ॥२४॥

कवित्त

हारे देखि हाड़ा मन मारे कमधुज वंस
कूरम पसारे पाइ सुनत नगारे के।
केते पुर जारे केते नृपति सँघारे तेई
जोरि दल भारे ब्रजभूमि पै हँकारे के।
रारे मधुसूदन सबारे बदनेस प्यारे
ब्रज-रखवारे निजु बंस अवधारे के।
होत ललकारे सूर सूरज प्रताप भारे
तारे से छिपैंगे सब सुभट सितारे के ॥ २५ ॥

दुरद छंद

गजा चहुँवान मंत्री। सिरी बदनेस जंत्री ॥
कह्यौ करि जोरि वानै। यहै ता वेर तानै ॥
भली महराज ह्वैहै। बिजै हरिदेव दैहै ॥
करौ ततबीर सोई। नहीं अब ढील होई ॥
अबै चित सौं बिचारौ। भरैं ज्यौं दुग्ग चारौ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तहाँ सरदार राखौ। सिरीमुख तैं जु भाखौ ॥
रहै को आप पासै। कहौ चित माहिं भासै ॥२६॥

मधुभार छंद

गजसिंह वैन सुनिकै सचैन। बदनेस तब्ब कहियौ सुजब्ब ॥२७॥

छंद ताटंक

रहौ चित और ना भासै। जवाहरसिंह मो पासै ॥
रहै गजसिंह तू ह्याँई। करैंगे जंग ज्यौं चाही ॥
सुजानै सीख मैं दैयै। भरथपुर वैर कौं जैयै ॥
बहादुरसिंह करि गाढ़ौ। भयौ कुंभेर हो ठाढ़ौ ॥
जहाँ सरदार जो जानौं। तहाँई कौ तहाँ ठानौं ॥
कहौं तो ताहि जो यानौ। सबै बिधि तू महा स्यानौ ॥
पिता की सीख की बानी। सुनै सूजा सबै मानी ॥
कही तौ सीख है मोकौं। करौ गढ़ भीतरै थोकौं ॥
कृपा महराज की चाहौं। मलारै खेत मैं ढाहौं ॥
इती कहिकै बली सूजा। पिता के पाइ कौ पूजा ॥
तहाँ सिर नाइकै कढ्यौ। तुरंगै ता समैं चढ्यौ ॥
चलयौ पुरुषार्थ कौं धायौ। महा मन मोद सौं छायौ ॥२८॥

छप्पय

पुनि महराजधिराज चित्त बदनेस बिचारिय।
मोदन मोदी बोलि ताहि निज बचन उचारिय ॥
कहौ किती ततबीर अन्न घृत तेल नौन की।
सो साँची कहि देउ और बिधि करौं हौन की ॥
यौं सुनत सुगंगाराम सुत चारि लाख नर नित कही।
द्वै बरस लरौ मल्लार सौं खान-पान मोपर सही ॥ २९ ॥
सो सुनिकैं ब्रजनाथ ताहि स्याबास सुनायौ।
फेरि दुग्ग दीवान निकट भज्जूहि बुलायौ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कह्यौ बचन यह ताहि तयारी दारू गोला।
हाजर कहि सो मोहि तबै भज्जू यह बोला॥
महराज लरौ निहचिंत ह्वै बरसन लौं मल्लार सौं।
जौ जहाँ चाहियै सो जिनसि पहुँचै एक हँकार सौं॥ ३०॥

दोहा

मोदी औ दीवान की अरज सुनत महराज।
रहौ जवाहर के निकट यहै तुमारौ काज॥ ३१॥

पद्धरी छंद

यौं भाषि उठ्यौ ब्रज भूमि-नाथ। गजसिंह सुमंत्री गहैं हाथ॥
लै निकट जवाहरसिंह आपु। गढ़ मोरचान कौ करन थापु॥
नरवाहन चढ्ढिय श्री ब्रजेस। हयराज जवाहर चढ़िय वेस॥
गजसिंह तुरंगहि ह्वै सवार। पहुँचे सुप्रथम जैपुर दुवार॥
तहँ थप्पिय सब चहुँवान सूर। गजसिंह सुभाइय बल सपूर॥
पुनि राउर तन सब सहित सैन। सरदार थप्यौ ब्रजराज ऐन॥
लखि द्वार फेरि पाहार ताल। सुलतान और बहु सुभट जाल॥
तहँ करिय सूर बहु रेल पेल। ब्रजराज-पूत थप्पिय दलेल॥
पुनि तासु परैं थपि स्यामसिंग। जहँ थानसिंह सुत समर धिंग॥
गढ़ नैरित दीरघ दिसा घोर। लखि बासु जहाँ टीकैत जोर॥
वे उही थान थपियौ सपूत। अरु बीरनराइन आपु पूत॥
पुर अचल द्वार भट भीर भार। थपियौ खुसालसिंह ही कुँवार॥
पुनि बरई बंधा की जुपौर। धरि मेव पुंन लाल जी गौर॥
तिहँ निकट भवानीसिंह बीर। बरनेस-नंद रक्खिय सुधीर॥
दरवाजैं कामा बरुन ओर। बल्लू सुत थप्पिय करि सजोर॥
वे बिसन्दास पुनि किसनदास। अरु रामसेवग हूए प्रकास॥
पुनि बाइब दिस गढ़ बुर्ज गाढ़। तहँ जट्ट मेव गूजर सुबाढ़॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उत्तर दुवार बरसान ओर। गूजर गदाल सुत सहित जोर॥
द्विज रूपराम सुत तिहीं थान। मनसा अरु सूरत सहित पान॥
सरदार सबन जे दिस धनेस। थपि जोधसिंह सुन श्री ब्रजेस॥
गढ़ ईस कौन करि सावधान। बहु सैनपती थापे अमान॥
गिरिराज द्वार दिसि इंद्र ओर। सुत दयाराम जाहर सजोर॥
अरु अटलबिहारी सैनपाल। दौलत्तिराम बहु सुभट जाल॥
सुत रामबलै तिहिं थान राखि। यह बचन ताहि ब्रजराज भाखि॥
गिरिराज द्वार औ बिहजद्वार। रहि सावधान मो बचन पार॥
पुनि बहज द्वार थपि जैतसिंग। फौंदा तनूज ठाकुर अरिंग॥
थपि अग्नि दुग्ग दिसि सुभट जूह। अरु अऊ द्वार सरदार व्यूह॥
गढ़ दच्छिन दिसि लखि धरनिजुद्ध। देबीजु सिंह सिरमौर उद्ध॥
लखि दच्छिन दिग कौ थून द्वार। मंझासुत रूब्बै बल अपार॥
गिरि से सुभट्ट तेऊ सुराखि। तहँ कह्यौ सिरी ब्रजराज भाखि॥
हैं सबै मोरचा तो सहाइ। यह जानि जवाहर चित्त लाइ॥
तेरौ जु मोरचा यहै आइ। तुम लेउ ताहि आपुन बनाइ॥
अरु अऊ द्वार मैं रहौ नित्त। तू जानि जवाहर आपु चित्त॥
अरु रहे बाहरे मरहलानि। तहँ थापि आपने भट अमानि॥ ३२॥

दोहा

हुकुम मानि बदनेस को सिंहजवाहर धीर।
सिखा दिसा के मरहला थपि जसवंत सुबीर॥ ३३॥
अऊ द्वार जो मरहला जीवारामहिं थापि।
तृतिय मरहला नौलखा बिजैराम कौं आपि॥ ३४॥
मेदसिंह ताही निकट सारदूल कौ नंद।
थाप्यौ चौथे मरहला सत्रुन करन निकंद॥ ३५॥
रह्यौ मरहला पाँचयौ ताल पहारहिं तीर।
थप्यौ ऊधमा स्याम कौ जंग जुरैं जो बीर॥ ३६॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मोहठा छंद

बुर्ज पुर्जौं धरी तोप मोटी । एक मोटी तहाँ दोइ छाटी ॥
जाल जज्जाल के कोट द्वारौं । बानवारे रुपाए हजारौं ॥
भीर कीनी सफीलौं महाही । पैंड़ही पैंड़ पै द्वै सिपाही ॥
काँगुरौं काँगुरौं मारु मंडी । रंध्र रंध्रौं उदंडी भुसंडी ॥
अद्ध की उद्ध की मारु वंडी । दाहिनैं बाहिनैं चोट चंडी ॥
तीर द्वै तीन लौं पार खाई । डौर दै मोरचा भू रखाई ॥
दोइ हो दो हजारौं सवारौं । रोपियौ कोट के द्वार द्वारौं ॥
वे रहैं वाज की पीठि चड्ढे । सेल समसेर तूनीर मड्ढे ॥
और केते दवानैं चलैया । पाइ चालाक प्यादे बलैया ॥
यौं करी चौकसी चारि घाँ की । सत्रु के लोप कौं भौंह बाँकी ॥
मंडिकैं सैन यौं चार डंडा । सावधानी दिना राति मंडा ॥
लाख बंदूक तौ लेख नीकी । त्यार जानौ अनी के बनी की ॥
दुग्ग दीघैं महाराज साज्यौ । बैठि दीवान मैं फेरि गाज्यौ ॥३७॥

छंद सारवती

जो इहिं दुग्गहिं आनि गहै । सो घृत अन्न बिना न रहै ॥
जे नर चाकर हैं हमरे । ते मन वंछित लै बगरे ॥
पूरब ओर अपूरब हैं । ते न किहूँ बिधि कष्ट लहैं ॥
और सबै थल चौकस सौं । घास बरूदहिं कौ परसौं ॥
दीठि परै पर दूतन कौं । पैठन देउ न धूतन कौं ॥
यौं कहिकैं ब्रजराज बली । जाइ बिराजिय सैन थली ॥
ता छिन सिंह जवाहर नै । चित्त कियौ गढ़ ठाहर नै ॥
अस्त भयौ रवि राति परी । ह्वै असवार सुगस्त करी ॥
दीरघ दुग्गहिं सोभ भरी । मानहुँ सिंधु सुता नगरी ॥३८॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मानक्रीड़ा छंद

वदन-सुत चाइकैं। भरथपुर जाइ कैं॥
थपितु सरदार कौं। जतन हित रार कौं ॥३६॥

छंद स्वागता

भाजि देस इत कौ उत आयौ। ताहि बास वन बीच बसायौ॥
बीच बीच अटवी चहुँ घाँई। जोरि मोरचन बुर्ज बनाई॥
रूख रूख तर हैं नर नारी। जोतिवंत मुख चंद उजारी॥
कुंज कुंज तर हाट बिराजै। ज्यौं सुरेस वन-देव-समाजै॥
नग्र रूप सब कानन कीनौ। आस पास परिखा करि दीनौ॥
फेरि दुग्ग सरदार सुथापे। थान थान तिनके करि आपे॥
दै दिवान पद थापि सुचैना। धर्म पूत मनसा रन लैना॥
है सिताब द्विजराज प्रमानौ। ताहि सौंप सब दुग्ग अमानौ॥
रोपि तोप अरि लोपन-वारी। बुर्ज बुर्ज करिकैं भर भारी॥
सूर पूर करियौ दरबाजैं। तूर दुंदुभिन होत अवाजैं॥
देव देव हरिदेव जहाँ हैं। सत्रु भीति तिहिं ठौर कहाँ हैं॥४०॥

छंद कड़षा

फेरि नवबास गढ़ पास रच्छा करन थापि सिंभू-तनय रनहिं रूरे।
पुब्ब पुर द्वारजुत हुब्ब हरि गोविंदहि चारि भैयान-जुत बलहिं सूरे॥
चारिहू ओर बंदूक धरि घोर दीं काँगुरे काँगुरे भट सुपूरे।
भरथपुर साजि जहँ अरथपुर राखियौ बिकट बनथान नहिं भै कछू रे॥४१॥

दोहा

करि चौकस पुर भर्थ की कह्यौ ब्रजेस-कुँवार।
लरनो मोहि अनेक थल रह्नौ ह्याँ निरधार॥४२॥

कुंडलिया

लिखि पठयौ गढ़ वैरि कौं कागज सिंह सुजान।
चौकस करि कुंभेर की मैं आवतु वा थान॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मैं आवतु वा थान दुग्ग की होइ तयारी।
करौ मोरचा सबै तोपखानौ सब जारी॥
सब जारी, करि देउ सत्रु आवतु है अठयौ।
सिंह बहादुर पास साँडिया कौं लिखि पठयौ॥४३॥

सवैया

तात-समान सुजान कौ सासन मानि बहादुर सिंह बली नै।
बोलि सबै सरदारनु कौ गढ़ के चहुँ ओरन मोरचा दीनै॥
पाँचहू द्वार जँजालन के भर तोप जँबूरन चौकस कीनै।
बैरि सजाइ गजाइ सबै बिधि बैरिनु के बध के पनु लीने॥४४॥

दोहा

अरज लिखी परताप-सुत श्रीसुजान कौं फेरि।
हुकुम आपके सौं इहाँ को करि सकै अबेरि॥४५॥
समाचार लहि बैरि कै ब्रजपति कौ जुवराज।
कस्यौ कूँच कुंभेर कौं साजन सुभट समाज॥४६॥

सोरठा

उततैं राउ मलार जैपुर तैं कूँचहि कियौ।
जैसैं सलभ अपार उठै प्रजा संहार कौं॥४७॥

कवित्त

सहस नगारे सहसनुही निसानवारे
सहस सहस जूथपतिन उमंड की।
अवनि अवास देस दुग्गनु भै त्रास देत
बिकट निवासन उदासत घुमंड की।
सूदन सरित श्रृंगी कुपथ सुपथ कीने
मानौ बारिधारिनै मृजाद बेलि खंड की।
उद्धत उदंड की मलार आपा चंड की यौं
आई सैन घोर कलिकाल बलवंड की॥४८॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छंद करहेची

जयपुर द्वारहिं उठत मलारहिं । असगुन मंडिय प्रबल घमंडिय ॥
गदगद बानिय कढ़त गहानिय । बिनु अहलादहिं सब जन बादहिं ॥
गहबर आइय दगजल न्हाइय । मुख रुचि उड्डिय चित जिम गुड्डिय ॥
दग जब बामहिं फरक हिलावहिं । सब तन कंपिय उड़ रज झंडिय ॥
रजकु मलीनहिं बसननु लीनहिं । सनमुख आइय रज-तिय-धाइय ॥
पवन भयानक चलि तिहि थानक । पलचर आवत सनमुख धावत ॥
गिध रव रड्ढिय धुज पर चड्ढिय । हय गज धुक्कत गवनहिं चुक्कत ॥
गगनहिं चिल्लिहय गन करि टिल्लिहय । अगिनि सधूमहिं लखत चमू महिं ॥
जटिल सुतेलिय उखटत भेलिय । सगुन सुदच्छिन उलटि सुलच्छिन ॥
इन उतपातन गनिय सुजात न । सब अवहेलिय रन मद झेलिय ॥
बस परि कालहिं भँवत सुभालहि ॥४६॥

दोहा

अनु कन तें लख मन करै लख मन अनु सम होइ ।
यह इच्छा जगदीस की निजु मन घटती कोइ ॥५०॥

छंद नील

डंकनि देत अतंकनि संकनि दूरि धरैं ।
गोमुख तूरनि पूर चहूँ दिसि भीति भरैं ॥
बाजि चढ़े गजराज दराजनु धावत भे ।
चावत तेज रचावत दुंद मचावत भे ॥
अंबर धूरि अडंबर कंबर पूरि दए ।
स्याम घटा सम रूप पटा कर बिज्जु लए ॥
पब्बय सब्बय दब्बि करे चहुँघाँ दगरे ।
कंदर कंदर अंदर बंदर से बगरे ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुंदर मंदिर ढाइ बिलंद रसाल हरे।
तोरि महीरुह घोरि किते पुर राख करे॥
तक्कि तिन्हैं जिय सक्कि भए नर चक्कित से।
जक्कित से रु ससंकित से अति थक्कित से॥
भालनु के अति जाल मनौ जलधार धरा।
भूप जत्रासिनु जारि उदारि उजारि करा॥
या बिधि सौं जुग कूच मलार दवार किये।
बारि उदारि उजारि किते पुर छाँडि दिये॥५१॥

सोरठा

तहाँ फेरि मल्लार रूपराम द्विज सौं कही।
तैं कछु कह्यौ सुमार या दल तैं दस गुन करौं॥५२॥

छंद हारी

आतंक बानी मल्लार गानी रूपा सुजानी सो चित्त आनी।
तासौं पुरानी गाथा बषानी ऐसौ गुमानी संका न मानी॥
बोल्यौ मलारै ताही सुबारै॥५३॥

प्रमानिका

बड़ौ प्रतापु आपु कौ। उथापं भूमि थापु कौ॥
सवार चारि लाखहू। समेटि जंग भाखहू॥
तऊ न दुग्ग तोरिहौ। वृथा अनीक जोरिहौ॥
किलेजुदार या धरा। सुजग जीति कौ घरा॥
छ कोटि सैन कौ पती। करी जु तासु की गती॥
प्रसंग कान दै सुनौ। न झूठ ता समैं गनौं॥
मलार बोलि आमजू। कहौ सुरूपराम जू॥
सुरूपराम ता घरी। करी कथा उजागरी॥५४॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छंद पद्धरी

सतजुग्ग मद्धि मुचकुंद भूप। इछ्वाकु बंस उद्भत अनूप ॥
तिन कियौ देवतनु को सहाय। करि जुद्ध दैत्य मारे अघाय ॥
सब असुर बंस करि खंड खंड। सुर थान थान सुरराज मंड ॥
तब सबै देवता ह्वै प्रसन्न। मुचकुंदहि भाषिय धन्न धन्न ॥
बर माँगि भूप सो होइ चित्त। तैं करे बाहुबल हम सुचित्त ॥
सुनि भूप कही बर एहि देहु। चित बासुदेव सों होइ नेहु ॥
एक और माँगियतु बर दयाल। मो नैन बीच निद्रा कराल ॥
मैं सोयो चाहत बहुत काल। निर्विघ्न कीजिए लखि हवाल ॥
सुनिकै नरेश के ए सुबैन। बर दीनो देवन ह्वै सचैन ॥
जुग तीन अंत लौं सेइ ईस। नहिं कोइ जगावै बिसैं बीस ॥
अरु आनि जगावै जो भुआल। तो दृष्टि पाइ पावै सुकाल ॥
पुनि बासुदेव कौ दरस होइ। हो महाभागवत रहौ सोइ ॥
यह देववृंद तैं बरहिं पाय। सिर नाइ फिस्यौ मुचकुंद राय ॥
लखि मथुरा तैं दच्छिन दिसाहि। चामिल तरंगिनी तट सराहि ॥
तहँ अचल कंदरा लखि इकंत। छितिकंत वहाँ सोयो सुखंत॥५५॥

दोहा

सो नृप सोयौ कंदरा बहुत काल गए बीत।
या व्रज की रच्छा करन प्रगटे कृष्ण अभीत ॥५६॥
सोधि सोधि या धरनि में मारे असुर उदंड।
कालजमुन काबिल भयौ दैत्यराज परचंड ॥५७॥
दिसा आठहू जोति कै जुद्ध अघानौ नाहिं।
वैठि मेरु की सिखर पै रन सोचत मन माहिं ॥५८॥
तहाँ गगन मग आइयौ मगन कलह को रूप।
गान करत हरि के गुननु नारद भेष अनूप ॥५६॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छंद त्रिभंगी

ससि अंस लटूरी चहुघाँ पूरी जोति समूरी भाल लस ।
दृगु-दुति झपकौंहीं भौंह बढ़ौंहीं नाक चढ़ौंहीं अधर हँसैं ॥
श्रुति हरि रस प्यासे कुंडल भासे रसना खासे वचन बसैं ।
कंबुक गल चंचल तुलसी संचल बकला अंचल फैंट कसैं ॥६०॥
कर कंधहि बीना तार नवीना गति जति भीना धुनि करतौ ।
उर उदरु लस्यौ सो लंक छस्यौ सौ गति उचस्यौ सौ डग धरतौ ॥
दुति सरद घटा सी तिलक छटा सी जगत उदासी राग रयौ ।
रिषिराज पुरानौ हरि मन जानौ निपट सयानौ आइ गयौ ॥६१॥
लखि कालजमन नै चलि अगमन नै रोकि गमन नै वैन कह्यौ ।
तुम कौन कहाँते अति अतुराते कहौ सुहाँतैं गगन चह्यौ ॥
सुनिकैं मुनि भाषी नारद आषी त्रिभुवन साषी फिरत रहौं ।
पाताल-निवासी व्यौम-विलासी भूमि-प्रकासी साँचु कहौं ॥६२॥
सुनि असुर जुनोके वैन मुनो के वंदन नीकैं चित्त कस्यौ ।
हे प्रभु सतनामी त्रिभुवन-गामी मैं रन कामी यौं उचस्यौ ॥
तुम ने कहुँ चाह्यौ जगत सराह्यौ नृपति उमाह्यौ मोहि कहौ ।
तासौं रन मंडौं दंड उदंडौं निज बल खंडौं देखि रहौं ॥६३॥

सोरठा

सुनि मुनि बोल्यो वैन कालजमन साँची कहौं ।
तो सम जुद्धहि दैन मथुरा में श्रीकृष्ण हैं ॥६४॥
यह कहिकैं मुनि बात बात-रूप मग जात भौ ।
कालजमन के गात हरषि उठे रन लैन कौं ॥६५॥

छप्पय

कालजमन तिहिं कालि लाल लोचन कराल तन ।
अति उताल चलि चाल ढाल किरवाल धारि पन ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छह करोर गज बाजि जोरि मुच्छन मरोरि मुख ।
किय पयान घन के समान नीसानु स्यामरुख ॥
दसहूँ दिसान खलभल परिय थल जल जल दल दल करिय ।
बहुँ जमन जाल विकराल बल ज्यौं अकाल ज्वाला झरिय ॥६६॥

छंद बगहंस

कालिजमन जोरि जमन । साजि सबन धाइ धवन ॥
अचल सचल खखल भखल । भवन भवन तेज तवन ॥
अक्क सक्क धक्क पक्क । थरथरात अदित जात ॥
धूरि मगन आस गगन । इंद्र नगल छोड़ि बगल ॥
जमन राज बल दराज । समर चाह अति उछाह ॥
चलत चाल अति उताल । परवर पुर आइ असुर ॥
कृष्ण पास तबहि दास । दिय पठाइ रन सुनाइ ॥६७॥

दोहा

जमन-राज कौ जमन वह ।मथुरा आयौ धाइ ।
कालजमन कौ आइबौ कृष्णैं दियौ सुनाइ ॥६८॥
और कह्यौ जो हो कह्यौ जमनराज रन-काज ।
घने दैत्य तैंने हने काढ़ौ बैर सुआज ॥६९॥

हरि छंद

सुनि दूत-बचन बोले । ब्रजचंद बैन खोले ॥
हम जुद्ध कौं न जानैं । नहिं सस्त्र हाथ ठानैं ॥
हम कौन असुर मार्यौ । तुमने जु रोस धार्यौ ॥
जो आपु हतन आवै । तातैं दई बचावै ॥
ताकौ कहा सुकीजै । हमकौं न दोस दीजै ॥
हम नंद गोप द्वारैं । बछरा सुगाइ चारैं ॥
दधि दूध माँगि पायौ । नवनीत चोरि खायौ ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कबहूँ न धाम धापे। गोपीनु भच्छ आपे ॥
मुनि मात तात द्वारैं। हम आपु पेट पारैं ॥
नहिं गाँउ ठाँउ कोऊ। कहियौ जु आपु सोऊ ॥
तिनसौं सु जुद्ध कैहौ। जस कौन भूमि पैहौ ॥
अरु जो न जमन मानै। तौ ठीलहू न ठानै ॥
आए अतिथ्थ पासैं। कैसे करौं निरासैं ॥
धरि कान कृष्ण-बानी। उन दैत्य सौं बखानी ॥
इत कृष्ण बूझि जामैं। लीला ललाम खामैं ॥
सोई मतौ उपामैं। जन ज्यौं न खेद पामैं ॥
परिवार कौं बचावैं। अरु दुष्ट कौं खिपावैं ॥
लरनौ बिचारु कैकै। बलिराम मंत्र दैकै ॥
यह भाषि उठे दाऊ। लखि जंग मौं अगाऊ ॥
जग कंत है इकंतैं। कीनौ बिदा अनंतैं ॥
चित चिंत विश्वकर्मा। लीनौ बुलाइ धर्मा ॥
श्रीकृष्ण जो विचार्‍यौ। तासौं मतौ उचार्‍यौ ॥
ततकाल सिंधु-कूलै। मथुरा समान भू लै ॥
रचि पुरी एक नीकी। मनिजटित हेम ही की ॥
जा ओर धाम जाकौ। तैसौ बनाइ ताकौ ॥
नहिं नून भाँति काहू। बीथी अगार ताहू ॥
जमुना समान रंगै। रचि गोमती तरंगै ॥
पल एक माहिं कीजै। फिर मोहि सोधु दीजै ॥
सुनि विश्वनाथ-बानी। बिसुकर्म सोइ मानी ॥७०॥

दोहा

आयुस लै श्रीकृष्ण कौ बिश्वकर्म ता बार।
इच्छा माफक रचि पुरी मथुरा की उनहार ॥७१॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सो सुनिकैं बसुदेव-सुत माया जोग सँभारि ।
तासौं यह आज्ञा दई सर्व जनैं तहँ धारि ॥७२॥
हलै चलै कोऊ न जन खेद न पावैं रंच ।
सब जादव ह्याँते उहाँ पहुँचैं बिना प्रपंच ॥७३॥
रजधानी जादवन की बिना मथुरिया लोग ।
पहुँचाए द्वारावती छिन मैं माया जोग ॥७४॥
सोए ह्याँ जागे उहाँ जादव छप्पन कोट ।
या ब्रज को भय हरन कौं रहे कृष्ण बलि जोट ॥७५॥

मारु छंद

स्याम राम सोइ दोइ । धाम धाम चैन होइ ॥७६॥

निगालिका

प्रभात भौ सुहात भौ । हली छली जगे बली ॥
तिहीं घरी उठे हरी । न देरहू कछू कही ॥७७॥

कवित्त

पेंठि बाँध्यौ मुकट समेंटि घुँघरारे बार
कुंडल चढ़ाए कान कलगी सुघट की ।
जाँघिया जकरि कैं अकरि अंग राग करि
कटि मैं लपेटी कसि पेटी पीतपट की ।
भृगु-पद-अंक ढाल सकति श्रिया कौ चिन्ह
सूदन सनाह बनमाल लाल टटकी ।
कोटिन सुभट की निहारि मति लटकी
सुसुंदर गुपाल की धरनि भेष भटकी* ॥७८॥
मद भरे लोचन बिसद अंग आभा चारु
लच्छ लच्छ हंस की सी सोभ अवतंस की ।

* पाठांतर—नट की

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ताल अंक उर पैं बिसाल नीलपट फैंट
सत्रु कीन संस संस सक अरि कंस की।
आयुध अनेक रेवती के कंत जू के तऊ
सायुध भए हैं हल मूसल प्रसंस की।
जमन के वंस की निवंस की विचारि चित
वसुदेव अंस की है लाज जदुवंस की ॥ ७६ ॥

छंद नीसानी

सज्जि खड़े वसुदेव देव घर मंडन हारे।
कालजमन तिहिं कालही आयो ललकारे॥
वरुन दिसा खुर खेह सों हूई घन अंधी।
स्याम निसानौं सै छुई डंकौ धुनि वंधी॥
वेखि तिन्हैं श्रीकृष्ण जी हलधर सैं अक्खो।
इसदे लरने दी क्रिया असली दिल रक्खी॥
अप्प रहौ पुरद्वारनूँ चौकस चहुँ खंडे।
हुण वेखाँ दल जनम दे केहे परचंडे॥
ए गल्लाँ करि स्याम जी परिपूरन साईं।
हुवे पुरी सैं नाहले जमनौं अगवाईं॥
उस वेला दी स्याम दी भानै नौ पैठी।
कोटि कोटि मनमथ्थ दी गहि जौम अमैठी॥
पद्म पद्म प्रिय की प्रभा अवतंस प्रकासै।
नव नीरद घन तड़ित ज्यौं पीतांबर भासै॥
सुर-धनु सी गोपाल दी बनमाल बकौंही।
मुक्तावलि बगपंति सी मुभ्र दृगनि लगौहीं॥
अंग अंग मनिजटित के भूषण जु प्रकासैं।
मोर-पच्छ सिरमौर ज्यौं निर्तन चहुँ घाँ सैं॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भौंहें पिक सी चकि रही किंकिनि धुनि कूकैं ॥
सीत पवन मुसिकान की आनन्दित भूकैं ॥
पांचजन्य धुनि संख की गज्जनि महि पूरी ।
उथ्थौं गोमुख बाँकिया पटहा पन तूरी ॥
कालजनम बिकराल ज्यौं ग्रीषम की तापैं ।
ताहि बुझावन नूँ उठे घनस्याम सु आपैं ॥
तिथ्थौं आया जमन भी बाजी करि तत्ता ।
ज्यौं पंचानन-जूह लै पंचानन मत्ता ॥
वेखि जमन नूँ कृष्ण जी एही गल अक्खी ।
रक्खु खड़ी इस सैन नूँ तन ज्यौं अमरक्खी ॥
दुंद जुद्ध असी तुसी भुज दंडी मंडै ।
लरने आया तू बली लोकाँ क्यौं खंडै ॥
तेही जानति अंग मैं तेही जग जोहैं ।
उतरि खड़ा हो खेत मैं करु बिक्रम सोहैं ॥
ए गल्लाँ सुनि जनम कै कोहानल उट्ठी ।
तजि तुरंग कुद्दा मही बंधे दृढ़ मुट्ठी ॥
सरई अंगा अंग मैं सिरताज कढौंही ।
असित रंग डाढी बड़ी करि अंड कढौहीं ॥
अप्रमान हथ्थीन दा बिक्रम बड़ काया ।
करि कुलाँट अंतक मनौ किलकार सुधाया ॥
कोल आइ श्रीकष्ण कै ए बचन उघाड़े ।
कंस मल्ल करि कुबलिया तैं ही जु पछाड़े ॥
बो बल तैंड़ा अज्ज मैं इस जंग अखाड़े ।
कढ्ढौंगा इस हथ्थ सैं वेखं भट साडे ॥
यौं कहिकैं गज्जा बली बारिद ज्यौं बज्जा ।
तिसनूँ तिसी फराक मैं गिरिधरन तरज्जा ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अरे जमन इस लोक मैं सो तन बल बट्टा ।
वो तू अज्ज उरज्झिहै अंतक की उट्टा ॥
अज्ज अप्प दे बिक्रमैं भठ कथ्थन वाले ।
जंग न जित्तैंगे कधी बिन फैकैं भाले ॥
आउ करै कथ्थन कहा मिजमान घली का ।
मधु मुर केसी कंस दा ले जाह सलीका ॥
इसी गल्ल धरि कन्न मैं जमना हो तत्ता ।
मलकि ओठ दंतौं तलें दीदैं कैं रत्ता ॥
हिक्क पग्ग धरि अग्ग नूँ कर मुक्क सम्हाला ।
तिस दे पैर धमक्क सै भुवमंडल हाला ॥
हाहाकार लोकाँ पड़ा देवाँ घर सल्ले ।
वोहि वोहि देवी रटैं साँई तुझ पल्ले ॥
कालजमन दे मुक्क नूँ श्रीकृष्ण चुकाया ।
दूध दही लुटि चक्खना आड़ा सो आया ॥
जमन हथ्थ खाली करा बलि जी के भाई ।
छल्ल सम्हालि उछल्लि कैं कीती चपलाई ॥
उस वेलाँ गोपाल जी दिल माँहि विचाड़े ।
इसदा काल नहीं कहा बिधि हथ्थ असाड़े ॥
इसैं भक्त मुचकुंद दी लोचन दी झर सैं ।
भस्म करावा निमिष मैं चलना दरवर सैं ॥
होर असाडे दर सदा भुक्खा मुचकुंदा ।
हिक्क काज मैं दा करीं मेरा वो बंदा ॥
ऐसी चित्त विचार कैं कर थाप सम्हाली ।
कालजमन के गाल पै असिनी सी घाली ॥
लखि गज्जे सुर सब्बही अच्छे जी अच्छे ।
असुर अंग कछू घुम्या गोपीपति गच्छे ॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कालजमन पल हिक्क में मूरछ सैं चेता।
वेखि भगा श्रीकृष्ण नूँ हो लेता देता॥
बंधे मुट्ठी बज्र सी भगगति सम्हाले।
हँसि बोल्या तधि कान्ह जी आले वे आले॥
जमन जोर कर धाइया तन भरत जकंदे।
मानौ राहु सपट्टिया भच्छन नूँ चंदे॥
कही लपटदे झपटदे दोनो ही चल्ले।
मुचकुंदा दे गोइ रे उड्डे जा खल्ले॥
सुत्ता था जिस मेरु दी कंदर दे अंदर।
तिथ्थों पैठे स्याम जी छलबली लुकंदर॥
सुत्ता लखि मुचकुन्द नूँ ढकि निज पीतंबर।
अलष अलष ही हो गए गहि रूप धरंबर॥
उस ठाँ आया जमन भी अंबर लखि भरमा।
तद लक्खाँ वो जादवाँ सूता ज्यौं घर मा॥
जुट्टि जंग में भगगना निंद्रा तुझ केही।
खेल न होवै जुज्झना सुष्याँदी देही॥
यौं कहिकैं मुचकंद कौं पैरौं से घत्ता।
सो जग्गा हग लाल सैं ज्यौं जवा भरत्ता॥
तिसदी चाहन सैं कढ़ी दाहनि उस वेली।
कालजमनि तिसनै किया खक्खा दी ढेली* ॥८०॥

दोहा

दरसन लहि गोविंद को महाभाग मुचकंद।
करि प्रनाम लाग्यो करन अस्तुति बुद्धि विलंद ॥८१॥

---

* हस्त-लिखित प्रति में यहीं पर 'इति' है; परन्तु छापेवाली में इसके नीचे दिया हुआ दोहा और छप्पय भी है। यही छप्पय हाथ की लिखी पुस्तक के साथ लगी हुई मोतीराम रचित वंशावली में भी है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छप्पय

जै जै श्रीव्रजचंद नंदनंदन अनंद-निधि।
सगुन सच्चिदानंद छंद बंदन सुछंद विधि॥
वृंदारक वृंदनि बिलंद जयमंदिर दायक।
जै वृंदावन तुलित रचित लीला रुचि लायक॥
जगमगत सुजस चौदह भुवन सेवक को संकट हरन।
जै कीजै नृपति व्रजेंद्र की* जै श्रीगोवर्धन-धरन॥८२॥

इति श्री संपूर्णम्

---

* पाठांतर—जै रमानाथ जदुनाथ जय जै जै गोवर्धन धरन।
(यह पाठ छापे की पुस्तक का है)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शब्द-कोश ।

अ

अतालीक—(तु० अतालीक़) शिक्षक ।

अदाब—(अ० आदाब) अदब का बहु व० (१) सलाम । प्रणाम । (२) नियम ।

अपसोच—(फा० अफ़सोस) शोक । दुःख ।

अफताब—(फा० आफ़ताब) सूर्य ।

अबस—(अ०) व्यर्थ । जिससे कुछ लाभ न हो ।

अमल—(अ०) (१) अधिकार । (२) इच्छा ।

अमान—(अ०) रक्षा । दुःख न देना ।

अरज—(अ० अर्ज़) प्रार्थना । कुछ कहना ।

अराबो—(अ० अराबः) (१) बोझ ढोनेवाली गाड़ी । (२) तोप ढोने की गाड़ी ।

अवल—(अ० अव्वल) सबके पहले ।

अहदी—(अ०) सरकारी नौकर ।

आ

आग़ा—(फा०) स्वामी । मालिक ।

आफत—(अ०) आकस्मिक कष्ट ।

आफरीं—(अ०) प्रशंसा-सूचक शब्द ।

आब—(फा०) (१) जल । पानी । (२) प्रतिष्ठा । (३) मोती या तलवार का पानी ।

आबदार—(फा०) पानीदार । जिसकी धार पर खूब चमक हो ।

आलम—(अ०) ईश्वर से परे जो कुछ है, संसार ।

इ

इख़लास—(अ०) मित्रता ।

इतकाद—(अ० एतक़ाद) विश्वास ।

इतबार—(अ० एतबार) विश्वास । भरोसा ।

इतमाम—(अ०) पूरा करना । अंत तक पहुँचाना ।

इलकाब—(अ०) लक़ब का बहु व० पदवी आदि जो किसी बड़े को लिखी जाय ।

इसफाँह—इसफ़हान, एक शहर का नाम ।

इसम—(अ० इस्म) नाम ।

उ

उमराव—(अ० उमरा) अमीर का बहु व० सरदार गण ।

ऐ

ऐराखी—(अ० एराक़ी) एराक़ देश का

अं

अंदेश—(फा० अंदेश) सोच विचार ।

क

कबूल—(अ० क़बूल) मानना, स्वीकारना ।

कबीला—(अ० क़बीला) एक जाति के लोगों का समूह ।

कलाम—(अ०) वाक्य । कही हुई बात ।

कवाद—(अ० क़वायद) नियम नियमों का अभ्यास क

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

क़स्त—(अ० क़स्द) इरादा ।

कहकह—(अ० क़हक़ह:)।(१) ठठाकर हँसना । (२) एक ईरानी दुर्ग जो दीवारें क़हक़ह: कहलाती है ।

क़िबले गाह—(अ०) वह जिसकी ओर सब मुंह करें, राजा ।

किरान—(अ०) सूर्य को छोड़ अन्य दो नक्षत्रों का एक स्थान में होना ।

किलेदार—(अ०) दुर्गाध्यक्ष ।

किलवाँक—(अ० क़िलमाक़) स्थान विशेष के घोड़ों की एक जाति ।

कुजा हस्त—(फा० कुजा = कहाँ, हस्त = है) कहाँ है ।

कुबरा—(अ०) एक अल्ल। पदवी विशेष ।

कुलंग—(फा०) पक्षी विशेप जो सारस का सा होता है ।

कुही—(फा० कोही)–पहाड़ी घोड़ों की एक जाति ।

कोह—(फा०) पहाड़ ।

क़ौल—(अ०) प्रतिज्ञा ।

क्यामत—(अ० क़यामत) (१) प्रलय । (२) अत्यंत ।

ख

ख़लक़—(अ०) सृष्टि । संसार के जीव । संसार ।

ख़वास—(अ० ख़ास का बहु व०) राजाओं के प्रधान ख़िदमतगार ।

ख़ातिरख़ाह—(फा० ख़ातिर ख़्वाह) इच्छानुकूल ।

...**ज़मा**—(फा० ख़ातिर जमः)

ख़ानज़ादा—(फा०) ख़ाँ अर्थात् सरदार का पुत्र या वंशज ।

ख़िलवति—(फा० ख़िलवत) एकांत स्थान ।

ख़ुशबख़त—(फा० ख़ुशबख़्त) भाग्यवान् ।

ख़ुस्याल—(फा० ख़ुश + हाल) संपन्न । सुख-संपत्तिवाला ।

ख़्वाबगाह—(फा०) सोने का स्थान । शयनागार ।

ख़्वार—(फा०) अविश्वासी पुरुष ।

ग

गना—(अ०) ऐश्वर्य। (सरग़नः) सरदार ।

गरक़—(अ० ग़र्क़) डूब जाना ।

गरा—(अ० ग़र्रः) वह घोड़ा जिसके सिर पर छोटा श्वेत चिह्न हो ।

ग़रूर—(अ०) घमंड ।

गलबा—(अ० ग़लबः) अत्याचार । जबर-दस्ती ।

गस्त—(फा० गश्त)। (१) हुआ । (२) फिरना ।

ग़ुबार—(अ०) गर्दा । मिट्टी मिली हवा ।

गुलबासा—(फा० गुलअब्बास) एक प्रकार का फूल ।

गुलाब—(फा०) गुलाबजल ।

गुसल—(अ० गुस्ल) स्नान ।

ग़ैर—(अ०) (१) पराया । (२) शत्रु ।

ग़ौर—(अ०) सोचना ।

च

चकत्ता—(अ० चग़त्ता) दिल्ली के चग़ताई वंश के सम्राट् ।

चंदावल—(तुर्की) सेना का पिछला भाग ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चिलतह—(फा० चिल्तः) एक प्रकार का कवच जिसे ज़र्रा भी कहते हैं।

ज

जज्जाल—(अ० जजीलः) दृढ़ छोटी तोप।

जबती—(अ० ज़ब्त) दंड में छीन लेना।

जमी—(अ० जमी) पृथ्वी। भूमि।

जरकस—(फा० जर-कश) जिसमें सुनहले तार का काम बना हुआ हो।

ज़रदा—(फा०) पीले रंग का घोड़ा।

ज़री—(फा०) ताश का कपड़ा। सुनहले तारों का बुना हुआ कपड़ा।

जलीलदार—(फा०) (१) प्रभावशाला। (२) प्रकाशमान।

ज़ारज़ार—(फा०) फूट फूटकर रोना।

जाहर—(अ० ज़ाहिर) प्रगट। खुला हुआ।

जिभै—(अ० ज़बः) मुसलमानी धर्म के अनुसार पशुओं का गला काटना।

ज़िरह—(फा०) लोहे की कड़ियों का बना हुआ कवच।

जुज़वी—(फा०) बहुत थोड़े।

जुर्रा—(फा०) नर बाज़।

जेगा—(तु० जेगः) पगड़ी पर बाँधने का एक आभूषण।

ज़ेरदस्त—(फा० ज़ेर = नीचे, निर्बल + दस्त = हाथ) पराजित। हारा हुआ।

जोर—(अ० ज़ौर) अत्याचार।

जंग—(फा०) युद्ध।

डाँक—(?) पत्र व्यवहार।

त

तक़सीर—(अ०) दोष। क़सूर।

तबल—(फा०) डंका। नगाड़ा।

तबाई—(फा० तबाही) नष्ट होना। उजाड़ होना।

तसदीह—(अ० तसदीअ) कष्ट। दुःखदायक विचार।

तसद्दुक़—(अ०) निछावर।

तसबी—(अ० तसबीह) माला। सुमिरनी।

ताकीद—(अ०) विशेष अनुरोध करना। बात को पक्का करना।

ताखत—(फा० ताख़्त) आक्रमण। दौड़ा-दौड़।

तुपक—(तु० तोप) बंदूक।

तुफंग—(तु० तोप) हवाई तुपक। हवा के जोर से चलनेवाली बंदूक।

तेग़—(अ०) तलवार। खड्ग।

तंग—(फा०) घोड़ों के जीन कसने की पेटी।

द

दराज़—(फा०) बड़ा।

दरपुश्त—(फा०) कई पीढ़ी तक।

दाखिल—(अ०) प्रवेश करना।

दाम—(फा०) (१) मूल्य। (२) बादशाही समय का ताँबे का एक सिक्का जो एक रुपए में चालीस होता था।

दिलजोई—(फा०) समझाना। ढारस देना।

दीवान—(फा०) कचहरी। दरबार करने का स्थान।

दुसमन—(फा० दुश्मन) शत्रु।

दोम—(फा० दोयम) दूसरा।

देहकानी—(अ०) ग्रामीण। गँवार।

न

नक्दी—(अ० नक्द) सिक्का जो तैयार हो।

नकीब—(फा०) भाट। वंदीजन ...

नाजर—(अ० नाज़िर) ...

नाहक़—(फा० ...

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निसा—(अ० नशा पैदा करना, नया पैदा होना + अ० खातिर = मन का विचार) मन में जो विचार पैदा हो, अर्थात् जो अपने मन को ठीक जँचे।

(फा० खातिर + निशाँ) जो मन में बैठ जाय। जिसपर विश्वास हो।

नुकुरा—(फा० नुक़रा) (१) चाँदी। (२) सफेद रंग का घोड़ा।

नूर—(अ०) प्रकाश।

नेक—(फा०) अच्छा।

नेसनाबूद—(फा० नेस्त + नाबूद) जो न हो, नष्टभ्रष्ट।

प

पसमी—(फा० पशम) ऊनी।

पसौरी—(फा० पेशावर) पेशावर नगर का।

पस्त—(फा०) नीचा। हारा या थका हुआ।

पाक—(फा०) पवित्र।

पासबान—(फा०) चौकीदार।

पीलबान—(फा०) हाथी हाँकनेवाला।

पेस—(फा० पेश) सामने। आगे।

फ

फ़जर—(अ०) सुबह। तड़के।

फत्ते—(अ० फतेह) विजय।

फ़रज़ंद—(फा०) पुत्र। लड़का।

फरमान—(फा० फर्मान) बादशाही आज्ञापत्र।

फ़िदवी—(अ०) निछावर होनेवाला। स्वामी-भक्त दास।

फील दरजात—रफ़ उद्जीत् नाम का इच्छानुकूल हुआ रूप।

—मा—१ फ़तेह का बहुवचन।

ब

बकसी—(फा० बख़्शी) वेतन बाँटनेवाला अफसर।

बकसीस—(फा० बख़्शिश) दान। खैरात।

बख्त—(फा०) भाग्य। किस्मत।

बख्तरनि—(फा० बकतर) कवच।

बजा—(फा०) ठीक। दुरुस्त।

बदकसान—बदख्शाँ, एक प्रांत का नाम।

बदराह—(फा०) कुमार्गी।

बरगी—(फा० बारगीर) जो सवार राज्य के घोड़े पर नौकर हो।

बलकी—(फा० बलख़) बलख देश का। घोड़ों की एक जाति जो बलख से आते हैं।

बा—(फा०) साथ।

बिलद—(फा० बलंद) ऊँचा।

बेअदबी—(फा०) बड़ों का अपमान।

बेहद—(अ०) असीम। बहुत।

म

मग़रूर—(अ०) घमंडी।

मद्दति—(फा० मदद) सहायता।

मजेज—(अ० मजाज़) सच्चा हठ।

मर्दूद—(अ०) अप्रतिष्ठित।

मरहसानि—(अ० मर्हलः) (१) सामान रखने तथा ठहरने की जगह। (२) चार फर्संग का कूच। (३) स्थान जिसके भीतर से युद्ध करें।

मलामत—(अ०) बुरा भला कहना। डाँटना।

मलूकज़ादा—(अ०) राजवंश से उत्पन्न।

मसमुंद—(अ० मसदूद) बंद किया गया।

मसलति—(अ० मसलहत) अच्छी राय। सम्मति।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

महताब—(फा० महताब या माहताब) (१) चंद्रमा । (२) चाँदनी ।

महाल—(अ०) कठिन । मुश्किल । जो संभव न हो ।

माफ़िक—(अ० मुवाफ़िक़) समान । मुताबिक ।

मामल—(अ० मुआमिल:) मिलकर कोई काम करना ।

मिसल—(अ० मिस्ल) (१) मिसाल । कहावत । (२) समान ।

मीर पनाह—(फा०) प्रधान रक्षक ।

मुकर्रर—(अ०) दो बारः । दूसरी बार । बार बार किया गया ।

मुकाम—(अ०) ठहरने का स्थान ।

मुकेसी—(सं० केश का मुअर्रब कैश का मफ़ऊल मुकैश + ई) चाँदी के तार का बुना हुआ कपड़ा ।

मुसजर—(अ० मुशज्जर) जिस कपड़े में वृक्ष के आकार हों ।

मुस्तक़ीम—(अ०)(१) दृढ़ । (२) सीधा ।

मुहकम—(अ०) दृढ़ ।

मौजदी—मुईज्जुद्दीन का बिगड़ा रूप ।

र

रज़ा—(अ०) प्रसन्नता । इच्छा ।

रफ़ीक़—(अ०) साथी । मित्र ।

रब—(अ०) ईश्वर । खुदा ।

रहमत—(अ०) कृपा । दया ।

राइरान—रायरायान ।

रिसालः—(अ०) छोटी किताब । (फा०) सवारों की एक पलटन ।

रुख़सद—(अ० रुखसत) छुट्टी । विदा ।

रुजू—(अ० रजा) किसी काम में इच्छानुसार प्रवृत्त होना ।

रेजा—(फा० रेज:) टुकड़ा ।

ल

लरज्जिय—(फा० लर्ज़ीदन) काँपते हुए ।

व

वकील—(अ०) प्रतिनिधि ।

वफ़ा—(अ०) मित्रता निबाहना । वचन को पूरा करना ।

वालासाही—निजाम आसफ़जाह की पदवी वालाशाह से बना हुआ विशेषण ।

स

सकलात—(अ० सिकलात, सकरलात) लाल रंग का ऊनी कपड़ा । बनात ।

सफ़ील—(फा०) बुर्ज ।

सबर—(अ०) संतोष ।

सबील—(अ०) राह । रास्ता; उपाय ।

समसेर—(फा० शमशेर) तलवार ।

समंद—(फा०) (१) दरिया । (२) घोड़े की एक जाति ।

सरतावैं—(फा० सरताबीं) बिगड़ें । विद्रोह करें ।

सरी—(फा०) सर्दारी ।

सलामत—(अ०) कुशलता पूर्वक ।

सलूक—(अ०) ठीक व्यवहार करना ।

साम—(फा० शाम) संध्या ।

सारति—(फा० इशारत) इशारा करना ।

साहि—(फा० बादशाह) राजा ।

साहिबी—(अ०) स्वामित्व ।

साहिबे-नौबत—(फा०) जो ... सकता हो, बड़ा सरदार ...

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सिताब—(फा० शिताब) जल्दी ।

सिप्पर—(फा० सिपर) ढाल ।

सिरताज—(फा०) बड़ा । सबसे बढ़कर ।

सिरोपाय—(फा० सिरोपा) सिर से पाँव तक के वस्त्र जो खिलअत में राजा देता है ।

सिलह—(अ० सिलाह) हथिआर ।

सीदी—एबीसिनिया अर्थात् हब्श देश-वासियों की एक पदवी ।

सीन—(फा० सीनः) छाती ।

सुतुर—(फा० शुतुर) ऊँट ।

सुभू—(अ० सुबह) सवेरा । तड़का ।

सुमार—(फा० शुमार) गिनती ।

सुरखाब—(फा०) पक्षी विशेष ।

सुरूर—(अ०) प्रसन्नता ।

ह

हफ़्त—(फा०) सात ।

हबूब—(अ०) हवा का चलना ।

हमेस—(फा० हमेशा) सदा ।

हरीफ़—(अ०) शत्रु ।

हस्त—(फा० हश्त) आठ ।

हाल—(अ०) (१) वर्तमान समय । (२) वृत्तांत ।

हूर—(अ०) सुंदर औरत । अप्सरा ।

इच्छानुरू...

...मा—१ फ़...

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इच्छानुपू

मा—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai